शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर
महाराष्ट्र

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग–3 हिंदी

सत्र 5 पेपर 7 और सत्र 6 पेपर 12

विधा विशेष का अध्ययन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के नुसार सुधारित पाठ्यक्रम
(शैक्षिक वर्ष 2024-25 से)

© **कुलसचिव,** शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2024
बी. ए. भाग 3 (हिंदी : बीजपत्र–7 और 12)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ :

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN- 978-93-48427-21-2

★ दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी– शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर–416 004. (भारत)

दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

■ सलाहकार समिति ■

प्रो. (डॉ.) डी. टी. शिर्के
कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) पी. एस. पाटील
प्र-कुलगुरू,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) प्रकाश पवार
राज्यशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. विद्याशंकर
कुलगुरू, केएसओयू
मुक्तगंगोत्री, म्हैसूर, कर्नाटक-५७० ००६

डॉ. राजेंद्र कांकरिया
जी-२/१२१, इंदिरा पार्क,
चिंचवडगांव, पुणे-४११ ०३३

प्रो. (डॉ.) सीमा येवले
गीत-गोविंद, फ्लॅट नं. २, ११३९ साईक्स एक्स्टेंशन,
कोल्हापुर-४१६००१

डॉ. संजय रत्नपारखी
डी-१६, शिक्षक वसाहत, विद्यानगरी, मुंबई विश्वविद्यालय,
सांताक्रुझ (पु.) मुंबई-४०० ०९८

प्रो. (डॉ.) कविता ओझा
संगणकशास्त्र अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) चेतन आवटी
तंत्रज्ञान अधिविभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एम. एस. देशमुख
अधिष्ठाता, मानव्य विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) एस. एस. महाजन
अधिष्ठाता, वाणिज्य व व्यवस्थापन विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्रो. (डॉ.) श्रीमती एस. एच. ठकार
प्रभारी अधिष्ठाता, विज्ञान व तंत्रज्ञान विद्याशाखा,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

प्राचार्या (डॉ.) श्रीमती एम. व्ही. गुळवणी
प्रभारी अधिष्ठाता, आंतर-विद्याशाखीय अभ्यास विद्याशाखा
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. व्ही. एन. शिंदे
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. ए. एन. जाधव
संचालक, परीक्षा व मूल्यमापन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

श्रीमती सुहासिनी सरदार पाटील
वित्त व लेखा अधिकारी,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

डॉ. के. बी. पाटील (सदस्य सचिव)
प्र. संचालक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

हिंदी अध्ययन मंडल

अध्यक्ष

प्रो. डॉ. साताप्पा शामराव सावंत
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

सदस्य

- **प्रो. डॉ. नितीन चंद्रकांत धवडे**
  मुधोजी कॉलेज, फलटण, जि. सातारा
- **डॉ. श्रीमती मनीषा बाळासाहेब जाधव**
  आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,
  सातारा-४१५ ००२.
- **प्रो. डॉ. श्रीमती वर्षाराणी निवृत्ती सहदेव**
  श्री विजयसिंह यादव कॉलेज, पेठ वडगाव,
  जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी**
  सदाशिवराव मंडलीक महाविद्यालय, मुरगुड, ता. कागल, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. (डॉ.) अशोक विठोबा बाचुळकर**
  आजरा महाविद्यालय, आजरा, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. भास्कर उमराव भवर**
  कर्मवीर हिरे आर्टस, सायन्स, कॉमर्स ॲण्ड एज्युकेशन कॉलेज, गारगोटी, ता. भुदरगड, जि. कोल्हापुर
- **डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे**
  आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा,
  ता. जावळी, जि. सातारा
- **प्रो. डॉ. अनिल मारुती साळुंखे**
  यशवंतराव चव्हाण महाविद्यालय, करमाळा,
  जि. सोलापुर-४१३२०३
- **डॉ. गजानन सुखदेव चव्हाण**
  श्रीमती जी.के.जी. कन्या महाविद्यालय,
  जयसिंगपुर, ता. शिरोळ, जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. सिद्राम कृष्णा खोत**
  प्रा. डॉ. एन. डी. पाटील महाविद्यालय, मलकापुर,
  जि. कोल्हापुर
- **प्रो. डॉ. उत्तम लक्ष्मण थोरात**
  आदर्श कॉलेज, विटा, जि. सांगली
- **डॉ. परशराम रामजी रगडे**
  शंकरराव जगताप आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज,
  वाघोली, ता. कोरेगाव, जि. सातारा

अपनी बात

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की दूरशिक्षा योजना के अंतर्गत बी. ए. भाग-3 हिंदी विषय के छात्रों के लिए निर्मित अध्ययन सामग्री नियमित रुप से प्रवेश न ले पाने वाले छात्रों की असुविधा को दूर करने के संकल्प का सुफल है। इसमें एक ओर विश्वविद्यालय की सामाजिक संवेदनशीलता दिखाई देती है, तो दूसरी ओर शिक्षा से वंचित छात्रों को अध्ययन सामग्री सुविधा प्रदान करने की प्रतिबद्धता। बी. ए. 1, 2 तक की अध्ययन सामग्री से दूरशिक्षा योजना के छात्र जिस तरह लाभान्वित हुए हैं, उसी तरह बी. ए. 3 के छात्र भी प्रस्तुत स्वयं-अध्ययन सामग्री से लाभान्वित होंगे, यह विश्वास है।

दूरशिक्षा के छात्रों का महाविद्यालयों तथा अध्यापकों से प्रत्यक्ष या परोक्ष रुप से कोई संबंध नहीं आता। उनकी इस स्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्ययन सामग्री को सरल और सुबोध भाषा में प्रस्तुत किया गया है। साथ ही पाठ्यक्रम, प्रश्नपत्र का स्वरुप तथा अंक-वितरण को ध्यान में रखकर अध्ययन-सामग्री को आवश्यकतानुसार विस्तृत तथा सूक्ष्म रुप से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हमें आशा ही नहीं, बल्कि विश्वास भी हैं कि प्रस्तुत अध्ययन सामग्री बी. ए. 3 के छात्रों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

प्रस्तुत सामग्री सामूहिक प्रयास का फल है। इकाई लेखकों ने अपनी-अपनी इकाईयों का लेखन समय पर पूरा कर इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। शिवाजी विश्वविद्यालय के मा. कुलगुरू, कुलसचिव, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय विकास मंडल के संचालक, दूरशिक्षा विभाग के संचालक एवं उनके सभी सहयोगी सदस्यों ने समय-समय पर आवश्यक सहयोग दिया। अतः इन सभी के प्रति आभार प्रकट करना हमारा कर्तव्य है।

धन्यवाद।

– संपादक

	सत्र 5	सत्र 6
★ **प्रो. (डॉ.) एस. बी. बनसोडे** तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज, बारामती, पुणे	**1**	**-**
★ **श्री. संतोष साळुंखे** नाईट कॉलेज ऑफ आर्टस ॲण्ड कॉमर्स, इचलकरंजी, जि. कोल्हापुर	**2**	**-**
★ **श्रीमती वर्षा पाटील** देवचंद कॉलेज, अर्जुननगर, ता. कालग, जि. कोल्हापुर	**3**	**-**
★ **डॉ. मच्छिंद्र कुंभार** मातोश्री बयाबाई श्रीपतराव कदम कन्या महाविद्यालय, कडेगाव, ता. कडेगाव, जि. सांगली	**4**	**-**
★ **प्रो. (डॉ.) सातापा सावंत** विलिंग्डन कॉलेज, सांगली, जि. सांगली.	**-**	**1, 2**
★ **श्रीमती अश्विनी देशिंगे** तासगाव	**-**	**3**
★ **डॉ. संजय चोपडे** हंगामी सहाय्यक प्राध्यापक, दूरशिक्षण व ऑनलाईन शिक्षण केंद्र, शिवाजी विद्यापीठ, कोल्हापुर	**-**	**4**

■ **संपादक** ■

प्रो. (डॉ.) सातापा सावंत
अध्यक्ष, हिंदी अध्ययन मंडळ,
शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर,
एवं
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
विलिंग्डन कॉलेज, सांगली

प्रो. डॉ. सुनील बापू बनसोडे
तुळजाराम चतुरचंद कॉलेज,
बारामती–पुणे

अनुक्रमणिका

इकाई	पाठ्यविषय	पृष्ठ
	सत्र–5 पेपर 7 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	उदय प्रकाश का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व, कृतित्त्व एवं कहानीकार उदय प्रकाश का सामान्य परिचय।	1
2.	मोहन दास : कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता	17
3.	मोहन दास : पात्र या चरित्र–चित्रण तथा संवाद	48
4.	मोहन दास : देश काल तथा वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	69
	सत्र–6 पेपर 12 : विधा विशेष का अध्ययन	
1.	रुपनारायण सोनकर का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का परिचय	91
2.	'नागफनी' : वस्तुवर्णन एवं शीर्षक की सार्थकता	103
3.	'नागफनी' : पात्र तथा चरित्र चित्रण एवं देशकाल और वातावरण	119
4.	'नागफनी' : भाषा–शैली, उद्देश्य एवं समस्याएँ	132

हर इकाई की शुरूआत उद्देश्य से होगी, जिससे दिशा और आगे के विषय सूचित होंगे-

(१) इकाई में क्या दिया गया है।

(२) आपसे क्या अपेक्षित है।

(३) विशेष इकाई के अध्ययन के उपरांत आपको किन बातों से अवगत होना अपेक्षित है।

स्वयं-अध्ययन के लिए कुछ प्रश्न दिए गए हैं, जिनके अपेक्षित उत्तरों को भी दर्ज किया है। इससे इकाई का अध्ययन सही दिशा से होगा। आपके उत्तर लिखने के पश्चात् ही स्वयं-अध्ययन के अंतर्गत दिए हुए उत्तरों को देखें। आपके द्वारा लिखे गए उत्तर (स्वाध्याय) मूल्यांकन के लिए हमारे पास भेजने की आवश्यकता नहीं है। आपका अध्ययन सही दिशा से हो, इसलिए यह अध्ययन सामग्री (Study Tool) उपयुक्त सिद्ध होगी।

इकाई –1
उदय प्रकाश का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व, कृतित्त्व एवं कहानीकार उदय प्रकाश का सामान्य परिचय।

अनुक्रम –

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 उदय प्रकाश का जीवन परिचय

1.3.2 उदय प्रकाश का व्यक्तित्त्व

1.3.3 उदय प्रकाश का कृतित्त्व

1.3.4 कहानीकार उदय प्रकाशन

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप-

1. कहानीकार उदय प्रकाश का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2. समय के अनुसार कहानी की बदली हुई संरचना, भाषा–शैली एवं कथ्य से परिचित होंगे।
3. कहानीकार उदय प्रकाश की सटीक शब्दों में बहुत ही गहरी बात कहने के ढंग से परिचित होंगे।
4. उत्तर आधुनिकता के दौर की कहानी में बदलाव से परिचित होंगे।
5. आधुनिक एवं उत्तर आधुनिक काल में हिंदी कहानीकारों में उदय प्रकाश के महत्त्वपूर्ण स्थान को समझ सकेंगे।

1.2 प्रस्तावना :

उदय प्रकाश कवि, कथाकार, पत्रकार, अनुवादक, समीक्षक और फिल्मकार के रूप में प्रसिद्ध है। उदय प्रकाश समकालीन परिस्थितियों का चित्रण यथार्थता के साथ करते हैं। उदय प्रकाश जनवादी विश्वदृष्टि रखनेवाले कहानीकार हैं। इनकी कई कहानियों के नाट्य रूपांतर और सफल मंचन हुए हैं। उदय प्रकाश की कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मन, जपानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं। भूमंडलीकरण से उपजी उपभोक्ता संस्कृति और बाज़ारवाद के साथ उत्तर आधुनिकतावाद को लेकर गहरी सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक दृष्टि से लेखन करनेवाले हिंदी साहित्यकारों में से एक नाम उदय प्रकाश जी का है। समकालीन हिंदी साहित्य जगत् में उदय प्रकाश जी ने नयी शैली के अत्यंत महत्त्वपूर्ण कवि एवं कहानीकार के रूप में ख्याति प्राप्त की है। उनके साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

1.3 विषय विवेचन :

1.3.1 उदय प्रकाश का जीवन परिचय:

हिंदी के प्रख्यात कवि, कथाकार, पत्रकार और फिल्मकार उदय प्रकाश का जन्म दि. 1 जनवरी, सन् 1952 ई. में मध्यप्रदेश जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। सीतापुर गाँव छत्तीसगढ जिले का सीमावर्ती गाँव हैं जिसमें आदिवासी जनसंख्या बहुता से पाई जाती है। यहाँ ५२% बस्ती आदिवासियों की है और अत्यधिक गरीबी है। सीतापुर शहडोह जिले में आया हुआ है। आजकल इन जनपद का नया नाम अनूपपुर हो गया है। यह इलाका छोटा नागपुर इलाके तक है। उदय प्रकाश का जन्म मध्यवर्गीय परिवेश में हुआ था। जब वे 12 साल के थे तब उनकी माता गंगादेवी की कैन्सर से मृत्यु हुई। माँ की मृत्यु का गहरा असर उनके पिता जी प्रेमकुमार सिंह पर हुआ और वे शराब पीने लगे। इसी कारण सन् 1969 ई. में उन्हें भी कैन्सर हुआ। पिता की मृत्यु के बाद उदय जी ने सागर विश्वविद्यालय में दाखिला प्राप्त किया। विद्यार्थी जीवन में वे 'साम्यवादी विद्यार्थी संगठन' से जुड़ गए। उस समय उनकी उम्र सोलह की थी। उदय जी ने विज्ञान में स्नातक और हिंदी विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। सन् 1975 ई. के बाद वे दिल्ली चले गए। उदय जी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और इसके मणिपुर केंद्र में लगभग चार वर्ष तक अध्यापन का काम किया। उसके बाद संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश में लगभग दो वर्ष विशेष कर्तव्य अधिकारी के रूप में कार्य किया। 'पूर्वग्रह' का सहायक संपादन के साथ नौ वर्ष तक टाइम्स ऑफ इंडिया के समाचार पाक्षिक 'दिनमान' के संपादकीय विभाग में नौकरी की। लगभग दो वर्ष तक पी.टी.आई. (टेलीवीजन) और एक वर्ष इंडिपेंट टेलीविजन के विचार और पटकथा प्रमुख के रूप में काम किया। कुछ समय 'संडे मेल' में वरिष्ठ सहायक संपादक रहे। अब इन दिनों स्वतंत्र लेखन और प्रेस मीडिया के लिए लेखन कर रहे हैं।

उदय प्रकाश का विवाह दि. 9 जुलाई, सन् 1977 ई. को गोरखपुर निवासी कुमकुम सिंह के साथ हुआ। उनकी पत्नी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से फ्रेंच भाषा व स्पेनिश भाषा में एम.ए. के साथ

इंडोनेशिया भाषा में डिप्लोमा किया था। कुमकुम जी दिल्ली के ही एक विद्यालय में कार्यरत हैं। उन्होंने उदय प्रकाश के साथ जीवन के सुख-दु:ख में सदैव साथ निभाया है। उदय प्रकाश के दो पुत्र सिद्धार्थ और शांतनू उच्च पदों पर कार्यरत है। सिद्धार्थ ने फ्रांसीसी लड़की से शादी कर छात्रवृत्ति प्राप्त कर जर्मन में कार्यरत है। उनका छोटा बेटा शांतनू बैंक में कार्यरत है।

1.3.2 उदय प्रकाश का व्यक्तित्त्व:

उदय प्रकाश जी का बाह्य व्यक्तित्त्व बहुत ही आकर्षक है। गोरा वर्ण, मजबूत देहयष्टी, उन्नत माथा, बड़ी-बड़ी आँखें, तीखी नाक-नक्श और आँखों पर हमेशा चष्मा पहनते हैं। उनकी आवाज बुलंद है और जिंदादिल व्यक्ति के रूप में वे मित्रों में पहचाने जाते हैं। सिर पर टोपी और सूट पहनना उन्हें अच्छा लगता है। हिंदी साहित्य जगत् में उदय प्रकाश एक ईमानदार, संवेदनशील, मैत्री निर्वाहक, मानवीय सामाजिक चिंताओं को प्रकट करनेवाले साहित्यकार हैं। उदय जी के लेखन का प्रारंभ गाँव से हुआ है। इसकारण उन्हें गाँव का परिवेश और पारिवारिक माहौल बहुत अच्छा लगता है। समकालीन बुराइयों, धनलीप्सा, चापलूसी, गुटबाजीता, सत्ता के दलालों को आड़े हाथ लेते हैं। वे नीड़र होकर कबीर की तरह फकीरी मानसिकता को लेकर काम करते हैं। उनके बचपन का पारिवारिक एवं आर्थिक संघर्ष उनकी कविता और कहानी साहित्य में झलकता है। उदय प्रकाश एक पढाकू लेखक है, उनमें रोमानी प्रखरता है, वह असामान्य का सामान्य दृष्टा हैं और बेहद ईमानदार है। बचपन में माता-पिता की असमय मृत्यु के कारण अकेले पड़े उदय प्रकाश बौद्ध-दर्शन और लामाओं की ओर आकर्षित हुए थे। साथ ही उनपर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर और महात्मा ज्योतिबा फुले के सामाजिक एवं शैक्षिक विचारों का गहरा प्रभाव रहा है। उन्होंने अपने विद्यार्थी जीवन में 'बाइबल', 'गीता' इन धर्मग्रंथों का अध्ययन किया था जिससे उन्हें प्रेरणा मिली थी। वे महात्मा गांधी और उनके दर्शन पर गहरा विश्वास रखते हैं। उदय प्रकाश पर केदारनाथ सिंह रघुवीर सहाय, विष्णु खरे, धर्मवीर भारती, संजय चतुर्वेदी आदि के कविताओं का प्रभाव हैं। उनका पूरा साहित्य पढने पर पता चलता है कि कबीर, मुक्तिबोध, नागार्जुन, निराला, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, धूमिल आदि का विशेष प्रभाव है।

1.3.3 उदय प्रकाश का कृतित्व :

हिंदी साहित्य जगत् में उदय प्रकाश साहित्य प्रतिबद्धता के लिए समर्पित रचनाकार के रूप में पहचाने जाते हैं। कहानीकार उदय प्रकाश जी का साहित्य संसार व्यापक है। उनके लेखन की शुरुआत कविताओं से की है। माता-पिता दोनों में साहित्यिक अभिरूचि थी। इसकारण उनके घर पर विभिन्न साहित्यिक प्रत्रिकाएं आती थी। बुआ आल्हा गीत एवं भजन गाती थी इसकारण बचपन में ही उदय जी पर लेखन के संस्कार हुए थे। अपने आस-पास के परिवेश एवं उसकी घटनाओं का वे बहुत ही संवेदनशीलता से निरीक्षण करते हैं। इससे प्राप्त हुए अनुभवों को वे अपनी विविध रचनाओं के माध्यम से अद्भूत प्रतिभा के साथ पाठकों के सामने साकार करते हैं। उदय प्रकाश जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उन्होंने हिंदी साहित्य की कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, अनुवाद, फिल्म पटकथा लेखन, माध्यमों के लिए लेखन आदि

विधाओं में अपनी विलक्षण प्रतिभा को दर्शाया है। संवेदनशीलता, दलितों के प्रति आस्था, प्रकृति के प्रति प्रेम, मानव जीवन के प्रति कृतज्ञता का भाव, समाज की विसंगतियों पर मार्मिक टिप्पणी, समाज के कुरूप चेहरे को उजागर करने का बेबाकीपन, भाषा की लयता एवं भावप्रवणता आदि उनके लेखन की विशेषताएं मानी जाती हैं। उनके रचना संसार का संक्षिप्त सूचनात्मक परिचय इसप्रकार है–

* **कविता संग्रह :**

1. 'सुनो कारीगर' (1980 ई.)
2. 'अबूतर–कबूतर' (1984 ई.)
3. 'रात में हारमोनियम' (1998 ई.)
4. 'एक भाषा हुआ करती है।' (2008 ई.)
5. 'कवि ने कहा' (2008 ई.)

* **कहानी संग्रह :**

1. 'दरियायी घोड़ा' (1982 ई.)
2. 'तिरिछ' (1990 ई.)
3. 'और अंत में प्रार्थना' (1994 ई.)
4. 'पॉल गोमरा का स्कूटर' (1997 ई.)
5. 'पीली छतरीवाली लड़की' (2001 ई.)
6. 'दत्तात्रेय के दुःख' (2002 ई.)
7. 'अरेबा–परेबा' (2006 ई.)
8. 'मोहनदास' (2006 ई.)
9. 'मैंगोसिल' (2006 ई.)
10. 'चीनी बाबा' (2006 ई.)

* **निबंध और आलोचना :**

1. 'ईश्वर की आँख' (1999 ई.)
2. 'अपनी उनकी बात' (2008 ई.)
3. 'नयी सदी का पंचतंत्र' (2008 ई.)

* **अनुवाद :**

1. 'कला अनुवाद' (1982 ई.)
2. 'अमृतसर : इंदिरा गांधी की आखरी लढाई' (1985 ई.)

3. ‘रोम्याँ रोलाँ का भारत’ (1986 ई.)

4. ‘लाल घास पर नीले घोड़े’ (1988 ई.)

5. ‘एक पुरुष देढ पुरुष’

✻ **फिल्म और पत्रकारिता :**

1. ‘धर्मवीर भारती’ (1999 ई.)

2. ‘विजयदान देथा’ (2000 ई.)

3. ‘भारतेंदु हरिश्चंद्र’ (2008 ई.)

4. ‘रामविलास शर्मा’ (ई.) ।

✻ **पुरस्कार :**

उदय प्रकाश जी को साहित्य, पत्रकारिता और सांस्कृतिक विभाग में उल्लेखनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। सन् 1974 ई. में प्रकाश सागर विश्वविद्यालय-वाराणसी में प्रथम स्थान हासिल करने के उपलक्ष्य में उन्हें ‘स्वर्णलब्ध’ उपाधि और ‘अशोक वाजपेयी’ सम्मान से पुरस्कृत किया गया। सन् 1980 ई. को साहित्य के लिए ‘भारत क्षण अग्रवाल’ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके प्रथम कहानी संग्रह ‘दरियायी घोड़ा’ को ‘ओमप्रकाश साहित्य सम्मान’ मिला है। सन् 1990 ई. में उनके ‘तिरिछ’ इस कहानी संग्रह को ‘श्रीकांत वर्मा’ पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। मध्यप्रदेश साहित्य परिषद द्वारा उनके ‘.और अंत में प्रार्थना’ कहानी के लिए ‘राष्ट्रीय सम्मान- सन् 1996’ ई. प्राप्त हुआ है। सन् 1998 ई. नई दिल्ली में आयोजित कार्यक्रम में उदय प्रकाश को ‘पत्रकारिता’ के लिए ‘रामकृष्ण जयदयाल सद्भावना सम्मान’ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। भारत सरकार के भाषा विभाग की ओर से अक्तूबर-1998 में उत्कृष्ठ कार्य करने पर ‘सिनीयर फेलोशिप’ पुरस्कार से सम्मानित किया है। इसके साथ ही हिंदी अकादमी दिल्ली का ‘साहित्यकार सम्मान’-1999 ई., ‘पहल सम्मान-2003’, ‘कथाक्रम सम्मान-2005’, ‘पुश्किन सम्मान-2007 ई.’, ‘द्विजदेव सम्मान-2008 ई.’, ‘वनमाली सम्मान-2008’, ‘सार्क साहित्य पुरस्कार-2008’ और जून 2010 ई. में उनकी चर्चित कहानी ‘मोहन दास’ को ‘साहित्य अकादेमी’ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

1.3.4 कहानीकार उदय प्रकाश :

उदय प्रकाश जी ने कविताओं से अपने साहित्य लेखन की शुरुआती की लेकिन हिंदी साहित्य जगत् में वे एक श्रेष्ठ कहानीकार के रूप में मशहूर है। उनकी कहानियाँ आम आदमी के जीवन के यथार्थ जीवन से जुड़ी हुई है। सामाजिक विसंगतियों में फँसे आम आदमी के जीवन को वे बड़ी संवेदना के साथ उजागर करते हैं। मनुष्य के जीवन की संवेदना को वे बड़ी मार्मिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं जिससे पाठक उनकी नई कहानी की प्रतिक्षा में रहते हैं। उन्होंने अब तक 10 कहानी संग्रह लिखे हैं-1. दरियायी घोड़ा (सन् 1982 ई.), 2. तिरिछ (सन् 1990 ई.), 3. और अंत में प्रार्थना (सन् 1994 ई.), 4. पॉल गोमरा का

स्कूटर (सन् 1997 ई.), 5. पीली छतरीवाली लड़की (सन् 2001 ई.), 6. दत्तात्रेय के दुःख (सन् 2002 ई.), 7. अरेबा-परेबा (सन् 2006 ई.), 8. मोहनदास (लंबी कहानी- सन् 2006 ई.), 9. मैंगोसिल (सन् 2006 ई.), 10. चीनी बाबा (लंबी कहानी- सन् 2006 ई.)। उनकी इन कहानीसंग्रहों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है-

1. **दरियायी घोड़ा (**1982 **ई.) :**

उदय प्रकाश का यह पहला कहानी संग्रह है जो सन् 1982 ई. में प्रकाशित हुआ था। उनके इस पहले ही कहानी संग्रह को सन् 1984 ई. का 'ओमप्रकाश सम्मान' प्राप्त हुआ है। इस कहानी संग्रह में 'मूँगा, धागा और आम का बौर', 'दरियायी घोड़ा', 'मौसाजी', 'ज्ञ, जेड़, अलिफ, जगतपती और कर्फ्यू', 'पुतला', 'दद्दू तिवारी: गणनाधिकारी' और 'टेपचू' ये सात कहानियाँ शामिल है। 'मूँगा, धागा और आम का बौर' यह कहानी माँ का साया न होने के बाद परिवार की जो स्थिति बनती है? उसे बताती है। उदय प्रकाश की खुद के जीवन की अनुभूति का यथार्थ अंकन इस कहानी में है। 'दरियायी घोड़ा' कहानी में दादाजी (पिताजी) की यादों का वर्णन किया है। 'ज्ञ, जेड़, अलिफ, जगतपती और कर्फ्यू' मनुष्य के समकालीन जीवन की विभिन्न समस्याओं का उल्लेख मिलता है। 'पुतला' कहानी में चौधरी परिवार की प्रतिष्ठा और उनके मुकदमे बाजी का वर्ण्य विषय बनाय गया है। 'टेपचू' आम आदमी की भूख की समस्या को रेखांकित करनेवाली कहानी है। मजदूरों का प्रतिनिधि होने वाले टेपचू के जरिए उदय प्रकाश ने मजूदरों की दुःख एवं पीड़ा को इसमें व्यक्त किया है। स्पष्ट है इस कहानी-संग्रह में उन्होंने परिवार, समाज और आम आदमी के जीवन यथार्थ को उद्घाटित किया है।

2. **तिरिछ (सन्** 1987 **ई.) :**

'तिरिछ' यह उदय प्रकाश का दूसरा कहानी संग्रह है, जो सन् 1987 ई. सन् को प्रकाशित हुआ । इस कहानी संग्रह को भी सन् 1990 ई. में 'श्रीकांत वर्मा' पुरस्कार मिला है। इस कहानी संग्रह में 'नेलकटर', 'डिबिया', 'अपराध', 'तिररिछ', 'छप्पन तोले का करधन', 'हिंदुस्तानी इवान दानिसोविच की जिंदगी का एक दिन', 'राम सजीवन की प्रेम कथा', 'दद्दू तिवारी : गणनाधिकारी' और 'हीरालाल का भूत' यह नौ कहानियाँ संकलित हैं। इस में तीन पत्रों का संकलन भी संलग्न है। विवेच्य कहानी संग्रह की 'नेलकटर', 'डिबिया', 'अपराध' यह तीन आत्म कहानियाँ हैं जो लेखक की माताजी, भाई और परिवार के लोगों की यादों को उजागर करती है। 'छप्पन तोले का करधन' इस कहानी में वृद्धावस्था का यथार्थ वर्णन किया गया है। 'राम सजीवन की प्रेमकथा' हिंदी के मशहूर रचनाकार ज्ञानेंद्र पांडे के जीवन पर आधारित है। 'हीरालाल का भूत' कहानी में आम आदमी के दर्दभरे जीवन की दास्ताँ को स्पष्ट किया है।

3. **और अंत में प्रार्थना (सन्** 1994 **ई.) :**

उदय प्रकाश का तीसरा कहानी संग्रह है, 'और अंत में प्रार्थना'। यह कहानी संग्रह सन् 1994 ई. में प्रकाशित हुआ जिसे सन् 1996 ई. में भोपाल का 'गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान' प्राप्त हुआ था। यह

कहानी संग्रह आत्मकथाएं, छोटे-छोटे किस्से और दो कहानियाँ ऐसे तीन भागों में विभाजित है। आत्मकथा इस भाग में 'फिल्म', 'सहायक', 'खंडित स्त्रियाँ, नेहरूजी और अस्ताचल' तथा 'दोपहर' आदि आते हैं। छोटे-छोटे किस्सों में सिर, दीवार, गंगू, नरक, नौकरी, आचार्य की कराह, सायरन, सही उत्तर, डर, घर, चित्र, शांति, अभिनय आदि हैं। तो दो कहानियों में 'थर्ड डिग्री' तथा 'और अंत में प्रार्थना' शामिल है। शीर्षक कहानी 'और अंत में प्रार्थना' में चिकित्सा क्षेत्र में फैले भ्रष्टाचार को डॉ. मिश्रा इस पात्र द्वारा उजागर किया गया है।

4. **पॉल गोमरा का स्कूटर (सन् 1997 ई.) :**

उदय प्रकाश लिखित 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी संग्रह सन् 1997 ई. में प्रकाशित हुअ है। इसमें चार कहानियाँ संकलित है-'छतरियाँ', 'पॉल गोमरा का स्कूटर', 'भाई का सत्याग्रह' और 'वॉरेन हेस्टिंग्ज का साँड'। 'छतरियाँ' कहानी में नायक-नायिका के प्रेम एवं प्रकृति का मनोहरी चित्रण किया गया है। 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी आधुनिक मनुष्य के यांत्रिक एवं बिकाऊ बनने की कथा है। नायक के वर्तमान जीवन के संकटों के जूझने के वर्णन के साथ इसमें आर्थिक उदारीकरण को भी कहानीकार ने बखूबी चित्रित किया है। 'वॉरेन हेस्टिंग्ज का साँड' कहानी में उदय जी ने भारतीय सांस्कृतिक परंपरा में गाय के महत्त्व को बताया है। कथाकार ने भारत की संस्कृति में गाय के पूजनीय होने की बात को विदेशों तक इस कहानी द्वारा पहुँचाया है।

5. **पीली छतरी वाली लड़की (सन् 2001 ई.) :**

उदय प्रकाश की 'पीली छतरी वाली लड़की' यह एक लंबी कहानी है जो वर्ष 2001 में प्रकाशित हुई है। यह कहानी हिंदी जगत् बहुत ही प्रसिद्ध हुई है। यह कहानी वर्तमान सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ वर्णन करती है। पूँजीवादी व्यवस्था में सामाजिक भूमिका में आए बदलाव और खोखलेपन को यह कहानी बखूबी चित्रित करती है। कहानी की नायिका अंजली ब्राह्मण है जबकि नायक राहुल हीन जाति का है। अंतरजातीय प्रेमसंबंधों को लेकर समाज की खोखली भूमिका को कहानी बया करती है। साथ ही इसमें विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था में फैले भाई-भतीजावाद एवं जातिवादी मानसिकता को भी कहानीकार ने बेनकाब किया है। अंतरजातीय प्रेम संबंध का वर्तमान समय के यथार्थ एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के बाजारवादी मानसिकता को भी यह कहानी उजागर करती है।

6. **दत्तात्रेय के दुःख (सन् 2002 ई.) :**

उदय प्रकाश का छठा कहानी संग्रह 'दत्तात्रेय के दुःख' वर्ष 2002 ई. में प्रकाशित हुआ है। विवेच्य कहानी संग्रह में 18 कहानियाँ संकलित हैं। इसमें 'दत्तात्रेय के दुःख', 'इतिहास और समाजशास्त्र', 'असत्य का भौतिक प्रमाण', 'हत्या', 'दिल्ली', 'मार्क्स का वाक्य', 'पूँछ में पटाखा', 'उत्तर आधुनिकता', 'उपभोक्तावाद', 'विनायक का अकेलापन', 'मिलना-जुलना', 'खबर', 'कलम', 'श्रीमान भाववादी', 'आचार्य की रज़ाई', 'दिल्ली की दीवार', 'साईकिल' और 'अरेबा-परेबा' आदि कहानियाँ शामिल हैं।

'दत्तात्रेय के दु:ख' इस शीर्षक कहानी में मनुष्य के दु:ख दास्ता को बयाँ किया है। दु:ख की व्यापकता को लेखक ने बहुत ही मार्मिक तरीके से उद्घाटित किया है। 'इतिहास और समाजशास्त्र' कहानी में कहानीकार ने इतिहास और समाजशास्त्र विषय एक-दूसरे से कैसे अलग है? यह दिखाया है। 'हत्या' इस कहानी में किव्दंती के द्वारा मोहम्मद रफी का किस्सा स्पष्ट किया गया है। 'उत्तर-आधुनिकता' और 'उपभोक्तावाद' कहानी में तीसरी दुनिया के मनुष्य की स्वार्थलिप्सा, भौतिकता के पीछे उसकी अंधी दौड़ और उसके अंत को बखूबी दर्शाया है। 'आचार्य की रज़ाई' कहानी में वर्तमान शिक्षा क्षेत्र की विसंगतियों पर प्रहार किया गया है। आचार्य की कृपा से कैसे उपाधियाँ हासिल की जाती है, इसे उदय प्रकाश ने दिखाया है। 'साईकिल' कहानी में कानून के क्षेत्र में सरकारी कामों दिरंगाई को उजागर किया है। इस कहानी संग्रह की सभी कहानियाँ वर्तमान समाज में फैली बुराईयाँ और विसंगतियों पर कड़ा प्रहार करती है।

7. **अरेबा-परेबा** (**सन्** 2006 ई.) :

विवेच्य कहानी संग्रह वर्ष 2006 ई. को प्रकाशित हुआ है। मूलत: इसकी अधिकांश कहानियाँ उपरोक्त कहानी-संग्रहों में शामिल है। अंग्रेजी की विख्यात कथाकार नमिता गोखले की प्रेरणा एवं प्रभाव के कारण उन्होंने अपनी चुनिंदा कहानियों को इसमें संकलित किया है। सुश्री गोखले जी ने 'पेंगुइन इंडिया' इस संस्थान द्वारा इन कहानियों का अंग्रेजी में अनुवाद करके उसे विश्वमंच तक पहुँचाया है। इस कहानी संग्रह में 'नेलकटर', 'अपराध', सहायक', 'नौकरी', 'छतरियाँ', 'छप्पन तोले का करधन', 'अरेबा-परेबा', 'पॉल गोमरा का स्कूटर' तथा 'और अंत में प्रार्थना' यह कहानियाँ संकलित है।

8. **मोहनदास** (**2006 ई.) :**

'मोहन दास' उनकी लंबी कहानी है, जो हिंदी की विख्यात साहित्य पत्रिका 'हंस' में अगस्त, सन् 2005 में प्रकाशित हुई थी। इसका विधिवत प्रकाशन वर्ष सन् 2006 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। उदय प्रकाश की इस महाकाव्यात्मक कहानी को वर्ष सन् 2010 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया जा चुका है। सिर्फ एक कहानी के लिए किसी रचनाकार को साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की हिंदी साहित्य जगत् की यह पहली घटना है। 'मोहन दास' इस लंबी कहानी का अब तक नौ से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ प्रमुख विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। विवेच्य कहानी पर अब तक सौ से अधिक नाट्य मंचन हुए हैं और एक फीचर फिल्म भी बनाई गई है। 'मोहन दास' यह कहानी बेरोजगार युवक मोहन दास की जीवन कथा है। कहानीकार उदय प्रकाश जी ने इस कहानी के नायक मोहन दास एवं उसके परिवार के सभी सदस्यों के नाम महात्मा गांधी जी एवं उनके परिवार के तर्ज पर रख दिए हैं। कहानी के अनेक पात्रों के नाम हिंदी साहित्य जगत् की चर्चित हस्तियों के नाम पर रखकर उदय प्रकाश जी ने मिथकीय चेतना का सुंदर प्रयोग इस कहानी में किया है। कहानी का नायक मोहन दास निम्न जाति का एक पढ़ा-लिखा होनहार ग्रामीण युवक है। लेकिन अर्थाभाव, भ्रष्टाचार के चलते वह बेरोजगार रहता है और नारकीय जीवन जीवन के लिए मजबूर हो जाता है। लेखक उदय प्रकाश ने 'मोहन दास' के माध्यम से देश में पनप रही जातिवाद,

आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी जैसी समकालीन समस्याओं को यथार्थ के साथ स्पष्ट किया है।

9. **मैंगोसिल (सन्** 2006 **ई.) :**

कहानीकार उदय प्रकाश लिखित 'मैंगोसिल' कहानी-संग्रह का प्रकाशन सन् 2006 ई. में हुआ है। इसमें 'तिरिछ', 'दिल्ली की दीवार' और 'मैंगोलिस' यह तीन लंबी कहानियाँ शामिल हैं। 'तिरिछ' यह कहानी तत्कालीन समाज व्यस्था को वास्तविकता के साथ उजागर करती है। 'मैंगोसिल' कहानी में कहानीकार उदय प्रकाश जी ने नारी मन की व्यथा को उजागर किया है। कहानी की नायिका शोभा के द्वारा नारी जीवन की विविध समस्याओं को उद्घाटित किया गया है। इसमें मुख्य रूप से अनमेल विवाह की समस्या को उजागर किया गया है।

❊ **उदय प्रकाश की कहानियों की विशेषता :**

1. उदय प्रकाश एक सफल कहानीकार है और उनकी लगभग सभी कहानियों में सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य किया गया है।
2. उदय प्रकाश की कहानियाँ समाज की कुरीतियाँ, राजनीति का अवमूल्यन, जातिवाद और वर्तमान स्थिति पर करारा प्रहार करती है।
3. उदय प्रकाश की संवेदनशीलता उनकी हर कहानी में झलकती है। उन्होंने समाज में जो अनुभव किया उसे वे बेबाकी एवं नीड़रता के साथ पाठकों के सामने उजागर करते हैं।
4. उनकी हर कहानियों में आम आदमी की पीड़ा का चित्रण आता है। उनकी कहानियाँ आम आदमी के जीवन का यथार्थ एवं समाज की घिनौनी मानसिकता को साहस के साथ पेश करती है।
5. उदय प्रकाश की कहानियों की भाषा संवेदनशील और मार्मिक है। उन्होंने यथार्थ लेखन की एक नई शैली निर्माण की है।
6. उनकी कहानियाँ खुली निगाहों से सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक षड्यंत्रों के बीच फँसे आम आदमी के हाशिए की स्थिति को पाठकों को महसूस कराती है।
7. उनकी कहानियों भूमंडलीकरण से उपजी उपभोक्ता संस्कृति और बाज़ारवाद के साथ उत्तर आधुनिकतावाद से प्रभावित जनजीवन की त्रासदी भी दिखाई देती है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

1. 'मोहनदास' इस लंबी कहानी के लेखक .... है।

   (अ) प्रेमचंद (ब) उदय प्रकाश (क) कमलेश्वर (ड) सुरेंद्र वर्मा

2. कहानीकार उदय प्रकाश का जन्म............ को हुआ।

   (अ) 1 जनवरी, 1952 ई. (ब) 10 जनवरी, 1953 ई.

(क) 11 जनवरी, 1954 ई. (ड) 21 जनवरी, 1955 ई.

3. कहानीकार उदय प्रकाश का जन्म मध्यप्रदेश के शहडोह जिले के .... गाँव में हुआ।

(अ) रामपुर (ब) पालनपुर (क) सीतापुर (ड) नागपुर

4. उदय प्रकाश की माता का नाम .... है।

(अ) बिमलादेवी (ब) गंगादेवी (क) सरलादेवी (ड) मंगलादेवी

5. उदय प्रकाश के पिताजी का नाम .... है।

(अ) रामप्रसाद सिंह (ब) श्यामप्रसाद सिंह (क) प्रेमकुमार सिंह (ड) मंगलप्रसाद सिंह

6. उदय प्रकाश के माता-पिता की मृत्यु .... बीमारी से हुई।

(अ) पेचीस (ब) हृदयघात (क) तपेदीक (ड) कैन्सर

7. उदय प्रकाश के पैत्तृक गाँव सीतापुर में .... जनजाति की बस्ती अधिक है।

(अ) आदिवासी (ब) मवेशी (क) धनगर (ड) दलित

8. विद्यार्थी जीवन में उदय प्रकाश .... संगठन से जुड़े हुए थे।

(अ) मार्क्सवादी संगठन (ब) साम्यवादी विद्यार्थी (क) छात्रभारती (ड) राष्ट्र सेवा दल

9. उदय प्रकाश जी ने .... से उच्च शिक्षा प्राप्त की।

(अ) सागर विश्वविद्यालय (ब) नेहरू विश्वविद्यालय

(क) नालंदा विश्वविद्यालय (ड) मणिपुर विश्वविद्यालय

10. उदय प्रकाश जी ने .... विषय में स्नातक और .... विषय में स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त की है।

(अ) फ्रेंच, हिंदी (ब) विज्ञान, हिंदी (क) अंग्रेजी, विज्ञान (ड) विज्ञान, अंग्रेजी

11. उदय प्रकाश जी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के .... केंद्र में चार वर्ष अध्यापन का कार्य किया है।

(अ) अरूणाचल प्रदेश (ब) भोपाल (क) मणिपुर (ड) शिमला

12. उदय प्रकाश की पत्नी का नाम .... है।

(अ) कुमकुम सिंह (ब) पायल सिंह (क) रोशनी सिंह (ड) दुर्गा सिंह

13. उदय प्रकाश की पत्नी कुमकुम सिंह ने .... विषय में एम.ए. की डिग्री प्राप्त की है।

(अ) हिंदी और विज्ञान (ब) फ्रेंच और स्पेनिश(क) डच और रशियन(ड) पुर्तगली और डच

14. कुमकुम सिंह .... के रूप में कार्यरत हैं।

(अ) प्राध्यापिका (ब) डॉक्टर (क) अध्यापिका (ड) इंजीनियर

15. उदय सिंह के बेटों का नाम............ है।

(अ) राम और श्याम (ब) अनिल और पवन

(क) विकास और राम (ड) सिद्धार्थ और शांतनू

16. उदय प्रकाश ने .... कविता संग्रह लिखे हैं।

(अ) पाँच (ब) छह (क) सात (ड) आठ

17. उदय प्रकाश के पहले कविता संग्रह का नाम .... है।

(अ) कवि ने कहा (ब) सुनो कारीगर (क) बूतर-कबूतर (ड) रात में हारमोनियम

18. उदय प्रकाश ने .... कहानी संग्रह लिखे हैं।

(अ) दस (ब) बारह (क) आठ (ड) नौ

19. उदय प्रकाश के पहले कहानी संग्रह का नाम .... है।

(अ) तिरिछ (ब) दत्तात्रेय के दु:ख (क) दरियायी घोड़ा (ड) पॉल गोमरा का स्कूटर

20. उदय प्रकाश के प्रथम कहानी संग्रह 'दरियायी घोड़ा' को .... मिला है।

(अ) सरस्वती सम्मान (ब) ओमप्रकाश साहित्य सम्मान

(क) साहित्य अकादमी (ड) वाजपेयी सम्मान

21. उदय प्रकाश लिखित .... इस कहानी संग्रह को 'श्रीकांत वर्मा' पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया

(अ) तिरिछ (ब) पॉल गोमरा का स्कूटर

(क) दरियायी घोड़ा (ड) दत्तात्रेय के दु:ख

22. उदय प्रकाश की चर्चित लंबी कहानी 'मोहन दास' को .... पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

(अ) सरस्वती सम्मान (ब) साहित्य अकादेमी

(क) मंगलाप्रसाद पारितोषिक (ड) बिड़ला सम्मान

23. उदय प्रकाश के पहले कहानी संग्रह 'दरियायी घोड़ा' में .... कहानियाँ संकलित है।

(अ) 7 (ब) 8 (क) 9 (ड) 10

24. उदय प्रकाश के 'दरियायी घोड़ा'इस शीर्षक कहानी में............ की यादों का वर्णन है।

(अ) माँ (ब) भाई (क) पत्नी (ड) दादाजी (पिताजी)

25. उदय प्रकाश के 'टेपूची'इस कहानी में .... का वर्णन है।

(अ) नारी समस्या (ब) दलित शोषण (क) आम आदमी की भूख (ड) आतंकवाद

26. उदय प्रकाश के दूसरे कहानी संग्रह 'तिरिछ' में............ कहानियाँ संकलित है।

(अ) 7 (ब) 8 (क) 9 (ड) 10

27. उदय प्रकाश के 'छप्पन तोले का करधन' इस कहानी में .... का यथार्थ वर्णन किया गया है

(अ) युवावस्था (ब) बाल्यावस्था (क) किशोरावस्था (ड) वृद्धावस्था

28. उदय प्रकाश लिखित 'राम सजीवन की प्रेमकथा' यह कहानी हिंदी के मशहूर रचनाकार .... के जीवन पर आधारित है।

(अ) निर्मल वर्मा (ब) ज्ञानेंद्र पांडे (क) सुरेंद्र वर्मा (ड) कमलेश्वर

29. उदय प्रकाश के तिसरे कहानी 'और अंत में प्रार्थना' को भोपाल का .... पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

(अ) गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान (ब) साहित्य अकादेमी

(क) श्रीकांत वर्मा सम्मान (ड) सरस्वती सम्मान

30. उदय प्रकाश की 'और अंत में प्रार्थना' इस शीर्षक कहानी में .... में फैले भ्रष्टाचार को डॉ. मिश्रा इस पात्र द्वारा उजागर किया गया है।

(अ) शिक्षा क्षेत्र (ब) प्रशासन (क) चिकित्सा क्षेत्र (ड) न्याय क्षेत्र

31. उदय प्रकाश लिखित 'पॉल गोमरा का स्कूटर' कहानी संग्रह ‸कहानियाँ संकलित है।

(अ) 4 (ब) 5 (क) 6 (ड) 7

32. उदय प्रकाश के .... कहानी में भारतीय सांस्कृति परंपरा में गाय के महत्त्व को बताया है।

(अ) तिरिछ (ब) दरियायी घोड़ा (क) टेपचू (ड) वॉरेन हेस्टिंग्ज का साँड

33. 'पीली छतरी वाली लड़की' इस एक लंबी कहानी में .... अंतरजातीय प्रेमसंबंध को दर्शाया है।

(अ) अंजली और राहुल (ब) बबीता और राम (क) राशी और राज (ड) वेदिका और दीपक

34. उदय प्रकाश के 'दत्तात्रेय के दु:ख' कहानी संग्रह में .... कहानियाँ संकलित हैं।

(अ) 12 (ब) 15 (क) 18 (ड) 20

35. उदय प्रकाश के 'दत्तात्रेय के दु:ख' इस शीर्षक कहानी में मनुष्य के .... की दास्ता को बयाँ किया है।

(अ) दु:ख (ब) सुख (क) कीर्ति (ड) वफादारी

36. उदय प्रकाश के 'अरेबा-परेबा' कहानीसंग्रह में संकलित कहानियों का .... अंग्रेजी में अनुवाद किया है।

(अ) शुभांगी जोशी (ब) नमिता गोखले (क) माधवी सबनीस (ड) सरला देसाई

37. उदय प्रकाश की 'मोहन दास' यह लंबी कहानी बेरोजगार युवक .... की जीवन कथा है।

(अ) रामदास (ब) कृष्णदास (क) मोहन दास (ड) देवदास

38. उदय प्रकाश लिखित 'मैंगोसिल' कहानी-संग्रह में .... लंबी कहानियाँ शामिल है।

(अ) 3 (ब) 4 (क) 5 (ड) 2

39. 'मैंगोसिल' कहानी में उदय प्रकाश जी ने .... की व्यथा को उजागर किया है।

(अ) बूढे मन (ब) नारी मन (क) माँ के मन (ड) पिता के मन

40. 'मैंगोसिल' कहानी में मुख्य रूप से .... की समस्या को दर्शाया गया है।

(अ) बेरोजगारी (ब) दहशातवाद (क) अनमेल विवाह (ड) वृद्धावस्था

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

- **भूमंडलीकरण** – एक प्रक्रिया है जिसमें दुनिया के अधिकांश देशों और संस्थाओं के बीच आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और तकनीकी संबंधों में समन्वय बढाने का प्रयास किया जाता है।
- **बाजारवाद** – लोगों के बीच में चीजें खरीदने और बेचने की प्रक्रिया से पनपी विचारधारा है।
- **उत्तर आधुनिकता** – आधुनिकता के बाद की स्थिति है जो सामाजिक रूपों के आरंभिक या वास्तविक विघटन को संदर्भित करती है।
- **जनजाति** – वह सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पूर्व अस्तित्त्व में था या जो अब भी राज्य के बाहर हैं।
- **जनपद** – राज्य विशेष का ग्रामीण क्षेत्र
- **सीतापुर** – मध्यप्रदेश के शहडोह जिले में आनेवाला एक गाँव है जो आज अनूपपुर के नाम से पहचाना जाता है।
- **धनलीप्सा** – धन के प्रति लालसा
- **गुटबाजिता** – गुट बनाकर अपने ही गुट के हितों की रक्षा के लिए प्रयास करना।
- **तिरिछ** – एक विषैला प्राणी है। मानव की हिंसात्मक पाश्विक प्रवृत्तियों का प्रतीक है।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर :

1. (ब) उदय प्रकाश
2. (अ) 1 जनवरी, सन् 1952 ई.
3. (क) सीतापुर
4. (ब) गंगादेवी
5. (क) प्रेमकुमार सिंह
6. (ड) कैन्सर
7. (अ) आदिवासी
8. (ब) साम्यवादी विद्यार्थी
9. (अ) सागर विश्वविद्यालय
10. (ब) विज्ञान, हिंदी
11. (क) मणिपुर
12. (अ) कुमकुम सिंह
13. (ब) फ्रेंच और स्पेनिश
14. (क) अध्यापिका

15. (ड) सिद्धार्थ और शांतनू
16. (अ) पाँच
17. (ब) सुनो कारीगर
18. (अ) दस
19. (क) दरियायी घोड़ा
20. (ब)ओमप्रकाश साहित्य सम्मान
21. (अ) तिरिछ
22. (ब) साहित्य अकादेमी
23. (अ) 7
24. (ड) दादाजी (पिताजी)
25. (क) आम आदमी की भूख
26. (क) 9
27. (ड) वृद्धावस्था
28. (ब) ज्ञानेंद्र पांडे
29. (अ) गजानन माधव मुक्तिबोध सम्मान
30. (क) चिकित्सा क्षेत्र
31. (अ) 4
32. (ड) वॉरेन हेस्टिंग्ज का साँड
33. (अ) अंजली और राहुल
34. (क) 18
35. (अ) दु:ख
36. (ब) नमिता गोखले
37. (क) मोहन दास
38. (अ) 3
39. (ब) नारी मन
40. (क) अनमेल विवाह

1.7 सारांश :

1. उदय प्रकाश कवि, कथाकार, पत्रकार, अनुवादक, समीक्षक और फिल्मकार के रूप में प्रसिद्ध है। उदय प्रकाश समकालीन परिस्थितियों का चित्रण यथार्थता के साथ करते हैं। उदय प्रकाश जनवादी विश्वदृष्टि रखनेवाले कहानीकार हैं। इनकी कई कहानियों के नाट्य रूपांतर और सफल मंचन हुए हैं। उदय प्रकाश की कुछ कृतियों के अंग्रेजी, जर्मन, जपानी एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय भाषाओं में अनुवाद भी हुए हैं।

2. उदय प्रकाश का जन्म दि. 1 जनवरी, सन् 1952 ई. में मध्यप्रदेश के शहडोहल जिले के सीतापुर गाँव में हुआ था। वे 12 साल के थे तब उनकी माता गंगादेवी की कैन्सर से मृत्यु हुई। माँ की मृत्यु का गहरा असर उनके पिता जी प्रेमकुमार सिंह पर हुआ और वे शराब पीने लगे। इसी कारण सन् 1969 ई. में उन्हें भी कैन्सर हुआ। उदय प्रकाश का विवाह दि. 9 जुलाई, सन् 1977 ई. को गोरखपुर निवासी कुमकुम सिंह के साथ हुआ। कुमकुम जी दिल्ली के ही एक विद्यालय में कार्यरत हैं। उनके दो पुत्र सिद्धार्थ और शांतनू उच्च पदों पर कार्यरत है।

3. उदय जी ने विज्ञान में स्नातक और हिंदी विषय में स्नातकोत्तर डिग्री प्राप्त की। सन 1975 के बाद वे दिल्ली चले गए। उदय जी ने जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय और इसके मणिपुर केंद्र में लगभग चार वर्ष तक अध्यापन का काम किया। इसके बाद वे प्रेस मीडिया में पत्रकार, उपसंपादक, वरिष्ठ संपादक और स्वतंत्र लेखन में कार्यरत है।

4. उदय प्रकाश जी का बाह्य व्यक्तित्त्व बहुत ही आकर्षक है। हिंदी साहित्य जगत् में उदय प्रकाश एक ईमानदार, संवेदनशील, मैत्री निर्वाहक, मानवीय सामाजिक चिंताओं को प्रकट करनेवाले साहित्यकार हैं। उनपर धर्मग्रंथों की मानवतावादी विचारधारा, गांधी दर्शन, बौद्ध दर्शन फूले-आंबेड़कर की विचारधारा का गहरा प्रभाव है।

5. उदय प्रकाश पर केदारनाथ सिंह रघुवीर सहाय, विष्णु खरे, धर्मवीर भारती, संजय चतुर्वेदी आदि के कविताओं का प्रभाव हैं। उनका पूरा साहित्य पढने पर पता चलता है कि कबीर, मुक्तिबोध, नागार्जुन, निराला, रेणु, श्रीलाल शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, धूमिल आदि का विशेष प्रभाव है।

6. उदय प्रकाश जी ने अबतक 10 कहानी संग्रह लिखे हैं-1. दरियायी घोड़ा (सन् 1982 ई.), 2. तिरिछ (सन् 1990 ई.), 3. और अंत में प्रार्थना (सन् 1994 ई.), 4. पॉल गोमरा का स्कूटर (सन् 1997 ई.), 5.पीली छतरीवाली लड़की (सन् 2001 ई.), 6. दत्तात्रेय के दुःख (सन् 2002 ई.), 7. अरेबा-परेबा (सन् 2006 ई.), 8. मोहनदास (लंबी कहानी- सन् 2006 ई.), 9. मैंगोसिल (सन् 2006 ई.), 10. चीनी बाबा (लंबी कहानी- सन् 2006 ई.)।

7. उदय प्रकाश जी को हिंदी अकादमी दिल्ली का 'साहित्यकार सम्मान'- सन् 1999 ई., 'पहल सम्मान- सन् 2003', 'कथाक्रम सम्मान- सन् 2005', 'पुश्किन सम्मान- सन् 2007 ई.', 'द्विजदेव सम्मान- सन् 2008 ई.', 'वनमाली सम्मान- सन् 2008', 'सार्क साहित्य पुरस्कार- सन् 2008' और जून 2010 में उनकी चर्चित कहानी 'मोहन दास' को 'साहित्य अकादेमी' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

8. उदय प्रकाश एक सफल कहानीकार है और उनकी लगभग सभी कहानियों में सामाजिक विसंगतियों पर भाष्य किया गया है। उदय प्रकाश की कहानियाँ समाज की कुरीतियाँ, राजनीति का अवमूल्यन, जातिवाद और वर्तमान स्थिति पर करारा प्रहार करती है।

9. उदय प्रकाश की संवेदनशीलता उनकी हर कहानी में झलकती है। उन्होंने समाज में जो अनुभव किया उसे वे बेबाकी एवं नीड़रता के साथ पाठकों के सामने उजागर करते हैं। उनकी हर कहानियों में आम आदमी की पीड़ा का चित्रण आता है। उनकी कहानियाँ आम आदमी के जीवन का यथार्थ एवं समाज की घिनौनी मानसिकता को साहस के साथ पेश करती है।

10. उदय प्रकाश की कहानियों की भाषा संवेदनशील और मार्मिक है। उन्होंने यथार्थ लेखन की एक नई शैली निर्माण की है। उनकी कहानियाँ खुली निगाहों से सामाजिक, राजनीतिक, साहित्यिक षड्यंत्रों के बीच फँसे आम आदमी के हाशिए की स्थिति को पाठकों को महसूस कराती है। उनकी कहानियों भूमंडलीकरण से उपजी उपभोक्ता संस्कृति और बाज़ारवाद के साथ उत्तर आधुनिकतावाद से प्रभावित जनजीवन की त्रासदी भी दिखाई देती है।

1.8 स्वाध्याय :

अ) लघुत्तरी प्रश्न :

1. उदय प्रकाश का जीवन परिचय दीजिए।
2. उदय प्रकाश के व्यक्तित्त्व का परिचय दीजिए।
3. उदय प्रकाश के कृतित्त्व का परिचय दीजिए।
4. उदय प्रकाश के कहानी संग्रहों के नाम लिखिए।
5. उदय प्रकाश के कहानियों की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

ब) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. कहानीकार उदय प्रकाश के व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व को स्पष्ट कीजिए।
2. कहानीकार उदय प्रकाश की कहानी संग्रहों का परिचय देकर उनकी कहानियों की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. उदय प्रकाश की चर्चित कहानियों का संकलन करके कक्षा में गुट बनाकर कहानियों का प्रकट वाचन कीजिए।
2. उदय प्रकाश की बहुचर्चित कहानियों पर कक्षा में नाट्य मंचन कीजिए।
3. उदय प्रकाश के कविता संग्रहों का वाचन कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह, 'उदय प्रकाश कृत 'मोहनदास' : समीक्षात्मक अनुशीलन, चिंतन प्रकाशन-कानपुर, प्र.सं. 2015
2. डॉ. सुरेश पटेल, उत्तर आधुनिकता और उदय प्रकाश का साहित्य, चिंतन प्रकाशन-कानपुर, प्र.सं. 2013
3. उदय प्रकाश, दस प्रतिनिधि कहानियाँ, किताबघर प्रकाशन-नई दिल्ली, प्र.सं. 2011

❑❑❑

इकाई –2
'मोहन दास' : कथावस्तु एवं शीर्षक की सार्थकता

अनुक्रम –

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 'मोहन दास' कहानी की कथावस्तु

2.3.2 'मोहन दास' कहानी : शीर्षक की सार्थकता

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. उदय प्रकाश लिखित 'मोहन दास' इस लंबी कहानी की कथावस्तु से परिचित होंगे।
2. कहानी के नायक मोहनदास के दयनीय एवं अभावग्रस्त जीवन से परिचित होंगे।
3. भारतीय समाज में व्याप्त जातिवाद, आर्थिक विषमता, गरीबी, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी जैसी समस्याओं से परिचित होंगे।
4. 'मोहनदास' लंबी कहानी के स्वरूप एवं उसकी प्रासंगिकता से अवगत होंगे।
5. 'मोहनदास' कहानी के कथ्य के आस्वादन एवं उसकी समीक्षा की क्षमता विकसित करना।

1.2 प्रस्तावना :

भारतीय एवं अंतरराष्ट्रीय साहित्य जगत् में उदय प्रकाश का नाम विशेष उल्लेखनीय है। हिंदी साहित्य जगत में उदय प्रकाश को प्रेमचंद की विरासत को आगे बढ़ाने वाले कहानीकार के रूप में पहचाना जाता है।

उन्होंने कविता, कहानी, निबंध, आलोचना, अनुवाद, पत्रकारिता में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। उनके अब तक पाँच कविता संग्रह, बारह कहानी संग्रह, तीन निबंध एवं आलोचना संग्रह, पाँच अनुवाद संग्रह प्रकाशित हुए हैं। 'मोहन दास' उनकी लंबी कहानी है, जो हिंदी की विख्यात साहित्य पत्रिका 'हंस' में अगस्त, वर्ष 2005 में प्रकाशित हुई थी। इसका विधिवत प्रकाशन वर्ष 2006 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। उदय प्रकाश की इस महाकाव्यात्मक कहानी को वर्ष 2010 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृत किया जा चुका है। सिर्फ एक कहानी के लिए किसी रचनाकार को साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की हिंदी साहित्य जगत् की यह पहली घटना है। 'मोहन दास' इस लंबी कहानी का अब तक नौ से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ प्रमुख विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। विवेच्य कहानी पर अब तक सौ से अधिक नाट्य मंचन हुए हैं और एक फीचर फिल्म भी बनाई गई है। 'मोहन दास' यह कहानी बेरोजगार युवक मोहन दास की जीवन कथा है। कहानीकार उदय प्रकाश जी ने इस कहानी के नायक मोहन दास एवं उसके परिवार के सभी सदस्यों के नाम महात्मा गांधी जी एवं उनके परिवार के तर्ज पर रख दिए हैं। कहानी के अनेक पात्रों के नाम हिंदी साहित्य जगत की चर्चित हस्तियों के नाम पर रखकर उदय प्रकाश जी ने मिथकीय चेतना का सुंदर प्रयोग इस कहानी में किया है। कहानी का नायक मोहन दास निम्न जाति का एक पढ़ा-लिखा होनहार ग्रामीण युवक है। लेकिन अर्थाभाव, भ्रष्टाचार के चलते वह बेरोजगार रहता है और नारकीय जीवन जीवन के लिए मजबूर हो जाता है। लेखक उदय प्रकाश ने 'मोहन दास' के माध्यम से देश में पनप रही जातिवाद, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी जैसी समकालीन समस्याओं को यथार्थ के साथ स्पष्ट किया है। इस इकाई में 'मोहन दास' इस महाकाव्यात्मक कहानी की कथावस्तु एवं उसकी शीर्षक की सार्थकता का विवेचन किया गया है।

2.3 विषय विवेचन :

2.3.1 'मोहन दास' कहानी की कथावस्तु :

'मोहन दास' यह पुरबनरा गाँव में रहने वाले बेरोजगार युवक मोहन दास की दीर्घ कथा है। भले ही यह कहानी है लेकिन इसकी कथावस्तु में उपन्यास की गहराई एवं कथ्य का अनोखा सौंदर्य विद्यमान है। कहानी के बीच-बीच में उदय प्रकाश जी टिप्पणियों के माध्यम से उपस्थित रहते रहकर मोहन दास के जीवन प्रसंगों का देश-दुनिया की समकालीन सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक घटनाओं के साथ ताल-मेल बिठाती है, जिससे कथावस्तु का प्रभाव अधिक बढ़ा है। कहानी में नायक मोहनदास एवं उसके परिवार के सदस्यों के नाम महात्मा गांधी एवं उनके परिवार के सदस्यों के तर्ज पर रखे गए हैं। कहानी में आए अनेक पात्रों के नाम हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों की तर्ज पर रखकर उदय प्रकाश जी ने इस दीर्घ कथा में मिथक का सुंदर प्रयोग किया है।

विवेच्य कहानी की शुरुआत नायक मोहन दास के भय से होती है। मोहन दास की आँखों में यह भय हत्या से कुछ पल पूर्व उस मृतक की ऑखों और चेहरे पर होता है बिलकुल वैसा ही है। मोहन दास काँपती हुई कमजोर आवाज में कहता है- ''काका, मुझे किसी तरह बचा लीजिए! मैं आपके हाथ जोड़ता हूँ!...

बाल बच्चे हैं मेरे! उधर बाप मर रहा है टीबी से!...आप कहें तो मैं आपके साथ चलकर अदालत में हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहन दास नहीं हूँ।''(पृ.10) मोहन दास का यह बयान पाठक में मोहन दास के इस डर के पीछे की सच्चाई को जानने का कौतुहल निर्माण करता है।

मोहन दास विश्वकर्मा पुरबनरा इस गाँव में रहने वाला पैंतीस-सैंतीस आयु का बेरोजगार युवक है। उसका परिवार बंसहर-पलिहा इस अनुसूचित जाति का है। पूरा परिवार कंबीर पंथ में विश्वास रखता है। उसने एम. जी. डिग्री कॉलेज से बी. ए. की शिक्षा प्रथम श्रेणी में प्राप्त की है। वह अपने जाति-बिरादरी का पहला विद्यार्थी था जिसने बी. ए. तक की शिक्षा प्राप्त की है। उसके परिवार में पिता काबा दास, माँ पुतलीबाई, पत्नी कस्तूरीबाई, बेटा देवदास और बेटी शारदा है। उसके पिता काबा दास पिछल सात-आठ वर्ष से टी.बी की बीमारी से ग्रस्त थे और इलाज के अभाव में उनकी यह बीमारी दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। माँ पुतलीबाई, जिसकी आँखें किसी मुफ्त नेत्र शिविर में मोतियाबिंद का ऑपरेशन करने के बाद अंधी हो चुकी हैं और अब उसे चारों ओर सिर्फ अँधेरा ही दिखाई देता है। पत्नी कस्तूरीबाई मानों अपने पति मोहन दास की परछाई है। वह घर का चूल्हा-चौका सँभालते हुए घर चलाने के लिए दूसरों के खेतों में मेहनत-मजूदरी का भी काम करती है। बेटा देवदास आठ साल का था और गाँव की ही प्राथमिक पाठशाला में पढ़ता है। घर की गरीबी के कारण वह स्कूल के बाद गाँव के ही पास 'दुगार ऑटो वर्क्स' में गाड़ियों में हवा भरने, पंचर जोडने और स्कूटर-मोटर साइकिलों के छोटे-मोटे रिपेयर में हेल्पर का काम करता है। इस काम के उसे महीने में सौ रुपये मिलते हैं। अध्यापक बताते थे कि चौथीं कक्षा में; पढ़ाई में देव दास सबसे तेज है। छह साल की शारदा भी गाँव के सरकारी प्राथमिक पाठशाला में दूसरी कक्षा में पढ़ती है। स्कूल के बाद वह ढ़ाई किलोमीटर दूर गाँव बिछिया टोले में रहने वाले बिसनाथ प्रसाद के एक साल के बेटे को सँभालने का काम करती है। वह रात नौ बजे घर लौटती। इसके बदले उसे रात का खाना और तीस रुपया महीना मिलता है। बूढ़े माँ-बाप भी बास की सूपा-चटाई, दरी-कम्बल बुनकर घर-गृहस्थी चलाने में मदद करते हैं। बी. ए. करने के आठ साल बाद भी रिश्वत के लिए पैसे और तगड़ी सिफारिश न होने के कारण मोहन दास बेरोजगार ही है। इसलिए वह गुजारा करने के लिए गाँव में सभी छोटे-मोटे मेहनत-मजदूरी के काम करता रहता है। गाँव वालों ने हमेशा उसे किसी-न-किसी काम में व्यस्त देखा है। कुछ दिन उसने 'स्टार कम्प्यूटर सेंटर' में टाइपिंग, कंपोजिंग और प्रिंट निकालने का भी काम सीखने की कोशिश की लेकिन वह भी अधूरा ही रहा। लेकिन यह सब कुछ वर्षों की बाते हैं लेकिन मोहन दास इन दिनों किसी बड़ी मुसीबत में फँसा है और बार-बार कहता है-''हमारा नाम मोहन दास नहीं है।हम अदालत में हलफनामा देने को तैयार हैं। जिसे बनना हो बन जाये मोहन दास। आप लोग किसी तरह हमें बचा लीजिए!...हम आप सबके हाथ जोड़ते हैं।''(पृ. 13) बिछिया गाँव के नगेंद्रनाथ और विश्वनाथ प्रसाद ने मोहन दास को अपना ही नाम भूलाने के लिए मजबूर कर दिया था।

नगेंद्रनाथ बिछिया गाँव के बड़े किसान और बीमा निगम में बाबूगिरी करते हैं। वे ब्राह्मण जाति के है। उनकी कलेक्टर से लेकर मंत्री तक पहुँच और साख-रसूख है। वे दो बार ग्राम पंचायत के सरपंच ओर एक बार जिला जनपद के उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। विश्वनाथ प्रसाद इनका ही बेटा था जिसे गाँव वाले

'बिसनाथ' के नाम से बुलाते हैं। उसके पीठ-पीछे गाँव वाले कहते हैं- ''असल करैत है, बिसनाथ । गजब का बिसधारी । किसी को फूँक मार दे तो समझो कि टें! बाप नागनाथ तो बेटा साँपनाथ! अगर तुमको देखकर मुस्किया रहा है और गुड़ लपेटकर बोल रहा है, तो बस हुसियार हो जाओ! डँसने की पूरी तैयारी है।''(पृ.14) यह वही बिसनाथ है जहाँ मोहन दास की छोटी लड़की शारदा उसके बच्चे को सँभालने का काम करती है। नगेंद्र नाथ और बिसनाथ द्वारा कहानी में खलनायक का प्रवेश होता है। कहानी पुन: फ्लैशबैक में चली जाती है।

मोहन दास ने बी. ए. करने के बाद पिता काबा दास और माँ पुतली बाई में नई उम्मीद जगी थी। बेटे को अब अच्छी नौकरी लगेगी और उनकी गरीबी दूर होगी। मोहन दास की शादी कटकोना गाँव के बिरंजू सुंदर की बेटी कस्तूबरीबाई से होती है। बी.ए. पढ़ाई के दौरान ही शादी होने के कारण कस्तूरी घर के काम सँभालकर दूसरों के खेतों में मजदूरी करके मोहन दास की पढ़ाई के लिए मदद् करती है। बी. ए. करने वाला मोहन दास अपनी जात-बिरादरी का पहला लड़का था। इसकारण अखबार और कोंचिंग चलाने वालों ने भी उसके फोटो छपवाये थे। मोहन दास ने बी.ए. होने के बाद अपना नाम रोजगार दफ्तर में पंजीकृत किया। वह जहाँ भी नौकरी निकलती वहाँ अर्जियाँ करता था। इसी दौरान उसने पी.एस.सी. की भी जोरदार तैयारी शुरू की। वह हर जगह जाता। लिखित परीक्षा में सबसे ऊपर रहता, लेकिन जब इंटरव्यू होता तब खारिज कर दिया जाता। उसने देखा कि उसकी जगह आठवी-दसवीं पास, थर्ड-सेकंड डिवीजन में बी.ए. वाले लड़कों को नौकरी मिल रही थी। क्योंकि उनके पास अफसर, नेता या बड़े आदमी की सिफारिश और रिश्वत देने के लिए मोठी रकम होती थी। हर बार बिना नौकरी का लौटता लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी थी। वह फिर से अपनी योग्यता के दम पर नौकरी पाने के लिए प्रयास करता। लेकिन समय गुजरते-गुजरते उसे पता चला कि बिना रिश्वत और सिफारिश के नौकरी मिलना संभव नहीं। मोहन दास के पास ये दोनों नहीं थे, उसके लगता था कि बी. ए. की अंक तालिका के दम पर ही उसे रोजगार मिल जाएगा। लेकिन स्थिति तो बिलकुल उल्टी थी। जैसे-जैसे उसकी उम्र सरकारी नौकरी वाली आयु-रेखा पार करने लगी, उसके साथ घर वाले भी निराश होने लगे।

कस्तूरी उसे ढ़ाढस बँधाती कि सरकारी नहीं तो निजी क्षेत्र में उसे नौकरी मिलेगी। या फिर बेरोजगारों के लिए सरकार की ओर से कुक्कुट पालन, मोमबत्ती, अगरबत्ती, आटा-दलिया बनाने के कारखाने आदि लघु उद्योग की योजनाएँ भी शुरू है। उसे एक बार अस्थायी शिक्षक की भी नौकरी आई लेकिन वहाँ भी वह निम्न जाति का होने और किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य न होने के कारण वह नौकरी भी उसे नहीं मिलती। मोहन दास बहुत सीधा, संकोची और स्वाभिमानी युवक था। नौकरी के लिए बड़े लोगों की चापलूसी करना, उनके पैर छूना, उन्हें खिलाना-पिलाना उसके बस की बात नहीं थी। अब मोहन दास ही नहीं; उसकी पत्नी कस्तूरी, बाप काबा और माँ पुतलीबाई सभी के भीतर उसके सरकारी अफसर बनने की उम्मीदें बुझ चुकी थी। इसी बीच पिता काबा को टी.बी. की बीमारी होने और पुतलीबाई के आँखों की रोशनी चली जाने के कारण कस्तूरीबाई पर सास-ससुर की सेवा, घर के काम और बाहर मजदूरी करने की

जिम्मेदारी आई। सच बात तो यह थी कि कस्तूरी को आराम करने की जरूरत थी क्योंकि वह पेट से थी। गर्भ में देव दास आ गया था। मोहन दास की जिम्मेदारी अब और बढ़ने वाली थी।

बेरोजगारी और घर की जिम्मेदारी के कारण वह कम आयु में ही बूढ़ा दिखने लगा था। उसे देख लगता कि वह लम्बे अर्से से बीमार है। गाँव वालों से हर समय उसके नौकरी के बारे में पूछकर इतनी पढ़ाई करने का मजाक बनाया जा रहा था। इसकारण वह बहुत कम बोलता था। उसने गाँव के पास कठिना नदी की रेत में खीरा, ककड़ी, तरबूज, खरबूज लगाने का काम किया। घरवालों ने भी उसकी मदद् की। नदी के पानी से पौधों को सींच-सींच कर खेती करते और रात भर उसकी रखवाली करते। साल भर की मेहनत के बाद उन्हें आठ-दस हजार रुपए मिल जाते। लेकिन कभी-कभी कठिना नदी में बाढ़ आने के कारण उनकी सालभर की मेहनत बाढ़ के पानी के साथ उनका सबकुछ बहा ले जाती थी।

कुछ दिनों बाद कस्तूरी मरण यातना सहन कर पुत्र देव दास को जन्म देती है। देवता सदृश बालक को देखकर मोहन दास बहुत खुश हो जाता है। लेकिन दूसरे ही क्षण घर में और एक खाने वाला पेट बढ़ गया, इसकी कल्पना से ही उसका दिल दहेल जाता है। वह कस्तूरी के लिए महीने भर दूध, घी, देसी सों, गुड़ और अन्य कार्यक्रमों के लिए होने वाले खर्चे के जुगाड़ को लेकर सोच में पड़ जाता है। इतने में पिता काबा दास उसे पुकारते हैं-''सीताराम डाकिया आये हबै। कउनो कारड लाइस हबै।''(पृ.22) मोहन दास उस पत्र को पढ़ता है। जिले की सबसे बड़ी खदान कंपनी 'ओरियंटल कोल माइंस' से नौकरी के लिए इंटरव्यू लेटर आया था। मोहन दास को देव दास का जन्म किसी देवदूत का संदेश लगता है जो उनके परिवार के लिए नए जीवन का किवाड़ खोल रहा है। उसके आँखों के सामने नया भविष्य झिलमिला रहा था।

ओरियंटल कोल मांइस की नौकरी के लिए आयोजित परीक्षा के दिन वह एक घंटे पहले पहुँच जाता है। एक घंटे लिखित और उसके एक घंटे बाद शारीरिक परीक्षा देनी थी। मोहन दास ने पूरे मनोयोग से लिखित परीक्षा दी। एक घंटे की परीक्षा उसने आधे घंटे में ही पूरी की। इसके बाद 1500 मीटर की दौड़, तेज चाल, भार उठाना, कुहनी और घुटनों के बल सख्त जमीन पर रेंगना, मैदान के पाँच चक्कर लगाना, आयी साइट टेस्ट, रंगों की पहचान आदि शारीरिक परीक्षा में भी वह सबसे अव्वल ही रहा। शाम चार बजे दफ्तर के बाहर नौकरी के लिए चयनित पाँच नाम पुकारे गए, उनमें पहला नाम मोहन दास का ही था। मोहन दास का दिल जोर-जोर से धड़क रहा था। नौकरी मिलने से उसके जीवन की तमाम अनिश्चितताएँ खत्म होने वाली थी। हर माह तनख्वाह, हर रोज चूल्हा जलेगा, बाप और माँ का इलाज हो सकेगा, देव दास की परवरिश और पढ़ाई ठीक से होगी, कस्तूरी को मजदूरी में खटना न होगा आदि कई सपनें उसके आँखों में भर आए थे।

मोहन दास ने अपने सारे अंक तालिका और प्रमाणपत्रों की सत्यप्रतियाँ दफ्तर के अधिकारी के पास जमा किए। उस अधिकारी ने पंद्रह दिनों के भीतर डाक द्वारा नियुक्ति-पत्र भेजने की बात कही। मोहन दास के खुशी का कोई ठिकाना नहीं रहा। उसके घर में अब एक नया युग अवरित हुआ था। पोस्ट ऑफिस के खाते में पड़े दो हजार में से कुछ रुपए निकाले। घर जाते वक्त उसने नयी मच्छरदानी, एक किलो देशी घी,

गुड़, सौंठ, कुछ नये बरतन और कस्तूरी तथा देव दास के लिए कुछ कपड़े खरीदे। अपने लिए भी उसने नीले रंग की जींस की पैंट, टेरिकॉट का चौखानेदार बुश्शर्ट, तीस रुपये का एक पर्स और पाँच-पाँच रुपये के दो रूमाल खरीदे। परसू को कहकर उसने रोजाना आधा किलो दूध की नियमित व्यवस्था कर दी। गाँव में भी उसे ओरियंटल कोल माइंस में अच्छी पक्की नौकरी मिलने की बात फैल गई। तब जो उसका मजाक उड़ाते थे अब वे भी उसे सम्मान देने लगे थे। तो कुछ लोग अहंकारवश वह निम्न जाति का होने के कारण आरक्षण से उसे नौकरी मिलने की टिप्पणी भी कर रहे थे।

मोहन दास के परिवार में खुशी का माहौल था। उस सप्ताह भर में घर में अच्छा खाना बना। काबा दास की खाँसी भी कम हुई और अँधी माँ की आँखों में भी शायद थोड़ी-सी रोशनी आई थी। पिता काबा दास रात को जोर-जोर से कबीर के भजन गाता है। दूसरे हफ्ते से मोहन दास रोज चिट्ठी का इंतजार करता है। बीस-बाइस दिन बीत गए लेकिन डाकिया नहीं आया। मोहन दास नियुक्ति-पत्र न आने के कारण घबरा जाता है। उसे जानकारी मिलती है कि उसके साथ कांसाकोड़ा के कंचन मल शर्मा के लड़के संतोष कुमार शर्मा को चिट्ठी पहले ही मिल गयी है और उसने नौकरी भी ज्वाइन की है। मोहन दास बेचैन हो गया। वह दूसरे ही दिन बस से कोलियरी पहुँचा। वहाँ के बाबू ने बताया कि अभी भी लेटर भेजे जा रहे हैं। पोस्ट तीन ही थी, चुने गये पाँच लोग है। अगर जगह नहीं बढ़ाई गयी तो दो कैंडिडेट के नाम कटेंगे। फिर भी डरे हुए मोहन दास को बाबू ने समझाया कि उसका तो सूची में पहला नाम है और उसे नौकरी मिलेगी। उन्होंने उसे और एक महीने तक इंतजार करने को कहा। मोहन दास को फिर से निराश घेर लेती है। उसे महीना भर परसू से लिये गए दूध का हिसाब, यहाँ-वहाँ से ली उधारी को कैसे चुकाएँगे, यह डर सताने लगता है। कस्तूरी उसे धैर्य रखने को कहती है। माँ पुतलीबाई कुल देवी मलइहा माई से मनौती माँगती है। काबा दास फिर से चुप्पी साध लेता है और अचानक उसकी खाँसी फिर से शुरू हो जाती है।

डेढ़ महीने बाद मोहन दास फिर से ओरियंटल कोल माइंस के दफ्तर जाता है। तब बाबू बताता है कि एक दूसरे उम्मीदवार को नौकरी में ज्वाइन किया है। वह बिहार के कोल इंडिया के बड़े अधिकारी का दामाद था। उसकी सिफारिश के कारण उसका चयन किया गया है और तुम्हें फिर से इंतजार करना पड़ेगा। मोहन दास के साथ बात करते हुए उस बाबू में पहले जैसा अपनापन नहीं था। वह बताता है कि इंतजार करने की कोई आखिरी सीमा नहीं है। तुम्हें चिट्ठी मिलती है, तभी तुम आओ वरना फिर से आने की जरूरत नहीं। मोहन दास की आँखों के सामने अंधकार गहरा होने लगा। फिर अगले महीने जब मोहन दास फिर से दफ्तर जाता है तो वहाँ पुराने बाबू छुट्टी पर होने की बात समझती है। उनकी जगह एक नया बाबू बैठा था। उसे मोहन दास की फाईल की कोई जानकारी नहीं थी। तब मोहन दास उन्हें अपने मार्कशीट्स और प्रमाणपत्र वापस माँगता है। तब वह कहता है कि तुम्हारे सर्टिफिकेट का हम क्या करेंगे? नौकरी नहीं दी है तो रजिस्टर्ड डाक से वापस भेज देंगे, नहीं तो अगली बार आकर खुद ले जाना। मोहन दास अब समझ चुका था कि उसकी शिक्षा, काबिलियत और भाग्य को भ्रष्टाचार की लू ने झुलसा डाला है। अब कोई उम्मीद नहीं बची थी। गाँव के लोगों को जब यह बात पता चली तो वे फिर उसकी शिक्षा और काबिलियत का मजाक बनाने लगे। वह अपमान का कड़वा घूँट पीकर रह गया।

विजय तिवारी जो गाँव के सरपंच पंडित छत्रधारी तिवारी का बेटा है। विजय, मोहन दास के साथ कॉलेज पढ़ता था और थर्ड डिवीजन में बड़ी मुश्किल से पास हो गया था। लेकिन अपने ससुर की तिकड़म और सिफारिश पर पुलिस में सब इन्स्पेक्टर हो गया था। जब उसे मोहन दास को नौकरी न मिलने की बात समझती है तो वह सरकारी योजना के तहत बनाए उसकी गोशाला का काम सँभालने के लिए कहता है। उसकी बूरी नज़र मोहन दास की पत्नी कस्तूरी पर थी। वह उसे भी गोशाला में काम करने के लिए लाने को कहता है। मोहन दास विजय द्वारा किए गए इस अपमान को सहकर 'सोचकर बताता हूँ' ऐसा जवाब देता है। अब उसने तय किया कि वह फिर कभी अपनी मार्कशिट, प्रमाणपत्र लाने ओरियंटल कोल मांइस के दफ्तर में नहीं जाएगा।

उस रात वह कुदाल और फावड़ा लेकर कठिना नदी के किनारे जाता है और खेती करने के लिए पलिया बनाने लगता है। वह कठिना नदी को बिनती करता है कि मेरे परिवार की इज्जत अब तुम्हारे हाथ है। अगर मेरी खेती फिर से तुम्हारी धार में समा जाएगी तो मैं परिवार समेत कूदकर जान दूँगा। दूसरे दिन कस्तूरी और मोहन दास मतीरा, खरबूज, लौकी, तरबूज, टमाटर, ककड़ी के बीज लेकर कठिना नदी के किनारे जहाँ मोहनदास ने रात भर पलिया बनाया था वहाँ जाते हैं। पलिया में गोबर की खाद डालकर बाद में उसमें फलो-सब्जियों के बीज लगा देते हैं। कस्तूरी घड़े से पानी लाकर सावधानी से बीजों को पानी देती है। रात के तारों की रोशनी में कस्तूरी का सौंदर्य नक्षत्रों से झरती सलेटी चांदी की मद्धिम आभा-सा निखर गया था। मोहन दास को उसका साँवला लेकिन कमनीय शरीर मलइहा माई के मंदिर के बाहर रखी पुरानी पत्थर की मूर्तियों जैसा दिख रहा था। उस रात मोहन दास कस्तूरी को बहुत छेड़ता है। बेटी शारदा उसी रात की स्मृति बनी।

मोहन दास के पिता काबा की खाँसी की बीमारी बढ़ चुकी थी। सरकारी अस्पताल के डॉ. वाकणकर ने मोहन दास को समझाया कि उसके पिता को टी.बी. की बीमारी है। सरकारी अस्पताल में इस बीमारी का मुफ्त इलाज होता है। वह मोहन दास को महीने भर की दवाईयाँ देता है। लेकिन काबा दास इन दवाईयों का कोर्स ठिक तरीके से पूरा नहीं करता। डॉ. वाकणकर माँ पुतलीबाई के आँखों का ऑपरेशन करने से चालीस प्रतिशत दृष्टि वापस आने की बात भी मोहन दास को बताता है लेकिन इसके लिए आठ-दस हजार रुपए का खर्चा था। वे मोहन दास को आश्वासन देते हैं कि जिले में अगर कोई अच्छा या ईमानदार कलेक्टर आता है तो उसकी माँ का ऑपरेशन मुफ्त में करवा देगा। लेकिन कितने साल बीते कोई ऐसा कलेक्टर नहीं आया। इसी बीच उनकी बस्ती में एक स्वयंसेवी संस्था के लड़की और लड़का आया। उन्होंने मोहन दास और कस्तूरी को आश्वासन दिया कि वे उनके परिवार के लिए पक्का मकान, रोजगार के साधन मुहैया करेंगे। वे उनसे कई अर्जियों पर हस्ताक्षर लेकर गए थे। लेकिन उनका बाद में आना बंद हुआ। बाद में पता चला कि दोनों ने शादी की है और वे दिल्ली चले गए हैं। लड़की अब किसी टी.वी. चैनल में काम करने लगी थी और लड़के ने दिल्ली में ही अपने आई.ए.एस फूफा की सहायता से झुग्गी पुनर्वास के नाम पर कोई संस्था खोल ली थी और देश-विदेश की यात्राओं पर रहता था।

मोहन दास के पिता काबा की टी.बी. की बीमारी बढ़ जाती है। उसकी छाती की एक-एक पसलियाँ गिनी जा सकती थी। खाँसते तो कफ के साथ खून ही नहीं, लगता जैसे माँस के थक्के बाहर निकल रहे हैं। डॉ. वाकणकर का भी तबादला हो जाने के कारण सरकारी अस्पताल से मिलने वाली मुफ्त दवाईयाँ भी मिलना बंद हो जाती है। काबा की खाँसी को अब चींटियाँ और मक्खियाँ तक पहचानने लगी थी। वह खाँसकर थूँकता तो चीटिंयाँ कफ की ओर झुंड बनाकर चलती। पत्नी पुतलीबाई जब रोती तो काबा उसे ढ़ाढस बँधाता कि, ''अरी ओ अंधी, क्यों रो रही है? मुझे अभी मरना नहीं है। मैं देव दास का विवाह और शारदा का गौना कराने के बाद मरूँगा। मत रो।'' (पृ. 35)

मोहन दास को मोहनालाल मारवाड़ी की दुकान 'विध्यांचल हैंडीक्राफ्ट्स' से बड़ा ऑर्डर मिला था जिसे दो-तीन महीनों तक पूरा करना था। इसमें पचास चटाई, पचास खोंभरी और तीस पकउथी बनाने थे। मोहन दास और कस्तूरी इस ऑर्डर को पूरा करने के लिए दिन-रात मेहनत करते हैं। पुतली बाई बच्चों को सँभालती है। काबा बीमारी के बावजूद भी बाँस की पसलियाँ छिलने में उनका हाथ बँटाता है। कस्तूरी के हाथ और उंगलियाँ किसी मशिन की तरह चलती थी। इतने में मोहन दस के घर पर किसी के आने की आहट होती है। बहुत दिनों बाद मोहन दास का साढ़ू गोपाल दास उसे मिलने आया था। वह 'नर्मदा टिंबर एंड फर्नीचर' में आरा मशीन चलाने और मालिक के कहने पर उगाही-वसूली करने साइकिल से घूमता फिरता था। गोपाल के आने से कस्तूरी बहुत खुश होती है। क्योंकि बहुत दिनों बाद उसके मायके के पास के गाँव से कोई मेहमान उसकी ससुराल आया था। मेहमान नवाजी के बाद गोपाल दास एक ऐसी खबर सुनाता है कि मोहनदास अंदर से हिल जाता है। यहाँ कथानक को नया मोड़ मिलता है।

गोपाल दास बताता है कि, ''अभी तीन रोज पहले वह ओरियंटल कोल माइंस किसी काम से गया था। वहाँ जाकर उसे पता चला कि बिछिया टोला का बिसनाथ वहाँ मोहन दास के नाम से पिछले चार साल से डिपो सुपरवाइजर की नौकरी कर रहा है और दस हज़ार से ऊपर हर महीने पगार ले रहा है।'' (पृ. 37) विश्वनाथ प्रसाद उर्फ बिसनाथ के पिताजी ने कोल माइंस कंपनी के अधिकारियों को रिश्वत खिलाकर मोहन दास वाली नौकरी का लेटर अपने आवारा बेटे को दे दिया था। बिसनाथ ने मोहनदास ने इंटरव्यू के दिन जमा किए सभी अंक सूचियों और प्रमाणपत्रों पर अपने फोटो लगाए थे। इतना ही नहीं तो इन सभी दस्तावेजों को अदालती हलफनामे से लेकर गजेटेड अफसर तक से उसे प्रमाणित करा लिया था। इसप्रकार बिसनाथ ओरियंटल कोल माइंस में मोहन दास बल्द काबा दास, जात कबीरपंथी विश्वकर्मा बनकर इत्मीनान से डिपो सुपरवाइजर की नौकरी करने लगा और दस हजार रूपए प्रतिमाह पगार लेने लगा था। गोपाल दास ने कालरी के पास जब उसे देखा तो बिसनाथ के गले में टँगे पहचान-पत्र पर फोटो तो उसका था लेकिन नाम मोहन दास लिखा था। वहाँ सभी लोग उसे मोहन दास के नाम से ही पुकार रहे थे। नौकरी मिलने के कारण वह चार वर्ष पूर्व ही बिछिया गाँव छोड़कर कंपनी की वर्कर्स कॉलोनी 'लेनिन नगर' में बाल-बच्चों समेत रहने लगा है। उसकी पत्नी अमिता ब्याज पर रूपया उठाने का धंधा करती है और चिट फंड चलाती है। कॉलोनी में बिसनाथ को 'मोहन दास' और उसकी पत्नी अमिता को 'कस्तूरी मैडम' नाम से ही सभी

जानते हैं। बिसनाथ दसवीं फेल होने के कारण वह सुपरवाइजर की नौकरी लगने के बाद भी काम करने के बजाय अफसरों की चापलूसी, कोयले की तस्करी और यूनियनबाजी में लगा रहता है।

अपने साढू गोपाल दास की बात सुनकर मोहन दास का माथा घूम जाता है। वह भ्रष्ट व्यवस्था और अपने दुर्भाग्य को कोसने लगता है- ''हे सतगुरू, कैसा समय है, क्या चार सालों में यहाँ एक भी आदमी ऐसा नहीं हुआ, जो कह सके कि ओरियंटल कोल माइंस में जो आदमी मोहन दास के नाम से हर महीने दस हजार की पगार ले रहा है, वह मोहन दास नहीं, बिसनाथ है, जिसके बाप का नाम काबा नहीं, नगेंद्रनाथ है, जिसकी पत्नी का नाम कस्तूरीबाई नहीं अमिता भारद्वाज है और जिसकी माँ पुतली बाई नहीं, रेनुका देवी है?...जो पुरबनरा गाँव का नहीं, बिछिया टोला का निवासी है? जो बी.ए. पास नहीं, दसवीं फेल है?'' (पृ.40) अगली सुबह सात बजे बस पकड़कर मोहन दास ओरियंटल कोल माइंस के लिए रवाना हो जाता है। रात को वह ठिक से सो नहीं पाया था। दफ्तर पहुँचने के बाद किससे बात करे, यह वह नहीं जानता था और उसका हुलिया भी ऐसा था कि कोई भी उसे मोहन दास मान नहीं सकता था। लेकिन दिक्कत यह थी कि उसके पास कोई सबूत या कागजात नहीं थे जिससे वह खुद को मोहन दास साबित कर सके। न शैक्षिक दस्तावेज थे न अखबारों में उसकी फोटो के साथ आई खबर थी। गरीबी से उसकी हालत इतनी खराब हुई थी कि शरीर पर फटे-पुराने कपड़े, पैरों में फटी हुई चप्पल, सिर, हाथ-छाती के बाल पके हुए थे। वह तीस-पैंतीस की उम्र में पचास-पचपन का दिखता था।

बड़ी मुश्किल से वह कंपनी के दफ्तर में पहुँचता है। वहाँ पर वही बाबू बैठा था जिसने उसके कागजात जमा कर लिये थे। वह चाय-बिस्कुट खाने में व्यस्त था। मोहन दास उसके केबीन के दरवाजे के पास खड़ा हुआ। जब बाबू की उस पर नज़र पड़ी तो हाथ जोड़कर नमस्कार किया और पुरानी स्मृति को शायद ताजा करने के लिए मुस्कुराया। लेकिन वह बाबू उसे पहचान नहीं सका। वह फिर से अपनी पहचान बताने लगा तब उस अधिकारी ने चपरासी को बुलाया। चपरासी ने केबीन का दरवाजा बंद करके मोहन दास को दूर जाकर बैठने के लिए कहा। मोहन दास ने अपनी आप बीती चपरासी को सुनाई। लेकिन चपरासी को उसका हुलिया देखकर लगा कि वह पागल है। मोहन दास जब जबरदस्ती अधिकारियों से मिलने की जिद्द करता है तो चपरासी उसे गालियाँ देकर पीटने की धमकी देता है। तब मोहन दास अपना आपा खोकर जोर से चिल्लाते हुए कहता है- ''एए। जा के उस बाबू से बोलो कि मोहन दास बी. ए. आया है और दि. 18 अगस्त, सन् 1997 ई. को जमा किये गये अपने सारे कागजात वापस माँगता है! कोठरी और कुर्सी में बैठ गये तो अँधेर मचाओगे?...लाओ पर्ची लाओ, मैं अपना नाम लिखता हूँ...! बाबू को देना!'' (पृ. 42) फटीचर लगने वाले मोहन दास के मुँह से इतनी साफ-सुथरी भाषा सुनकर चपरासी चौंक जाता है। मोहन दास को लगता है कि वह चपरासी समेत अधिकारियों को समझायेगा कि बिसनाथ ने उसके साथ ही नहीं बल्कि ओरियंटल कोल माइंस के साथ भी जालसाजी और धोखाधड़ी की है। वह फिर से बाबू के दफ्तर की ओर तेज कदमों से आता है। तब चपरासी उसे फिर से रोकता है। तब दोनों के बीच कहा-सुनी होती है। दरवाजें पर चीख-पुकार सुनकर दफ्तर से बाहर चार-पाँच लोग आते हैं। मोहन दास को पागल समझकर सुरक्षा अधिकारी पांडे को बुलाया जाता है। पांडे अपने साथ चार-पाँच बंदुकधारी गार्ड लेकर आते हैं। मोहन दास की बात कोई

नहीं सुन रहा था। उसे डंडों और लातों से बेरहमी से पीटा जाता है। मोहन दास की पीट उधड़ जाती है। उसकी चीख सुनकर कोयला खदान के तमाम मजदूर बाहर निकल आये और घेरा बनाकर उस तमाशे को देखने लगे। जख्मी मोहन दास को गार्ड कंपनी के बाहर सड़क पर छोड़ आते हैं।

कंपनी के पास स्थित 'मोटू वैष्णव शुद्ध शाकाहारी होटल' में खाते समय उसे पता चला कि उसके गाँव पुरबनरा के लिए शाम को दो बसें जाती है। इसलिए उसने फैसला किया कि कंपनी के वर्कर्स कॉलोनी 'लेनिन नगर' का एक चक्कर लगाया जाए। यहाँ कोई तो उसे पहचानने वाला मिल जाए। वह भटकता हुआ लेनिन नगर में मोहन दास के नाम से रहने वाले बिसनाथ का फ्लैट ढूँढ निकालता है। फ्लैट के बाहरी दीवार पर नेमप्लेट लटक रहा था, जिस पर लिखा था : मोहन दास विश्वकर्मा, कनिष्ठ आगार अधिकारी, ओरियंटल कोल माइंस। उसने डोअर बेल बजाई तो अंदर से एक चौदह-पंद्रह साल के बच्चे ने दरवाजा खोला। उसने बिसनाथ के बारे में पूछने पर पिता सामने मार्केट में लस्सी पीने के लिए गए हैं और माँ अंदर सो रही है। शाम पाँच बजे आना, ऐसा कहा। मोहन दास ने बच्चे से पानी माँगकर पी लिया और पापा आने के बाद 'पुरबनरा गाँव से मोहन दास' मिलने आया था, ऐसा कहने को कहा। 'मोहन दास' यह नाम सुनकर बच्चा उलझन में पड़ जाता है।

मोहन दास वहाँ से लेनिन नगर मार्केट जाता है तो वहाँ 'लक्ष्मी वैष्णव भोजनालय' के सामने पुलिस बना उसका सहपाठी विजय तिवारी और बिसनाथ दोनों लस्सी पी रहे थे। लस्सी पीकर वे दोनों पुलिस वैन में बैठने ही वाले थे कि बिसनाथ की नज़र मोहन दास पर पड़ी। वह चौंक जाता है। एक पल के लिए तो उसके चहरे का रंग भी उड़ जाता है। बिसनाथ के चेहर पर उड़ी हव्वाई देखकर विजय तिवारी भी पलटकर देखता है। मोहन दास दोपहरी की लू में चीथड़ों में बिजली के खंभे के पास खड़ा था। दोनों गाड़ी में बैठकर उसके पास आ जाते हैं। मोहन दास अपने सहपाठी अवारा विजय तिवारी को देखकर सोच में पड़ जाता है कि उसने बी.ए. प्रथम श्रेणी में किया था फिर भी उसके यह हालत हुई है। विजय जोर-जोर से हॉर्न बजाकर उसकी तंद्रा को तोड़ते हुए कहता है-''अरे एबिसनाथ! गाड़ी के आगे क्यों कूदा, बिसनाथ? तेरा दिमाग सनक गया है क्या बिसनाथ? अरे बिसनाथ, बोलता क्यों नहीं? बहिरा हो गया है रे का बिसनाथ! बिसनाथअरे ओ बिसनाथ!''(पृ. 50) ऐसा कहकर दोनों गाड़ी में जोर-जोर से हँसने लगते हैं। बिसनाथ गाड़ी से उतरकर मोहनदास के पास जाता है और उसकी जेब में पाँच सौ का नोट खोंसकर उसे धमकाता है कि अपना पुराना नाम भूल जाना और फिर कभी लेनिन नगर दिखे तो कोयले की भट्टी में डालकर राख बना देंगे। वे होटल वाले पंडित जी को मोहन दास को एक गिलास ठंडी लस्सी पिलाकर उसका दिमाग का पेंच सेट करवाने कहकर वहाँ से निकल जाते हैं।

मोहन दास उसी बिजली के खम्भे के पास चूपचाप खड़ा था। उसे लग रहा था कि उसके सामने किसी सिनेमा का कोई सीन अभी-अभी पूरा हुआ है। या यह कोई अजीबोगरीब सपना था? वापस जाते समय उसे लेनिन नगर में एक आदमी उसी के जैसा किसी को तलाशते हुए मिलता है। वह किसी 'गढ़ाकोला के सूर्यकांत' की तलाश कर रहा था। जब मोहन दास उसे अपना नाम पूछता है तब वह जवाब देता है कि, 'सूर्यकाँत ! गढ़ाकोला का सूर्यकांत!'' वह आदमी धीरे-धीरे डगमगाता हुआ लेनिन नगर की ओर बढ़ जाता

है। मोहनदास रात साढ़े ग्यारह बजे घर लौटता है। कस्तूरी उसका खाने के लिए इंतजार कर रही थी। हाथ-पैर धोने के लिए जब वह कमीज उतारता है तो उसके शरीर पर जख्म देखकर कस्तूरी डर जाती है। ठंडे पानी से हाथ-पैर धोने के बाद उसकी दिनभर की थकान मिट जाती है। वह कस्तूरी ने बनाए भात-दाल, भिंडी का खुथीमा और आम की चटनी भरपेट खाता है। डकार मारते हुए कस्तूरी के हाथ में जादू है, ऐसा कहकर उसके खाने के प्रशंसा करता है। उस रात मोहन दास को नींद नहीं आ रही थी। वह हमेशा अपने साथ हुए छल के बारे में सोच रहा था। उसके बाद वह दो-तीन बार पुन: लेनिन नगर गया लेकिन वहाँ यह अफवाह फैलाई गई थी कि कोई सनकी आदमी आकर खुद को मोहन दास बी.ए. कहता है। उसे बिसनाथ कहा जाए तो वह मारने के लिए दौड़ता है। प्रशासन की सड़ी-गली व्यवस्था, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, जातिवादी मानसिकता के कारण मोहन दास मजाक और चुहल का विषय बन गया था। व्यवस्था के सामने हार मानकर वह कोलियरी जाना छोड़ देता है। बहुत से लोग उसे नौकरी का झंझट छोड़कर विजय तिवारी की गोशाला में काम करने या फिर बिसनाथ से माफी माँगकर उसके ही घर चाकरी करने की उपहासात्मक नसीहत भी देते हैं।

कुछ लोगों को मोहन दास के प्रति सहानुभूति भी थी। वे उसकी मदद् भी करना चाहते थे लेकिन उनकी हालत भी मोहन दास जैसी ही तंग थी। घनश्याम के रूप में मोहन दास के लिए उम्मीद की और एक किरण जाग जाती है। घनश्याम, मोहनदास के पड़ोसी गाँव बलबहरा का निवासी था। उसके पास तीस बीघा जमीन थी जिसपर वह बैंक से कर्जा निकालकर खेती कर रहा था। मोहन दास के साडू गोपाल दास का मित्र था और उसकी ओरियंटल कोल माइंस के जनरल मैनेजर एस. के. सिंह से पहचान थी। इसकारण मोहन दास को न्याय दिलाने के इरादे से गोपाल दास घनश्याम को मोहन दास से मिलाता है। तीनों मिलकर फिर एक बार कंपनी के मैनेजर एस. के. सिंह से मिलते हैं। घनश्याम की पहचान होने के कारण उन्हें मिलने में कोई दिक्कत नहीं हुई। मोहन दास दि. 18 अगस्त, 1997 ई. में भर्ती परीक्षा में उसका नाम सूची में सर्वप्रथम होने, उसके सभी दस्तावेज जमा होने, उसमें जाल साजी करके बिसनाथ के फोटो लगाकर उसके नियुक्ति पत्र देने, गत पाँच वर्षों से बिसनाथ मोहन दास बनकर नौकरी करके तनख्वाह लेने, उसे पता चलने पर दरोगा विजय तिवारी और बिसनाथ ने जान से मारने की धमकी देने आदि घटना क्रम जनरल मैनेजर वी. के. सिंह को बताते हैं, जिसे घनश्याम और गोपाल दास समर्थन देते हैं।

मैनेजर सिंह वैसे तो सीधे-साधे व्यक्ति थे लेकिन अंग्रेजी शराब के शौकिन थे। उन्होंने मोहन दास की पूरी बात सुनकर कंपनी के कल्याण अधिकारी ए. के. श्रीवास्तव को मामले की पूरी जाँच-पड़ताल करने के आदेश दिए। उन्होंने बताया कि अगले महीने, जब वे छुट्टी से लौटें तो इंक्वायरी की रिपोर्ट मिल जानी चाहिए। मोहन दास एस.के.सिंह के इस व्यवहार से भावुक हो जाता है। उसकी आँखे नम हो जाती है और वह कुल देवी और कबीर दास जी का मन-ही-मन नाम जप करता है। कल्याण अधिकारी ए.के. श्रीवास्तव अगले हफ्ते मामले की तफ्तीश शुरू करते हैं। बिसनाथ को पहले से ही यह बात मालूम हो जाती है। बिसनाथ ए.के. श्रीवास्तव को बोतल में उतारने के लिए अपनी पत्नी अमिता का इस्तेमाल करता है। जब ए. के. श्रीवास्तव मामले की जानकारी लेने के लिए बिसनाथ के घर पहुँचता है तो अमिता सज-धजकर उसके

लिए शर्बत लेकर आती है। अधिकारी श्रीवास्तव उसकी सुंदरता और कमनीय देह पर लट्टू हो जाता है। बिसनाथ की पत्नी अमिता उसे अपनी चिकनी-चुपड़ी बातों से रिझाती है। बिसनाथ भी खुद को सत्यवान साबित कराते हुए मामले निष्पक्ष जाँच करने को कहता है और यह जातिवादी मानसिकता के तहत किसी ने उसके खिलाफ षड्यंत्र करने की बात कहता है। श्रीवास्तव के सामने अमिता कस्तूरी, नगेंद्रनाथ काबा दास बनकर, रेणुका देवी पुतलीबाई बनकर गवाही देकर उन्हें गुमराह कर देते हैं। अमिता के सौंदर्य पर मोहित श्रीवास्तव रिपोर्ट बनाता है कि बिसनाथ ही असली मोहन दास है। इसकारण असली मोहन दास द्वारा उठाई गई आपत्तियाँ निराधार हैं। उन्होंने पुष्टि के लिए पुरबनरा के सरपंच छत्रधारी तिवारी और जिला जनपद के सदस्य श्यामला प्रसाद द्वारा कुछ दस्तावेज सबूत के तौर पर प्रमाणित कर लिये थे। बिसनाथ और अमिता उर्फ मोहन दास ओर कस्तूरी के आग्रह पर अधिकारी श्रीवास्तव जी दोपहर का खाना, शाम को बियर और रात को देशी मुर्गे का लुत्फ उठाकर रात ग्यारह बजे अपनी नयी 'मारूति जेन' में वहाँ से विदा होते हैं। इसतरह बिसनाथ यहाँ भी रिश्वत एवं भ्रष्टाचार का आधार लेकर श्रीवास्तव से झूठी रिपोर्ट बनवाने में सफल होता है।

ओरियंटल कोल माइंस की जाँच समिति की रिपोर्ट आने के बाद फिर एक बार मोहन दास टूट जाता है। घनश्याम और गोपाल दास जनरल मैनेजर ए. के. सिंह से मिलकर मामले की दुबारा जाँच करने की बिनती करते हैं। लेकिन कंपनी के सबसे ईमानदारी अधिकारी ने जाँच करने की बात कहकर दुबारा जाँच के आदेश देने से इंकार करते हैं। कुछ दिनों के बाद पता चला कि जनरल मैनेजर सिंह का भी लेनिन नगर में बिसनाथ और अमिता के घर आना-जाना बढ़ा था। उनकी पत्नी को भी 'समाज सेवा' और 'किटी पार्टी' में शामिल कर लिया गया था। कंपनी में यहाँ तक अफवाह फैली थी कि अमिता ने जनरल मॅनेजर एस.के. सिंह को फाँस लिया है अक्सर अब उनकी कार उसके फ्लैट के सामने खड़ी मिलती है।

मोहन दास टूटकर बिखर गया था। उसका मन किसी काम में नहीं लगता। अजीब-अजीब सवाल उसे परेशान कर रहे थे। उसे अब अपने ऊपर ही संदेह होने लगता है कि आखिर वह कौन है? मोहन दास या बिसनाथ? बी. ए. की डिग्री उसने ली थी या फिर बिसनाथ ने? क्या सभी के साथ ऐसा ही होता है? वह घर में रोजगार दफ्तर से भेजे गए पुराने पोस्टकार्ड खोजता। न मिलने पर कस्तूरी से लड़ता-झगड़ता। कुछ पोस्ट कार्ड उसने ढँढू निकाले थे, जिसपर उसका नाम और पता लिखा था। वह गाँव वालों को जब ये पोस्टकार्ड दिखाता तो गाँव वाले उसे किसी अफसर या नेता से मिलने की सलाह देते थे। लेकिन मोहन दास में अब ये करने की ताकत नहीं थी। पुरबनरा के सरपंच तिवारी ने तक एक लिखित प्रमाणपत्र दे दिया था कि बिसनाथ ही पुरबनरा का मोहन दास है। उसका दरोगा बेटा बिसनाथ से मिला था। उसकी बूरी नजर कस्तूरी पर थी। मोहन दास एक-न-एक दिन टूटकर उसके पैरों में गिर जाएगा और उसकी चाकरी सँभालने और कस्तूरी को पाने का उसे इंतजार था। मोहन दास सोचता है कि ग्रामपंचायत में हैंडपंप स्वीकृति, शिक्षाकर्मी नियुक्ति, महिलाओं के लिए आँगनबाड़ी शिक्षका भर्ती, इंदिरा आवास योजना अनुदान, कुएँ और खेत की मरम्मत के लिए ग्रामीण विकास विभाग से मिलता अनुदान, नेहरू रोजगार योजना आदि योजनाएँ उन तक कभी पहुँची ही नहीं है। भ्रष्टाचार एवं जातिवादी मानसिकता के कारण इन योजनाओं को लाभ

केवल राजनेता और उच्च वर्ग के लोगों और उनके भाई-भतीजों को ही मिलने की बात कहता है। स्कूल के दोपहर में जो दलिया बँटती है उसमें भी भेदभाव करने की बात देवदास और शारदा के मुँह से उसने सुनी थी।

मोहन दास अपने बचपन के दोस्त बीर बैगा के साथ उसके घर जाकर महुए की शराब पीता है। उसके साथ उसका साढू गोपाल दास भी था। सुअर का गोश्त भी पकाया जाता है। उस दिन उसे विध्याचल हैंडीक्राफ्ट वाले सेठ ने बाँस के माल का भूगतान किया था। उसके 1200 रुपये मिले थे। उस दिन वह दारू-माँस का पूरा खर्चा उठाता है। मोहन दास उस रात इतनी शराब पीता है कि वह अपने सभी गम भूल जाता है। ढोलक बजाकर सभी पूरी रात नाच-गाना करते हैं। वह शराब की नशे में सभी को पूछता है कि 'मेरा नाम क्या है? मेरे पिता का नाम क्या है? मेरी माँ का नाम क्या है? उसे लगता है कि ये सभी लोग भी उसी की तरह ठगे गए लोग है। सरकारी दफ्तरों, मिल-कारखानों, नगरों में जाकर पूछों की तुम्हारे नाम पर कोई दूसरा ही नहीं बैठा हुआ है। तुम्हारा हक छिन रहा है। सभी खाने के लिए बैठ जाते हैं लेकिन मोहन दास बीच-बीच में रोता रहता है। सुबह चार बजे उसके दोस्त उसे घर लाकर छोड़ते हैं और बारह सौं में से बचे एक हजार रुपए कस्तूरी को देकर जाते हैं। मोहन दास अपना होश खो बैठा था। दूसरी ओर उसके पिता काबा दास की तबीयत अचानक बिगड़ जाती है। वह खून की उल्टियाँ करता है। पुतलीबाई उसे अस्पताल ले जाने के लिए कहती है। लेकिन मोहन दास बेहोश हो चुका था। काबा दास के ऊपर गिद्धा मक्खियाँ भिन-भिना रही थी। मोहन दास बीच-बीच में आँखें खोलकर फिर से लुढ़क जाता था।

इतने में पुतली बाई जोर से चीखती है और गाँव की सभी औरतें भी जोर-जोर से रोने लगती है। काबा दास मर गया था। मोहन दास को कुछ पता नहीं था कि उसके बाप काबा दास की दाहक्रिया कैसे हुई? गाँव के लोग मोहन दास को नशे की हालत में वहीं छोड़ काबा दास की अर्थी शमशान ले जाते हैं। पोता देव दास, दादा जी की चिता को आग देता है और उसके बचपन के दोस्त बीरन बैगा ने कपार-कर्म पूरा किया। गोसाई (पुजारी) ने पाँच सौ रुपए और फॉरेस्ट गार्ड ने लकड़ी के पाँच रुपए कस्तूरी से झटक लिये। मोहन दास पर महुए की शराब का नशा इस कधर चढ़ा हुआ था कि वह अपने घर के ओसर में पाँच दिन और चार रात लगातार सोता रहा। गाँव में अफवाह फैल गई कि मोहन दास की याददाश्त चली गई है। लेनिन नगर की लू लगने के कारण उसका दिमागी संतुलन बिगड़ गया है। विजय तिवारी ने झूठ फैलाया कि उसे कुत्ते ने काँटा था और अब वह बारीश के दिनों में कुत्तों की तरह भौंकने लगेगा। एक अफवाह यह भी थी कि एक रात मोहन दास उठकर टँगियाँ लेकर लोगों को मारने के दौड़ रहा था। कस्तूरी और पुतली ने उसे सँभालकर रस्सियों से बाँधकर रखा था। लेकिन असल में मोहन दास न पागल हुआ था न उसकी याददाश्त चली गई थी। इन चार-पाँच दिनों की नींद से उसके दिलो-दिमाग पर हुई चोट भरने में मदद हुई। जब वह पूरी तरह होश में आया तो उसे सब कुछ याद था। उसका नाम भी और उस पर हुआ अन्याय भी। मोहन दास ने इस घटना के बाद चुप रहना शुरू किया। रोजी-रोटी जुटाने के नए साधन तलाशने हेतु उसने इमरान के 'स्टार कम्प्यूटर सेंटर' पर टाइपिंग, प्रिंट आउट और झेरॉक्स का काम सीखना शुरू किया। उसका बेटा देव दास उसी 'दुर्गा ऑटो रेपियरिंग वर्क्स' में पाठशाला छुटने के बाद हेल्पर के रूप में काम कर रहा था। तो

बेटी शारदा पिछले एक साल से शिखा मैडम की 'ऐश्वर्या ब्यूटी पार्लर' में काम करती थी। शिखा मैडम ने उसे एक दिन मिस वर्ल्ड बनाने का सपना दिखाया था। कस्तूरी गाँव के किसानों की खेती में मजदूरी और कठिना के फसलों की देखभाल का काम करती थी। पुतली बाई अपने पति काबा दास की मौत के बाद पत्थर-सी बनी थी। उसके जोड़ो का दर्द बढ़ने के कारण वह चल-फिर नहीं पाती थी। अपनी पूरी दैनिक काम वह घिसट-घिसट कर ही करती थी।

एक दिन 'स्टार कम्प्यूटर सेंटर' में मोहन दास की भेंट हर्षवर्द्धन सोनी से होती है। वह कुछ अदालती कागजात की झेरॉक्स और कुछ टाइपिंग का काम करने आया था। वहाँ मोहन दास ने खुद ही हर्षवर्द्धन को अपना सारा किस्सा बताया। हर्षवर्द्धन पेश से वकील था और किसी राजनीतिक पार्टी से जुड़ा था। उसकी माँ एक माध्यमिक स्कूल की अध्यापिका थी तो पिता एक छोटी दूकान चलाते थे। उसके बड़े भाई श्रीवर्द्धन ने बी.ई. में टॉप करने के बावजूद बेरोजगारी की हताशा में खुदकुशी की थी। अंतर्जातीय विवाह करने के कारण उसे बिरादरी से बाहर किया गया था।

हर्षवर्धन बेहद संवेदनशील और स्वतंत्र विचारों का था। मोहन दास के साथ हुए अन्याय से वह दु:खी हो जाता है। उसके भाई ने भी इसी बेरोजगारी के कारण खुदकुशी की थी। इसकारण वह मोहन दास की वेदना को अच्छी तरह से समझता है और उसने मोहन दास की केस को लेकर अदालत जाने का फैसला किया। केस दाखिल करने के लिए पाँच हजार रुपए की जरूरत थी। लेकिन फटेहाल मोहन दास बहुत हाथ-पैर मारकर पाँच सौ रुपए जमा कर सकता था। आखिरकार हर्षवर्द्धन ही यहाँ-वहाँ से उधारी करके और लायन्स क्लब के चैरिटी फंड से डोनेशन से रुपयों का इंतजाम करता है और कोर्ट में केस दाखिल करता है। मोहन दास का मामला न्यायिक दंडाधिकारी (प्रथम श्रेणी) गजानन माधव 'मुक्तिबोध' की अदालत में दाखिल हो जाता है। मामला दाखिल होते ही अदालत ने ओरियंटल कोल माइंस के महा प्रबंधक एस.के. सिंह और कल्याण अधिकारी ए.के. श्रीवास्तव समेत चार अधिकारियों को सूचना दी। साथ ही अदालत के सामने आकर प्रमाणित करने को कहा कि उनके यहाँ पर मोहन दास के नाम से काम कर रहा व्यक्ति असल में बिछिया टोला का विश्वनाथ वल्द नगेंद्रनाथ क्यों और कैसे नहीं है। जज 'मुक्तिबोध' ने अनूपपुर और दुर्ग के कलेक्टरों को भी आदेश दिया कि वे इस मामले की सरकारी जाँच करें और दो सप्ताह के भीतर-भीतर अदालत के समक्ष अपनी जाँच रिपोर्ट पेश करें। अदालत के इस सम्मन से कंपनी में हड़कंप मच गई। '' असली 'मोहन दास' कौन?'' इस शीर्षक से अखबारों में खबरें छपी। टी.वी चैनलों पर भी इस खबर ने तहलका मचा दिया।

न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध बेहद ईमानदार व्यक्ति थे। इसकारण हर्षवर्धन को पक्का विश्वास था कि वे पहली ही तारीख में दूध का दूध, पानी का पानी कर देंगे। मोहनदास और कस्तूरी में फिर से एक नई उम्मीद जाग जाती है। पुतली बाई तो काबा की मौत के बाद गुमसुम हो गई थी। लेकिन उस दिन जब मोहन दास अदालत की पेशी के लिए जा रहा था तब उसने चहकती चिड़ियाँ की तरह मोहन दास को कहा, ''ए बहू! ऐ देव दास! कोठरी के भीतर झाँककर तो देखो! लगता है अलोपी मैना ने नया घोसला बनाया है क्या? दौडोदौडो!''(पृ. 84) वह अदालत की पहली पेशी के लिए जल्दी-जल्दी खाना खाकर पहुँच जाता है।

अदालत में कोल माइंस के महाप्रबंधक एस.के. सिंह नहीं पहुँचे थे। उनकी अर्जी वकील ने पेश की। कल्याण अधिकारी ए.के. श्रीवास्तव ने अपनी जाँच की रिपोर्ट की पूरी फाइल और उससे जुड़े सभी दस्तावेज जज मुक्तिबोध के सामने रख दिए। हर्षवर्द्धन सोनी के चेहरे पर चिंता थी। क्योंकि जिस बिछियाटोला से तीन गवाह आकर मोहन दास के पक्ष में साक्ष्य देने वाले थे, उनमें से दो गवाह अदालत में हाजिर हीं नहीं हुए और तीसरे गवाह, दिनेश कुमार साहू ने पलटी मारते हुए बिसनाथ ही मोहन दास होने की साक्ष्य दी। उल्टे उसने हर्षवर्द्धन और मोहन दास पर अपना बयान अदालत में कहने के लिए पाँच हजार रुपए देने का लालच दिखाने का आरोप लगाया। जज मुक्तिबोध ने अगली सुनवाई के लिए एक महीने के बाद की तारीख डाल दी। हर्षवर्द्धन और मोहनदास स्तब्ध रह गए। जिलाधिशों की जाँच रिपोर्ट पर पूरी आशा टिकी हुई थी।

अगली पेशी में दुर्ग और अनूपनगर इन दोनों जिलों के कलेक्टरों की जाँच रिपोर्ट अदालत में पेश की गई तो हर्षवर्धन और मोहन दास को झटका-सा लगा। उन रिपोर्टों में पाया गया था कि ''मोहन दास वल्द काबा दास, जूनियर डिपो ऑफिसर, ओरियंटल कोल माइंस के नाम और शिनाख्तगी के बारे में उठाये गये सारे आरोप निराधार है। दस्तावेजों, आवश्यक साक्ष्यों, परिस्थितिगत प्रमाणों, कई ग्रामीणों और पंचायत सदस्यों से पूछताछ के बाद निर्विवाद रूप से यह सिद्ध होता है कि मोहन दास ही है, बिसनाथ नहीं।'' (पृ. 85) बिसनाथ ने दोनों जिलों के संबंधित पटवारियों को ही दस-दस हजार रुपये की घूस और दारू-मुर्गा देकर पटाया था। क्योंकि जिलाधिशों की जाँच रिपोर्ट का अंतिम काम तो पटवारियों के ही पास आता है। बिछिया टोला और पुरबनरा के पटवारी कमल किशोर को बिसनाथ और विजय तिवारी ने दस हजार रुपये की गड्डी थमायी। तब किशोर पटवारी दोनों के पैरों में लोटकर कहने लगा, ''अरे आप लोगों का हुकुम हम कभी टोलेंगे भला?...इतने एमाउंट में तो हम ससुरमूस को हाथी, खेत को सड़क अउर छक्का को छह बच्चों की अम्माँ बना दें।''(पृ.86) फिर एक बार भ्रष्टाचार के कारण मोहन दास का पक्ष कमोजर पड़ जाता है। डर के कारण वह खांडा गाँव जाकर सिउनारायण गोसाईं को बुलाकर उसे बीस रुपए और सीधा देकर मलइहा माई की पूजा करवाता है।

इसी बीच एक घटना होती है। एक दिन सुबह-सुबह कस्तूरी पड़ोस की तीन-चार महिलाओं के साथ प्रात: विधि करने गई थी। तब झाड़ियों के पीछे कुछ हलचल का आभास हुआ। तब कस्तूरी अपने साथ लाई हंसियाँ निकालकर गालियाँ देते हुए उस ओर भागती है। तो विजय तिवारी भागता हुआ नजर आता है। कस्तूरी दो बच्चों की माँ बनी थी फिर भी विजय तिवारी की गंदी नज़र उसपर थी। कस्तूरी कुछ दूर तक हँसिया तानकर उसके पीछे दौड़ी। रमोली, सितिया और सावित्री ने भी चिल्लाते हुए टट्टी के लोटे खींच-खींच कर मारे। दरोगा विजय तिवारी गिरता-पड़ता भाग रहा था। औरतें पीछे से चिल्ला रही थीं- ''अरे, टीवी वालों को बुलाओ। सीन खींचे। दौड़ो री..दौड़ो! दरोगा चड्डी में हग रहा है..।''(पृ. 88) उस दिन सममुच दरोगा डरा हुआ था कि उसे लगा कि मोहन दास वकिल हर्षवर्धन से मिलकर अखबार में कुछ उल्टा-पुल्टा छाप न दे। कहानीकार उदय प्रकाश ने इस प्रसंग को देश-दुनिया में महिलाओं पर चल रहे अत्याचारों के समकालीन परिप्रेक्ष्य में डाला है। इस संदर्भ में उनकी टिप्पणी बहुत ही सटीक है।

न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध के सामने तो कोल माइंस के अधिकारियों, दोनों जिलाधिशों की जाँच रिपोर्ट थी जो बिसनाथ को ही मोहन दास सिद्ध करती थी। हर्षवर्द्धन सोनी और मोहन दास की नींद उड़ चुकी थी। हर्षवर्द्धन तीन दिन से सो नहीं पाया था। दो-तीन दिनों से उसे और मोहन दास को केस को बंद करने के लिए जान से मार देने तक धमकियाँ मिल रही थी। हर्षवर्द्धन के दोनों गवाह हाजिर न होने और एक ने उनके ही खिलाफ बयान देने के कारण उसे केस हारता हुआ नज़र आ रहा था। वह आखिरी प्रयास के तौर पर न्यायदंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध से मिलने की सोचता है। पहले तो उसे ऐसा करने में डर लगता है कि अगर वे नाराज हुए तो उसका पूरा करियर बरबाद हो सकता है। लेकिन मोहन दास की सच्चाई का पक्ष होने के कारण वह उनसे मिलने का साहस करता है। जब वह न्यायदंडाधिकारी के घर पहुँचता है तो वे उसका मुस्कुराते हुए स्वागत करते हैं। हर्षवर्द्धन को आश्चर्य होता है। वे उसे चाय बनाकर पिलाते हैं। वे हर्षवर्द्धन को बताते हैं कि, ''मैं जानता हूँ कि मोहन दास ही वास्तविक मोहन दास है।और वह दूसरा आदमी फ्रॉड है। वह सरासर 'इंपर्सोनेट' कर रहा है। मुझे पता है, वह बिसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ, जूनियर डिपो ऑफिसर ही है, जो ए बटा ग्यारह, लेनिन नगर में अवैध ढंग से मोहनदास की 'आइडेंटिटी' चुराकर रह रहा है। ही इज अ चीट, अ क्रिमिनल! अ स्काउंड्रल!''(पृ. 93) वे कहते हैं कि हमें सच्चाई मालूम है फिर हम कुछ नहीं कर सकते। पूरी व्यवस्था ही ढह चुकी है। प्रजा और गरीबों के सामने सिर्फ अराजकता और विनाश ही बचा है। लेकिन मनुष्य की न्याय की आकांक्षा को मिटाया नहीं जा सकता। वे हर्षवर्द्धन को कहते हैं कि ''तुम निश्चिंत होकर घर जाओ। मेरे पास एक कानूनी ताकत है। मैं खुद यह जाँच करूँगा। गोपनीय न्यायिक जाँच।'' हर्षवर्द्धन को यह सब जादू-सा लग रहा था।

चार दिनों के बाद बिसनाथ और उसके पिता नगेंद्रनाथ को न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध के आदेश पर जालसाजी, धोखाधड़ी, फरेब, चोरी और गबन के जुर्म में इंडियन पीनल कोड की धारा 419/ 420/ 468/ 467/ और 403 के तहत गिरफ्तार करके जेल भेज दिया जाता है। कोल माइंस के महाप्रबंधक एस.के. सिंह को आदेश दिया जाता है कि वे तत्काल नकली मोहन दास पर कार्रवाई करें और कार्रवाई की सूचना दो सप्ताह के भीतर अदालत में पेश करे। साथ ही इस जालसाजी के मामले में जितने भी अधिकारी-कर्मचारी संलिप्त है, उनकी विभागीय जाँच और कार्रवाई की शुरुआत करें। और दोषियों पर अगर कंपनी अदालत में मुकदमा दायर करना चाहती है तो उसे अदालत की मंजूरी दी जाती है। हर्षवर्द्धन को बाद में पता चला कि जब वह न्यायदंडाधिकारी से मिलकर आया था, उसके दूसरे ही दिन उन्होंने गोपनीय जाँच शुरू की थी। उन्होंने एच.एस. परसाई (हरिशंकर परसाई) को सरकारी वकिल बनाया। एस.बी. सिंह (शमशेर बहादुर सिंह) को दूसरा फोन लगाया जो अनूपपुर के एस.एस.पी थे। ये दोनों अधिकारी अपनी-अपनी कर्तव्यनिष्ठा और ईमानदारी के लिए जा ने जाते थे। उन्होंने हर्षवर्धन सोनी को स्टैंप पेर लेकर फौरन आने को कहा।

एस.एस.पी शमशेर बहादुर सिंह के साथ न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध की गाड़ी सीधी लेनिन नगर में मटियानी चौक के पास ए/11 नंबर के फ्लैट के सामने रूकी। दंडाधिकारी ने बिसनाथ की पत्नी अमिता को सीधा उनके मायके के बारे में पूछा। अमिता ने उसका मायका मिर्जापुर-बनारस में लंकापुर गाँव में होने की बात कही। तो दंडाधिकारी सीधे उनके मायके लंकापुर गाँव पहुँचे। वहाँ उन्होंने अमिता के पिता लालू प्रसाद

पांडे और उनकी पत्नी जयललिता पांडे से सिर्फ दो सवाल पूछे। पहला उनका और उनके पुत्र-पुत्रियों के नाम और दूसरा उनके दामादों के नाम और पते। इसके बाद उन्होंने सरकारी वकील एच्.एस. परसाई को निर्देश दिया कि वे हर्षवर्द्धन सोनी से स्टैंप पेपर लेकर इनका हलफनामा तैयार कर लें। उसके बाद दंडाधिकारी मुक्तिबोध ने पुरबनरा गाँव के सरपंच और कुछ गवाहों के बयान दर्ज किए। एस.एस.पी. शमशेर बहादुर सिंह ने लंकापुर से ही अनूपपुर थाने के एस.एच.ओ को फोन करके बिसनाथ और नगेंद्रनाथ को गिरफ्तार करके थाने लाने को कहा। हर्षवर्द्धन सोनी और मोहन दास दोनों इस जीत से बहुत खुश हुए। कस्तूरी सारे पुरबनरा में नाचती फिरी। पुतली बाई ने फिर से घर में छिपाकर रखे बिसुनभोग चावल निकाल कर कस्तूरी को अच्छा खाना बनाने को कहा। मोहन दास फिर एक बार बचपन के साथ बीरन दास बैगा के घर जाकर महुए की शराब पीकर नाच-गाना करता है। घर आने के बाद उसने कस्तूरी से भी बहुत हँसी-ठिठोली की। वे नशे में अदालत की कार्रवाई की नकल उतारते हैं। वे बिसनाथ, नगेंद्रनाथ को चोर-कक्कार कहते हुए उन्हें साथ देने वाले सभी प्रशासन एवं कानून व्यवस्था को धिक्कारते हैं। 'मोहनदास' कहानी यहाँ चरमसीमा पर पहुँच जाती है जहाँ पाठक मोहन दास को न्याय मिलने की खुशी को खुद भी महसूस करने लगते हैं।

लेकिन कहानी का अंतिम पड़ाव पाठकों को फिर से झटका देता है। न्यायदंडाधिकारी गजानन मुक्तिबोध का तबादला अचानक राजनांद गाँव के लिए होता है और वे अनूपपुर छोड़कर चले जाते हैं। बिसनाथ का वकिल रास बिहारी राय वह सत्ताधारी पार्टी का बहुत बड़ा नेता था और उसकी बहू नगर निगम की अध्यक्ष थीं। उन्होंने एक पेशी में बिसनाथ और उसके पिता नगेंद्रनाथ की जमानत करवाई। वकिल रास बिहारी राय राजनीति का मँझा हुआ खिलाड़ी होने के कारण पुलिस से साँठ-गाँध करके उन्होंने बड़ी ही चालाकी से पुलिस रिकॉर्ड में मोहन दास ही नाम दर्ज रखवाया। क्योंकि अदालत का जब तक फैसला नहीं आता तब तक मोहन दास उर्फ बिसनाथ 'अपराधी' नहीं, कानूनी तौर पर 'संदिग्ध' था। इसी बीच एक दिन खबर मिली की न्याय दंडाधिकारी मुक्तिबोध का ब्रेन हैमरेज होने के कारण उन्हें बिलासपुर के अपोलो अस्तपाल में भर्ती किया गया है। काँग्रेस पार्टी के महामंत्री श्रीकांत वर्मा और मुक्तिबोध के अभिन्न मित्र नेमिचंद जैन उनके साथ मौजूद थे। 72 घंटे के जीवन-मृत्यु के संघर्ष के बाद मुक्तिबोध जी ने 'हे राम! कहकर अंतिम साँस ली। उनकी मौत की खबर सुनकर हर्षवर्द्धन और मोहन दसा फूट-फूटकर रोए थे। उनके जीवन से आशा का अकेला स्रोत ही बुझ गया था

अब बिसनाथ अपने पत्नी अमिता के साथ मिलकर, कोलियरी की दलाली में बहुत पैसा कमा लिया है। वह अब खुलकर राजनीति में आया है और जिला जनपद के अध्यक्ष का चुनाव लड़ रहा है। वह दंभ में कहता है- ''असली मोहन दास कौन है और कौन नकली है, इसका फैसला तो हम करेंगे। उस ससुर दो कौड़ी के फटीचर बंसोर ने हमारी इज्जत पर बट्टा लगाया, लगी लगाई नौकरी छीनी, अब हम अपनी ताकत उसे दिखा देंगे।'' (पृ. 103) हर्षवर्द्धन अब हमेशा चिंता में रहता है। उसे अब यकीन हुआ है कि बिसनाथ गजब का जहरीला व्यक्ति है। वह असल करैत है। वह लेनिन नगर हर दूसरे-तिसरे दिन अपराध की वारदात करता है। किसी की चैन खिंचता है, कभी किसी को पीटता है, पत्नी के फाइनेंस और चिटफंड धंधे में

कर्जदारों की वसूली के लिए मारपीट करता है, घर में घुसकर सामान उठाता है। इन अपराधों की जब एफ.आई.आर. दर्ज होती है, वह तो मोहन दास के नाम पर ही दर्ज होती है। क्योंकि वहाँ ज्यादातर लोग बिसनाथ को अभी तक मोहन दास के नाम से ही जानते हैं। और इधर पुलिस पुरबनरा में जाकर इस बेचारे असली मोहन दास को पकड़ लाती है। बिसनाथ ने दरोगा विजय तिवारी और अन्य पुलिस वालों को रिश्वत खिलाकर रिमांड में मोहन दास के हाथ-पैर तोड़ डाले हैं। वह चल फिर नहीं पाता। उसकी माँ पुतली बाइ चार दिन पूर्व ही कुएं में गिरकर मर गयी। कस्तूरी हाड़तोड़ मजूरी करके किसी तरह परिवार का गुजारा कर रही है। मोहन दास बहुत दुबला-पतला हुआ है। उसके शरीर पर कपड़े के नाम पर बस लंगोट बची है। वह लाठी के सहारे चलता है और आँखों पर गोल फ्रेम का सस्ता-सा चश्मा लगाता है। वह हर किसी को अदालत के मुकदमे से बाहर निकालने की गुहार लगाता है। मैं मोहन दास नहीं हूँ। बिसनाथ ने मुझे पुलिस से बहुत पिटवाया है। अब साँस लेने से छाती तक दुखने की बात कहता है। वह अंत में कहता है-''जिस बनना हो बन जाये मोहन दास। मैं नहीं हूँ, मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाये। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहतन पर जीने दो। काका, आप लोग मेरा साथ दो।'' (पृ. 105) मोहन दास का बेटा देव दास दस दिन से घर नहीं लौटा है। कोई कहता है उसे बिसनाथ ने गायब करा दिया, कोई कहता वह डर कर मुंबई भाग गया है। तो कोई कहता है कि उसे परसों बस्तर के जंगलों में देखा गया है। यहाँ कहानी पाठकों के सामने कई सवालों को छोड़कर समाप्त हो जाती है।

2.3.2 'मोहन दास' कहानी की शीर्षक की सार्थकता :

किसी भी साहित्य विधा में उसका शीर्षक महत्त्वपूर्ण होता है। पाठक पहले उस विधा का शीर्षक पढता है और उस शीर्षक से उसके मन में उस रचना को पूरा पढने का कौतुहल जाग उठता है। इसकारण लेखक बड़ी सावधानी से साहित्य विधा के शिल्प का संयोजन करता है। यही सावधानी वह शीर्षक देते हुए भी बरतता है। उदय प्रकाश जी ने भी विवेच्य कहानी का नाम 'मोहन दास' क्यों दिया है? क्या इस कहानी का कोई संबंध मोहन दास करमचंद गाँधी अर्थात् महात्मा गांधी के जीवन से है? या लेखक इस कहानी से 'गांधीवाद' की स्थिति के बारे में कुछ बताना चाहते हैं? ऐसे कई सवाल निर्माण होते हैं। केवल कहानी का शीर्षक ही नहीं तो कहानी में आए कुछ पात्रों के नाम भी प्रसंगानुकूल सार्थक सिद्ध हुए है। अत: विवेच्य कहानी की शीर्षक सार्थकता निम्नांकित मुद्दों पर समझने की कोशिश करते हैं-

⁕ नायक मोहन दास और महात्मा गांधी में समानता के बिंदु :

विवेच्य कहानी के नायक मोहन दास और उसके परिवार के सदस्यों के नाम राष्ट्रपिता महात्मा गांधी एवं उनके परिवार के सदस्यों के नाम के तर्ज पर दिए गए है। जैसे कि मोहन दास के पिता का नाम काबा दास (गांधी के पिता करमचंद), माँ का नाम पुतलीबाई (गांधीजी की माँ पुतलीबाई), पत्नी का नाम कस्तूरी (गांधी की पत्नी कस्तुरबा), बेटे का नाम देव दास (गांधी के बेटे का नाम देव दास), गाँव का नाम पुरबनरा

(गांधी के गाँव का नाम पोरबंदर) यह आदि बातें मोहन दास के जीवन को गांधी जी के जीवन के साथ जोड़ने का आभास पैदा करती है। लेकिन उदय प्रकाश इस मात्र संयोग मानते हैं। उनका कहना है कि आज भारत के हर देहातों में ऐसे मोहन दास हमें देखने मिलते हैं जो भ्रष्ट और सड़ी-गली व्यवस्था के शिकार हो चुके हैं। लेखक इस संदर्भ में टिप्पणी करते हैं-''नाम रूप की यह समानता महज एक संयोग ही है। जब मैं आपके लिए यह कहानी लिखने बैठा, उस समय मुझे खुद पता नहीं था कि हमारे गाँव के मोहन दास और उसके परिवार के सदस्यों के ब्यौरों में इतिहास की कोई ऐसी अनुगूँज भी छिपी हो सकती है।''(पृ. 15) लेखक मोहन दास इस युवक के माध्यम से अपने समय और समाज की एक भीषण यथार्थवादी सामाजिक स्थिति को स्पष्ट करते हैं। मोहन दास वास्तव में एक जीता-जागता असली आदमी है और उसकी जिंदगी इस समय कई संकटों से घिरी है।

※ मोहन दास के केस से जुड़े अधिकारियों के प्रतीकात्मक नाम :

विवेच्य कहानी में लेखक उदय प्रकाश जी ने हिंदी के प्रतिष्ठित एवं सामाजिक दायित्व के प्रति प्रतिबद्ध लेखकों के प्रतीकात्मक नामों का प्रयोग किया है। वकील हर्षवर्धन सोनी मोहन दास को न्याय दिलाने के लिए अदालत में केस पेश करता है। तो यह केस न्यायदंडाधिकारी गजनान माधव 'मुक्तिबोध' की अदालत में जाती है। मूलत: मुक्तिबोध हिंदी साहित्य जगत् के बहुचर्चित नाम है। उसके बाद न्यायदंडाधिकारी जब अपनी ताकत का इस्तेमाल करके गोपनीय न्यायिक जाँच का फैसला करते हैं तब सरकारी वकील के रूप में हरिशंकर परसाई जी की नियुक्ति करते हैं। अनूपपुर के एस.एस.पी शमशेर बहादुर सिंग को मामले की तफ्तीश करने को कहते हैं। ये दोनों भी ईमानदार और कर्तव्यदक्ष अधिकारी थे। साथ ही जब न्यायदंडाधिकारी जब अमिता के मायके लंकापुर गाँव में जाता है वहाँ उसके पिता का नाम लालूप्रसाद और माँ का नाम जयललिता होने की पुष्टि होती है। उसके बाद जब न्याय दंडाधिकारी मुक्तिबोध को ब्रेन हैमरेज होकर आपोलो अस्पताल में दाखिल किया जाता है। तो वहाँ काँग्रेस के जिला अध्यक्ष श्रीकांत वर्मा और उनके करीबी दोस्त नेमीचंद जैन पहुँचते हैं। उदय प्रकाश ने कहानी में आए प्रसंगों के अनुसार हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकारों के नामों का इस्तेमाल करके हिंदी की साहित्यिक प्रतिबद्धता को भी दर्शाने का प्रयास किया है। आज के सामाजिक यथार्थ से भटके साहित्यिक दौर में उदय जी इन लेखकों एक ईमानदार साहित्यकारों के दौर को ताजा करने का प्रयास करते हुए नज़र आते हैं। कहानी में उन्नाव के पास के गढ़ाकोला के सूर्यकांत, लालूप्रसाद, जयललिता, बुश और लादेन भी आए हैं। प्रेमचंद और उनका समय भी कहानी में दृष्टिगत होता है।

※ महात्मा गांधी के 'सुराज्य' के सपने का मोहभंग :

महात्मा गांधी ने आजीवन देश के गरीब, पिछड़ों, दलित, वंचितों को न्याय दिलाने का प्रयास किया। उन्होंने 'देहातों की ओर चलो' नारा देकर भारत की आत्मा देहातों में बसने की बात कही थी। देश को स्वराज्य मिला, उसे 'सुराज्य' में तब्दील करने का सपना महात्मा गांधी जी ने देखा था। सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह के शस्त्रों द्वारा उन्होंने ब्रिटिश सरकार को भी देश से निकलने के लिए मजबूर किया था, उसी भारत

में आज महात्मा गांधी और उनके विचार उपहास का माध्यम बने हैं। मूल्य हीन राजनीति और प्रशासन में पनपते भ्रष्टाचार ने भारत के हर 'मोहन दास' का वजूद ही मिटाना शुरू किया है। कहानी के अंत कथा नायक मोहनदास प्रशासन व्यवस्था से तंग आकर कहता है-''जिस बनना हो बन जाये मोहन दास। मैं नहीं हूँ, मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाये। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहतन पर जीने दो। काका, आप लोग मेरा साथ दो।'' (पृ. 105) यह वाक्य हमारे लोकतांत्रिक और प्रशासकीय व्यवस्था की असफलता का ही द्योतक है। जो मोहन दास अपनी पहचान और नौकरी पाने के लिए आजीवन संघर्षरत रहता है, उसे ही व्यवस्था स्वयं के मुँह से 'मैं मोहन दास नहीं हूँ' कहने के लिए विवश कर देती है। जो व्यवस्था जनसामान्यों के जीवन को सुगम बनाने के लिए बनी होती है उसी व्यवस्था ने आम इंसान का जीवन दुश्वार कर दिया है।

*** आज के आम इंसान का प्रतिनिधि 'मोहन दास' :**

विवेच्य कहानी का कथा नायक मोहन दास मूलतः आज के डरे-सहमे आम इंसान का प्रतिनिधि पात्र है। साधारण परिवार का प्रतिभावान व्यक्ति कई संघर्षों के बाद पढ-लिखकर, नौकरी प्राप्त करके अपने परिवार के दुःखों को कम करने का प्रयास करता है। लेकिन वह स्थान-स्थान पर सामाजिक क्रूरता का शिकार हो जाता है। उसका पूरा परिवार दिन-रात हाड़-तोड़ मेहनत करने के बावजूद भी दो वक्त की रोटी के लिए तरसता है। पैसों के अभाव में वह अपने बुढे और बीमारी माता-पिता का इलाज तक नहीं कर पाता। उसके माता-पिता को इलाज न मिलने पर अंधेरे में घसीटते-घसीटते और खून की उल्टियाँ करते हुए उसे मरना पड़ता है। पत्नी के प्रसुति के बाद नवजात और माँ को अच्छी खुराक देने के लिए फूटी कौड़ी तक नहीं है। मोहन दास ईमानदार होने के बावजूद भी दर-दर की ठोंकरे खाता है और जो झूठा-बेईमान है, उसकी पाँचों उंगलियाँ घी में डूबी हुई है। आज के दौर की यह कटु सच्चाई है कि भ्रष्टाचार अब सर्वव्यापी हो चुका है। यह कहानी समाज के हर क्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार का मुखौटा उतारती है। समाज सेवा के नाम पर अपने जेबे भरने वालों का भी पर्दाफाश करती है। सरकारी तंत्र के महाजाल में फँसे आम आदमी की छटपटाहट 'मोहन दास' में दिखाई देती है। अंत में उदय प्रकाश सावधानी से कथा के सूत्र पाठकों को हाथ में सौंपते हुए सूचित करते हैं कि यदि समय रहते समाज भ्रष्टाचार के खिलाफ सजग नहीं होगा तो देव दास जैसे युवक या तो पलायन करेंगे या फिर आतंकवाद की राह पर चल पडेंगे। उदय प्रकाश की कहानी वर्ष 2005 ई. में लिखी गई थी लेकिन आज हम यह सब होता हुआ देख रहे हैं। आम आदमी के जीवन के सामाजिक यथार्थ और गांधी वादी विचारों की आवश्यकता के परिप्रेक्ष्य में कहानी का 'मोहनदास' यह शीर्षक सार्थक लगता है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्नः

1. 'मोहन दास' यह .... द्वारा लिखी एक लंबी कहानी है।

   (अ) उदय प्रकाश (ब) प्रेमचंद (क) मुक्तिबोध (ड) हरिशंकर परसाई

2. 'मोहन दास' इस कहानी को .... पुरस्कार मिला है।

(अ) ज्ञानपीठ (ब) साहित्य अकादमी

(क) सरस्वती सम्मान (ड) बुकर

3. 'मोहन दास' इस कहानी का नायक .... है।

(अ) काबा दास (ब) देव दास (क) मोहन दास (ड) बिसनाथ

4. 'मोहन दास' इस कहानी में .... इस प्रमुख समस्या का चित्रण है।

(अ) गरीबी (ब) नारी शोषण (क) बेरोजगारी (ड) सांप्रदायिकता

5. 'मोहन दास' इस कहानी में इतिहास के .... महापुरुष के जीवन की अनुगूँज मिलती है।

(अ) म. गांधी (ब) पं. नेहरू (क) भगत सिंह (ड) सुभाषचंद्र बोस

6. मोहन दास के पिता का नाम .... है।

(अ) देव दास (ब) राम दास (क) काबा दास (ड) नारायण दास

7. मोहन दास की माता का नाम .... है।

(अ) कस्तूरी (ब) रेनुकादेवी (क) सावित्री (ड) पुतलीबाई

8. मोहन दास की पत्नी का नाम .... है।

(अ) अमिता (ब) रेणुकादेवी (क) कस्तूरी (ड) सावित्री

9. मोहन दास ने .... उपाधि प्रथम श्रेणी में हासिल की थी।

(अ) एम.ए. (ब) बी.ए. (क) एल.एल.बी. (ड) बी.कॉम

10. मोहन दास ने .... कॉलेज से बी.ए. की उपाधि प्रथम श्रेणी में हासिल की थी।

(अ) एम.जी डिग्री कॉलेज (ब) कमला कॉलेज

(क) नेहरू महाविद्यालय (ड) काशी विश्वविद्यालय

11. मोहन दास .... गाँव का निवासी है।

(अ) रामपुर (ब) पुरबनरा (क) गढकोला (ड) बिछिया

12. मोहन दास .... कंपनी की भर्ती परीक्षा में सबसे अव्वल आता है।

(अ) टाटा कोल माइंस (ब) गोल्डन कोल माइंस

(क) ओरियंटल कोल माइंस (ड) भिलाई कोल माइंस

13. मोहन दास की ओरियंटल कोल माइंस की नौकरी जालसाजी करके .... हड़प लेता है।

(अ) विजय तिवारी (ब) विश्वनाथ पाण्डेय

(क) हर्षवर्द्धन सोनी (ड) नगेंद्रनाथ पाण्डेय

14. मोहन दास को ओरियंटल कोल माइंस की परीक्षा पास होने पर .... की नौकरी मिलने वाली थी।

(अ) ज्यूनियर डिपो सुपरवाइजर (ब) महाप्रबंधक

(क) लेखापाल (ड) कल्याण अधिकारी

15. विश्वनाथ द्वारा नौकरी हड़पने की बात मोहनदास को .... समझती है।

(अ) विजय तिवारी (ब) गोपाल दास

(क) बिरना बैला (ड) राम दास

16. मोहन दास कोल माइंस कंपनी के महाप्रबंधक .... के पास शिकायत करता है।

(अ) एस. के सिंह (ब) नगेंद्र नाथ (क) छत्रधर पांडे (ड) लालू प्रसाद पांडे

17. कंपनी के महाप्रबंधक एस. के. सिह श्रम कल्याण अधिकारी .... को मोहन दास की शिकायत की तफ्तीश करने को कहते हैं।

(अ) पी. के. दुबे (ब) एस. बी भंडारी

(क) ए. के. श्रीवास्तव (ड) एस. एस. शर्मा

18. मोहन दास की माँ पुतलीबाई .... और पिता काबा दास को .... की बीमारी होती है।

(अ) गठिया, टी.बी. (ब) हैजा, दिल (क) ज्वर, अतिसार (ड) तपेदीक, विषमज्वर

19. मोहन दास की आपबीती सुनकर .... वकील अदालत में केस डालता है।

(अ) हर्षद मेहता (ब) हर्षा भोगले (क) हर्षवर्द्धन सोनी (ड) श्रीवर्द्धन सोनी

20. वकील हर्षवर्द्धन सोनी के बड़े भाई .... ने बेरोजगारी की निराशा से खुदकुशी की थी।

(अ) विजय सोनी (ब) श्रीवर्द्धन सोनी (क) पवन सोनी (ड) मंगेश सोनी

21. मोहनदास को न्याय दिलाने के लिए न्यायदंडाधिकारी .... खुद गोपनीय न्यायिक जाँच करते हैं।

(अ) एच.के. सिंह (ब) पी. के. श्रीवास्तव

(क) जी. एम. मुक्तिबोध (ड) एच.एस. परसाई

22. न्यायदंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध .... को सरकारी वकील बनाते हैं।

(अ) एच.के. सिंह (ब) पी. के. श्रीवास्तव

(क) एच.एस. परसाई (ड) श्रीकांत वर्मा

23. न्यायिक जाँच के लिए न्याय दंडाधिकारी मुक्तिबोध अनूपपुर के एस.एस.पी .... नियुक्त करते हैं।

(अ) एस.बी. सिंह (ब) पी. के. श्रीवास्तव

(क) एच.एस. परसाई (ड) श्रीकांत वर्मा

24. विश्वनाथ पाण्डेय की ओर से वकील .... मुकदमा लड़ता है।

(अ) रास बिहारी राय (ब) हर्षवर्द्धन सोनी

(क) विजय तिवारी (ड) गोपाल दास

25. न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध का .... की बीमारी के कारण मौत हो जाती है।

(अ) कैन्सर (ब) ब्रेन हैमरेज (क) हृदय रोग (ड) किडनी

26. मोहन दास के बेटे का नाम .... है तो बेटी का नाम।

(अ) देव दास, शारदा (ब) राम दास, सरस्वति

(क) विजय, अमिता (ड) गणेश, विजया

27. मोहन दास .... पंथ में विश्वास रखता था।

(अ) रामानंद (ब) नाथ (क) कबीर (ड) वैष्णव

28. ऐश्वर्या ब्यूटी पार्लर की शिखा मैडम शारदा को .... बनाने का सपना दिखाती है।

(अ) हिरोइन (ब) पायलट (क) मिस वर्ल्ड (ड) प्रोफेसर

29. कहानी के अंत में मोहनदास का बेटा देव दास गायब हो जाता है और लोग उसे .... में देखने का दावा करते हैं।

(अ) मुंबई (ब) बस्तर के जंगल (क) पटना (ड) दिल्ली

30. मोहन दास का बेटा बचपन में पाठशाला के बाद .... गॅरेज में हल्पर का काम करता था।

(अ) दुर्गा ऑटो वर्क्स (ब) महादेव ऑटो वर्क्स

(क) लक्ष्मी ऑटो वर्क्स (ड) राम ऑटो वर्क्स

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

* हलफनामा – सत्यापित बयान ।
* खोह – गुफा, कंदरा ।
* साख-रसूख – प्रतिष्ठा, धाक, रोब ।
* करैत – विषैला साँप ।
* अंगौछा – गमछा, तौलिया।
* अनुगूँज – प्रतिध्वनि ।
* तकवानी करना – निगरानी करना ।
* अवसाद – सुस्ती, थकावट।
* निचाट – सूनसान, निर्जन ।

- भिंसारे – सबेरा ।
- बोरसी में कंडे – अँगीठी में सूखा गोबर, उपला डालना।
- छठी, बरहों और पसनी – नवजात बच्चे के जन्म के बाद होने वाली विधियाँ ।
- मलइहा माई – कुलदेवी का नाम ।
- पलिया – साग-सब्जी के लिए बनाई गई क्यारी ।
- बियारी – संध्या के समय किया जाने वाला भोजन ।
- रांपी, फावड़ा, बगयी की रस्सी- खेती के अवजार ।
- टिटहरी और पनकुकरी – पंछियों के ग्रामीण नाम ।
- पैबंद – छिद्र छिपाने के लिए प्रयुक्त कपड़े आदि का छोटा सा टुकड़ा ।
- खोंभरी, पकउथी – बाँस से बनने वाली चीजें।
- बाँस की पक्सियाँ – बाँस को छिलकर निकाली जाने वाली पट्टियाँ ।
- आदम-हौवा – ईश्वर द्वारा बनाए गए प्रथम पुरुष और महिला।
- सकते में आना – भय से घबराना, आश्चर्यचकित होना।
- लद्धड – कमजोर ।
- हड़का देना – डाँटना, फटकारना ।
- भिंडी का खुथीमा – भेंडी की एक सब्जी
- तश्तरी – छोटी थाली ।
- बाँछे खिल जाना – अत्यंत प्रसन्न या खुश होना।
- तस्दीक – सत्यापित या प्रमाणित करना ।
- नत्थी करना – कागज आदि के टुकड़ों को एक में गूँथना।
- सामिष आहार – मासांहारी भोजन
- महुए का ठर्रा – महुआ पेड़ के फूलों से बनाई जाने वाली शराब ।
- चुहल – हलका हँसी-मज़ाक, हँसी-ठिठोली ।
- अलोपी मैना – एक पंछी ।
- टंगिया – कुल्हाडी जैसा शस्त्र।

* फिरकापरस्त – सांप्रदायिक ।
* नासूर – ऐसा घाव जिसमें से बराबर मवाद निकलता हो।
* दूध का दूध पानी का पानी होना – उचित निर्णय करना।
* कलेवा – सुबह का नाश्ता ।
* पटवारी – राजस्व विभाग में ग्राम लेवल का अधिकारी ।
* मातहत – अधीन ।
* गोसाईं – दलितों–आदिवासियों के साथ भात–रोटी, बेटा–बटी का संबंध बना डालने के कारण, जात–पाँत से निकाले गए ब्राह्मण ही गोसाईं कहलाते थे।
* सीधा – ब्राह्मण को पूजा के बाद दिया जाने वाला चावल, गुड़, घी, दक्षिणा, कपड़ाआदि सामग्री।

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. (अ) उदय प्रकाश
2. (ब) साहित्य अकादमी
3. (क) मोहन दास
4. (क) बेरोजगारी
5. (अ) म. गांधी
6. (क) काबा दास
7. (ड) पुतलीबाई
8. (क) कस्तूरी
9. (ब) बी.ए.
10. (अ) एम.जी डिग्री कॉलेज
11. (ब) पुरबनरा
12. (क) ओरियंटल कोल माइंस
13. (ब) विश्वनाथ पाण्डेय
14. (अ) ज्यूनियर डिपो सुपरवाइजर
15. (ब) गोपाल दास
16. (अ) एस. के सिंह
17. (क) ए. के. श्रीवास्तव
18. (अ) गठिया, टी.बी.
19. (क) हर्षवर्द्धन सोनी
20. (ब) श्रीवर्द्धन सोनी
21. (क) जी. एम. मुक्तिबोध
22. (क) एच.एस. परसाई
23. (अ) एस.बी. सिंह
24. (अ) रास बिहारी राय
25. (ब) ब्रेन हैमरेज
26. (अ) देव दास, शारदा
27. (क) कबीर
28. (क) मिस वर्ल्ड
29. (ब) बस्तर के जंगल
30. (अ) दुर्गा ऑटो वर्क्स

2.7 सारांश :

1. 'मोहन दास' उनकी लंबी कहानी है, जो हिंदी की विख्यात साहित्य पत्रिका 'हंस' में अगस्त, 2005 में प्रकाशित हुई थी। इसका विधिवत प्रकाशन वर्ष 2006 में वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से हुआ है। उदय प्रकाश की इस महाकाव्यात्मक कहानी को वर्ष 2010 में साहित्य अकादेमी से पुरस्कृत किया जा चुका है। सिर्फ एक कहानी के लिए किसी रचनाकार को साहित्य अकादमी पुरस्कार देने की हिंदी साहित्य जगत् की यह पहली घटना है। 'मोहन दास' इस लंबी कहानी का अब तक नौ से अधिक भारतीय भाषाओं के साथ प्रमुख विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हुआ है। विवेच्य लंबी कहानी पर अब तक सौ से अधिक नाट्य मंचन और फीचर फिल्म भी बनाई गई है।

2. 'मोहन दास' यह कहानी बेरोजगार युवक मोहन दास की कहानी है। नायक मोहन दास नीचली जाति का एक पढ़ा-लिखा होनहार ग्रामीण युवक है। लेकिन अर्थाभाव, भ्रष्टाचार के चलते वह बेरोजगार रहता है और नारकीय जीवन जीवन के लिए मजबूर हो जाता है। लेखक उदय प्रकाश ने 'मोहन दास' के माध्यम से देश की जातिवाद, आर्थिक विषमता, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी जैसी समकालीन समस्याओं को यथार्थ के साथ स्पष्ट किया है।

3. मोहन दास अपने अपनी जाति बिरादरी का पहला बी.ए. पास लड़का है। लेकिन गाँव के उच्च जाति के विश्वनाथ पाण्डेय उर्फ बिसनाथ जालसाजी करके उसकी नौकरी को हड़प लेता है। पूरी कहानी भर में मोहन दास अपनी चुराई गई नौकरी को वापस पाने के लिए संघर्ष करता रहता है। शैक्षिक योग्यताएं होने के बावजूद भी बड़ी रसूख और सिफारिश न होने के कारण उसे हर जगह नौकरी मिलते-मिलते रह जाती है।

4. मोहन दास प्रशासन का भ्रष्टाचार और सिफारिशबाजी से थक जाता है और अपना पुश्तैनी काम और खेती-बारी करने लगता है। कुछ महीने बाद उसे पता चलता है कि बिसनाथ ने पूँजी, सत्ता और ताकत के बलबुते ओरियंटल कोल माइंस कंपनी की भर्ती परीक्षा में जहाँ मोहन दास अव्वल आया था वहाँ खुद मोहन दास बनकर उसकी डिग्री ओर पहचान पर नौकरी कर रहा है। यह इसलिए संभव हो जाता है कि उसके शैक्षिक दस्तावेज पर कहीं भी फोटो नहीं थे।

5. मोहन दास विश्वनाथ पाण्डेय उर्फ बिसनाथ का पर्दापाश करने और अपनी नौकरी पाने की लड़ाई लड़ता है। लेकिन हर जगह भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी के कारण उसके साथ अन्याय किया जाता है। अपनी नौकरी पाने की लड़ाई में जातीय सत्ता और प्रशासनिक व्यवस्था उसे इतना तंग कर देती है कि अंत में वह कहता है कि, ''मैं नहीं हूँ, मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाये। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहतन पर जीने दो।'' (पृ. 105)

6. मोहन दास का यह अंतिम वाक्य हमारे पूरे लोकतांत्रिक और प्रशासकीय व्यवस्था के मुँह पर करारा तमाचा जड़ता है। जो मोहन दास अपनी नौकरी और पहचान वापस पाने के लिए संघर्षरत था वहीं स्वयं के मुँह से 'मैं मोहन दास नहीं हूँ' कहने के लिए विवश हो जाता है। अंत में उदय प्रकाश सावधानी से कथा के

सूत्र पाठकों को हाथ में सौंपते हुए सूचित करते हैं कि यदि समय रहते समाज भ्रष्टाचार के खिलाफ सजग नहीं होगा तो देव दास जैसे युवक या तो पलायन करेंगे या फिर आतंकवाद की राह पर चल पडेंगे। उनकी यह कहानी सामाजिक यथार्थ की दृष्टि से आज भी प्रासंगिक लगती है।

2.8 स्वाध्याय :

1. ससंदर्भ स्पष्टीकरण –

1. ''मैं नहीं हूँ, मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाये। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहतन पर जीने दो।''

उत्तर : संदर्भ – प्रस्तुत पँक्तियाँ उदय प्रकाश लिखित 'मोहन दास' इस लंबी कहानी से ली गई है। यह कहानी मोहन दास नामक बेरोजगार युवक की नौकरी और अपनी पहचान पाने की लड़ाई को बया करती है। इस लड़ाई में भ्रष्ट सत्ता और प्रशासन व्यवस्था के हाथों तंग किए जाने के बाद मजबूर होकर मोहन दास मजबूर होकर अंत में उपरोक्त उद्धरण कहता है।

स्पष्टीकरण : मोहन दास अपने अपनी जाति बिरादरी का पहला बी.ए. पास लड़का है। शैक्षिक योग्यताएं होने के बावजूद भी बड़ी रसूख और सिफारिश न होने के कारण उसे हर जगह नौकरी मिलते-मिलते रह जाती है। मोहन दास प्रशासन का भ्रष्टाचार और सिफारिशबाजी से थक जाता है और अपना पुश्तैनी काम और खेती-बारी करने लगता है। कुछ महीने बाद उसे पता चलता है कि बिसनाथ ने पूँजी, सत्ता और ताकत के बलबुते ओरियंटल कोल माइंस कंपनी की भर्ती परीक्षा में जहाँ मोहन दास अव्वल आया था वहाँ खुद मोहन दास बनकर उसकी डिग्री ओर पहचान पर नौकरी कर रहा है। यह इसलिए संभव हो जाता है कि उसके शैक्षिक दस्तावेज पर कहीं भी फोटो नहीं थे। मोहन दास विश्वनाथ पाण्डेय उर्फ बिसनाथ का पर्दापाश करने और अपनी नौकरी पाने की लड़ाई लड़ता है। वह वकिल हर्षवर्द्धन सोनी और न्यायदंडाधिकारी मुक्तिबोध की मदद से कानूनी लड़ाई लड़ता है। लेकिन मुक्तिबोध का तबादला और बाद में निधन होने के बाद वह फिर से भ्रष्टाचारी व्यवस्था का शिकार बनता है। दरोगा विजय तवारी को रिश्वत खिलाकर बिसनाथ उसे कई अपराधों में उसके ही नाम का सहारा लेकर फँसाता है। उसे हर मामले में बूरी तरह पीटा जाता है। अपनी नौकरी पाने की लड़ाई में जातीय सत्ता और प्रशासनिक व्यवस्था उसे इतना तंग आकर 'मैं मोहन दास' नहीं हूँ कहने के लिए विवश हो जाता है।

विशेष : प्रस्तुत कहानी में उदय प्रकाश जी ने भारत की राजनीति एवं प्रशासन व्यवस्था में पनप रहे भ्रष्टाचार की भयावह समस्या की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित किया है। इस भ्रष्टाचार के कारण मोहन दास जैसे गरीब और होनहार युवकों का जीवन बर्बाद होने की बात वे स्पष्ट करते हैं।

2. ''असल करैत है, बिसनाथ । गजब का बिसधारी । किसी को फूँक मार दे तो समझो कि टें! बाप नागनाथ तो बेटा साँपनाथ! अगर तुमको देखकर मुस्किया रहा है और गुड़ लपेटकर बोल रहा है, तो बस हुसियार हो जाओ! डँसने की पूरी तैयारी है।'' (पृ.14)

3. ''अरी ओ अंधी, क्यों रो रही है? मुझे अभी मरना नहीं है। मैं देव दास का विवाह और शारदा का गौना कराने के बाद मरूँगा। मत रो।'' (पृ. 35)

4. ''अभी तीन रोज पहले वह ओरियंटल कोल माइंस किसी काम से गया था। वहाँ जाकर उसे पता चला कि बिछिया टोला का बिसनाथ वहाँ मोहन दास के नाम से पिछले चार साल से डिपो सुपरवाइजर की नौकरी कर रहा है और दस हज़ार से ऊपर हर महीने पगार ले रहा है।'' (पृ. 37)

5. ''हे सतगुरू, कैसा समय है, क्या चार सालों में यहाँ एक भी आदमी ऐसा नहीं हुआ, जो कह सके कि ओरियंटल कोल माइंस में जो आदमी मोहन दास के नाम से हर महीने दस हजार की पगार ले रहा है, वह मोहन दास नहीं, बिसनाथ है, जिसके बाप का नाम काबा नहीं, नगेंद्रनाथ है, जिसकी पत्नी का नाम कस्तूरीबाई नहीं अमिता भारद्वाज है और जिसकी माँ पुतली बाई नहीं, रेनुका देवी है?...जो पुरबनरा गाँव का नहीं, बिछिया टोला का निवासी है? जो बी.ए. पास नहीं, दसवीं फेल है?'' (पृ.40)

6. ''एए। जा के उस बाबू से बोलो कि मोहन दास बी. ए. आया है और दि. 18 अगस्त, सन् 1997 ई. को जमा किये गये अपने सारे कागजात वापस माँगता है! कोठरी और कुर्सी में बैठ गये तो अँधेर मचाओगे?...लाओ पर्ची लाओ, मैं अपना नाम लिखता हूँ...! बाबू को देना!'' (पृ. 42)

7. ''अरे एबिसनाथ! गाड़ी के आगे क्यों कूदा, बिसनाथ? तेरा दिमाग सनकगया है क्या बिसनाथ? अरे बिसनाथ, बोलता क्यों नहीं? बहिरा हो गया है रे का बिसनाथ! बिसनाथअरे ओ बिसनाथ!''(पृ. 50)

8. ''सुनो, अब अपना पुराना नाम बिसर जाओ और अब आज के बाद से कभी लेनिन नगर की ओर गोड़ झै बढ़ाना, समझे। आज तो हम दारू नहीं लस्सी पी रखे थे, ऊपर से बिजली का खमभा आड़े आ गया, नहीं तो आजै चांप देते। दुबारा कहीं आसपास दिखे तो कॉलरी की भट्ठी में राखड़ ना देंगे।'' (पृ. 51)

9. ''मोहन दास वल्द काबा दास, जूनियर डिपो ऑफिसर, ओरियंटल कोल माइंस के नाम और शिनाख्तगी के बारे में उठाये गये सारे आरोप निराधार है। दस्तावेजों, अवाश्यक साक्ष्यों, परिस्थितिगत प्रमाणों, कई ग्रामीणों और पंचायत सदस्यों से पूछताछ के बाद निर्विवाद रूप से यह सिद्ध होता है कि मोहन दास ही है, बिसनाथ नहीं।'' (पृ. 85)

10. ''अरे आप लोगों का हुकुम हम कभी टोलेंगे भला?...इतने एमाउंट में तो हम ससुरमूस को हाथी, खेत को सड़क अउर छक्का को छह बच्चों की अम्माँ बना दें।''(पृ.86)

11. ''अरे, टीवी वालों को बुलाओ। सीन खींचे। दौड़ो री..दौड़ो! दरोगा चड्डी में हग रहा है..।''(पृ. 88)

12. ''मैं जानता हूँ कि मोहन दास ही वास्तविक मोहन दास है।और वह दूसरा आदमी फ्रॉड है। वह सरासर 'इंपर्सोनेट' कर रहा है। मुझे पता है, वह बिसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ, जूनियर डिपो ऑफिसर ही है, जो ए बटा ग्यारह, लेनिन नगर में अवैध ढंग से मोहनदास की 'आइडेंटिटी' चुराकर रह रहा है। ही इज अ चीट, अ क्रिमिनल! अ स्काउंड्रल!''(पृ. 93)

13. ''असली मोहन दास कौन है और कौन नकली है, इसका फैसला तो हम करेंगे। उस ससुर दो कौड़ी के फटीचर बंसोर ने हमारी इज्जत पर बट्टा लगाया, लगी लगाई नौकरी छीनी, अब हम अपनी ताकत उसे दिखा देंगे।'' (पृ. 103)

14. 'स्कूल-कॉलेज के बाहर की असली जिंदगी दरअसल खेल का एक ऐसा मैदान है, जहाँ वहीं गोल बनाता है, जिसके पास दूसरे को लंगडी मारने की ताकत होती है। और वह ताकत सोर्स-सिफारिश, जोड़-तोड़, रिश्वत-संपर्क, जालसाजी वगैरह तमाम ऐसी अवैध और अनैतिक चीजों से बनती है, जिनमें से एक भी मोहन दास की पहुँच के भीतर नहीं थी। (पृ. 18)

15. ''असल में मोहन दास जिस बंसहर-पलिहा जात का है, उसको अब रिजर्वेशन में डाल दिया गया है। नौकरी उसको कोटे में मिली है क्योंकि इस जात का कोई दूसरा लड़का बी.ए. था ही नहीं।'' (पृ. 24)

16. 'मोहना, परसों ही हमने सरकारी योजना में दस भैंसे खरीदी है। डेयरी खोल रह हैं। अगर ठीक समझो तो भैंसों के सानी-भूसा, रख-रखाव का काम कस्तूरी भउजी के साथ मिलकर सँभाल लो। हर महीने की पहली तारीख की तनख्वाह तो मिलेगी है, इंदिरा आवास योजना में हम तुम्हारा मकान पक्का करवा देंगे। भउजी का मन भी लग जायेगा हमारे गोसार में!'' (पृ.27)

17. ''बस तुम भर आँखी मत काढना कठिना माई। तुम्हें मलइहा माई की किरिया। मेरे बेटे देव दस की किरिया। मेरे पसीने की उपज से अपने पेट की जठर आगी मत बुझाना कठिना माई। नहीं तो दयऊ कसम, बीच अषाढ तुम्हारी धार में बाल-बच्चा समेत कूदकर तुम्हारा पेट मैं भरूँगा।'' (पृ. 28)

18. ''उसे लगा कि अफसर-हाकिम, अमीर-उमरा और पार्टी वाले लोग इतने ताकतवर हाते हैं कि वे कुछ भी कर सकते हैं। वे कुकूर को बैल, सुअर को शेर, खाई को पहाड़, चोर को साहु-किसी को भी कुछ भी बना सकते हैं।'' (पृ. 38)

19. ''अरे, भगाओ इसे। ये तो हद्दै हो गयी। कोई भी इस तरह अंदर घुस आये। किसी को ठाँय-ठाँय गोली मार जाये। अरे कुछ नहीं तो बमै फोड़ जाये। पुलिस में दे दो। शर्माजी, मिलाइए अपना मोबाइलवो सौ नंबर।'' (पृ. 44)

20. ''सरिता दीदी को साथ में नहीं लाये सर? तो अचानक वातावरण आत्मीय, घरेलू और ऐंद्रिक हो गया। इंक्वायरी ऑफिसर की नज़र बार-बार अमिता की खुली नाभि पर अटक जाती थी। टी.वी. पर इन दिनों दिल्ली-मुंबई में चलने वाले फैशन शो के कार्यक्रम समाचार चैनलों पर खूब दिखाये जाते थे, लेकिन यहाँ तो बिल्कुल जिंदा मॉडल जैसी औरत सामने खड़ी थी। यह समाचार नहीं, बल्कि एक सच था।'' (पृ. 60)

21. ''मैं जानता हूँ किसकी कारस्तानी है ये। जातिवाद बहुत फैल रहा है आजकल। ये लोग अब सिर पर बैठेंगे। जानता हूँ किसका किया कराया ये सारा खेल है, लेकिन जाने दीजिए। साँच को आँच क्या? आप अपनी इंक्वायरी बिल्कुल निष्पक्ष होकर करिये।'' (पृ. 62)

22. ''तुम लोग सरकारी दफ्तरों में, शहरों की ऊंची-ऊंची बिल्डिंगों ओर बड़े-बड़े बंगलों-कोठियों में, कोयला खदानों-कारखानों में और लेनिन नगर, गांधीनगर, अम्बेडकरनगर, शास्त्री नगर जैसी कॉलनियों में जाकर पता लगाओ कि कहीं वहाँ तुम्हारे नाम, बल्दियत और पते -ठिकाने का कोई दूसरा फर्जी जालसाज तो नही बैठा हुआ है, जिसने तुम्हारा हक छीन लिया है।'' (पृ.69)

23. ''शारदा मैं तुझे एक दिन ऐसा मॉडल बनाऊंगी कि तू मिस वर्ल्ड बन जायेगी और टीवी पर छा जायेगी।'' (पृ. 77)

24. ''ये दोनों लोग महीना भर पहले उसके घर आये थे और उससे कहा था कि अगर तुम हमारा सिखाया बयान कोर्ट में दोगे तो हम तुम्हें पाँच हजार रुपये देंगे।'' (पृ. 85)

25. ''अंग्रेजों द्वारा गुलाम भारत पर शासन के लिए तैयार किये गये नौकरशाहों के इस जंग खाये लौह ढाँचे ने, आजादी के साठ साल बाद, अधिकारिक सरकारी दस्तावेज पर, बिसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ को मोहन दास वल्द काबा दास बना दिया।'' (पृ. 86)

26. ''पूरी न्याय व्यवस्था ढह चुकी है। न्यूयॉर्क की जुड़वा मीनारों की तरह 9 और 11 सितंबर। अब प्रजा और गरीबों के सामने सिर्फ अराजकता और विनाश ही बचा है। मुझे लगता है, हम पूँजी और सत्ताकैपिटल एंड पॉवर के एक बिल्कुल नये रूप के सामने है। 'मोहन दास इज बीइंग डिनाइड ऑफ अ सिंपल एसेंशयल लीगल जस्टिस, क्योंकि वह न्याय को खरीद नहीं सकता।'' (पृ. 94)

27. ''लेकिन मनुष्य के भीतर एक चीज ऐसी है, जो कभी भी, किसी भी युग में, किसी भी तरह की सत्ता द्वारा नहीं मिटाई जा सकती।और वह है न्याय की आकांक्षा। न्याय की आकांक्षा कालातीत है।'' (पृ. 95)

28. ''गरीबों और अन्याय के शिकार लोगों के जीवन में खुरदुरे यथार्थ में ऐसे सुंदर रंग कभी-कभार बस ऐसे ही कुछ पल के लिए आते हैं। सत्ता और पूँजी से जुड़ी ताकतें अचानक किसी बाज की तरह झपट्टा मारकर अलोपी मैना के घोंसलों को उजाड़ देती हैं और बाहर दिखायी देते हैं चिड़ियों के नन्हें-नन्हें छौनों के पंख औ रखून के कुछ धब्बे। ये धब्बे किसी भी पार्टी की सरकार के मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा लिखवाये गये इतिहास की पाठ्यपुस्तकों में कभी नहीं दिखायी देते। क्योंकि इतिहासकार का पेशा ही है अपने समय की सत्ता के दामन के दाग-धब्बों को छिपाना।'' (पृ. 101)

2. लघुत्तरी प्रश्न :

1. मोहन दास के परिवार का परिचय दीजिए।
2. मोहन दास ने नौकरी के लिए किस तरह प्रयास किए?
3. ओरियंटल कोल माइंस कंपनी में नौकरी की भर्ती की परीक्षा का वर्णन कीजिए।
4. मोहनदास के परिवार को गुजारा करने के लिए क्या-क्या काम करना पड़ता था?
5. मोहनदास की संतानों का परिचय दीजिए।

6. मोहन दास के पिता काबा दास की बीमारी का वर्णन कीजिए।

7. मोहन दास और कस्तूरी कठिना नदी के किनारे किसकी खेती करते थे।

8. महुए का ठर्रा पीने के बाद मोहन दास की स्थिति कैसे होती है?

9. नौकरी न मिलने के कारण मोहन दास क्या-क्या काम करता है?

10. मोहनदास शीर्षक की सार्थकता

3. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. 'मोहन दास' इस कहानी का आशय अपने शब्दों में लिखिए।

2. 'मोहन दास' भारत की मूल्य हीन राजसत्ता और भ्रष्टाचारी प्रशासन व्यवस्था तंग आए बेरोजगार युवक की दास्तां है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए।

3. अपनी नौकरी और अपनी पहचान प्राप्त करने के लिए कथा नायक मोहन दास ने किए संघर्ष को 'मोहन दास' कहानी के माध्यम से स्पष्ट कीजिए।

4. 'मोहन दास' इस कहानी में अभिव्यक्त विभिन्न सामाजिक समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

5. 'मोहन दास' यह कहानी सामाजिक कटु यथार्थ को स्पष्ट करने वाली प्रासंगिक कहानी है', इस कथन की समीक्षा कीजिए।

6. 'मोहन दास' इस कहानी के माध्यम से स्त्री विषयक समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

2.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'मोहन दास' कहानी पर आधारित नाटक बनाकर कक्षा में उसका मंचन कीजिए।
2. बेरोजगार युवकों का साक्षात्कार लेकर उनकी समस्याओं पर परियोजना तैयार कीजिए।
3. युवकों की समस्याओं पर आधारित मराठी-हिंदी कहानियों को पढिए।

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. डॉ. सुरेश पटेल, उत्तर आधुनिकता और उदय प्रकाश का साहित्य, हिंदी बुक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2013 ई.
2. उदय प्रकाश, प्रतिनिधि कहानियाँ, राजकमल प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, प्र.सं. 2023 ई.
3. डॉ. शंभु गुप्त, 'डिबिया में धूप : उदय प्रकाश एक अध्ययन', वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2018 ई.

❑❑❑

इकाई –3
मोहन दास : पात्र या चरित्र–चित्रण तथा संवाद

अनुक्रम –

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 मोहन दास : मुख्य पात्र

3.3.2 मोहन दास : गौण पात्र

3.3.3 मोहन दास : संवाद

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. मुख्य तथा गौण पात्रों का परिचय होगा।
2. पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं से अवगत होंगे।
3. संवादों के विविध रूपों का ज्ञान होगा।
4. पात्रों की मनोदशा से रू–ब–रू हो जाएँगे।

3.2 प्रस्तावना :

हिंदी साहित्य में कहानी विधा का महत्त्व बढता जा रहा है। कहानी के छह तत्त्वों में पात्र तथा चरित्र चत्रिण एवं संवाद का महत्त्व अपने आप है। लंबी कहानी में पात्र और संवाद ही कथानक के वाहक होते है। जो कथावस्तू को प्रारंभ से लेकर अंत तक ले जाते हैं। लंबी कहानी में पात्र एवं चरित्र – चित्रण को अधिक

महत्त्व दिया जाता है। लंबी कहानी में एक पात्र के संपूर्ण जीवन का प्रदर्शन नहीं किया जाता। उसमें पात्र के जीवन के अपेक्षित अंश पर ही विस्तार से प्रकाश डाला जाता है। लंबी कहानी में संवादों के माध्यम से नाटकीयता का पुट भरा जा सकता है। संवाद से पात्र या चरित्र प्रकाश में आता है और लंबी कहानी में गतिशीलता आती है। रचनाकार चरित्र-चित्रण के माध्यम से समस्त पात्रों का विवरण पाठकों के समक्ष सजीव बना देता है। दरअसल पात्र के जीवन के सुख - दुःख संवादों के माध्यम से ही प्रकट होते हैं। लंबी कहानी में आधुनिक मानव की जटिल मानसिकता का चित्रण मिलता है। इसमें पात्रों के चरित्र, सोच-विचार, क्रियाकलाप, मानसिक अंतर्द्वंद्व आदि का चित्रण करके परिस्थिति से उसका संबंध किस प्रकार है इसका भी चित्रण होता है। संक्षेप में पात्रों की जटिल मानसिकता और चरित्र-चित्रण ने ही लंबी कहानी नामक इस नई विधा को जन्म दिया। 'मोहन दास' लंबी कहानी में पात्र या चरित्र-चित्रण एवं संवादों की बुनावट सफलता के साथ हो चुकी है, जिसका विवेचन-विश्लेषण निम्नलिखित रूप से प्रस्तुत है -

३.३ विषय-विवरण :

हिंदी के प्रसिद्ध लेखक उदय प्रकाश जी ने मोहनदास कहानी का ताना-बाना बुना है। यह काफी लंबी कहानी है। इसे लघु उपन्यास भी कहा जा सकता है। 'मोहन दास' चरित्र प्रधान कहानी है। जिसमें मोहन दास, कस्तूरी बाई, विश्वनाथ मुख्य पात्र है। तो गौण पात्र के रूप में काबा दास, पुतला बाई, देवदास, शारदा, गोपाल दास, हर्षवर्धन सोनी, गजानन माधव मुक्तिबोध, हरिशंकर परसाई, शमशेर बहादुर सिंह, नगेंद्रनाथ, विजय तिवारी, घनश्याम, एस. के सिंह, ए. के श्रीवास्तव, अमिता, बीरन बैगा, रासबिहारी राय आदि पात्रों का चित्रांकन हुआ है।

नाम-रूप की समानता 'मोहन दास' की और एक प्रमुख विशेषता है। लेखक ने पात्रों को मोहनदास, काबादास, कस्तूरी, देवदास जैसे नाम दिये हैं जो हमें महात्मा गाँधी परिवार का स्मरण दिलाता है। गाँधीजी के परिवार के लोगों के नामों के साथ-साथ कुछ श्रेष्ठ हिन्दी साहित्यकारों के नाम का भी इस्तेमाल लेखक ने किया है, वे हैं गजानन माधव मुक्तिबोध, शमशेर बहादुर सिंह, हरिशंकर परसाई, श्रीकान्त वर्मा आदि।

3.3.1 मोहन दास : मुख्य पात्र

3.3.1.1 मोहन दास :

उत्तरआधुनिकता के हिंदी कहानीकार उदय प्रकाश जी की 'मोहन दास' कहानी का केंद्रीय पात्र मोहन दास है। मोहन दास पुरबनरा गाँव का रहनेवाला कबीर पंथी दलित युवक है। मोहन दास अपनी जात-बिरादरी का पहला लड़का है जिसने बी. ए. पास किया वह विश्वविद्यालय की टॉपर्स सूची में पहले नंबर पर रहता है। मोहन दास की उम्र पैंतीस सैंतीस वर्ष थी। मोहन दास की शादी कस्तूरी से हुई। कस्तूरी-मोहन दास को दो संतानें हैं बेटा देव दास और बेटी शारदा। घर में बाप काबा दास आठ साल से टी. बी. पेशन्ट है और माँ पुतली बाई किसी मुफ्त नेत्र शिबिर में अपनी आँखें गँवा बैठी है। मोहन दास बहुत सीधा, संकोची

और स्वाभिमानी व्यक्तित्त्व वाला है। वह नौकरी के लिए किसी के पास चापलूसी नहीं करता। वह नीडर है लेकिन सत्ता तथा पुलिस के तंत्र का उसे बार-बार शिकार होना पड़ा।

- **गरीब, शिक्षित दलित युवक की व्यथा :**

एक शिक्षित और गरीब दलित की आर्थिक विपन्नता और दुरावस्था का लंबी कहानी में दिलतोड वर्णन है। गरीब मोहन दास और पत्नी कस्तूरी दोनों दिन-रात मज़दूरी करते हैं, नदी तट पर खेती का प्रयत्न करते हैं, लेकिन बाढ़ के कारण उसका विनाश होता है। हताश मोहन दास के लिए बच्चे का जन्म भी डरावना है क्योंकि बच्चों की देखरेख के लिए धन चाहिए। मोहन दास के बाप काबा दास, जिसे पिछले आठ साल से टीबी है, इसके इलाज के लिए वह पैसों का इंतजाम नहीं कर पा रहा है। मोहन दास की माँ पुतलीबाई जिसकी आँखें किसी मुफ़्त नेत्र शिविर में मोतियाबिंद का ऑपरेशन कराने के बाद अंधी हो चुकी है। उसकी बीवी कस्तूरीबाई मोहनदास के काम में हाथ बंटाती है और घर का चूल्हा चौका संभालती है। आठ साल का देव दास स्कूल के बाद गाँव के पास से गुज़रनेवाली सड़क पर खुले 'दुर्गा ऑटो वर्क्स' में गाड़ियों में हवा भरने, पंचर जोड़ने और स्कूटर-मोटर साइकिलों के छोटे-मोटे रिपेयर में हेल्पर का काम करता है। दूसरी कक्षा की छात्रा शारदा पढ़ाई के बाद ढाई किलोमीटर दूर बिछिया टोला जाकर विश्वनाथ प्रसाद के एक साल के बेटे को संभालने और उनके घरेलू काम-काज में लमरा पहुँचती है।

- **बेरोजगार युवक :**

मोहन दास कबीर पंथी है। ना उसके पास जमीन है ना जायदाद। जीवन जीने और अपने परिवार का पालन करने के लिए संघर्ष करता दिखाई देता है। मोहन दास ने अपनी जात बिरादरी से पहली बार बी.ए की परीक्षा पास की है और वह भी फर्स्ट डिवीजन के साथ, विश्वविद्यालय की टॉपर सूची में आकर। मोहन दास जब बी.ए की डिग्री के आधार पर नौकरी ढूंढता है तो उसे हर बार सवर्ण जाति एवं सवर्णों द्वारा निर्मित लोकतांत्रिक व्यवस्था का सामना करना पड़ता है। मोहन दास ने 'रोजगार समाचार' में आने वाले कई विज्ञापनों को देखकर अर्जियां भेजी लेकिन उसको हर जगह किसी न किसी कारण से हार का सामना करना पड़ता है। हर बार सिफारिश, अफसर, नेता, बड़े जाति वाला कोई ना कोई उसकी नौकरी में रोड़ा बन जाता है। आर्थिक विवशता और किसी की सिफारिश ना होने के कारण उसे बेरोजगार रहना पड़ता है। पंडित छत्रधारी तिवारी का बेटा बड़ी मुश्किल से थर्ड डिवीजन में पास होता है। अपने ससुर की तिकड़म और सिफारिश पर पुलिस इंस्पेक्टर बन जाता है। वही विजय तिवारी मोहन दास को कहता है, सरकारी योजना में दस पैसे खरीदी है, अगर चाहो तो तुम अपनी पत्नी को साथ लेकर हमारी भैसे संभाल लो। हर महीने की पहली तारीख को तनख्वाह देंगे। विजय तिवारी मोहन दास को नीचा दिखाने के लिए यह सब कहता है। विजय तिवारी मोहन दास से पढ़ाई में कई गुना कम था। लेकिन सिफारिश से नौकरी पाता है। साथ ही सवर्ण के लोग सरकार द्वारा जो योजनाएं आती है उस पर कब्जा करते हैं, अपने ही लोगों को इन योजनाओं का लाभ दिलाते हैं। मोहन दास कहता है सरकार की ओर से जब कोई भी योजना आती है तो वह सवर्णों में ही बट जाती है।

- **आर्थिक समस्याओं से जूझता मोहन दास :**

मोहन दास के परिवार में पांच सदस्य है। जिनकी जिम्मेदारी मोहन दास पर है। उसका बाप आठ सालों से टी.बी से पीड़ित है। उसकी माँ पुतलाबाई अंधी बन चुकी है। बीबी कस्तूरी घर संभालती है। दो बच्चे उसका हाथ बंटाते है। आर्थिक विवंचना के कारण उसका आठ साल का बेटा ऑटो वर्क्स में गाड़ियों में हवा भरने का, पंचर निकालने का काम करता है। बच्ची शारदा जो छह साल की है दूसरों के बच्चे संभालने का काम करती है, इसके बदले में उसे पैसे और एक वक्त की रोटी मिलती है। पत्नी आस - पड़ोस में भी काम करने जाती है। माता-पिता भी अपनी और से जो हो सके मदद करते रहते हैं। मोहन दास नौकरी न मिलने पर कठिना नदी के रेत में सब्जी उगाने का काम करता है। लेकिन एकाद साल ठीक से निकलता है। अगले ही वर्ष कठिना नदी के पानी में सब बह जाता है। इससे भी वह हारता नहीं है। परिवार को चलाने के लिए बाँस और छींदी की चटाई, खोंभरी और पकउथी बुनने का काम करता है।

मोहन दास की आर्थिक दशा बद से बदत्तर होती जा रही थी। उसका निर्धन परिवार उखड रहा था। मोहन दास के रोग पीड़ित पिता खांसकर मर गए, माँ की अवस्था भी दारुण थी। उसके बच्चे बाल मजदूरी करने लगे। मोहन दास और पत्नी कस्तूरी के कठिन प्रयत्न के बावजूद उन्हें इस दुरावस्था से मुक्ति नहीं मिली।

- **हक से वंचित मोहन दास :**

मोहन दास पढ़ा लिखा होने के बावजूद भी बेरोजगार था। मोहन दास की सरकारी नौकरी पाने की उम्र पार करती गई। अब उसने प्राइवेट नौकरी करने का निर्णय ले लिया था। लेकिन वह कहीं भी जाए उसके पास पैसों और सिफारिश की कमी थी। इसी कारण उसे कहीं पर भी नौकरी नहीं मिलती थी। इसी प्रकार वह हर जगह नौकरी के लिए जाता, लिखित परीक्षा में सबसे ऊपर होता लेकिन जब इंटरव्यू होता तो खारिज कर दिया जाता। वह देखता कि उसकी जगह आठवीं-दसवीं पास थर्ड, सेकंड डिवीजन बी. ए वाले लड़के नौकरियों में लिए जाते हैं। हर कोई किसी अफसर, नेता या बड़े आदमी का दामाद, बेटा, भतीजा, भांजा या चापलूसी करने वाला कोई कर्मचारी होता है। मोहन दास को सबसे बड़ा धक्का तब लगता है जब उसकी जगह मोहन दास बनकर कोई और ही चार साल से नौकरी कर रहा है। उसे समझ में ही नहीं आता की कोई आदमी आखिर दूसरा आदमी कैसे बन सकता है। मोहन दास की समझ के बाहर है कि कोई आदमी किसी दूसरे आदमी की पहचान छीन कर कैसे मजे में रह सकता है। मोहन दास की जगह पर काम करने वाला व्यक्ति हर महीने दस हजार रुपये लेता है और लेनिन कॉलोनी में रहता है। जिसका असली हकदार मोहन दास और उसका परिवार है। अपना हक पाने का प्रयास मोहन दास करता है, लेकिन व्यवस्था और भ्रष्टाचार के कारण अंत में हार जाता है।

- **सत्ता और पुलिस के तंत्र का शिकार :**

मोहन दास भ्रष्ट व्यवस्था, भाई-भतीजा वाद, रिश्वतखोरी, आतंक, सत्ता और पुलिस के तंत्र का शिकार होता है। उसकी नेकी, ईमानदारी और गरीबी उसे नौकरी दिलाने में समर्थ नहीं है। इसे भी भयानक

स्थिति यह है कि उसके प्रमाण पत्र और पहचान लेकर बिसनाथ उसकी जगह पर चार साल से नौकरी करता है। जब इस बात का पता मोहन दास को लगता है, तो वह विद्रोह करता है। तब विजय तिवारी नामक पुलिस इंस्पेक्टर जो मोहन दास का कॉलेज का सहपाठी था वही विश्वनाथ की मदद् करता है। मोहन दास को डरा धमका कर वहां से गांव भेज देता है। बाद में मोहन दास हर्षवर्धन की मदद् से बिसनाथ और नगेंद्रनाथ के खिलाफ धोखाधड़ी का केस दर्ज करता है। भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी की जड़े व्यवस्था का आधार बने हुए हैं। इसी वजह से मोहन दास और हर्षवर्धन टूट जाते हैं। हिम्मत करते हुए न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध जी को मिलते हैं। वह अपने अधिकारों का उचित प्रयोग करते हुए मोहन दास को न्याय दिलाने में कामयाब होते हैं। पर व्यवस्था वह लोहा है, जिसके सामने सत्य, ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा, मूल्य एवं संस्कार सूखे पत्ते जैसे ही शक्तिहीन और बेबस होते हैं। न्यायिक दंडाधिकारी मुक्तिबोध की मृत्यु होती है, तभी विश्वनाथ का केस सत्ताधारी पार्टी के वकील के द्वारा लड़ा जाता है। तो मोहन दास के सामने एक और समस्या आती है। विश्वनाथ के वकील रास बिहारी राय विश्वनाथ और उसके पिता की जमानत कराते हैं। पुलिस, वकील और विश्वनाथ मिलकर एक नया षड्यंत्र रचते हैं। बाद में विश्वनाथ मोहन दास बनकर लेनिन नगर कॉलोनी में लोगों को पीटना, चोरी करना आदि क्रिमिनल वारदात करता है। भ्रष्ट व्यवस्था के रक्षक असली मोहन दास को गिरफ्तार करते हैं और हड्डियां टूटने तक पिटाई करते हैं। गरीब, लाचार मोहन दास व्यवस्था के सामने बेबस होकर कहता है, 'मैं किसी भी अदालत में चलकर हालफनामा देने के लिए तैयार हूं कि मैं मोहन दास नहीं हूं।' मोहन दास व्यवस्था के आतंक से भयभीत हुआ है परिवार के लोग डरे हुए हैं कि किसी भी क्रिमिनल वारदात के लिए असली मोहन दास को पकड़ना या पुतलाबाई की कुएं में गिरकर मौत होना भी विश्वनाथ द्वारा मोहन दास के बेटे को गायब करना आदि घटना के कारण मोहन दास व्यवस्था के सामने शरण जाता है।

- **संघर्षशील :**

मोहन दास भ्रष्ट व्यवस्था से प्रताड़ित पात्र है। व्यवस्था उसे सब कुछ छीन लेती है, पर मोहन दास जीवन जीने के लिए संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है। बिसनाथ उसके प्रमाणपत्र, नौकरी और पहचान चुरा लेता है। अपनी पहचान, डिग्री प्रमाणपत्र नौकरी पाने के लिए संघर्ष करता है। मोहन दास दुनियादारी से बहुत ही दूर था। जब ओरियंटल कोल माइंस कंपनी द्वारा उसे नौकरी पाने की आशा समाप्त होती है तो वह अपनी गाँव की कठिना नदी के तट पर मतीरा, खरबूज, लौकी, तरबूज, टमाटर, काकडी लगाता है। जिसे उसके परिवार को कम से कम रोटी तो नसीब हो। जब उसे पता लगता है की बिसनाथ उसके नाम पर काम कर रहा है। तब वह ओरियंटल कोल माइंस कंपनी जाता है। अपने साथ हुए अन्याय, धोखाधड़ी के बारे में वहाँ के जनरल मैनेजर एस. के. सिंह को बताता है। जब यहाँ भी उसके साथ धोका ही होता है, तो वह हर्षवर्धन सोनी के कहने पर बिसनाथ के विरोध में अदालत में मामला दाखिल करता है। मोहन दास संघर्षशील चरित्र है। उसे पहले परिवार को संभालने के लिए संघर्ष करना पडता है बाद में उसे नौकरी के लिए भी संघर्ष करना पड़ता है। मोहन दास को अपनी पहचान सबको बताने के लिए भी संघर्ष करना पडता है और कहानी के अंत में वह स्वयं ही अपनी पहचान भुलाने के लिए संघर्ष करता है।

- **ईश्वरवादी :**

मोहन दास आस्तिक दिखाई देता है। कबीर पंथियों की कुलदेवी मलइहा माई और सतगुरु कबीर दास पर उनकी गहरी आस्था थी। जीवन की हर मुश्किल कड़ियों में ईश्वर से प्रार्थना करता था। मलाइहा माई को प्रसन्न करने के लिए मलाई का भोग चढ़ता था। जीवन की पीड़ा खत्म करने, अपने हक को प्राप्त करने के लिए वह मलइहा माई के दहलीज पर माथा टेकता था। मां की आराधना करता है। संत कबीर का नामस्मरण करता रहता है।

- **पराजित मोहन दास :**

न्यायिक दंडाधिकारी मुक्तिबोध के मृत्यू के बाद ही मोहन दास के जीवन का आशा स्त्रोत भी बुझ जाता है। विश्वनाथ ने खबर फैलाई की कोई पागल है जो खुद को मोहन दास कह रहा है, उसे जरा सावधान रहें। विश्वनाथ मोहन दास को पुलिस से गिरफ्तार करवाता है। पुलिस को पैसे देकर मोहन दास के हाथ, पैर, दांत तोड़ देता है। तभी गांव से उसके बेटे का अपहरण होता है। मां कुएं में गिरकर मर जाती हैं। मोहन दास एक बार लेखक को लंगड़ाता हुआ मिलता है और वह उन्हें देखकर बड़ी करूण आंखों से कहता है कि मैं आपसे हाथ जोड़ता हूं, मुझे बचा लीजिए मैं किसी भी अदालत में लिख कर देता हूं कि मैं मोहन दास नहीं हूं। मोहन दास पूरी तरह से हार चुका था उसके चेहरे पर पराजय और पीड़ा की गहरी लकीरें स्पष्ट रूप से झलक रही थी।

सार यह कि 'मोहन दास' के चरित्र के माध्यम से दुःख, मानसिक प्रताड़ना, संघर्ष, बेबसी और लाचारी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। निरंकुश शासकों की बर्बरता, अनैतिकता और पतन को मोहन दास के चरित्र के माध्यम से प्रस्तुत किया है। मोहन दास के चरित्र के माध्यम से समाज में चल रहे खुलेआम भ्रष्टाचार का मुखौटा उतारा है, जो समाज सेवा के नाम पर अपनी जेब भरने वालों का पर्दाफाश किया है। भ्रष्टाचार इतना सर्वव्यापी हो चुका है कि प्रतिभावान व्यक्ति समाज की क्रूरता का शिकार है। मोहन दास उन सभी युवकों का आईना है, जो उच्चशिक्षित, ईमानदार है तथा बेरोजगारी से पीड़ित अपने आत्मसम्मान के लिए जूझ रहे है। भारत देश की विडंबना यह है कि आजादी के साठ साल बाद भी हमारे देश में मोहन दास की संख्या बढ़ रही है।

3.3.1.2 विश्वनाथ प्रसाद उर्फ बिसनाथ :

बिसनाथ कहानी के शुरू से लेकर अंत तक खलनायक की भूमिका में ही प्रस्तुत होता है। जो गरीबों पर अन्य अत्याचार करता है। धोखाधड़ी करना, गबन, चापलूसी करना, भ्रष्टाचार, जालसाजी, फरेब, चोरी जैसे जुर्म करता है। एक क्रूर व्यक्तित्त्व के रूप में बिसनाथ उपस्थित है।

- **ऊंची जाति वाला :**

बिछिया गांव का ऊँची जाति वाला बिसनाथ है। बड़े किसान और जीवन बीमा निगम में बाबूगिरी करने वाले नगेंद्र नाथ की कलेक्टर से लेकर मंत्री तक पहुंच है। विश्वनाथ इस नगेंद्र नाथ का पांच में से एक

बेटा है। विश्वनाथ का पिता नागेंद्र नाथ दो बार ग्राम पंचायत के सरपंच और एक बार जिला जनपद के उपाध्यक्ष रह चुका है। बिसनाथ का असली नाम विश्वनाथ प्रसाद है लेकिन गांव के लोग उसे बिसनाथ बुलाते हैं। बिसनाथ को उसके पीठ पीछे गांव के लोग सांप का बच्चा गजब का विष धारी कहते हैं। विश्वनाथ के पास एक ही चीज नहीं है, वह है ईमान। उसकी जान पहचान ऐसे लोगों से है जिनके बारे में कभी कोई नेक बात कहीं या बोली नहीं जाती।

- **गरीब का हक, छीनने वाला :**

बिसनाथ के बाप नगेन्द्र नाथ ने भर्ती दफ्तर के बाबू को पटाकर मोहन दास वाली नौकरी का लेटर अपने आवारा बेटे बिसनाथ को दे दिया। मोहन दास द्वारा साक्षात्कार के दिन जमा किये गये प्रमाणपत्रों और अंकसूचियों में मोहन दास के फोटो नहीं थे, इसका फायदा उठाकर बिसनाथ ने खुद को मोहन दास के रूप में प्रस्तुत कर दिया और हर जगह मोहन दास की जगह अपना फोटो लगा कर अदालती हलफनामे से लेकर गजेटेड अफसर तक से उसे प्रमाणित करा लिया। इस तरह बिसनाथ ओरियंटल कोल माइंस में मोहन दास बल्द काबा दास, जात कबीरपन्थी विश्वकर्मा बनकर इत्मीनान से डिपो सुपरवाइज़र की नौकरी करने लगा और दस हज़ार माहवारी पगार लेने लगा।

चार साल से बिसनाथ मोहन दास बनकर यह नौकरी कर रहा है। बिसनाथ ने अपने गाँव बिछिया टोला में रहना चार साल से छोड़ दिया है और अब ओरियंटल कोल माइंस की वर्कर्स कॉलोनी 'लेनिन नगर' में बाल-बच्चों समेत रहने लगा है, जहाँ उसकी पत्नी ब्याज पर रुपया उठाने का धन्धा करती है और चिट फंड चलाती है। मजे की बात यह है कि लेनिन नगर में रहने वाले सभी लोग बिसनाथ को 'मोहन दास' और उसकी पत्नी अमिता को 'कस्तूरी मैडम' के नाम से ही जानते हैं। बिसनाथ मोहन दास की तरह बी. ए. तो है नहीं, दसवीं फेल है इसलिए कालरी में काम करने की बजाय अफसरों की चापलूसी, कोयले की तस्करी और यूनियनबाज़ी में लगा रहता है। दस हज़ार कर माहवारी पगार और लेनन नगर के वर्कर्स कॉलोनी में रहने का असली हकदार मोहन दास था। जो अमिता 'कस्तूरी मैडम' के नाम से जानी जाती थी वह सब सुख सुविधा कस्तूरी के हक में होनी आवश्यक थी। लेकिन बिसनाथ ने बड़े ही होशियारी से मोहन दास के हक का सब कुछ छीन लिया था।

- **दूसरे व्यक्ति की पहचान मिटाने वाला :**

बिसनाथ अपने मित्र पुलिस इंस्पेक्टर विजय तिवारी के साथ मिलकर मोहन दास की पहचान मिटाने का प्रयास करता है। मोहन दास जब लेनिन नगर जाता है तब उसे पता चलता है कि विश्वनाथ मोहन दास बनकर चार साल से नौकरी कर रहा है। उसने रोजी-रोटी ही नहीं पहचान भी छीन ली है। विश्वनाथ और विजय तिवारी लेनिन नगर में मोहन दास को देखकर चुप हो जाते हैं। दोनों पुलिस गाड़ी में बैठकर तेज रफ्तार से मोहन दास की तरफ आते हैं जैसे की वह जीप मोहन दास को कुचलने के लिए निकली हो। अचानक जीप रुकती है। विजय तिवारी कहता है 'खंभे ने बचा लिया ससुर नहीं तो अभी लोथ बन गया होता।' फिर भी मोहन दास अपनी जगह से हिलता नहीं यह देखकर विजय तिवारी अपनी गाड़ी का जोर-

जोर से बार-बार हार्न बजाता है और इसके बाद अचानक गाड़ी के ऊपर लगे स्पीकर्स में उसकी आवाज चारों और गूंज उठी, ''अरे ए... बिसनाथ, गाड़ी के आगे क्यों कूदा, बिसनाथ? तेरा दिमाग सनक गया है क्या बिसनाथ? अरे बिसनाथ, बोलता क्यों नहीं? बहिरा हो गया है रे का बिसनाथ। बिसनाथ...अरे ओ बिसनाथ!'' विजय तिवारी बड़ी चालाखी के साथ लेनिन नगर में जो लोग देख रहे थे उन्हें मोहन दास की पहचान बिसनाथ नाम देकर करता है साथ ही वह सनकी है ऐसा साबित करना चाहता है। जिससे बिसनाथ का काम आसान हो जाता है। पुलिस की वर्दी आम जनों की रक्षा के लिए नहीं पूँजीपति की चापलूसी करने में समय बीताती हुई दिखाई देती है।

- **भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला :**

कहानी के शुरू से लेकर अंत तक विश्वनाथ भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने वाला दिखाई देता है। हर्षवर्धन सोनी और मोहन दास गवाहों की खोज करते हैं तथा न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध जिलाधिकारी को छानबीन का आदेश देते हैं। यह खबर सभी अखबारों में छप जाती है असली मोहन दास कौन? विश्वनाथ चौकन्ना होता है। प्रशासन में अपनी जान पहचान का उपयोग करके और रिश्वत, घूस देकर मामला निपटा देता है। जिलाधिकारी तहसीलदार को, तहसीलदार, नायब तहसीलदार को, नायब तहसीलदार- रेवेन्यू उर्फ आर. आई उर्फ कानूनगो और वह आदेश पटवारी को दिया जाता है। पटवारी जो रिपोर्ट देता है वही रिपोर्ट जिलाधिकारी को होती है। विश्वनाथ पटवारी को दस हजार रुपये की घूस देता है। पटवारी यही मोहन दास है ऐसी रिपोर्ट बनवाता है। हर्षवर्धन सोनी ने तैयार किये गवाह विश्वनाथ के डर से मोहन दास के खिलाफ गवाही देते हैं। इस प्रकार जिलाधिशों की इंक्वायरी, अदालत की सारी गवाहियों से विश्वनाथ को ही मोहन दास साबित करती है। हर्षवर्धन सोनी और मोहन दास भ्रष्टाचार के कारण हताश होते हैं।

- **न्याय को खरीदने वाला :**

'हर्षवर्धन सोनी और मोहन दास' के पास एक ही आशा थी, न्यायिक दंडाधिकारी गजानन मुक्तिबोध। उन्होंने आपने आपात्कालीन सुरक्षित न्यायिक अधिकार का इस्तेमाल करते हुए, स्वयं इस मामले की 'गोपनीय जांच' की और आदेश दिया बिसनाथ और उसके पिता नगेद्र नाथ को जालसाजी, धोखाधडी, फरेब, चोरी और गबन के जुर्म में इंडियन पीनल कोड की धारा 149/420/468/467 और 403 के तहत गिरफ्तार कर के जेल भेज दिया। हर्षवर्धन सोनी और मोहन दास दोनों इस जीत से बहुत खुश हुए। इसके बाद ही गजानन माधव मुक्तिबोध की मृत्यु की खबर आती है। इसका लाभ रास बिहारी राय विश्वनाथ के वकिल उठते हैं। रास बिहारी राय विश्वनाथ के वकिल थे और सत्ताधारी पार्टी के बड़े नामी-गिरामी नेता तथा मौजूदा राजनीति के मंजे खिलाडी थे। अपनी सत्ता का उपयोग करते हुए उन्होंने नगेंद्र नाथ और विश्वनाथ की अदालत की पहली तारीख को जमानत करा दी। दोनों को जेल से रिहा कराते वक्त भ्रष्ट पुलिसों के साथ मिली भगत करते हुए उन्होंने चालकी से विश्वनाथ का नाम मोहन दास ही दर्ज किया क्योंकि अदालत ने अंतिम फैला सुनाया नहीं था। पुलिस के दस्तावेजों और आधिकारिक कागजात में,

अनूपपुर जेल से जो दो कैदी जमानत पर रिहा किये गए वे अपने पुराने नामों मोहन दास उर्फ विश्वनाथ और काबा दास उर्फ नगेंद्र नाथ के नाम से ही जेल से बाहर थे। उन दोनों के रिहाई दस्तावेजों पर विश्वनाथ और नगेंद्र नाथ ऐसे लिखे गए थे कि लिखने वाला भी पढ़ नहीं सकता है।

- **राजनीति और प्रशासन की सहायता से अत्याचार करने वाला :**

राजनीतिक, पुलिस और प्रशासन व्यवस्था की मद्द से बिसनाथ खुले आम घूमता है। वह खुलकर राजनीति में प्रवेश कर चुका था और जिला जनपद के अध्यक्ष पद का चुनाव लड़ रहा था। भ्रष्ट प्रशासन और पुलिस व्यवस्था की ताकत पाकर विश्वनाथ कहता है, असली मोहन दास कौन है और नकली कौन है, इसका फैसला तो हम करेंगे। उस ससुर दो कौड़ी के फटीचर ने हमारी इज्जत पर बट्टा लगाया, लगी लगाई नौकरी छीनी, अब हम अपनी ताकत उसे दिखा देंगे। मोहन दास को परेशान करने के लिए बिसनाथ अब नए-नए तरीके ढूंढ लेता है।

बिसनाथ लेनिन नगर में कोई न कोई क्रिमीनल वारदात करता है। जैसे कि किसी के साथ मारपीट, कभी किसी की चेन खीच लेता था। पुलिस थाने में केस दर्ज होती तो मोहन दास के नाम से ही होती थी क्योंकि लेनिन नगर के लोगों को बिसनाथ मोहन दास के नाम से ही परिचित था। भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था असली मोहन दास को उठाकर लाती क्योंकि बिसनाथ ने पुलिस इंस्पेक्टर विजय तिवारी से मिलकर थाने के सिपाहियों को खिला-पिला दिया था। उन्होंने मोहन दास को पीट-पीट कर उसके हाथ-पैर तोड़ते हैं। वह चल फिर नहीं सकता। देव दास दस दिन से घर लौटा नहीं था। लोग कहते है कि उसे बिसनाथ ने गायब करा दिया है।

- **क्रूर चरित्र का बिसनाथ :**

बिसनाथ का चरित्र क्रूर है। बिसनाथ के गांव के लोग उसे गजब का विषारी कहते हैं। किसी को फूंक मार दे तो समझो कि उसकी नौबत आ गई। बाप नागनाथ तो बेटा साँपनाथ है। अगर किसी को देखकर मुस्कुरा रहा है और मीठी बातें बोल रहा है तो बस उससे होशियार रहना है। उसकी मुस्कुराहट और मीठी बातें डंसने की पूरी तैयारी होती है। कभी-कभी शराब पीने के बाद वह खुद कहता है, एक की टोपी दूसरे को पहनने में जो मजा है वह किसी स्त्री के साथ भी नहीं आता। बिसनाथ अंत में पुलिस इंस्पेक्टर विजय तिवारी से मिलकर थाने की सिपाहियों को खिला-खिला कर रखता है। उन्होंने मोहन दास को पीट-पीट कर उसके हाथ पैर तोड़ डाले हैं वह चल फिर नहीं पाता। विश्वनाथ की क्रूरता इस हद तक पहुंच जाती है कि, मोहन दास खुद को और परिवार को बचाने के लिए अपना हक और पहचान छोड़ने को तैयार हो जाता है।

सार यह कि बिसनाथ के माध्यम से वर्तमान भारतीय सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था तथा भ्रष्टाचार का चित्रण इस चरित्र के माध्यम से किया है। गरीबों, दलितों पर अन्याय अत्याचार करने वाले चरित्र का चित्रण मिलता है। वर्तमान कालीन दूषित राजनीति और पुलिस के गठबंधन का चित्रण बिसनाथ के माध्यम से किया गया है।

3.3.1.3 कस्तूरीबाई :

'मोहन दास' कहानी में कस्तूरी संघर्षशील स्त्री चरित्र के रुप में उभरकर आयी है। कहानी के नायक मोहन दास की पत्नी है। कस्तूरी मोहन दास को अंत तक साथ देती है। वह मोहन दास का बार-बार ढाँढ़स बाँधती रहती है। कस्तूरी के माध्यम से स्वाभिमानी भारतीय स्त्री का चरित्र उभरकर आता है। कस्तूरी के माध्यम से लेखक ने भारतीय नारी के संघर्षशील और आत्मनिर्भर चरित्र का चित्रांकन किया है। जिसका विवेचन विश्लेषण निम्न लिखित रूप से प्रस्तुत है।

- **पति का साथ देनेवाली :**

कस्तूरी 'मोहन दास' कहानी की नायिका है। मोहन दास की पत्नी है। कस्तूरी को मोहन दास की परछाई कहा जाता है। कस्तूरी अपने पति के काम में हाथ बटाती है। घर का चूल्हा चौका संभालती है। आज तक लोगों ने कस्तूरी को अपने पति से लड़ते झगड़ते नहीं देखा। वह मोहन दास के हर सुख-दुख में कदम कदम पर उसका साथ देती है। आम गृहस्थी में संघर्षपूर्ण जीवन जीते समय एक पत्नी, मां, बहू सभी रूपों में खरी उतरती है। कस्तूरी के दो बच्चे हैं, एक बेटी और एक बेटा जिनकी भविष्य की चिंताएं उसे सताती है। आर्थिक विपन्नता में भी अपने पति को हारने नहीं देती। विवाह करते हुए अनेक सपने देखकर आई थी। लेकिन उसे उन सपनों को दूर कर अपने पति की आर्थिक और मानसिक स्थिति में सहारा बनना पड़ता है। हर रोज उसे सुबह से लेकर रात तक परिवार की जिम्मेदारियां संभालती है। कस्तूरी और मोहन दास के बीच अनेक समस्याओं के बावजूद प्रेम जीवित है। वह मोहन दास को कभी कमजोर होने नहीं देती। पत्नी के रूप में कस्तूरी एक आदर्श भारतीय नारी का उदाहरण है।

- **मेहनती :**

कस्तूरी मेहनती थी। ससुराल आते ही उसने घर का सारा काम ही नहीं संभाला बल्कि आसपास छोटी-मोटी मजदूरी करके कुछ रुपए भी कमाना शुरू किया, जिससे मोहन दास की पढ़ाई का खर्च निकल सके। कस्तूरी मेहनती स्त्री चरित्र के रूप में उभर कर आई है। कस्तूरी मोहन दास को अंत तक साथ देती है। वह मोहन दास का बार-बार हौसला बढ़ाती रहती है। मोहन दास को कस्तूरी कहती है कि अगर सरकारी नौकरी नहीं मिली तो प्राइवेट करेंगे वह भी नहीं मिली तो कोई धंधा करेंगे नहीं तो कठिना नदी की रेत तो है ही जिसमें हम ककड़ी, तरबूज, खरबूज उगाकर उसे बेच कर अपना जीवन जी लेंगे। कस्तूरी गांव मोहल्ले में खेत मजदूरी के अलावा फसल की तकवानी का काम कर लिया करती थी। साथ ही साथ अपने सास, ससुर की सेवा भी करती थी। मोहन दास के काम में हाथ बटाती। जिसमें बाँस और छींदी की चटाई, खोंबरी और पकउथी बुनने में भी वह मदद करती। जिससे परिवार की आर्थिक दशा में सुधार ला सके।

- **सवर्णों के नजरों से खुद को बचाने वाली :**

कस्तूरी दिखने में बहुत सुंदर थी। मोहन दास को वह किसी कारीगर ने छीनी-हथौड़ी लेकर मन लगाकर वर्षों में धीरे-धीरे गढ़ी मूर्तियों जैसी लगती थी। इसी कारण मोहन दास का सहपाठी विजय तिवारी

के साथ गांव के अनेक लोगों की नजर कस्तूरी पर थी। गरीबों और दलितों की सुंदर पत्नियों पर उच्च वर्ग की नजर सदा पड़ती है। इसी प्रकार विजय तिवारी अपनी ससुर की तिकड़म और सिफारिश पर पुलिस में सब इंस्पेक्टर बना था। वह हमेशा कस्तूरी पर गंदी नजर रखता था। कस्तूरी को पाने के लिए वह मोहन दास को कहता है कि उसे जो सरकारी योजना के तहत दस भैसे मिली है, उनकी देखभाल करने के लिए तुम हमारे यहां आ जाओ। साथ में कस्तूरी को भी लेकर आना। जिससे कस्तूरी उसके हाथ लगे। कस्तूरी विजय तिवारी और गांव के लोगों की नजरों से अच्छी तरह से वाकिफ थी। इसीलिए जहां भी जाए अपने साथ कमर में खुँसी हुई हंसिया निकाल कर अपने बचाव के लिए तैयार ही रहती है। एक दिन कस्तूरी गांव की दो-तीन महिलाओं के साथ सुबह-सुबह झाड़ी में जाती है। तब उसे लगता है कि कोई झाड़ी में छिपकर उसे देख रहा है। तब वह उन स्त्रियों के साथ कमर की खुँसी हुई हंसिया निकाल कर आगे बढ़ती है तो विजय तिवारी झाड़ी से निकलकर भागने लगता है। कस्तूरी भी उसे मारने के लिए उसके पीछे दौड़ती है और जी चाहे गालियां देती है। कस्तूरी दो बच्चों की मां बन जाने के बाद भी गांव में सबसे सुंदर औरत थी। इसी कारण गांव के ठाकुर, ब्राह्मण जैसे उच्च जातिवालो की नजरें गिद्ध की तरह उस पर गढ़ी रहती है। इन नजरों से खुद को बचाने का काम कस्तूरी को करना पड़ता है।

- **संघर्षशील :**

कस्तूरी जब ब्याहकर मोहन दास के घर आई है तब से उसकी पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, प्राकृतिक घटनाओं से संघर्ष होता ही रहा है। लेकिन सबसे बड़ा संघर्ष उसे मृत्यु के साथ करना पड़ा था जब देव दास को जन्म दे रही थी, तो प्रसव के दौरान कस्तूरी को मृत्यु घोषित किया था। नाल गले में फस जाने से बच्चा आधाबीच में ही अटक गया और प्रसव कराने आई दाई ने घबराकर पीड़ा में बेहोश कस्तूरी को मरा हुआ घोषित किया। इस प्रकार कस्तूरी को मृत्यु से भी संघर्ष करना पड़ा था साथ ही पति की समस्याओं में, पति के संघर्ष में बराबर सहारा बनी रहती है।

- **संवेदनशील और करुणामयी :**

कस्तूरी संवेदनशील और करुणामयी नारी है। नारी के मन पर दुःख कातर होता है। अपनों की तथा दूसरों की हालत उसे देखी नहीं जाती। इसी प्रकार मोहन दास जब अपना हक मांगने ओरिएंटल कोल माइंस में जाता है तो वहा से उसे मारा धमकाकर गांव भेज दिया जाता है। जो मार की चोट और खरोचों के निशान देखकर कस्तूरी चिंतित होती है। पति से इसके बारे में पूछती है। वह घाव देखकर समझ जाती है कि यह मारने-पीटने के घाव है। कस्तूरी की आंखें भर आती है उसे पता था कि आज उसके पति के साथ कोई हादसा हुआ है। उस रात कस्तूरी पति की चिंता से देर रात तक सोई नहीं है। जब मोहन दास इस हादसे के बाद नशा करके आता है, तो कस्तूरी उस पर गुस्सा होने के बजाय उसका नशा उतारने का प्रयास करती है। उसे पता है मोहन दास हमेशा नशा नहीं करता है। लेकिन जो घटनाएं घटी है उसके कारण ही उसने नशा किया है। ऐसी स्थिति में भी वह पति का नशा उतारने लगी और मोहन दास की हालत देखकर उसे सहा नहीं गया तो फूट कर रोने लगी।

- **आर्थिक समस्या से जूझती :**

कहानी की नायिका कस्तूरी को आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। कहानी के शुरू से लेकर अंत तक कस्तूरी आर्थिक विवचना में दिखाई देती है। बेरोजगार और खेती पर काम चलाने वाले युवक की पत्नी को हमेशा से ही दहाडी, मजदूरी करनी पड़ती है। कस्तूरी भी परिवार की आवश्यकता और पति की सहायता के लिए घर के कामों के बाद खेत के और गांव के लोगों के घर के काम करती है। बेरोजगार युवक की पत्नी को हमेशा ही पैसों की कमी महसूस होती है। इसी कारण उसे परिवार चलाने के लिए अपनी ओर से पैसों का इंतजाम करना पड़ता है। जब उसका विवाह हुआ था तो पढ़ा लिखा पति मिलने के कारण उसे अनेक आर्थिक सुविधा मिलनी चाहिए थी। लेकिन कस्तूरी के पति के साथ धोखा होने के कारण जो सुख सुविधा कस्तूरी को मिलनी चाहिए थी, वह सब विश्वनाथ के पत्नी को मिल रही थी। विश्वनाथ की पत्नी कस्तूरी बनकर आर्थिक संपन्नता में अपना परिवार चला रही थी। लेकिन कस्तूरी को हर बार आर्थिक समस्याएं झेलनी पड़ती है।

सार यह कि कस्तूरी के चरित्र के माध्यम से आदर्श भारतीय पत्नी का रूप प्रस्तुत होता है। कस्तूरी मेहनती स्त्री चरित्र के रूप में उभर कर आती है। कस्तूरी के माध्यम से आम भारतीय स्त्री के जीवन का चित्रण किया है। कस्तूरी अपने पति के साथ संघर्ष में खड़ी रहती है। पति की ताकत है वह। कस्तूरी संवेदनशील और करुणामयी होते हुए भी जहां पर कोई उस पर गलत नजर डालता है, वहां पर विद्रोही भी बन जाती है।

3.3.2 मोहन दास : गौण पात्र

3.3.2.1 हर्षवर्धन सोनी :

हर्षवर्धन सोनी मानवीय गुणों से ओतप्रोत है। हर्षवर्धन स्वतंत्र विचारों का संवेदनशील चरित्र है। उसके जीवन में भी उसने अनेक दुःख सहन किए हैं। इसीलिए वह मोहन दास के दुःख को समझ सकता है। उसके बड़े भाई श्रीवर्धन सोनी ने बेरोजगारी से हताश होकर 5 साल पहले ही आत्महत्या की थी। इसीलिए मोहन दास की दुःख भरी कहानी सुनने के बाद वह मोहन दास के प्रति संवेदनशील हो जाता है। बाजार में छोटी दुकान चलाने वाले पिता और स्कूल की मास्टरी करने वाली माता का हर्षवर्धन अब इकलौता बेटा है। हर्षवर्धन अपने भाई की आत्महत्या की घटना को भूल नहीं पाया है। इसीलिए ही पढ़ाई के दौरान ही छात्र आंदोलन आदि में हिस्सा लेने लगा था। उसने अंतरजातीय विवाह किया था और दंड स्वरूप अपनी जाति से उसे बाहर निकाला गया था। हर्षवर्धन सोनी ने एल. एल. बी. कर लिया था और अपने पार्टी के साथ-साथ स्थानीय अदालत में वकालत का काम भी करते हुए अपने आजीविका चलाता था। जब 'स्टार कंप्यूटर सेंटर' में मोहन दास से मिलता है तो मोहन दास अपने साथ घटित हुई घटना का जिक्र हर्षवर्धन के पास करते हैं। हर्षवर्धन को लगता है कि इस केस को लेकर अदालत की शरण में जाना आवश्यक है।

हर्षवर्धन मोहन दास का केस लड़ने के लिए राजी होते हैं। जब मोहन दास के आर्थिक विवचना का अंदाजा आता है तो हर्षवर्धन अदालत में केस दाखिल होने का कुल खर्च पांच हजार रुपए खुद ही जमा करता है। हर्षवर्धन ने अपने पास से कुछ, कुछ दोस्तों से मांग कर और बाकी रुपए लायंस क्लब के चैरिटी फंड से डोनेशन में लिए। यानी मोहन दास की केस के लिए पैसों का पूरा जुगाड़ हर्षवर्धन ही करता है। हर्षवर्धन के पास हमेशा से ही केस लड़ने के लिए जिनके पास पैसे नहीं है ऐसे ही गरीब लोग आते हैं। हर्षवर्धन सोनी और मोहन दास को पूरी उम्मीद थी की न्यायिक दंडाधिकारी मुक्तिबोध की अदालत में उन्हें न्याय मिलेगा। लेकिन बिसनाथ झूठे गवाह और सबूत के बलबूते पर केस अपनी और कर लेता है। तब हर्षवर्धन सोनी बेचैन हो जाता है क्योंकि उसे पता है कि मोहन दास ही असली मोहन दास है। लेकिन उसे साबित कर पाना लगातार कठिन ही नहीं असंभव होता जा रहा है।

जब सामने कोई और रास्ता ना था तो हर्षवर्धन सोनी एक बार मुक्तिबोध को मिलने के लिए जाते हैं। अगर मुक्तिबोध नाराज हो गए तो उसका करियर बर्बाद हो सकता था। लेकिन फिर भी वह मोहन दास के लिए उनके पास चला जाता है। हर्षवर्धन ने हिम्मत करके मोहन दास के केस के बारे में मुक्तिबोध को सब सच बता दिया। मुक्तिबोध की ओर से खुद वह इस मामले में जांच करेंगे कहते हैं, तो हर्षवर्धन का हौसला बढ़ता है। हर्षवर्धन मुक्तिबोध के सहायता से अपराधियों को सजा दिलाने का प्रयास करते हैं। हर्षवर्धन सोनी इस जीत से बहुत खुश होते हैं। हर्षवर्धन चाहते हैं कि मोहन दास को उसकी नौकरी वापस दिलाने के लिए और एक केस ओरिएंटल कोल माइंस पर करेंगे। तभी मुक्तिबोध की मृत्यु हो जाती है और वकील रास बिहारी राय बिसनाथ और उसके पिता की जमानत करते हैं। जब बिसनाथ के कारण मोहन दास को पुलिस बार-बार ले जाकर पकड़ कर मारती है तो हर्षवर्धन की आंखों में असहयाता के आंसू निकलते हैं। हर्षवर्धन के माध्यम से एक संवेदन चरित्र को भी देख सकते हैं। मोहन दास हर्षवर्धन सोनी की मदद से ही प्रशासनिक व्यवस्था के साथ संघर्ष करता हुआ दिखाई देता है।

3.3.2.2 गजानन माधव मुक्तिबोध :

गजानन माधव मुक्तिबोध के माध्यम से एक संवेदनशील और विवेकी चरित्र का चित्रण किया है। मुक्तिबोध एक कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार न्यायिक दंडाधिकारी है। जो गरीब के प्रति अन्याय सह नहीं पाते। मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी है। जो बहुत दुबले थे, जिनके गाल की हड्डियां नुकीली थी और उभरी हुई थी। माथे पर असंख्य आड़ी-तिरछी रेखाएं थी। उन्हें बीड़ी पीना पसंद था। मोहन दास का मामला उनके ही अदालत में दाखिल होता है। तब मुक्तिबोध ओरिएंटल कोल माइंस के अधिकारियों को आदेश देते हैं कि वह साबित करें कि बिसनाथ ही असली मोहन दास है। न्यायिक दंडाधिकारी ने अनूपपुर और दुर्ग जिलाधीशों को आदेश दिया कि वे इस मामले की शासकीय जांच करें और दो सप्ताह के भीतर अपनी जांच रिपोर्ट पेश करें। जब गजानन माधव मुक्तिबोध के सामने अदालत में सारी गवाहियों, सबूत, जांच रिपोर्ट सब बिसनाथ को ही मोहन दास सिद्ध करते हैं तब से मुक्तिबोध बेचैन है। मोहन दास जब केस हार जाता है तब मुक्तिबोध की बेचैनी बढ़ जाती है, कई रातों से वे सोए नहीं थे। उन्हें भी पता है कि मोहन दास ही असली मोहन दास है। जब हर्षवर्धन मुक्तिबोध को मिलने जाते हैं, तो मुक्तिबोध कहते हैं कि मैं जानता हूं कि मोहन दास ही

वास्तविक मोहन दास है, वह दूसरा आदमी फ्रॉड है। मुक्तिबोध हर्षवर्धन से कहते हैं कि तुम चिंता मत करो मेरे पास एक पावर है, गोपनीय न्यायिक जांच, जिससे मोहन दास को न्याय मिल सके।

न्यायिक दंडाधिकारी गजानन मुक्तिबोध अपनी गोपनीय न्यायिक जांच का उपयोग मोहन दास को न्याय दिलाने के लिए करते हैं। न्यायिक दंडाधिकारी ने सुबह फोन करके सरकारी गाड़ी माँगवाई। दूसरा फोन पब्लिक प्रॉसिक्यूटर हरिशंकर परसाई को लगाया। तिसरा शमशेर बहादुर सिंह जो अनूपपुर के एस. एस. पी. थे। यह सभी अधिकारी कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदार अधिकारी थे। चौथा फोन हर्षवर्धन सोनी को स्टैप पेपर लेकर आने के लिए किया था। सभी एक गाड़ी में बैठे। गाड़ी लेनिन नगर पहुँचती है। कस्तूरी उर्फ अमिता को न्यायिक दंडाधिकारी ने मायके का पता पूछा। गाड़ी लेनिन नगर से मिर्जापुर-बनारस सड़क पर दौड़ने लगी। पैंसठ किलोमीटर के बाद वह कच्ची सड़क पर उतरकर दौड़ने लगी और लंकापुर नामक गांव के एक भव्य मकान के सामने रुक गई। उस मकान में रहने वाले लालू प्रसाद पांडे और उनकी पत्नी को सिर्फ दो सवाल पूछे। पहला उनका और उनके पुत्र-पुत्रियों के नाम। दूसरा उनके दामादों के नाम और पते। पब्लिक प्रोसिक्यूटर हरिशंकर परसाई को निर्देश दिया कि हर्षवर्धन सोनी से स्टैंप पेपर लेकर इनका हलफनामा तैयार कर लें। इसके बाद गाड़ी ग्रामपंचायत के सरपंच के घर पर रुकी, जहाँ सरपंच और कुछ गवाहों के बयान दर्ज किये गये। चार दिन के बाद बिसनाथ और उसके पिताजी नगेंद्र नाथ को जी. एम. मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी के आदेश पर जालसाजी, धोखाधड़ी, फरेब, चोरी और गबन के जुर्म में इंडियन पीनल कोड की धारा 149/420/468/467 और 403 के तहत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाता है। आखिरकार मोहन दास को उसकी पहचान और नौकरी वापस मिलने के लिए मुक्तिबोध को ही आगे आना पड़ता है। जिसकी आकांक्षा में मोहन दास न्याय व्यवस्था से संघर्ष कर रहा था।

गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दण्डाधिकारी प्रथम श्रेणी का तबादला अचानक राजनांद गाँव के लिए हो गया और वे अनूपपुर छोड़कर चले गये। अचानक एक दिन ख़बर मिली कि राजनांद गाँव में न्यायिक दण्डाधिकारी जी. एम. मुक्तिबोध का ब्रेन हैमरेज हुआ और उन्हें अचेतावस्था में बिलासपुर के अपोलो अस्पताल में भर्ती किया गया। लेकिन 72 घण्टे तक जीवन-मृत्यु के बीच चले कठिन संग्राम के बाद गजानन माधव मुक्तिबोध, न्यायिक दण्डाधिकार ने अपनी अन्तिम साँस ली।

गजानन माधव मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी अपनी 'सीक्रेट जुड़ीशियल इंक्वायरी' पॉवर का इस्तेमाल करते हुए, लोकतंत्र व्यवस्था को खोखला बनाने वाले भ्रष्ट कीड़ों को पकड़ते हुए ईमानदार, परिश्रमी मोहन दास को न्याय दिलाने में कामयाब होते हैं। मुक्तिबोध के माध्यम से सरकारी, गौर सरकारी इंक्वायरी कमिशन की निरर्थकता का सच सामने आता है।

3.3.2.3 विजय तिवारी

विजय तिवारी के माध्यम से पुलिस व्यवस्था का पर्दाफाश किया है। पुलिस व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार को विजय तिवारी के माध्यम से प्रस्तुत किया है विजय तिवारी मोहन दास के साथ एम. जी. डिग्री कॉलेज में पढ़ता था। दोनों एक ही क्लास में पढ़ते थे। विजय तिवारी पढ़ाई लिखाई में होशियार नहीं था। उसके

पिता पंडित छात्रधारी उसे मोहन दास का उदाहरण दिया करते थे। विजय तिवारी थर्ड डिवीजन में बहुत मुश्किल से बी. ए. पास करता है। लेकिन अपने ससुर की तिकड़मक और सिफारिश पर पुलिस में सब इंस्पेक्टर हो गया था। उसने सरकारी योजना में दस भैसे खरीदी है, डेरी खोलने वाला है। तो वह मोहन दास को भैसे संभालने के लिए काम पर रखना चाहता है। मोहन दास से कहता है कस्तूरी को साथ लेकर तुम भैसे संभालने का काम करो। तुम्हें हर महीने की पहली तारीख को तनख्वाह दे दूंगा, इंदिरा आवास योजना में हम तुम्हारा मकान करवा देंगे। साथ ही कस्तूरी का भी मन गौशाला में लग जाएगा। यह सब विजय तिवारी मोहन दास के प्रति संवेदना के कारण नहीं करना चाहता उसकी नज़रें कस्तूरी पर है। अगर कस्तूरी गौशाला में काम करने आने लगेगी तो उसके हाथ में आएगी। मोहन दास को विश्वनाथ और विजय तिवारी लेनिन नगर में देखते हैं, तो विजय तिवारी मोहन दास को डराने का काम करता है। मोहन दास को गाड़ी से उड़ाने का नाटक करता है, जिससे मोहन दास दहशत में आता है। विजय तिवारी जानबूझकर मोहन दास को लेनिन नगर में बिसनाथ नाम से बार-बार पुकारता है। जिसे लेनिन नगर के लोग मोहन दास को ही बिसनाथ समझे। बिसनाथ का साथ हर पल विजय तिवारी देता रहता है जिससे मोहन दास की परेशानियां और भी बढ़ती रहती है। विजय तिवारी की हमेशा से ही कस्तूरी पर गंदी नज़रें रहती है। बार-बार कस्तूरी को पाने का प्रयास करता है।

विजय तिवारी अपने ही गाड़ी में बिसनाथ को बिठाकर ग्राम पंचायत से लेकर कलेक्टर तक घूस देता है। यह पुलिस यंत्रणा का एक घिनौना कृत्य है। मोहन दास को इसी यंत्रणा ने स्वयं की पहचान गवाने को मजबूर किया।

3.3.2.4 नगेंद्र नाथ

नगेंद्र नाथ के माध्यम से लेखक ने भ्रष्ट, रिश्वतखोर सत्ता का गलत उपयोग करने वाले व्यक्ति का चित्रण किया है। बिछिया गाँव के बड़े किसान और जीवन बीमा निगम में बाबूगिरी करने वाले नगेन्द्र नाथ की कलेक्टर से लेकर मन्त्री तक पहुँच और साख-रसूख है। दो बार ग्राम पंचायत के सरपंच और एक बार जिला जनपद के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। बिसनाथ प्रसाद का पिता है नागेंद्र नाथ। नागेन्द्र नाथ ने भर्ती दफ्तर के बाबू को पटाकर मोहन दास वाली नौकरी का लेटर अपने आवारा बेटे बिसनाथ को दे दिया। ओरिएंटल कोल माइंस के अधिकारियों जांच करने के लिए घर आते हैं तो खुद को मोहन दास का पिता का काबा दास के रूप में प्रस्तुत करता है। मुक्तिबोध न्यायिक दंडाधिकारी के आदेश पर जालसाजी, धोखाधड़ी, फरेब, चोरी और गबन के जुर्म के तहत गिरफ्तार कर जेल भेज दिया जाता है।

लंबी कहानी को आगे बढ़ाने के लिए लेखक ने इसके अलावा अनेक गौण पात्रों की योजना की है। जिसमें अमिता जो कि बिसनाथ की पत्नी है। सवर्ण और उच्चवर्ग की भी है। वह अपने आबरू को बचाने का कोई भी प्रयास नहीं करती है। वरन् स्वयं को श्रीवास्तव जनरल मैनेजर आदि पुरुषों के साथ रहने को तैयार हो जाती है। वह अपने पति बिसनाथ को भ्रष्टाचार में लिप्त होने से रोकने का भी प्रयास नही करती है अपितु अपने पति के हर कृत्य में समान भागीदार बनती है। मोहन दास के पिता काबा दास, मां पुतलाबाई,

बेटा देवदास, बेटी शारदा आते हैं। गोपाल दास, घनश्याम, बीरन बैगा ऐसे चरित्र है जो मोहन दास का हर परिस्थिति में साथ देते हैं।

3.3.3 मोहनदास : संवाद

कथोपकथन या संवाद योजना को कहानी का महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। पात्रों के आपसी संवाद ही 'कथोपकथन' है। इसके माध्यम से ही कहानी का विस्तार एवं कहानी में जान आती है। कहानी में पात्र और परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए संवादों का निर्माण किया जाता है। संवाद जितने प्रभावी होते हैं उतने जल्दी पाठकों का उस पात्रों के साथ रिश्ता जुड़ जाता है। यह संवाद ही पाठकों पर अमिट छाप छोड़ते हैं। संवादों या कथोपकथन के माध्यम से पाठकों में इस प्रकार भावों का निर्माण होता है कि अनायास ही वे संबंधित पात्रों के भावों से जुड़ जाते हैं तथा उनके प्रति अपना राग, द्वेष, प्रेम तथा संवेदनाएँ प्रकट करते हैं। कथोपकथन के माध्यम से कहानीकार संबंधित रचना के प्रति पाठकों की रुचि निर्माण करने का काम करते हैं। जिस प्रकार फिल्म देखते समय अनायास ही हम नायक के पक्ष में हो जाते हैं यही भाव कहानी पढ़ते समय पाठकों के मन में निर्माण हो जाता है। इस कथोपकथन के माध्यम से ही पाठकों की अच्छाईयों के प्रति संवेदना और बुराईयों के प्रति नफरत निर्माण हो जाती है। साथ ही पात्रों के बोलचाल का ढंग आदि के माध्यम से वे किस कोटी के हैं यह समझ में आता है। इसलिए कहानी में कथोपकथन का विशेष महत्त्व है।

'मोहन दास' कहानी में लेखक ने उत्कृष्ट संवादों का प्रयोग किया है। पात्रानुकूल, सरल, सहज, छोटे, गतिशील, जिज्ञासा बढ़ानेवाले संवाद प्रस्तुत है। उनकी कहानी में पात्रानुकूल उद्देश्यपूर्ण संवादों के कारण कहानी के कथानक में गतिशीलता आ गई है। कहानी में शिक्षित पात्र, अशिक्षित पात्र, उच्च वर्ग के पात्र, शहरी तथा ग्रामीण पात्र अपनी-अपनी प्रकृति के अनुसार भाषा का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैं। कहीं - कहीं पात्र शुद्ध हिंदी भाषा बोलते हैं तो कहीं-कहीं लोकभाषा का प्रयोग है।

मोहन दास के माँ-बाप, विश्वनाथ के पिता, बीरन बैगा जैसे ग्रामीण पात्र संवाद के दौरान लोकभाषा का ही प्रयोग करते हैं। कहानी में मोहन दास की माँ पुतलीबाई कहती हैं- ''पुतऊ बस दसऊ की किरपा से बची है। गाँव वाले तो तुलसी-गंगाजली ले के आ गये थे।'' कहानी में जब ग्रामीण अंचल का पात्र प्रकृति से संवाद करता है तो लोकभाषा का ही अवलंब लेता है। जैसे कि मोहन दास नदी देवी से संवाद करते हुए कहता है- ''बस तुम भर आंखी मत काढ़ना कठिना माई। तुम्हें मलइहा माई की किरिया। मेरे बेटे देवदास की किरिया।... मेरे पसीने की उपज से अपने पेट की जठर आगी मत बुझाना कठिना माई...! नहीं तो... दयऊ कसम, बीच असाद तुम्हारी धार में बाल-बच्चा समेत कूद कर तुम्हारा पेट मैं भरूँगा...!?'' इस लोकसंवाद के द्वारा प्रकृति के ज्यादा करीबी होने का अनुभव होता है। कहीं-कहीं पर लेखक ने लोकभाषा के संवादों को कोष्टक में हिंदी में भी दिया है।

लेखक ने कहानी में संक्षिप्त संवादों का प्रयोग भी किया है। कहानी में मोहन दास लेनिन नगर गया जहाँ विश्वनाथ रहता था जो मोहन दास की पहचान बना कर नौकरी कर रहा था। मोहन दास उसकों ढूंढने लेनिन पहुंचाता है। इस बीच सूर्यकांत और मोहन दास के बीच संवाद इस तरह है -

''तुम किसका फ्लैट खोज रहे हो?

सूर्यकांत का! उन्नाव के पास के गांव का है''

'उसके गांव का नाम क्या हैं?

गढ़ाकोला.......!

और तुम्हारा नाम क्या है?

सूर्यकांत ! गढ़कोल का सूर्यकांत!''

संवाद करते हुए मोहन दास और सूर्यकांत है दोनों की वार्तालाप से ज्ञात होता है, कि लेखक ने पात्रों की स्थिति देख कर संवादों का प्रयोग किया है। छोटे-छोटे संवादों का प्रयोग किया है। इससे कहानी में गतिशीलता आ गई है। यह संवाद छोटे और अर्थपूर्ण है।

कहानी में शिक्षित उच्च वर्ग तथा शहरी पात्र शुद्ध हिंदी या अंग्रेजी मिश्रित हिंदी में संवाद करते हैं। जिसमें डॉ. वाणकर, एस. के. सिंह, एम. के. श्रीवास्तव, हर्षवर्धन सोनी, गजानन माधव मुक्तिबोध आदि। हर्षवर्धन जब मोहन दास के सिलसिले में न्यायिक दंडाधिकारी गजानन माधव मुक्तिबोध से मिलने के लिए जाता है तो मुक्तिबोध के संवाद ''तुम जाओ, हर्षवर्द्धन!... डोंट वरी मच। मुझे पता है तुम भी पिछली कई रातों से सोये नहीं हो। मेरी तरह !' उन्होंने बड़े ज़ोरों से एक ठहाका लगाया और कहा, ''पार्टनर, बेफिक्र होकर सोओ। स्लीप लाइक अ डेड हॉर्स। नाउ आई हैव गॉट विद समथिंग।'' इस प्रकार शिक्षित, शहरी पात्र अंग्रेजी या अंग्रेजी मिश्रित हिंदी का प्रयोग करते हैं।

इसप्रकार उदय प्रकाश ने अपनी कहानी में विभिन्न संवाद प्रकारों का प्रयोग किया है। इससे कहानियों में जीवंतता आ गई है। पात्रानुकूल संवाद, संक्षिप्त संवाद, अंग्रेजी मिश्रित हिंदी संवाद, लोकभाषा के संवाद आदि विभिन्न संवादों के प्रयोग से कहानी के सौंदर्य में निखार आ गया है और भावों को स्पष्ट करने में भी यह संवाद सहायक हो गए हैं।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

1. मोहन दास कहानी का नायक .... है।

   अ. देवदास   ब. गोपाल दास   क. मोहन दास   ड. बिसनाथ

2. मोहन दास .... सरकारी कॉलेज से ग्रेजुएट है।

   अ. एम. जी. डिग्री   ब. आर. ए. डिग्री   क. एस. आर. डिग्री   ड. के. एम. डिग्री

3. मोहन दास कहानी की नायिका .... है।

   अ. अमिता   ब. कस्तूरी   क. शारदा   ड. रेणुका

4. पुतलीबाई मोहन दास की .... है।

अ. पत्नी   ब. बहन   क. मोहन दास   ड. माँ

5. देव दास .... वर्ष का है।

अ. चार   ब. छह   क. आठ   ड. तीन

6. बिसनाथ का असली नाम .... है।

अ. विश्वनाथ प्रसाद   ब. विजय तिवारी   क. नगेंद्र नाथ   ड. किशोर पटवारी

7. मोहन दास के वकील .... है।

अ. रास बिहारी राय   ब. विजय तिवारी   क. हर्षवर्धन सोनी   ड. सूर्यकांत

8. गजानन माधव मुक्तिबोध .... थे।

अ. न्यायिक दण्डाधिकारी   ब. सब इंस्पेक्टर   क. पटवारी   ड. वकील

9. बिसनाथ के वकील .... है।

अ. रास बिहारी राय   ब. विजय तिवारी   क. हर्षवर्धन सोनी   ड. सूर्यकांत

10. बिसनाथ के घर लेनिन कॉलोनी में इंक्वायरी ऑफिसर .... जाता है।

अ. सूर्यकांत   ब. ए. के. श्रीवास्तव   क. हर्षवर्धन सोनी   ड. एस. के. सिंह

11. काबा दास .... का रोगी था।

अ. कैंसर   ब. मोतीयाबिंद   क. तपेदी   ड. टीबी

12. .... की आँखें मुफ्त नेत्र शिविर में मोतियाबिन्द का ऑपरेशन कराने के बाद अंन्धी हो चुकी हैं।

अ. अमिता   ब. कस्तूरी   क. पुतलीबाइ   ड. रेणुका

13. मोहन दास का बचपन का दोस्त .... है।

अ. गोपाल दास   ब. विजय तिवारी   क. बीरन बैगा   ड. घनश्याम

14. मोहन दास ने .... में टाइपिंग, प्रिंटआउट और झेरॉक्स का काम सीखना शुरू कर दिया।

अ. स्टार कम्प्यूटर सेंटर   ब. रॉक कम्प्यूटर सेंटर

क. फास्ट कम्प्यूटर सेंटर   ड. टैलेंट कम्प्यूटर सेंटर

15. मोहन दास के पिता .... है।

अ. देवदास   ब. गोपाल दास   क. काबा दास   ड. बिसनाथ

16. अपनी 'सीक्रेट जुड़ीशियल इंक्वायरी' पॉवर का इस्तेमाल करते हुए ने मोहन दास को न्याय दिलाने का प्रयास करते हैं।

अ. रास बिहारी राय ब. विजय तिवारी क. गजानन मुक्तिबोध ड. सूर्यकांत

17. विजय तिवारी ससुर की तिकड़मक और सिफारिश पर ……… हो गया था।

अ. न्यायिक दण्डाधिकारी ब. सब इंस्पेक्टर क. पटवारी ड. वकील

3.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ :

1) बदहवासी – तंग, परेशान, भयभीत, अचेत, बेहोश, डरा हुआ।

2) खुराक – भोजन, खाना, खाद्य, खाने की वस्तु।

3) जल्दबाज़ी – तुरंत काम करने की उत्कटता, शीघ्रता, तेजी, हड़बड़ी।

4) जालसाज़ – धोखा देने वाला, धोखेबाज, बदमाश।

5) तस्दीक – सबूत, प्रमाण, सच्चा बताना, पुष्टि, प्रमाणित करना।

6) मातहत – पराधीन, गुलाम, अस्वतंत्र, आश्रित, अधीनस्थ।

7) तश्तरी – छोटी थाली, प्लेट, छोटी रकाबी।

8) मरम्मत – बिगड़ी वस्तु को सुधारना, दुरुस्त करना।

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर :

1) क. मोहन दास,	2) अ. एम. जी. डिग्री,	3) ब. कस्तूरी,
4) ड. माँ,	5) क. आठ,	6) अ. विश्वनाथ प्रसाद,
7) क. हर्षवर्धन सोनी	8) अ. न्यायिक दंडाधिकारी	9) अ. रास बिहारी राय,
10) ब. ए. के. श्रीवास्तव,	11) ड. टीबी,	12) क. पुतलीबाई,
13) क. बीरन बैगा,	14) अ. स्टार कम्प्यूटर सेंटर	15) क. काबा दास
16) क. गजानन मुक्तिबोध	17) ब. सब इंस्पेक्टर	

3.7 सारांश :

1. उदय प्रकाश लिखित 'मोहन दास' लंबी कहानी में मुख्य पात्र के रूप में नायक मोहन दास, नायिका कस्तूरी, प्रमुख पुरुष पात्र के रूप में बिसनाथ और गौण पात्र के रूप में काबा दास, देवदास, विजय तिवारी, नगेंद्र नाथ, हर्षवर्धन सोनी, गजानन माधव मुक्तिबोध, अमिता आदि का चरित्र चित्रण हुआ है।

2. विवेच्य कहानी में नायक मोहन दास गरीब, दलित, बेरोजगार युवक का प्रतीक है। मोहन दास के माध्यम से दुःख, मानसिक प्रताड़ना, संघर्ष, बेबसी और लाचारी का बड़ा मार्मिक चित्रण किया है। मोहन दास उन सभी युवकों का आईना है, जो उच्चशिक्षित, ईमानदार है तथा बेरोजगारी से पीड़ित अपने आत्मसम्मान के लिए जूझ रहे है।

3. प्रस्तुत कहानी की नायिका कस्तूरी के माध्यम से स्वाभिमानी भारतीय स्त्री का चरित्र उभरकर आता है। कस्तूरी के माध्यम से लेखक ने भारतीय नारी के संघर्षशील और स्वावलंबी चरित्र का चित्रांकन किया है।

4. विवेच्य कहानी में प्रमुख पुरुष पात्र के रूप में बिसनाथ आता है। बिसनाथ के माध्यम से वर्तमान भारतीय सामाजिक, राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था तथा भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। गरीबों, दलितों पर अन्य अत्याचार करने वाले चरित्र का चित्रण मिलता है।

5. गौण पात्र के रूप में काबा दास, देव दास, विजय तिवारी, नगेंद्र नाथ, हर्षवर्धन सोनी, गजानन माधव मुक्तिबोध, अमिता आदि का चरित्र चित्रण हुआ है।

6. मोहन दास कहानी के संवाद पात्रानुकूल, संक्षिप्त, अंग्रेजी मिश्रित हिंदी संवाद, लोकभाषा के संवाद आदि विभिन्न संवादों के प्रयोग से कहानी के सौंदर्य में निखार आ गया है।

3.8 स्वाध्याय :

- **दीर्घोत्तरी प्रश्न –**
  1) मोहन दास की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
  2) बिसनाथ का चरित्र–चित्रण कीजिए।
  3) कस्तूरी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
  4) अंतिम साक्ष्य उपन्यास के संवादों पर प्रकाश डालिए।
- **लघुत्तरी प्रश्न –**
  1) हर्षवर्धन सोनी चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
  2) नगेंद्र नाथ का चरित्र–चित्रण कीजिए।
  3) गजानन माधव मुक्तिबोध चरित्रगत विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।
  4) विजय तिवारी के गुण–दोषों को रेखांकित कीजिए।

3.9 क्षेत्रीय कार्य :

1) ‘मोहन दास’ जैसे अपने आसपास के दलित नायकों की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।
2) भारतीय संस्कृति का प्रतीक ‘कस्तूरी’ जैसी नारी की चरित्रगत विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मोहन दास – उदय प्रकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. उत्तर आधुनिक परिवेश में उदय प्रकाश की कहानियाँ – डॉ. अजीत कुमार दास, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
3. उदय प्रकाश की कहानियों का समाजशास्त्रीय अध्ययन, डॉ मृत्युंजय कोईरी, दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस
4. समकालीन कहानीकार उदय प्रकाश – डॉ. देवकीनंदन महाजन, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
5. उदय प्रकाश का रचना संसार – डॉ. तनुजा ताहा, विद्या प्रकाशन, कानपुर।
6. उदय प्रकाश कृत 'मोहन दास' समीक्षात्मक अनुशीलन – डॉ धर्मेन्द्र प्रताप सिंह।

❑❑❑

इकाई –4

मोहन दास : देश काल तथा वातावरण, भाषा–शैली, उद्देश तथा समस्याएँ

अनुक्रम –

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

  4.3.1 'मोहन दास' कहानी में देश काल तथा वातावरण

  4.3.2 'मोहन दास' कहानी की भाषा–शैली

  4.3.3 'मोहन दास' कहानी का उद्देश्य

  4.3.4 'मोहन दास' कहानी में चित्रित समस्याएँ

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश :

इसी ईकाई को पढ़ने के बाद आप

1. उदय प्रकाश की कहानी 'मोहन दास' के देश–काल–वातावरण से परिचित होंगे।
2. 'मोहन दास' लंबी कहानी के पारिवारिक, सामाजिक राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक वातावरण से परिचित होंगे।
3. 'मोहन दास' कहानी की भाषागत विशेषताओं से अवगत हो जायेंगे।
4. 'मोहन दास' कहानी में चित्रित विभिन्न शैलीओं से परिचित हो जायेंगे।
5. 'मोहन दास' कहानी के उद्देश्य से अवगत होंगे।
6. 'मोहन दास' कहानी में चित्रित विभिन विभिन्न समस्याओं से अवगत हो जायेंगे।
7. 'मोहन दास' कहानी की मूल संवेदना से परिचित होंगे।

4.2 प्रस्तावना :

'मोहन दास' नई कहानी के सशक्त हस्ताक्षर 'उदय प्रकाश' की लंबी कहानी है। कई आलोचक इसे लघु उपन्यास की कोटि में भी रखते है। 'मोहन दास' यह लंबी कहानी का प्रकाशन सन् 2004 ई. में हुआ है। इस कहानी को सन् 2010 ई. में 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से पुरस्कृत भी किया गया है। इक्कीसवीं सदी में प्रकाशित उदय प्रकाश की यह कहानी अपनी अलग पहचान एवं महत्त्व को स्थापित करती है। यह कहानी निम्नवर्गीय दलित परिवार के 'मोहन दास' नामक पढ़े- लिखे युवक के जीवन संघर्ष का दर्दनाक यथार्थ को प्रस्तुत करती है। जिसे आज की इक्कीसवीं में देख पाने का मतलब है- संविधान द्वारा दिए अधिकार, स्वतंत्रता, समता, बंधुत्त्व को खो देना। विशिष्ट वर्ग सत्ता के ताकत के बल पर अबला को दबाए रखने का बहुत बड़े षड्यंत्र की, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, न्याय व्यवस्था आदि की पोल खोलने वाली कहानी वर्तमान व्यवस्था पर लगाई गहरी चोट है। प्रस्तुत इकाई में इस कहानी का परिवेश (सामाजिक, पारिवारिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक वातावरण), 'मोहन दास' कहानी की भाषा और शैली, 'मोहन दास' कहानी का उद्देश्य और मोहनदास कहानी में चित्रित समस्याओं का अध्ययन गहराई एवं विस्तार से किया गया है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 'मोहन दास' कहानी का देश-काल-वातावरण :

देश-काल-वातावरण कहानी का महत्त्वपूर्ण सैद्धांतिक तत्त्व है। कहानी में देश-काल-वातावरण अपना अलग महत्त्व रखता है। इसलिए कहानीकार कार मूल कथानक के साथ देश-काल-वातावरण काल वातावरण पर विशेष ध्यान देता है। देश-काल-वातावरण का अर्थ होता है कहानी की कथा जिस देश या क्षेत्र में जिस काल में (समय) घटित हो रही है उस वातावरण (माहौल) का चित्रण करना। देश-काल-वातावरण में पात्रों की वेशभूषा, खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, बोली भाषा, संस्कृति, पर्व, तौहार आदि बातों का समावेश प्रमुखता: से होता है। देश-काल-वातावरण के कारण कहानी प्रभावशाली एवं रोचक बनती है। कथानक में रोचकता, कौतुहल एवं प्रभाव निर्माण करने के लिए देश-काल-वातावरण आवश्यक होता है।

उदय प्रकाश जी की कहानी 'मोहन दास' सामाजिक यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाली कहानी है। कहानी में निम्नवर्गीय मोहन दास के जीवन संघर्ष का चित्रण विशेष परिवेश में हुआ है। अत: उस वातावरण को प्रभावशाली रूप से उभारने का प्रयास कहानीकार ने किया है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने पाठकों में रोचकता, कौतुहल एवं प्रभाव निर्माण करने के लिए कथा के अनुकूल, पात्रों के अनुकूल, प्रसंग एवं घटनाओं के अनुकूल वातावरण का चित्रण करने का प्रयास प्रमुखत: से किया है।

'मोहन दास' कहानी में देश-काल-वातावरण का चित्रण प्रभावशाली रूप से हुआ है। प्रस्तुत कहानी आझाद भारत देश के मध्य प्रदेश राज्य के जीला अनूपपुर, गाँव पुरबनरा में घटित होती है। अत: कहानी में

कहानीकार ने मध्य प्रदेश के सामाजिक, राजनीतिक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, वातावरण का चित्रण प्रमुखता: से किया है। कहानी के बीच-बीच में वैश्वीकरण के अनुरूप देश-काल-वातावरण का चित्रण किया हुआ दिखाई देता है।

प्रस्तुत कहानी का मूलपात्र मोहन दास है। उसके जीवन संघर्ष को कहानी में यथार्थ रूप से वाणी मिली है। यह कहानी मोहन दास के जीवन की दुःखद त्रासदी है। वह एक ऐसे निम्नवर्गीय दलित परिवार में जीता है। जो अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता। वह पढ़ा-लिखा होने के बावजूद भी समाज की विपरीत भ्रष्ट परिस्थितियों के कारण नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता। वह शोषण, अन्याय-अत्याचार का शिकार होता है। समाज का सवर्ण वर्ग संविधान द्वारा दिए गए हक और अधिकार को उससे उसे छिनता है। पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था उसे दुःख में जीने के लिए मजबूर बना देती है। ऐसी अवस्था में वह हमेशा निराश होकर सोचता रहता है। कहानी मोहन दास के भाव के अनुकूल प्राकृतिक वातावरण का निर्माण किया है। कहानी में मोहनदास निराश होकर रात के समय में कठिना नदी के किनारे जाकर अपने दुःख को कम करने की कोशिश करता है। ऐसे समय में लेखक ने प्राकृतिक नदी, रात, चंद्रमा आदि का वर्णन करते हुए लिखा है, 'वह तो उस रात कठिना नदी की रेत में, अमावस के आकाश को किसी मुर्दे की तरह घूरता हुआ, खुद अपने भीतर जीवन का कोई चिन्ह खोज रहा था। उसके शरीर की शिराओं में उस रात खून नहीं अमावस का गहरा काला अंधकार बह रहा था। और उसके लगभग अवसन्न हो चुके दिमाग में नींद नहीं, वे डरावने सपने मँडरा रहे थे, जो किसी भ्रष्ट और पतित हो चुकी व्यवस्था की कोख में ही पैदा हुआ करते है।'

प्रस्तुत अवतरण में प्राकृतिक वातावरण का चित्रण मोहन दास की दुःखद भावना के अनुकूल हुआ है। इसलिए यहाँ पर अमावस की रात के गहरे अंधेरे का का वर्णन किया है। ऐसे प्राकृतिक वातावरण का चित्रण कहानी में जगह-जगह पर मिलता है। जहाँ उत्साह और आनंद नहीं बल्कि निराशा, डर, दुःख आदि भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए प्राकृतिक वातावरण का चित्रण प्रमुखता: से किया हुआ नजर आता है।

'मोहन दास' कहानी २१ वीं शताब्दी के प्रारंभ की कहानी है। जो सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति देती है। इस कहानी का मूलपात्र मोहन दास मध्यवर्गीय दलित कबीर पंथी समाज से है। वह पुरबनरा जिला अनूपपुर का निवासी है। देहात में रहकर, दलित होकर भी बी.ए. में फर्स्ट क्लास से उत्तीर्ण होता है। वह जिस मध्यप्रदेश के अनूपपुर जिले के पुरबनरा गाँव में रहता है। वहाँ का सामाजिक परिवेश आधुनिकता के दौर में भी बदला नहीं दिखाई देता है। क्योंकि वह परिवेश आज भी सामाजिक असमानता से व्याप्त है। जिसमें जातिवाद, जातिभेद, वर्णभेद, वर्गभेद अमीरी-गरिबी, दलित-सवर्ण, उँच-नीच का बोलबाला है। पूरी सामाजिक व्यवस्था तीतर-बितर हो गई है। मोहन दास दलित जाति से और गरीब होने से सवर्ण वर्ग के ब्राह्मण बिसनाथ प्रसाद, नरेंद्रनाथ प्रसाद, और विजय तिवारी मिलकर उसे हीन, नीच समजते हैं और उस पर अन्याय-अत्याचार कर उससे उसकी नौकरी का हक छिनते हैं। यह सामाजिक असमानता कहानी में अनेक प्रसंग एवं घटनाओं के माध्यम से दिखाई देती है। अतः असमानता के इस सामाजिक वातावरण को उभारते हुए कहानीकार लिखते हैं की, 'इधर आ!' विजय तिवारी ने उसे बुलाया। आज से मुश्किल से सात-आठ

साल पहले, यही विजय तिवारी उसके साथ एम.जी. डिग्री कॉलेज में पढ़ता था। हर रोज एक की क्लास में वे बैठते थे। पढ़ाई- लिखाई में वह लद्धड़ था। उसके पिता पण्डित छत्रदारी उसे मोहन दास का उदाहरण दिया करते थे, जो हर साल फर्स्ट आता था। इस समय वही विजय तिवारी पुलिस की वर्दी में, बत्ती और लाउडस्पीकर लगी टाटा सुमो में बैठा हुआ उसे जिस तरह घूर रहा था, उसमें अजनबीपन ही नहीं, हिंसा और गुस्से की साफ़ उपस्थिति थी। ऐसा क्यों हो रहा था? क्या मोहन दास गरीब और नीची जात का था इसलिए? या इसलिए कि वह बेरोजगार था और अपनी मेहनत से चुपचाप अपने परिवार की आजीविका चला रहा था? या फिर इसलिए कि इन लोगों ने उसे ठगा था, उसका हक मार लिया था और अब यहाँ उसकी मौजूदगी उनकी आजादी और मौज मस्ती में बाधा पैदा कर रही थी?'

इस तरह से उदय प्रकाश जी प्रस्तुत कहानी में पारिवारिक वातावरण का बखुबी चित्रण किया है। इस कहानी का मूलक्षेत्र मध्य प्रदेश का देहाती क्षेत्र है। कहानी मूल रूप से निम्न वर्ग के दलित युवक की है। जो समाज हमेशा शिक्षा, अधिकार, बुनियादी आवश्यकताओं आदि सुख-सुविधाओं से वंचित रहा है। ऐसे मोहन दास के परिवार की पारिवारिक परिस्थिति काफी निराशा जनक है। वह किसी तरह अपनी दो वक्त की रोटी का इंतजाम कर पाता है। बाकी आवश्यकताएँ तो दूर की बात है इसलिए परिवार का हर सदस्य जी तोड मेहनत करता है। इसके लिए उसके दो छोटे बच्चें देव दास और शारदा भी अपवाद नहीं है। खेलने की उमर में भी वह किसी न किसी तरह का काम करते है। ताकी परिवार की मदद हो। परिवार में वह टी.बी. से बिमार पिता को न दवा-पानी कर सकता है न मोतीबिंदू से आँखें चली गई माँ का इलाज कर सकता है। वह खुद के लिए कपड़े (कुर्ता-कमीज) भी नहीं ले सकता। ऐसे पारिवारिक वातावरण का चित्रण कहानीकार ने बड़े प्रभावशाली रूप से किया है। जिससे हर एक पाठक प्रभावित होता है। पारिवारिक वातावरण का चित्रण करते हुए कहानी कार लिखते हैं, 'मोहन दास ही नहीं उसकी पत्नी कस्तूरी बाप काबा और माँ पुतलीबाई, सभी के भीतर उसके सरकारी अफसर- हाकिम बनने की उम्मीदें बुझ गयी, अब तो ले दे कर यह लगता है कि कुछ भी ऐसा मिल जाये, जिससे बेरोजगारी और खालीपन से मोहनदास को छुटकारा मिले और घर की दाल-रोटी किसी तरह चलने लगे। इसी बीच काबा दास को टीबी हो गया। वह खाँसने लगा और कफ के साथ खून के कतरे उगलने लगा। ठीक इसके बाद एक मुक्त नेत्र चिकित्सा शिबिर में पुतलीबाई की आँखो की रोशनी चली गयी। कस्तूरी पर घर के कामकाज और बाहर की मजुरी के अलावा, सास-ससुर की देखभाल और सेवा- टहल की जिम्मेदारी भी आ पड़ी। वह भी ऐसे समय में जब उसे खुद आराम की जरूरत थी क्योंकि वह पेट से थी। गर्भ में देव दास आ गया था।'

इसी तरह उच्चवर्गीय परिवारों की परिस्थितियों का चित्रण भी हुआ है। जिनके पास गाडी, मोबाईल, अच्छे खासे घर है, ऐशो-अराम की सारी सुविधाएँ और उच्चवर्गीय परिवार अपने गलत रास्ते से कमाये पैसों को सुरा और सुंदरी पर उडा रहा है। ऐसे परिवार का चित्रण करते हुए भी कहानी मूल कथा के अनुसार किया है।

प्रस्तुत कहानी में राजनीतिक परिवेश का चित्रण भी प्रसंग, घटना के अनुकूल हुआ है। जैसे-जैसे कथानक आगे बढ़ता है वैसे-वैसे जहाँ आवश्यकता हो वहाँ राजनीतिक परिवेश को लेखक ने सटिकता से

उभा रहा है। जैसे–नरेंद्रनाथ की राजनीतिक दलों से साँठ–गाँठ, जस्टिस मुक्तिबोध का तबादला करवाना, नरेंद्रनाथ और बिसनाथ को जेल से छुडवाना ऐसे प्रसंग में राजनीतिक माहौल को बखुबी उभारा गया है। जिससे पाठक वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति से परिचित होता है।

समग्र रूप से कह सकते है कि 'मोहन दास' कहानी में उदय प्रकाश जी ने पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, ऐतिहासिक, वातावरण को प्रभावशाली रूप से उभा रहा है। यह देश–काल–वातावरण वातावरण का चित्रण घटना या प्रसंग, पात्रों की मनोदशा एवं कथानक के अनुरूप हुआ है। जिससे प्रस्तुत कहानी में जीवंतता, यथार्थता एवं संप्रेषणीयता का समावेश सहज रूप से हुआ है।

4.3.2 'मोहन दास' कहानी की भाषा – शैली :

'मोहन दास' एक लंबी कहानी है। कुछ आलोचकों ने इसे लघु उपन्यास भी माना है। कहानीकार उदय प्रकाश कहानी लेखन के विशिष्ट शिल्प के कारण हिंदी कहानी साहित्य में अपनी अलग पहचान रखते हैं। उनका शिल्प विधान अनूठा है। अपनी विशिष्ट भाषा–शैली के कारण 'मोहन दास' की कहानी प्रभावशाली बनी हुई है।

प्रस्तुत कहानी 'मोहन दास' की भाषा में कहानीकार उदय प्रकाश जी ने अपनी कहानी शिल्प के अनुकूल कईं भाषागत विशेषताओं का प्रयोग किया है। भाषा–शैली कहानी का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व माना जाता है। भाषा मनुष्य की भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम है, और शैली से तात्पर्य है– भाषा के प्रस्तुतीकरण का ढग या पद्धति। वस्तुतः भाषा और शैली का हम अलग–अलग देख सकते हैं।

कहानी में भाषा का आपना अलग महत्व होता है। यह कहानीकार के संदेश को पाठकों तक सहज रूप से पहुँचाती है। कहानी की भाषा सहज, सरल, प्रभावपूर्ण हो, जो पाठकों के लिए सहज संप्रेषण हो। कहानी की भाषा जितनी संप्रेषणीय होगी उतने ही प्रभाव से भावना और विचारों का संप्रेषण संभव है। भाषा कहानी के कथानक और पात्रों को गतिशील बनाती है। परिणाम स्वरूप कहानी संप्रेषणीय एवं प्रभावशाली बनती है। कहानी में कहानीकार पात्रानुकूल भाषा भावानुकूल भाषा, व्यंग्यात्मक भाषा, काव्यात्मक भाषा, संवादात्मक भाषा, गतिशील भाषा, प्रसंगानुकूल भाषा आदि भाषाओं का प्रयोग अपनी सुविधा के अनुसार करता है।

'मोहन दास' यह लंबी कहानी मध्यमवर्गीय मोहन दास के जीवन की त्रासदी है। पूरी कहानी में मोहन दास का जीवन संघर्ष प्रस्तुत हुआ है। इस कहानी में मूल रूप से करुणा और दुःख का भाव प्रमुखता से उभरा हुआ है। कहानीकार ने पात्रों के मन के भाव की अभिव्यक्ति के लिए भावानुकूल भाषा का प्रयोग प्रमुखता से किया है। प्रस्तुत कहानी का प्रमुख पात्र मोहन दास समाज व्यवस्था से त्रस्त होता हुआ दिखाई देता है। वह सवर्ण की तानाशाही, दबंगाई, अन्याय–अत्याचार, शोषण से इतना डरा हुआ है कि वह असली मोहन दास होकर भी अपनी मोहन दास होने की पहचान को नकारता है। उस पर दहशत छाई हुई दिखाई देती है। वह भावावेश में कहता है, 'काका, मुझे किसी तरह बचा लीजिए! मैं आपके हाथ जोडता हूँ!....

बाल बच्चे है मेरे! उधर बाप मर रहा है टीबी से!...आप कहें तो मैं आपके साथ चलकर अदालत में हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहन दास नहीं हूँ। मैं इस नाम के किसी आदमी को नहीं जानता! कोई और होगा मोहन दास! बस मुझे किसी तरह बचा लीजिए।'

उपर्युक्त गद्यांश से मोहन दास के दुःख के भाव प्रकट होते हैं। जिसे अभिव्यक्त करते समय भावानुकूल भाषा का प्रयोग हुआ है। कहानी में ऐसी घटनाएँ एवं प्रसंग उभारते समय कहानीकार ने भावानुकूल भाषा का प्रयोग किया हुआ है।

'मोहन दास' कहानी में लेखक ने अनेक अच्छे-बुरे प्रसंगों का चित्रण अत्यंत मार्मिकता से किया है। जैसे लेनिन नगर में तिवारी द्वारा मोहन दास पर जीप चढ़ाने का प्रसंग, मोहन दास के घर में संतान पैदा होने का प्रसंग, मोहन दास और कस्तुरी के कठिना नदी मेथ काम करते समय का प्रसंग, मोहन दास के परिवार की रोजाना दिनचर्या का प्रसंग, कोर्ट के मुकादमा का प्रसंग आदि में ओरियंटल कोल माइंस के गेट के बाहर मोहन दास को पीटने का प्रसंग आदि का चित्रण करते समय कहानीकार ने प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग बड़ी सटिकता से किया है।

प्रस्तुत कहानी में मोहन दास की ओरियंटल कोल माइंस में नौकरी पक्की होती है। केवल ऑर्डर आना बाकी था। यह बात पूरे गाँव मालूम हो जाती है। तब मोहन दास पर व्यंग्य करनेवाले भले-बुरे लोग भी मोहन दास के प्रति अपनी राय व्यक्त करते है। ऐसे समय मे प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग दिखाई देता है। गाँव के लोग बदले हुए स्वर में कहते है, 'यह तो होना ही था। ऐसी डिग्री और पढ़ाई के बाद मोहन दास कब तक खाली बैठता।' कुछ लोगों ने यह टिप्पणी भी की- 'असल में मोहन दास जिस बंसहर- पलिहा जात का है, उसको अब रिझर्वेशन में डाल दिया गया है। नौकरी उसको कोटे में मिली है क्योंकि इस जात का कोई दूसरा लड़का बी.ए. था ही नहीं।'

इस तरह कहानीकार ने प्रसंग को मार्मिकता से उभारने, प्रसंग को प्रभावशाली बनाने के लिए प्रसंगानुकूल भाषा का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग भी किया है। मूलत: कहानी का परिवेश ग्रामीण और देहाती है। परंतु कहीं- कहीं नगरीय परिवेश को भी उभारा गया है। ऐसा चित्रण करते समय अनेक नगरीय, ग्रामीण, देहाती, अनपढ़, शैक्षिक स्त्री- पुरुष पात्रों का चित्रण किया है। कहानीकार ने ऐसे पात्रों का चरित्र उभारते समय, कथानक को गढते समय पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग अधिकता से किया हुआ दिखाई देता है।

कहानी का मुख्य पात्र मोहन दास पढ़ा-लिखा बी.ए. पास युवक है। मोहन दास के माता-पिता देहात में रहनेवाले अपने पुश्तैनी टकोरी बनाने का काम करते हैं। उनकी भाषा में देहाती बोलीभाषा के शब्द प्रचुरता से दिखाई देते हैं। मोहन दास के पिता काबा के संवाद में पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग दिखाई देता है- 'रोउते काहे ल हस अन्धरी? मोर ल अबे मरै क नहीं हबैं। देव दास ल काजअऊ सारदा ल गउना कर के

मरिहों। झै रो....!' (अरी ओ अंधी क्यो रो रही हो? मुझे अभी मरना नहीं है। मैं देव दास का विवाह और शारदा का गौना करने के बाद मारुँगा। मत रो!)

इसी तरह कहानी के शिक्षित पात्र मोहन दास, जस्टिस मुक्तिबोध, सोनी वकील आदि पात्रों की भाषा में नगरीयता का पुट और अंग्रेजी शब्दावली का प्रयोग दिखाई देता है। कहानी का पात्र जस्टिस मुक्तिबोध हर्षवर्धन सोनी से बात करते हुए कहते हैं कि, 'और वह दूसरा आदमी फ्रॉड है। वह सरासर 'इंपसोनेट' कर रहा है । मुझे पता है, वह बिसनाथ वल्द नगेंद्रनाथ, ज्युनियर डिपो ऑफिसर ही है, जो ऐ बटा ग्यारह, लेनिन नगर में अवैध ढंग से मोहन दास की 'आयडेंटिटी' चुराकर रहा है। ही इज अ चीट, अ क्रिमिनल! अ स्काउंड्रल!'

अतः जस्टिस मुक्तिबोध की भाषा में साफ-सुथरापण और अंग्रेजी भाषा की शब्दावली का प्रयोग दिखाई देता है। अतः ऐसे समय पर कहानीकार ने पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग बखुबी किया है।

इसी तरह कहानीकार ने पाठकों को प्रभावित करने के लिए, मन के भावों की अभिव्यक्ति के लिए, देहाती संस्कृति को उजागर करने के लिए कईं- कईं काव्यात्मक भाषा का प्रयोग भी किया हुआ है। जैसे-

'तोला बिन जग लागे सुन्ना,,,,

जग लागे सुन्ना,,,,

नहीं भावे मोला

सोना-चांदी महल अटारी,,,,'

उदय प्रकाश जी ने अपनी कहानी में हिंदी भाषा का प्रयोग करते हुए संस्कृत, अरबी, फारसी, अंग्रेजी शब्दों का प्रयोग प्रचुरता से किया है। साथ ही देहाती पात्रों के अनुरूप बोलीभाषा का प्रयोग सटिकता से किया है। साथ ही जगह-जगह लोकोक्तीयों, मुहावरों एवं कहावतों का प्रयोग भी मिलता है। जिससे भाषा प्रभावशाली बनी है। अतः समग्र रूप से कह सकते हैं कि कहानी की भाषा मेथ पात्रानुकूलता, प्रसंगानुकूलता, भावानुकूलता, चित्रात्मकता, बिंबात्मकता, काव्यात्मकता, व्यंग्यात्मकता आदि विशेषता पाई जाती है। जिसके कारण भाषा सहज, सरल एवं प्रभावपूर्ण बनी है।

'मोहन दास' कहानी की शैली:

कहानी में भाषा के साथ-साथ शैली भी अपना विशेष महत्त्व रहता है। विशेष शैली के कारण भाषा प्रभावशाली बनती है। प्रस्तुत कहानी मे कहानीकार ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। जैसे - पूर्वदीप्ति शैली, संस्मरणात्मक शैली, विवरणात्मक शैली, विश्लेषणात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, व्यंग्यात्मक शैली किस्सागोई शैली, फंतासी मिथक आदि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत कहानी में उदय प्रकाश जी ने प्रसंग या घटना को प्रभावी रूप से उभारने के लिए विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैलियों का प्रयोग प्रमुखता से किया हुआ दिखाई देता है। कहानीकार ने पात्रों का

परिचयात्मक विवरण जगह-जगह पर विस्तार से दिया है। पात्र या पात्र के परिवार का विवरण देते समय लेखक ने विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैलियों का प्रयोग अधिकता से किया हुआ है जैसे -

'मोहन दास और उसके परिवार की कई पीढ़ियों को मैं जानता हूँ। गाँव में ऐसा ही होता है। उसे देखकर आप सोच भी नहीं सकते कि वह इस जिले के सरकारी एम.जी. डिग्री कॉलेज से बकायदा ग्रेजुएट है। फर्स्ट डिव्हिजन के साथ।..... और विश्वविद्यालय की टॉपर सूची में आज से दस साल पहले उसका नाम दूसरे नंबर पर मौजूद था। उसका आज का हुलिया उसके इस अतीत की कोई सूचना नहीं देता।'

इस प्रकार कहानी का अर्जुन विवरणात्मक एवं विश्लेषणात्मक शैलियों के द्वारा कहानी को गतिशीलता प्रदान की है।

प्रस्तुत कहानी मोहन दास के जीवन संघर्ष के यथार्थ को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करती है। कहानी में प्रभाव उत्पन्न करना कहानीकार की अपनी कलात्मकता होती है। इसलिए कहानीकार ने विभिन्न शैलियों का प्रयोग कर कहानी की घटनाओं या प्रसंगों को प्रभावशाली बनाया है। प्रस्तुत कहानी का प्रारंभ ही कहानीकार ने पूर्वदीप्ति शैली अर्थात् फ्लॅशबॅक शैली में करते है। जैसे - 'काका, मुझे किसी तरह बचा लीजिए! मै आपके हाथ जोडता हूँ!.... बाल बच्चे है मेरे! उधर बाप मर रहा है टीबी से!...आप कहें तो मैं आपके साथ चलकर अदालत में हलफनामा देने के लिए तैयार हूँ कि मैं मोहन दास नहीं हूँ। मैं इस नाम के किसी आदमी को नहीं जानता! कोई और होगा मोहन दास! बस मुझे किसी तरह बचा लीजिए।'

उपर्युक्त गद्यांश के इस प्रसंग से कहानी का अंत होता है, परंतु लेखक ने पहले अंतिम प्रसंग उभारकर मोहन दास के संघर्ष और त्रासदी से भरे जीवन की कहानी को बताना आरंभ करते हैं। मोहन दास की गाथा को वाणी देते समय कहानीकार ने किस्सागोई शैली का प्रयोग किया हुआ नजर आता है। प्रस्तुत कहानी कहानीकार स्वयं (सूत्रधार) के माध्यम से पाठकों के सामने रखता है। बीच-बीच में वर्तमान समय के सापेक्ष में वैश्वीकरण के अनेक प्रसंगों के दाखिले देते हैं। इस प्रकार से मोहन दास की कहानी वर्तमान परिप्रेक्ष्य में रखते समय लेखक ने किस्सागोई शैली का प्रयोग कीया है। जैसे-

'बिसनाथ ऊँची जाति का है, जब कि मोहन दास नीच जात का कबीरपंथी है। उसकी बिरादरी के बहुत से लोग आज भी सूपा-चटाई, दरी-कम्बल बुनते हैं। मोहन दास हमारे गाँव ही नहीं, आसपास के कई गाँवों में अपनी बिरादारी का पहला लड़का था, जिसने बी.ए. पास किया। और वह भी फर्स्ट डिवीजन और मेरिट में दूसरे नंबर के साथ।'

(यहाँ पर रुक जाइये। सच बताईये, कहीं आपको यह तो नहीं लगने लगा कि मैं आपको कोई प्रतीकवादी कूट कथा सुनाने बैठ गया? इस कहानी के मुख्य पात्र का नाम मोहन दास, पत्नी का नाम कस्तूरीबाई, माँ का नाम पुतलीबाई और बेटे का नाम देव दास....?')

इस तरह से पाठकों की जिज्ञासा को बनाये रखते हुए किस्सागोई शैली का प्रयोग अत्यंत प्रभावशाली ढंग से हुआ है।

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने अपने विचारों को, भावनाओं को अभिव्यक्त करते समय प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैलियों का प्रयोग विशेष रूप से किया है। कहानीकार जब कहानी के दूसरे प्रमुख पात्र का बिसनाथ का परिचय पाठकों से करवाते है तब वे बिसनाथ के अंतरिक चरित्र का उद्घाटन करते समय व्यंग्यात्मक एवं प्रतीकात्मक शैलियों का प्रयोग करते हुए दिखाई देते हैथ जैसे– 'नरेंद्रनाथ के पाँच में से एक बेटा है। हालाकि उसका असली नाम विश्वनाथ प्रसाद है, लेकिन गाँव के लोग उसे बिसनाथ ही बुलाते हैं और पीठ पीछे कहते है–' असल करैत है, बिसनाथ। गजब का बिसधारी। किसी को फूँक मार दे तो समझो कि टें....! बाप नागनाथ तो बेटा साँपनाथ..। अगर तुमको देखकर मुस्किया रहा है और गुड लपेटकर बोल रहा है, तो बस हुसियार हो जाओ! डँसने की पूरी तयारी है।' इस तरह लेखक पात्र एवं घटनाओं को प्रभावशाली रूप से प्रस्तुत करते समय, वर्तमान विसंगतियों पर प्रहार करते समय, भ्रष्टाचार की पोल खोलते समय प्रतीकात्मक एवं व्यंग्यात्मक शैलीयों का प्रयोग प्रमुखता से किया है।

समग्र रूप से कह सकते हैं कि कहानीकार उदय प्रकाश जी ने अपनी कहानी में विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, पूर्वदीप्ति संस्मरणात्मक, चित्रात्मक, व्यंग्यात्मक, बिंबात्मक, किस्सागोई आदि विभिन्न शैलियों का प्रयोग किया है। जिससे कहानी में सजीवता, यथार्थता एवं आकर्षकता दिखाई देती है। अतः कहानी प्रभावशाली एवं संप्रेषणीय बनी है।

4.3.3 'मोहन दास' कहानी का उद्देश्य:

उदय प्रकाश जी समकालीन कहानी के एक सशक्त और महत्त्वपूर्ण कहानीकार है। वे हिंदी के चर्चित प्रसिद्ध कथाकार है। 'मोहन दास' उदय प्रकाश जी की महत्त्वपूर्ण एवं बहुचर्चित लंबी कहानी है। इसका प्रकाशन सबसे पहले 'हंस' पत्रिका में सन् 2005 ई. में हुआ।

कोई भी साहित्यिक कृति निरुउदेश्य नहीं होती, उसका कोई ना कोई उद्देश्य जरूर होता है। चाहे वह मनोरंजन भी क्यों न हो। आदर्श चरित्र का निर्माण करना, लोकहित एवं लोक रक्षा की कामना करना, युगीन परिवेश का यथार्थ चित्रण करना, लोगों को लोकमंगल से जीवन जीने की प्रेरणा देना, विश्व कल्याण की कामना करना, सत्य का उद्घाटन करना, ज्ञान के महत्व को प्रस्तुत करना, सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ती देना, आदि उद्देश्य साहित्यिक कृतियों में होते है। अत: उदय प्रकाश जी लिखित लंबी कहानी 'मोहन दास' इसके लिए अपवाद नहीं है। उपर्युक्त कईं उद्देश्यों की पूर्ती मोहनदास में देखी जा सकती है।

कहानीकार उदय प्रकाश जी की लंबी कहानी 'मोहन दास' एक साधारण युवा के जीवन संघर्ष की गाथा है। जिसमें मोहन दास के परिवार का संघर्ष, मोहनदास का व्यक्तिगत संघर्ष, घुटन, लाचारी, विद्रोह, वेबसी आदि का चित्रण विस्तार से हुआ है। इसमें कहानीकार ने अनेक समस्याओं, पहलुओं को, प्रसंगों को चित्रित किया है। जिसके माध्यम से इस कहानी के अनेक उद्देश्य सामने आते हैं।

वस्तुतः प्रस्तुत कहानी का मूल उद्देश्य मोहनदास के जीवन संघर्ष के यथार्थ को वाणी देना रहा है। जिसके माध्यम से 21 वीं सदी के मोहन दास जैसे युवकों का यथार्थ सामने रखकर समाज को धोखाधडी, अन्याय–अत्याचार, शोषण, भ्रष्टाचार के प्रति सचित करते है। प्रस्तुत कहानी में मोहन दास नामक युवा

दलित वर्ग के गरीब परिवार का युवक है। असल में उसने प्रथम श्रेणी में बी.ए. पूरा किया है। वह जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता। उसका पूरा परिवार भी मेहनती है। उसकी पत्नी कस्तूरीबाई भी खेती में मजदूरी का काम करती है। उसे आशा है कि उसके पढ़े-लिखे पति को एक-न-एक दिन निश्चित रूप से नौकरी मिलेगी। इसलिए वह सकारात्मक सोच के चलते हाड़-तोड़ मेहनत करती है। मोहन दास के पिता टी.बी. से बीमार है। मोहन दास उसके लिए ठीक से दवा-दारू भी नहीं कर पाता। पिता खाँसी से परेशान होकर अपना जीवन जीने के लिए मजबूर है, तो उसकी माँ पुतलीबाई मोतीबिंदू की सर्जरी के कारण हमेशा के लिए अपनी आँखें गवा बैठी है। वह टोपली बनाने में अपने पति को मदद करती है और बच्चों को संभालने का काम भी करती है। तो मोहन दास की बेटी शारदा अपने गाँव से दूर बीछिया टोला के बिसनाथ प्रसाद के घर बच्चा संभालने का काम करती है। जिसके कारण उसे रात का खाना और महिने भर के लिए 30 रुपये मिलते है। बेटा देव दास भी स्कूल के छूटने पर गॅरेज में काम कर अपने पिता की मदद् करने की कोशिश करता है। इस तरह मोहन दास का परिवार अत्यंत गरीबी में अपनी जीविका चलाते हुए विपरित परिस्थितियों से संघर्ष करता है। अपने जीवन में वह अनेक समस्याओं से गुजरता है। पढ़ा-लिखा, मेहनती, इमानदार बी.ए. प्रथम श्रेणी होने के बावजूद नौकरी की परीक्षा देते समय हर बार लिखित परीक्षा में अव्वल होने के बावजूद साक्षात्कार में हमेशा के लिए छाटा जाता है या छाट दिया जाता है। ऐसे में एक बार उसका चयन हो भी जाता है, परंतु भ्रष्ट प्रशासन, उच्चवर्गियों की साँठ-गाँठ, धोखेबाजी का शिकार वह बनता है। जिसके कारण उसकी नौकरी ही नहीं उसके शैक्षिक कागजात और मोहन दास होने की पहचान भी छीनी जाती है। उसे प्रमाणित करने की वह हर तरह से कोशिश करता है। परंतु सवर्ण, मीडिया और राजनीतिक गुंडागर्दी उसे असफल बना देती है। मोहन दास लाचार और विक्षिप्त होता है। खुद की मोहन दास की पहचान उसे संकट मेहसूस होने लगती है और वह मजबूर होकर कहानी के अंत में कहता है, 'जिसे बनना हो बन जाये मोहनदास। मैं नहीं हूँ मोहनदास। मैंने कभी कही से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाए। अब हिंसा मत करो, जो भी लूटना हो लूटो। अपने-अपने घर भरो। लेकिन हमें तो अपनी मेहनत पर जीने दो।'

अत: निम्नवर्गीय मोहनदास के जीवन संघर्ष के माध्यम से दलित युवक पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार एवं शोषण को उजागर कर सामाजिक परिवेश का यथार्थ और वर्तमान समय की विसंगतियों को सामने लाना लेखक का मूल उद्देश्य रहा है।

इस मूल उद्देश्य के साथ यह कहानी समाज में चल रहे भ्रष्टाचार की पोल खोलती है। साथ ही भाई-भतीजावाद पर भी प्रहार करती है। बिसनाथ के पिता नरेंद्रनाथ, बिसनाथ प्रसाद, विजय तिवारी, ओरियंटल कोल माइंस के अधिकारी, सरकारी- गैरसरकारी संघटनों के प्रमुख रास बिहारी राय, गाँव के पटवारी आदी ऐसे पात्र हैं जिससे समाज की भ्रष्ट व्यवस्था सामने आती है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार वर्तमान भ्रष्ट प्रशासकीय व्यवस्था पर लिखते है, '...जब सत्ताधारी पार्टी का मानव संसाधन मंत्रालय पब्लिक सेक्टर का ऐसा भ्रष्ट कारखाना बन चुका था, जो विद्वान, शिक्षाविद्, समाजशास्त्री, साहित्यकार, बुद्धिजीवी,

इतिहासकार, कलाकार, अध्यापक का उत्पादन कर रहा था... और बच्चों के दिमागों पर कब्जे के लिए शिक्षा संस्थानों इतिहास और पाठ्यपुस्तकों को दुबारा-तिबारा लिखने की राजनीतिक जंग जारी थी...।' इस तरह प्रस्तुत कहानी में समाज सेवा के नाम पर अपनी जेब भरनेवाले भ्रष्टाचारियों की पोल खोली है।

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से कहानीकार ने भ्रष्ट राजनीति एवं भाई-भतीजावाद पर भी खुलकर प्रहार किए है। मोहन दास को अपनी शैक्षिक योग्यता होने के बावजूद इस कारण नौकरी नहीं मिलती क्योंकि वह किसी बाबू या अधिकारी को घूस नहीं दे पाता और न ही वह किसी राजनीतिक पार्टी का सदस्य है। उसके सहपाठी जैसे- बिसनाथ प्रसाद हो या विजय तिवारी दोनों किसी तरह थर्ड डिव्हिजन में बी. ए. पास हुए है। परंतु राजनीतिक दल की साँठ-गाँठ और जान-पहचान के कारण उन्हें अच्छी नौकरियाँ प्राप्त होती है। मोहन दास बी.ए. अव्वल होने के बावजूद भी किसी भी प्रकार की नौकरी प्राप्त कर नहीं पाता और मजबूर होकर पुश्तैनी टोकरी बनाने के काम के द्वारा अपनी रोजी रोटी का इंतजाम करने के लिए जीवनभर संघर्ष करता है। कहानी में उदय प्रकाश जी ने भाई-भतीजावाद पर प्रहार करते हुए लिखते हैं कि, ' .....यह वह समय था, जब लगातार पंद्रह साल से हिंदी भाषा से संबंधित पदों की चयन समिति का हर सदस्य, रिक्त पदों पर अपने दामाद, बेटा, बेटी, समधी, चापलूस, कारिंदों को खुलेआम नियुक्त कर दिया जाता था और उस पर न कोई सी.बी.आई. इंक्वायरी होती थी, न राज्यसभा या लोकसभा में कोई सवाल उठाता था।'

अत: इस प्रकार भाई-भतीजेवाद वाद की प्रवृत्ति को उजागर करना भी लेखकका उद्देश्य रहा है। इसके साथ ही सामाजिक न्याय व्यवस्था, न्यायालयीन मजबूरी, जातिगत दबंगाई, जातिभेद एवं जातिगत द्वेष, निम्नवर्ग के शोषण एवं संघर्ष, निम्नवर्ग पर होने वाला अत्याचार, सामाजिक असमानता, आम आदमी के हक और अधिकार, युवाओं का अस्तित्त्व बोध, न्याय व्यवस्था की मजबूरी, आदि को उजागर करना लेखक का उद्देश्य रहा है।

4.3.4 'मोहन दास' कहानी में चित्रित समस्याएँ :

'मोहन दास' एक लंबी कहानी है। कुछ आलोचक इसे लघु उपन्यास की कोटि में भी स्थान देते हैं। 'मोहन दास' कहानी के लेखक समकालीन कहानीकार उदय प्रकाश जी है। उदय प्रकाश की यह बहुचर्चित लंबी कहानी है। 'मोहन दास' कहानी का केंद्रीय पात्र मोहन दास है। जो दलित वर्ग से है, साथ ही वह कबीरपंथी है। 'मोहन दास' ग्रज्युएट है, उसने फर्स्ट डिव्हिजन से अपनी स्नातक बी.ए. की उपाधि हासिल की है। वह अपनी इस योग्यता के कारण अच्छी नौकरी एवं सुखी जीवन के सपने देखता है। परंतु आज के अराजकता के युग में इतनी योग्यता होने के बावजूद वह अंत तक नौकरी प्राप्त नहीं कर सकता और खुद मोहन दास होकर भी, खुद को मोहन दास साबित नहीं कर पाता। उसका जीवन संघर्ष अनेक समस्याओं एवं त्रासदी से भरा हुआ पड़ा है।

उदय प्रकाश जी ने 'मोहन दास' इसी लंबी कहानी के मुख्य पात्र मोहन दास के जीवन संघर्ष के द्वारा अनेक पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासकीय, जातीय, शैक्षिक समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है। जैसे- व्यक्तिगत असंतोष, दलित अन्याय-अत्याचार, दलित शोषण, जातिगत द्वेष और जातिभेद

की समस्या, भ्रष्ट न्याय व्यवस्था की समस्या, भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था, भ्रष्ट पुलीस, सामाजिक असमानता की समस्या, दलित नारियों की सुरक्षा की समस्या, आम आदमी के हक और अधिकार की समस्या, उच्चवर्ग के तानाशाही की समस्या, भाई-भतीजावाद की समस्या, युवकों के अस्तित्व बोध की समस्या, आदि।

अत: इन समस्याओं को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है-

1. युवाओं के व्यक्तिगत असंतोष की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में उदय प्रकाश जी ने युवाओं के व्यक्तिगत असंतोष की समस्या को कहानी के मूलपात्र मोहन दास के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है। इसी कहानी में मोहनदास प्रथम श्रेणी में बी.ए. की उपाधि प्राप्त करता है और भविष्य में अच्छी-खासी नौकरी की अपेक्षा रखता है। मोहन दास बहुत गरीब किसान परिवार से है। उसके दो वक्त के खाने के भी लाले है। ऐसी स्थिति में से उभरते हुए वह नौकरी की अपेक्षा करता हुआ सुखी जीवन की लालसा रखता है। परंतु उसे शैक्षिक योग्यता होने के बावजूद और लिखित परीक्षा में अच्छे नंबर रहने पर भी नौकरी नहीं मिलती। वह प्रयास करते हुए वह थक जाता है। किसी तरह नदी के पात्र में खेती और सुपा-चटाई का काम कर अपने परिवार की जीविका चलाता है। उसके परिवार की सारी जिम्मेदारियाँ उसके ही कंधे पर है। पिता को टी.बी. की बीमारी है, तो माँ अंधी हो चुकी है, घर में पत्नी और दो संतानें हैं। ऐसी स्थिति में वह समाज से अंत तक संघर्ष करता है, परंतु जब उसकी नौकरी बिसनाथ नामक युवक छीन लेता है, तो उसे काफी दुःख होता है । वह उस नौकरी को पानी की हर तरह से कोशिश करता है। परंतु भ्रष्टाचारी, अराजकता, शिफारशी भाई-भतीजेवाद के इस दौर में वह उसे पाने में असफल बनता है। वह हमेशा निराश रहता है और जीवन की इन स्थितियों से लड़ते-लड़ते हताश होता है। प्रस्तुत कहानी में उसके असंतोष, जीवन की विडंबना को प्रस्तुत करते हुए उदय प्रकाश लिखते है, 'जिसे बनाना हो बन जाये मोहन दास। मैं नहीं हूँ, मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप भी नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाये। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहनत पर जीने दो! काका, आप लोग मेरा साथ दो।'

अत: मोहन दास का असंतोष, उसकी विडंबना, उसकी त्रासदी ही आज के युवकों की त्रासदी है। यही वर्तमान युवकों के असंतोष की समस्या है।

2. दलितों पर होनेवाले अन्याय- अत्याचार एवं शोषण की समस्या :

प्रस्तुत कहानी 'मोहन दास' मूलतः 21 वीं सदी में दलितों पर होनेवाले अत्याचारों की दास्तान है। प्रस्तुत कहानी में मोहन दास दलित जाति का पात्र है। अपनी गरीबी होने के होने के बावजूद वह बी.ए. फर्स्ट क्लास में पास होता है, परंतु अंत तक अच्छी नौकरी प्राप्त नहीं कर पाता। उसकी नौकरी ब्राह्मण जाति का बिसनाथ उससे छीन लेता है और खुद मोहन दास बनकर ओरियटल कोल माइंस में दस हजार रुपये प्रतिमाह की सुपरवायझर की नौकरी प्राप्त करता है। असल में यह ब्राह्मण जाति के बिसनाथ द्वारा दलित

जाति के मोहन दास पर किया गया एक अन्याय-अत्याचार ही है। मोहन दास दलित होने के कारण गाँव समाज में उस पर अन्याय, अत्याचार होते हैं। जब वह अपनी नौकरी के बारे में ओरियंटल कोल माइंस में पुछताछ करने चला जाता है, तब वहाँ के उच्चवर्गीय अधिकारी मोहनदास को पीटते हैं। कहानीकार उदय प्रकाश लिखते हैं, 'मोहन दास की बात कोई नहीं सून रहा था। उसे धकियाया जा रहा था। सीर पीठ, कंधे और चेहरे पर पंजों घूसों और कुहनियों की चोटें बरस रही थीं। मोहन दास दोनों हाथों से अपना चेहरा ढँककर अपनी आँखें बचा रहा था : 'हमारी बात तो सुन लीजिए!..ए... मारिए नहीं ! ... ए ... ए...!'

इस तरह से आज के युग में भी दलितों पर अत्याचार हो रहे हैं। आज भी दलित समाज के लोगों को सवर्ण जाति के अन्याय-अत्याचारों का सामना करना पड़ रहा है। उदय प्रकाश की यह लंबी कहानी दलितों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचारों की समस्या को जागर करनेवाली कहानी है।

3. जातिभेद एवं जातिगत द्वेष की समस्या :

प्रस्तुत 'मोहन दास' कहानी दलित जीवन के नग्न यथार्थ को प्रस्तुत करनेवाली है। जहाँ कहानीकार ने मध्यप्रदेश जिला अनुप नगर पुरबनरा गाँव के दलित जाति के मोहन दास के जीवन संघर्ष को दिखाकर जातिभेद एवं जातिगत द्वेष की यथार्थ स्थिति विस्तृत रूप से प्रस्तुत की है। शिक्षा का प्रचार-प्रसार बढ़ने पर भी आज जातिभेद या जातिद्वेष कभी कम नहीं हुआ। वर्तमान में भी जातिभेद और जातिद्वेष उभारकर आ रहा है। ऐसे समय में आज जातिभेद और जातिद्वेष एक समस्या बन गई है। जिसे मानवीय समाज से दूर करना जरुरी है।

प्रस्तुत कहानी में जातिभेद और जातिद्वेष के कई उदाहरण मिलते हैं। कहानी का नायक मोहन दास दलित जाती से है। उसके ही गाँव में रहनेवाला सवर्ण विजय तिवारी हमेशा उसे घृणा करता है। अपनी योग्यता न होने के बावजूद केवल शिफारिश के बल पर पुलीस इन्स्पेक्टर बनता है। मोहनदास की नौकरी छिननेवाला बिसनाथ और विजय तिवारी दोनों मोहन दास से घृणा करते है। यह घृणा केवल जाति द्वेष के कारण ही है।

क्योंकि दोनों ब्राह्मण जाति से है। प्रस्तुत कहानी में मोहन दास और मोहन दास के परिवार से इस बात का पता चलता है कि नगर हो या महानगर या गाँव आज भी यहाँ जातिद्वेष और जातिवादी भावना का अंत नहीं हुआ है। कहानी में नौकरी के मुलाकात के समय यह भावना उभरकर सामने आती है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार लिखते हैं कि,

'विजय तिवारी पुलिस की वर्दी में बत्ती और लाऊडस्पीकर लगी टाटा सुमो में बैठा हुआ उसे जिस तरह से घूर रहा था, उसमें अजनबीपन ही नहीं, हिंसा और गुस्से की साफ उपस्थिति थी। ऐसा क्यों हो रहा था? क्या मोहन दास गरीब और हीन जात का था इसलिए। या इसलिए कि वह बेरोजगार था और अपनी मेहनत से चुपचाप अपने परिवार की आजीविका चला रहा था? या फिर इसलिये कि इन लोगों ने उसे ठगा था, उसका हक मार लिया था और अब यहाँ उसकी मौजूदगी उनकी आजादी और मौज मस्ती में बाधा पैदा कर रही थी?'

अत: इससे पता चलता है कि किस तरह विजय तिवारी केवल जाति भिन्नता के कारण मोहन दास का द्वेष करता है। अत: जातिभेद और जातिद्वेष की समस्या को कहानी में बार-बार उभारा गया है।

4. भ्रष्ट न्याय व्यवस्था की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार उदय प्रकाश जी ने मोहन दास के जीवन संघर्ष को सामने रखते हुए भ्रष्ट न्यायव्यवस्था की समस्या को उजागर किया है। प्रस्तुत कहानी का मूलपात्र मोहन दास स्वयं मोहन दास होकर भी स्वयं को न्यायालय में मोहन दास साबित नहीं करता। इसका मूल कारण है कि भ्रष्ट न्याय व्यवस्था और उससे जुड़ी भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था। मोहन दास ओरियंटल कोल माइंस में सुपरवायझर पद पर अव्वल स्थान से चयनित होता है। एक ओर वहाँ के सवर्ण अधिकारी उससे उसके ओरिजनल शैक्षिक कागजात अपने पास रखते हैं और उसे नियुक्तिपत्र की राह देखने के लिए कहते हैं। तो दूसरी ओर अधिकारी नरेंद्रनाथ से मिलकर उसके बेटे बिसनाथ को मोहन दास की जगह नौकरी पर लगाते है। साथ ही बिसनाथ को मोहन दास के कागजात देकर उसे ही मोहनदास बनाते हैं। जब असली मोहन दास को यह बात मालूम होती है तो वह उसे पाने की कोशिश करता है, परंतु खुद को मोहन दास साबित नहीं कर पाता। मोहन दास हर्षवर्धन जैसे समाजसेवी वकीलों के सहारे कोर्ट में मुकादमा चलाता है। लेकिन भ्रष्ट प्रशासन से जुड़े भ्रष्ट अधिकारी और जाँच कमीशन के कारण वह मुकादमा हार जाता है। और उसे न्याय नहीं मिलता। आज वर्तमान समय में भी भ्रष्ट न्याय व्यवस्था ने समाज को घेर रखा है। और सत्ताधीश उसे अपने तरीके से चला रहे है। अगर न्याय व्यवस्था से जुडा कोई अधिकारी अगर सच का साथ देना चाहता है तो उसे भी एक तो खरीदा जाता है। नहीं माना तो उसका तबादला करवा दिया जाता है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार इस बात पर गौर करते हुए जस्टिस जी.एम. मुक्तिबोध की इमानदारी पर पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं-

'हर्षवर्धन को पता चला था कि उनका तबादला अक्सर उन्हीं आदिवासी या पिछडे इलाके में कर दिया जाता है, जहाँ ऐसे मुकदमे नहीं आते, जिनमें किसी बड़े आदमी या व्यापारी आदि को कोई नुकसान पहुँचे।'

मोहन दास के इस मामले में जब जी.एम. मुक्तिबोध सिक्रेट जुडिएशन इन्कायरी (गोपनीय जाँच) करते हैं। तब सत्ताधीश ईमानदार जस्टिस का तबादला करवा देते हैं। अत: इस प्रकार हमारी न्याय व्यवस्था मजबूर और भ्रष्ट बन चुकी है।

5. भ्रष्ट प्रशासन की समस्या :

कहानीकार उदय प्रकाश जी प्रस्तुत कहानी में अनेक समस्याओं पर नजर डालते हैं। उसी तरह वे भ्रष्ट प्रशासन की समस्या को भी उजागर करते हैं। प्रस्तुत कहानी के केंद्र में मोहन दास का जीवन संघर्ष है। इस संघर्षपूर्ण गाथा के द्वारा कहानीकार भ्रष्ट प्रशासन को वाणी देने का काम करते हैं। मोहन दास पूरबनरा गाँव में रहनेवाला बी.ए. पास दलित युवक है। जिसे बी.ए. में अव्वल आने पर भी भ्रष्ट प्रशासन के कारण नौकरी नहीं मिलती। इतना ही नहीं यहाँ भ्रष्ट प्रशासन उसे उसकी नौकरी ही छिनता नहीं बल्की नौकरी देनेवाली उसकी योग्यता के सारे ओरिजनल कागजाद भी हडपता है। जब न्याय माँगने कोर्ट में चला जाता है, तो वहाँ भी भ्रष्ट प्रशासन उसे कुस कोसती-तीपे-पीटती है। असल में मोहन दास होकर भी वह खुद को

असली मोहन दास सिद्ध नहीं कर पाता और भ्रष्ट प्रशासन से मिलकर बिसनाथ जैसे धोखेबाज किसी तरह बी.ए. पास हुए युवक खुद को मोहन दास बताकर असली मोहनदास की नौकरी छिनता है। नौकरी ही नहीं दस्तावेज पर विश्वनाथ वल्द नगेंद्रनाथ को मोहनदास वल्द काबादास बनाया जाता है। भ्रष्ट प्रशासन से जुडी पुलीस, पटवारी, तहसीलदार, नायब तहसीलदार, रिवेन्यू इन्स्पेक्टर आदि अधिकारी मोहन दास के खिलाफ और बिसनाथ के पक्ष में रिपोर्ट देते हैं। बिछिया टोला और पुरबनरा के पटवारी कमल किशोर के संवाद भ्रष्ट प्रशासन व्यवस्था की बुनियाद है। कहानी में पटवारी कहता है कि,

'अरे आप लोगों का हुकुम हम कभी डालेंगे भला?... इतने अमाउंट में तो हम ससुर...मूस को हाथी, खेत को सड़क अउर छक्का को बच्चों की अम्माँ बना दे। कमल किशोर पटवारी मगन होकर, नोट को अपने बॅग में डालते हुए फुदक रहा था। उसने मैकडॉवल नंबर वन का पटियाला पेग एक गटाके में गले के नीचे उतारा और वही, उनकी मौजूदगी बिना कही गये, मामले सारी तफ़तीश कर डाली और पंद्रह मिनट में मोहन दास बनाम बिसनाथ मामले में जिलाधीश द्वारा संपन्न की गई इन्क्वायरी की पुख्ता रिपोर्ट सफ़ेद कागज के एक पन्ने पर तैयार हो गयी।'

अत: प्रस्तुत कहानी भ्रष्ट प्रशासन की समस्या को उजागर करती है।

6. सामाजिक असमानता की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने सामाजिक असमानता की समस्या को भी उजागर किया है। समाज की समाजिक असमानता समाज में जातिभेद-वर्गभेद, दलित-सवर्ण, वर्णभेद, धर्मभेद, आदि के द्वारा देखी जा सकती है। वस्तुतः मानवीय समाज में मानवता के माध्यम से सामाजिक समानता देखी जा सकती है। मानवीय समाज में सामाजिक समानता तब देखी जा सकती है, जब मनुष्य स्त्री-पुरुष, अमीरी-गरीबी, सवर्ण-दलित, हिंदू-मुस्लिम, काला- गोरा, आदि छोडकर मानवतावादी धर्म को अपना कर सभी मिलकर अपना जीवन जिए। परंतु प्रस्तुत कहानी में मोहन दास का जीवन संघर्ष हम देखते हैं तब हमें अमीरी-गरीबी, सवर्ण-दलित आदि के आधार पर सामाजिक असमानता देखने को मिलती है। असल में यह मानवता के विकास के लिये एक रोडा है। प्रस्तुत कहानी में जगह-जगह इसके दर्शन होते हैं। कहानीकार कहानी में लिखते है कि-

'जब संसार के हर देश की हर सरकार की अर्थनीति और राजनीति एक जैसी थी, जब अमीरों और गरीबों के बीच की खाई इतनी गहरी और चौड़ी हो चुकी थी कि उसे कोई भी प्रायोजित विज्ञापन छुपा नहीं पाता था।'

उपर्युक्त अवतरण में सामाजिक असमानता दिखाई देती है। जो मानव विकास की बड़ी जड़ है। इस तरह प्रस्तुत कहानी में सामाजिक असमानता की समस्या को पाठकों के सामने रखा है।

7. आम आदमी के हक और अधिकार की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार उदय प्रकाश जी सामान्य आदमी के हक और अधिकार की समस्या सामने रखा है। मोहनदास जैसे दलित समाज के आदमी के हक्क और अधिकार के छिनने की गाथा को वाणी दी है। प्रस्तुत कहानी में कहानी का मुख्य पात्र मोहनदास दलित समाज का बी.ए. फर्स्ट क्लास पढ़ा-लिखा युवक है। आरक्षण के अनुसार वह सरकारी क्षेत्र में नौकरी की उम्मीद रखता है। उनके सरकारी नौकरी की परीक्षाएँ देता है, जिसमें वह अव्वल रहता परंतु साक्षात्कार में व्यह भ्रष्ट अधिकारियों के पक्षपात के कारण पिछे रहता है। ओरियंटल कोल माइंस मेथ किसी तरह उसका चुनाव उसके आरक्षण के अनुसार पहले नंबर पर होता है। परंतु जाति भेद के चलते और भ्रष्ट अधिकारियों के कारण उसकी नौकरी ब्राह्मण समाज के थर्ड डिव्हिजन से बी.ए. पास बिसनाथ को दी जाती है। यहाँ गौर करने की बात यह है कि बिसनाथ ही मोहन दास बनकर उसकी नौकरी छीन लेता है। अर्थात् बिसनाथ भ्रष्ट अधिकारियों की सहायता से मोहन दास के ओरिजनल शैक्षिक कागजाद अपने कब्जे में करता है और उस पर अपना फोटो छिपकाकर उसे सत्यापित करता है। अर्थात् यहाँ पर बिसनाथ जैसा ब्राह्मण समाज का युवक गरीब दलित मोहन दास जैसे युवक के अधिकार की नौकरी उससे छिनता है। ये प्रसंग दलित मोहन दास के हक और अधिकार को छिनने का प्रसंग है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने मोहन दास के माध्यम से आम आदमी के हक और अधिकार छिनने की समस्या को उजागर करते हैं। कहानी में मोहन दास जैसे कई युवा है, जिसके हक और इसी तरह छिने गये है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार लिखते हैं -

'लेनिन नगर, गांधी नगर, आंबेडकर नगर, जवाहर नगर, शास्त्री, नेहरू और तिलक नगर जैसी सुव्यवस्थित कालोनियों में हजारों बिसनाथ जैसे लोग थे, जो किसी दूसरे की पहचान, अधिकार, योग्यता और क्षमता को चुराकर वर्षों से कुर्सियों पर बैठे हुए थेऔर हजारों की तनख्वाह ले रहे थे।'

8. उच्चवर्ग के तानाशाही की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में उच्च वर्ग अर्थात् सवर्णों के तानाशाही की समस्या को भी कहानी वाणी दी है। प्रस्तुत कहानी एक दलित युवा के संघर्ष, अत्याचार और शोषण का यथार्थ है जिसमें मोहनदास जैसे दलित जाति के पढ़े-लिखे युवक पर सवर्ण द्वारा अनेक अन्याय-अत्याचार होते हैं। मोहन दास दलित जाति के आरक्षण द्वारा नौकरी के लिए चयनित होता है। परंतु बिसनाथ जैसा ब्राह्मण समाज युवक तानाशाही के बल पर उसकी नौकरी छिनता है। उच्चवर्ग पुलीस इन्स्पेक्टर विजय तिवारी अपनी पहचान, सिफारिश के बल पर नौकरी प्राप्त करता है और मोहन दास जैसे युवकों पर अन्याय करता हुआ उसका शोषण करता है। इतना ही नहीं अपने पद का रोब दिखाकर, डराकर मोहन दास की पत्नी कस्तूरीबाई को भोगने और छेड़ने का प्रयास करता है। प्रस्तुत कहानी में कई ऐसे प्रसंग हैं जो उच्चवर्गियों की तानाशाही को वाणी देते हैं। प्रस्तुत कहानी में बिसनाथ अपनी तानाशाही को प्रकट करता हुआ कहता है कि, 'असली मोहनदास कौन है और नकली कौन है, इसका फैसला तो हम करेंगे। उस ससुर दो कौंडी के फटीचर बंसौर ने हमारी इज्ज़त पर बट्टा लगाया, लगी लगाई नौकरी छिनी, अब हम अपनी ताकत उसे दिखा देंगे।'

9. युवाओं के अस्तित्व बोध की समस्या :

प्रस्तुत कहानी युवाओं के अस्तित्त्व बोध की समस्या पर प्रकाश डालती है। कहानी का मूलपात्र दलित युवक मोहन दास है। वह पढा-लिखा है। वह ईमानदार, स्वाभिमानी और सरल स्वभाव का है। प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने मोहन दास के जीवन संघर्ष को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। जिसमें मोहन दास के गरीब परिवार के हालात, दो वक्त की रोटी के लिए संघर्ष, छोटे बेटा और बेटियों का संघर्ष, मोहन दास की नौकरी छिनना, मोहन दास के शैक्षिक कागजाद धोखाधड़ी से छिनना, कोर्ट में मुकादमा चलाना, मोहनदास पर अन्याय-अत्याचार, ईमानदार जज और वकील का भ्रष्ट व्यवस्था से तंग आना आदि प्रसंग उभारे हैं।

इन प्रसंगों में सबसे बड़ी विडंबना इस बात की है कि खुद मोहन दास को अपने मोहन दास होने के प्रणाम माँगे जाते है। जिसे वह जी-जान से कोशिश करने पर भी जूटा नहीं पाता। क्योंकि उसके सारे ओरिजिनल कागजात भ्रष्ट अधिकारियों के द्वारा धोखे से छिने गये है और ब्राह्मण समाज के बिसनाथ को दिए जाते हैं। जिससे बिसनाथ ही मोहन दास बनकर असली मोहन दास की नौकरी छिनता है और लेनिन नगर में मोहन दास बनकर रहता है। अर्थात् जो मोहन दास है वह खुद को मोहन दास साबित नहीं कर पाता। उसका अस्तित्त्व ही समाप्त होता है। इस त्रासदी में वह बार-बार घुटता है, परेशान होता है और व्यवस्था से तंग आकर कहता है, 'जिसे बनाना हो बन जाये मोहन दास। मैं नहीं हूँ मोहन दास। मैंने कभी कहीं से बी.ए. नहीं किया। कभी टॉप नहीं किया। मैं कभी किसी नौकरी के लायक नहीं रहा। बस मुझे चैन से जिंदा रहने दिया जाय। अब हिंसा मत करो। जो भी लूटना हो लूटो। अपने अपने घर भरो। लेकिन हमें तो मेहनत पर जीने दो ! काका, आप लोग मेरा साथ दो।'

अत: मोहन दास की कैसी विडंबना है जो स्वयं मोहन दास होकर भी खुद को मोहन दास साबित नहीं कर पाता है और अपने अस्तित्त्व को खो बैठता है। अर्थात् यह मोहन दास जैसे युवाओं के अस्तित्त्व बोध की समस्या है। जिसे लेखक ने बड़ी मार्मिकता से जागर किया है।

10. बुनियादी आवश्यकताओं की समस्या :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार उदय प्रकाश जी ने मनुष्य की बुनियादी आवश्यकता यों की समस्या पर भी बात की है। हालाँकि इसका चित्रण विस्तार से नहीं हो पाया। परंतु कुछ प्रसंग के अंतर्गत इसकी झलक सहज रूप से देखी जा सकती है। यह कहानी मोहन दास जैसे गरीब परंतु प्रतिभा संपन्न व्यक्ति के संघर्ष, दु:ख, मानसिकता, प्रताड़ना, घीज, बेबसी, लाचारी की कहानी है। मोहन दास ईमानदार एवं सरल व्यक्तित्व का होने के बावजूद समाज की कृरता का शिकार बनता है। जिसका परिवार मेहनती होने के बावजूद दो वक्त की रोटी ठीक से जुटा नहीं पाता। पूरा परिवार दिन-रात काम करने के बावजूद भूखा-नंगा सोने के लिए मजबूर है। परिवार में पिता को टी.वी. की बीमारी है। तो माँ मोतीबिंदू के ऑपरेशन के कारण अंधी हुई है। असल में मोहन दास जी तोड़ मेहनत करने के बावजूद परिवार की बुनियादी आवश्यकता को पूरा नहीं करता। वैसे तो रोटी, कपड़ा, मकान, स्वास्थ्य और शिक्षा ये हमारी बुनियादी आवश्यकता है। परंतु मोहन

दास जैसे अनेक परिवार अपनी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में असमर्थ है। जब मोहन दास के घर में बेटे का जन्म होता है तो वह खुश होने के बजाए जिम्मेदारी अथवा उसके खिलाने-पिलाने की सुविधा के बारे में सोचता है- 'एक और पेट ने आज के दिन घर में जन्म ले लिया। अब कम-से-कम आठ महिने तक हर रोज आधा किलो गाय के दूध का इंतजाम करना होगा। कस्तूरी के लिए महीने भर देसी सोंठ, गुड तथा घी और हल्दी के साथ भात। छठी बरहों और पसनी (अन्नप्राशन) में नात रिश्तेदारों को खिलाने-पिलाने का खर्चा ऊपर से।'

इससे स्पष्ट होता है कि मोहन दास अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के प्रति कितना चिंतित है। यह चिंता उसे पुत्रजन्म का आनंद भी लेने नहीं देती। यही उसकी सच्ची वास्तविकता है।

उपर्युक्त समस्याओं के अतिरिक्त गरीब नारीयों की सुरक्षा, सामाजिक न्याय की असमानता, भ्रष्टाचार की समस्या, दलितों के शोषण की समस्या, विस्थापित लोगों की समस्या, जातिय दबंगाई, भाई-भतीजावाद, भ्रष्ट पुलीस प्रशासन की समस्या, न्याय व्यवस्था की मजबुरी, झूठ, फरेब, धोखेबाजी आदि समस्याओ को प्रस्तुत कहानी में वाणी मिली है। अत: कह सकते हैं कि मोहन दास समस्यामूलक लंबी कहानी है।

4.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

अ) निम्नलिखित वाक्य के नीचे दिए गए विकल्प में से उचित विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. 'कहानी' का परिवेश ..... तत्त्व से संबंधित होता है।

   अ) कथानक आ) संवाद इ) पात्र- चरित्र-चित्रण ई) देश'काल-वातावरण

2. 'देश-काल- वातावरण' कहानी में ......उत्पन्न करता है।

   अ) सजीवता आ) नाटकीयता इ) संप्रेषणीयता ई) काव्यात्मकता

3. 'मोहन दास' कहानी में प्रमुख रूप से .... चित्रण हुआ है।

   अ) प्राकृतिक आ) सामाजिक इ) शैक्षणिक ई) सांस्कृतिक

4. 'मोहन दास' कहानी में ...... राज्य के परिवेश को उभारा है।

   अ) मध्य प्रदेश आ) बिहार इ) उत्तर प्रदेश ई) राजस्थान

5. 'मोहन दास' कहानी के 'मोहन दास' पात्र का गाँव ..... है।

   अ) पूरबनरा आ) बिछिया टोला इ) लेनिन नगर ई) वाराणसी

6. .... बिछिया टोला गाँव का रहनेवाला है।

   अ) मोहनदास आ) बिसनाथ इ) विजय ई) हर्षवर्धन

7. 'मोहनदास' कहानी में प्रमुखता से ...... शैली का प्रयोग हुआ है।

अ) हास्यात्मक आ) पत्रात्मक इ) डायरी ई) किस्सागोई

8. कहानी में भाषा-शैली का संबंध .... से रहता है।

अ) कलापक्ष आ) नाट्यपक्ष इ) भावपक्ष ई) संगीत पक्ष

9. 'मोहन दास' कहानी में मोहनदास को...... रूप में चित्रित किया है।

अ) मिथक आ) फंतासी इ) प्रतीक ई) रूपक

10. 'मोहन दास' कहानी.... के जीवन संघर्ष की त्रासदी है।

अ) विश्वनाथ आ) विजय इ) नरेंद्रनाथ ई) मोहनदास

11. 'मोहन दास' कहानी सामाजिक ..... को व्यक्त करती है।

अ) असमानता आ) समानता इ) विद्रोह ई) संघर्ष

12. 'मोहन दास' कहानी में ..... असंतोष का चित्रण मिलता है।

अ) व्यक्तिगत आ) सामाजिक इ) राजनीतिक ई) सांस्कृतिक

13. 'मोहन दास' कहानी में उदय प्रकाश जी ने सवर्ण की ....का चित्रण किया है।

अ) सच्चाई आ) अच्छाई इ) तानाशाही ई) इमानदारी

14. 'मोहन दास' कहानी में उदय प्रकाश जी ने ..... की समस्या पर प्रकाश डाला है।

अ) आतंकवाद आ) दहशतवाद इ) भाई भतीजावाद ई) धर्मवाद

4.5 शब्दार्थ, संदर्भ, टिपण्णियाँ :

1) दरार - छेद

2) 'शिंडलस्र लिस्ट' - एक फिल्म का नाम

3) पैंबंद - छिद्र छिपाने के लिए प्रयुक्त कपडे का छोटासा तुकडा

4) बुश्शर्ट - लंबी और ढिली सुती शर्ट

5) बिछिया टोला - गाव का नाम

6) कठिना - नदी का नाम

7) कूटकथा - मिथ्या या झूठी कथा

8) किस्सागोई- कहानी कहने से

4.6 स्वयंअध्ययन प्रश्न के उत्तर :

1. ई) देश'काल-वातावरण
2. अ) सजीवता
3. आ) सामाजिक
4. अ) मध्य प्रदेश
5. अ) पूरबनरा
6. आ) बिसनाथ
7. ई) किस्सागोई
8. अ) कलापक्ष
9. अ) मिथक
10. ई) मोहनदास
11. अ) असमानता
12. अ) व्यक्तिगत
13. इ) तानाशाही

4.7 सारांश :

1. उदय प्रकाश की कहानी 'मोहन दास' के देश-काल-वातावरण का अध्ययन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कहानी के देश-काल-वातावरण का चित्रण प्रसंग, घटना, पात्रों की मनोदशा और मूल कथानक के अनुकूल किया गया है। जिससे कहानी पाठकों को प्रभावित कर पाठकों की जिज्ञासा बढाती है। देश-काल- वातावरण के कारण कहानी में जीवंतता एवं यथार्थता का समावेश हो चुका है।

2. 'मोहन दास' कहानी शिल्प की दृष्टिकोण से अपना अलग महत्व रखती है। उदय प्रकाश जी ने कहानी के शिल्प में काफी बदलाव किया है। जिसके कारण कहानी का शिल्प विधान अनूठा है।

3. 'मोहन दास' कहानी का भाषा की दृष्टि से अध्ययन करने के उपरांत कहा जा सकता है कि मोहन दास कहानी की भाषा सहज, सरल, संप्रेषणीय एवं प्रभावपूर्ण है।

4. 'मोहन दास' कहानी की भाषा में भावानुकूलता, प्रसंगानुकूलता, पात्रानुकूलता, गतिशीलता, व्यंग्यात्मकता, काव्यात्मकता आदि विशेषतः पायी जाती है। साथ ही विभिन्न भाषा की शब्दावली, प्रादेशिक बोली भाषा का प्रयोग, कहावतें और मुहावरें आदि का प्रयोग भी कहानी की भाषा में प्रचुरता से देखा जा सकता है।

5. 'मोहन दास' कहानी की शैली भी अनोखी है। मोहन दास के जीवन संघर्ष की त्रासदी को वाणी देने के लिए कहानीकार ने प्रमुखता से किस्सागोई, विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, संस्मरणात्मक, पूर्वदीप्ती, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, शैलियों का प्रयोग किया है। जिससे कहानी पाठकों के दिलों-दिमाग पर प्रभाव डालती है। विशिष्ट शैली के प्रयोग के कारण कहानी में प्रौढता एवं प्रभावोत्पादकता का समावेश हो चुका है।

6. 'मोहन दास' कहानी का मूल उद्देश्य निम्नवर्गीय दलित युवक के जीवन संघर्ष के यथार्थ को प्रस्तुत करते हुए, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, भाई-भतीजावाद, जातिभेद या वर्गभेद, तानाशाही आदि को अभिव्यक्त करना रहा है।

7. उदय प्रकाश जी ने 'मोहन दास' कहानी के मुख्य पात्र 'मोहन दास' के जीवन संघर्ष के माध्यम से अनेक पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक, प्रशासकीय, जातीय, शैक्षिक समस्याओं को उभारने का प्रयास किया है।

8. 'मोहन दास' कहानी को समस्या प्रधान कहानी कहा जा सकता है, जिसमें व्यक्तिगत असंतोष, दलित अन्याय-अत्याचार, दलित शोषण, जातिगत द्वेष, भ्रष्ट सामाजिक न्याय व्यवस्था, सामाजिक असमानता, भ्रष्ट प्रशासन एवं पुलीस व्यवस्था, नारी सुरक्षा, आम आदमी के हक्क और अधिकार की समस्या, उच्चवर्ग की तानाशाही, युवाओं के अस्तित्त्व बोध की समस्या आदि समस्याओं चित्रण हुआ है।

4.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. उदय प्रकाश जी की लंबी कहानी 'मोहन दास' में चित्रित समस्याओं पर प्रकाश डालिए।
2. उदय प्रकाश की कहानी 'मोहन दास' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
3. 'मोहन दास' कहानी की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।
4. 'मोहन दास' कहानी के (परिवेश) देश-काल-वातावरण पर विस्तार से चर्चा कीजिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न

1. 'मोहन दास' कहानी का मूल उद्देश्य बताईए।
2. 'मोहन दास' कहानी की भाषा पर प्रकाश डालिए।
3. 'मोहन दास' कहानी की शैली पर प्रकाश डालिए।
4. 'मोहन दास' लंबी कहानी के देश-काल-वातावरण का चित्रण संक्षेप में कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. 'मोहन दास' कहानी के पात्रों से संबंधित घटना आपके आस-पास हो तो खोज कर लिखने का प्रयास करें।
2. आपके गाँव या प्रदेश में 'मोहनदास' कहानी में चित्रित समस्या को देखने का प्रयास करें और उनका हल निकालने का भी प्रयास करें।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मैंगोसिल – उदय प्रकाश
2. पॉल गोमरा का स्कूटर – उदय प्रकाश
3. तिरिछ – उदय प्रकाश

❑❑❑

इकाई –1
रुपनारायण सोनकर का जीवन परिचय, व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व का परिचय

अनुक्रम –

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 जीवन परिचय

1.3.2 व्यक्तित्त्व, कृतित्त्व का परिचय

1.3.3 कृतित्व का परिचय

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. रुपनारायण सोनकर के जीवन परिचय से परिचित होंगे।
2. रुपनायण सोनकर के व्यक्तित्त्व की विशेषताओं को जान जाएँगे।
3. रुपनारायण सोनकर के कृतित्त्व से परिचित हो जाएँगे।
4. रुपनारायण सोनकर के कृतित्त्व की विशेषताओं को जान जाएँगे।

1.2 प्रस्तावना :

हिंदी दलित साहित्य विश्व साहित्य में अपनी अलग पहचान बना चुका है। दलित साहित्य में कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी आदि विधाओं के साथ-साथ आत्मकथा इस विधा ने अपना एक अलग स्थान अर्जित किया है। हिंदी दलित साहित्य की बहुचर्चित आत्मकथाओं ने समस्त भारतीय भाषाओं में अनुवाद

हो चुके हैं। इसके साथ-साथ विश्व की प्रमुख भाषाओं में हिंदी दलित आत्मकथाओं के अनुवाद हो चुके हैं, हो रहे हैं। जिससे इसकी अल्पवधि में लोकप्रियता का अदांजा लगाया जा सकता है। इसके साथ देश-विदेश के सभी विश्वविद्यालयों में प्रचुर मात्रा में शोधकार्य हो रहे हैं।

हिंदी दलित साहित्य का उद्भव सन् 1960 ई. के आसपास का है।डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर दलित साहित्य के जन्मदाता रहे हैं। सदियों से हाशिए पर रहनेवाले समाज की व्यथाओं को वाणी देने का प्रयास डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के प्रयास से हुआ है। उन्होंने मराठी मे आत्मकथा लिखी थी, जो दलित साहित्य का मील का पत्थर मानी जाती है। सन् 1956 ई. के डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के महापरिनिर्वाण के बाद दलित साहित्य की धरोहर को आगे बढाने का कार्य डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के अनुयायियों, दलित साहित्यकारों ने किया है। आज दलित साहित्य विश्वस्तर पर विराजमान हो चुका है। सर्वप्रथम यह प्रयास मराठी भाषा में हुआ है, बाद में इसका अनुकरण हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं ने किया। आज प्राय:सभी भारतीय भाषाओं में दलित साहित्य पाठकों के गले का कंठहार बन गया है। सदियों से अलक्षित, वंचित, उपेक्षित, दीन, दलित, शोषित पीडित समाज की व्यथाओं को वाणी देने का कार्य दलित साहित्य ने किया है।हिंदी दलित साहित्य की परंपरा श्रेष्ठ और गौरवशाली रही है। इस गौरवशाली परंपरा में अनेक साहित्यकारों ने अपना योगदान दिया है, इसमें रुपनारायण सोनकर नाम सुवर्णाक्षरों में लिखा जाने योग्य है।

1.3.1 जीवन परिचय

हिंदी दलित आत्मकथाकारों में रुपनारायण सोनकर का नाम शीर्षस्थ हैं। दलित साहित्यकारों की परंपरा में रुपनारायण सोनकर बहुमुखी प्रतिभासंपन्न साहित्यकार हैं। उन्होंने एक साथ कविता, उपन्यास, नाटक, एकांकी, आत्मकथा आदि विधाओं पर लेखन किया है। उनके जीवन तथा उनके साहित्य पर समीक्षात्मक, विवेचनात्मक ग्रंथ का अभाव रहा है। जिसके माध्यम से उनके जीवन तथा व्यक्तित्त्व संबंधी विवचेन प्राप्त किया जा सके। लेकिन चुनिंदा विश्वविद्यालयों में उनके जीवन तथा साहित्य के विविध आयामों पर शोधकार्य हुआ है, हो चुका है, और हो रहा है। उनकी बहुचर्चित आत्मकथा ''नागफणी'' के आधार मानकर उनके व्यक्तित्व और कृतित्त्व के विविध आयामों पर प्रकाश डाला जा रहा हैं। ''नागफणी'' विविध विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में पाठ्यपुस्तक के रूप में निर्धारित किया गया है। इसके साथ-साथ उनकी अन्य रचनाओं को भी विविध विश्वविद्यालयों में निर्धारित किया गया है।

जब हम किसी साहित्यकार के साहित्य से संबंधित से प्रभावित हो जाते हैं, तब उनके व्यक्तित्त्व के बारे में विस्तार से जानने जिज्ञासा मन में निर्माण हो जाती है। इसके साथ उनके कृतित्त्व से पूर्व उनके व्यक्तित्त्व का अध्ययन करने से उनके साहित्य को अच्छी तरह समझने में अधिक सुविधा जनक होता है। किसी साहित्यकार के साहित्य का मूल्यांकन करने के लिए उनके संस्कारों, प्रेरणाओं, प्रभावों, विचारों, प्रेरणा स्थलों तथा अनुभूतियों की जानकारी के साथ साहित्यकार के व्यक्तित्त्व तथा उनके विकास के गठन में जिन पहलुओं ने अपना योगदान दिया है, उनका विवेचन-विश्लेषण करना अनिवार्य माना जाता है।

रुपनारायण सोनकर का जीवन एक इंद्रधनु की भांति रंगीन है। उन्होंने अपने जीवन में काफी चढाव - उतार देखे हैं। सोनकर ने वर्ण व्यवस्था और जाति व्यवस्था के विरोध में कडा संघर्ष किया है। अस्पृश्यता, छुआछूत की दाहकता के अपमान की चोट क्या होती है, यह उन्होंने स्वयं भोगा है।जिसका उल्लेख उनके साहित्य में आया है। इसी परिप्रेक्ष्य में उनका जीवन परिचय इस प्रकार से प्राप्त किया जा रहा है।

जन्म–

प्रख्यात हिंदी दलित साहित्यकार रुपनारायण सोनकर का जन्म दि. 4 अप्रैल, सन्.1962 ई. को उत्तर प्रदेश के फत्तेहपुर जिले के बिंदकी तहसील के नसेनियॉ गॉव में एक सामान्य दलित परिवार में हुआ। उनके परिवारजन उन्हें ''हीरा'' इस नाम से पुकारते थे। इसी नाम से वे उनके परिवार में प्रिय थे। यथार्थ में वे सही अर्थों में हीरा (आभूषण) ही थे ।

जाति–

जाति व्यवस्था भारतीय समाज व्यवस्था की अपनी अलग मिसाल है। खटिक जाति में सोनकर का जन्म हुआ। जो हिंदू समाज में हीन तथा अछूत समझी जाती है। उन्होंने अपनी हीन, अछूत जाति में जन्म लेने कारण जीवन में कई बार अवमानना झेलनी पडी थी।

मॉ–

सोनकर की माता का नाम जगनंदनी था। वह अपनी संतानों पर अपार प्रेम करती थी।उनका पारिवारिक स्तर आर्थिक दृष्टि से कमजोर था। बावजूद वह अपनी संतानें हर समय सुखी, आनंदी तथा सुशिक्षित रह, इस परिप्रेक्ष्य में प्रयासरत रहा करती थी। सोनकर ने अपनी सभी साहित्य रचनाऍं अपनी माता-पिता को समर्पित की है। जिससे उनका अपनी मॉ-बाप के प्रति आस्था एवं विनम्रतापूर्वक अभिवादन का भाव दिखाई देता है।

पिता–

सोनकर के पिता का नाम एम.पी. सोनकर था। वे अपनी संतानें काफी पढी-लिखी होनी चाहिए ऐसा उनका प्रयास होता था।उनके आदर्शों और प्रेरणाओं के बलबुते पर ही सोनकर ने अपने क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किया हैं।

हीरा से रुपनारायण के नाम की यात्रा–

सोनकर बचपन का नाम ''हीरा'' था। सही अर्थो में वे हीरा ही थे। जो मूल्यवान और कीमती होता है। अपने नाम की सार्थकता उन्होंने अपने जीवन में जो भी प्राप्त किया जिससे उनके नाम की सार्थकता का पता चलता है। उनके परिवार जन उन्हें लाड-प्यार से हीरालाल से संबोधित किया करते थे। उन्होंने अपनी आत्मकथा ''नागफणी'' में अपने नाम के इतिहास के बारे में लिखा है कि, ''मेरे बाबा स्व. दुर्गाप्रसाद ने मेरा नाम एक दलित अध्यापक से रुपनारायण लिखवाया था। बाबा कहा करते थे कि यह मेरा राशि नाम का

नाम है। ब्राह्मणों के एक परिवार के मुखिया का नाम पं. रुपनारायण अवस्थी था। जब उनको पता चला कि, मेरा नाम प्राइमरी पाठशाला में ''रुपनारायण'' लिखवाया गया है, तो ब्राह्मणों ने बाबा और दादा को बुलाया और मेरा नाम रुपनारायण कटवाने को कहा और मेरा नाम ''हिरवा'' रखने को कहा। मेरे घरवाले मुझे हीरालाल तो कहने लगे लेकिन मेरे दादा ने मेरा नाम सरकारी रिकॉर्ड से नहीं बदलवाया। रुपनारायण ही रखा। जो आगे चलकर हिंदी दलित साहित्य में बहुचर्चित रहा।

शिक्षा–

समस्त दलित समाज ने डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित होकर शिक्षा को जीवन का महनीय अस्त्र के रुप में स्वीकार किया। उनके विचारों से प्रेरणा लेकर तत्कालिन अभिभावकों ने अपनी संतानों को भरसक शिक्षा देने का प्रयास किया है। जिससे उनके बच्चे शिक्षित ही नहीं उच्चशिक्षित हुए। आगे चलकर वे सरकारी आस्थापनाओं में उच्च पदस्थ अधिकारी बन गए। जिससे उनका स्वयं का और उनके परिवार का और आगे चलकर समाज और देश का विकास हुआ। दलित समाज ने यह जान लिया था कि, शिक्षा से ही अपने परिवार एवं देश का विकास संभव है। इसलिए उन्होंने शिक्षा प्राप्त करना सर्वोपरि लक्ष्य समझा।

उनकी प्राइमरी शिक्षा अपने जन्म ग्राम में हुई। हाईस्कूल की शिक्षा बिंदकी तो इंटर की शिक्षा कानपुर में हुई। वे डॉक्टरी शिक्षा प्राप्त करना चाहते थे लेकिन अथक प्रयासों के बावजूद वे डॉक्टरी शिक्षा प्राप्त नहीं प्राप्त कर सके। वे सरकारी नौकरी करते समय जिलाधिकारी बनना चाहते थे लेकिन वरिष्ठ सवर्ण अधिकारियों के लालफिताशाही के कारण वे जिलाधिकारी नहीं बन सके।

नौकरी–

रुपनारायण सोनकर ने विविध स्थलों पर विविध पदों पर नौकरियॉ की। वे ग्रामीण बैंक में मैनेजर पद पर कार्यरत रहे। रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में उन्होंने ''क्वाइन नोट एक्झामिनर'' पर भी कार्य किया। एल.डी.सी. कार्यालय में भी उन्होंने सुपरिटेंडिग इंजीनियर पर कार्य किया। उन्हें वहाँ पर हीन जाति में जन्म लेने के कारण नौकरी से हाथ धोना पडा।

1.3.2 व्यक्तित्व

रुपनारायण सोनकर व्यक्तित्त्व काफी आकर्षक और सुंदर रहा है। उनका बाह्य रुप के विभिन्न पहलु दिखाई देते हैं, उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. **रंग रुप–**

सोनकर रंग रुप से गोरे रंग के थे। वे सुंदर दिखाई देते थे। उनका चेहरा गोल रहा। सिर के बाल थोडे कानों पर रखे थे। जिन्हें हेअर स्टाईल्स की भाषा में ''बिटल्स'' कट के नाम से जाना जाता था। उनका नाक लंबा रहा, आँखों पर हमेशा वे चश्मा पहना करते हैं। उनका हंसमुख राय चेहरा उनके सुखद तथा खुशहाली वातावरण का परिचय देता था।

2. **वेशभूषा–**

रुपनारायण सोनकर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित व्यक्ति रहे। जिसके कारण उन्होंने जीवन भर डॉ. आंबेडकर की विचारधारा का अनुकरण किया। सोनकर एक सरकारी अधिकारी रहे इसलिए उन्होंने एक सरकारी अधिकारी के पद की गरिमा को कायम बनाने के लिए कोट, सूट, बूट तथा टाई की वेशभूषा में रहना उचित समझा। उनकी पाश्चात्य पध्दति की वेशभूषा रही।

3. **कदकाठी–**

सोनकर अपनी युवावस्था में पहलवान रहें। इसी कारण उनकी कदकाठी सुदृढ रही। वे पहलवान होने कारण अपनी शरीरयष्टी की ओर विशेष ध्यान दिया करते थे। वे हमेशा अभ्यास किया करते थे। बाल्यावस्था से उन्हे कुश्ती के प्रति अपार प्रेम था। जिसके कारण उन्होंने विशेष ध्यान देकर अपने शरीर को सुदृढ, बलवान बनाया। उन्हें देखकर कोई भी बता सकता था कि, वे पहलवान है।

अंतरंग की विशेषताएँ–

1. **सरकारी उच्च पदस्थ अधिकारी–**

सोनकर एक सरकारी उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी रहे हैं। वे देहरादून में पी.एच.सी. में आयुक्त पद पर कार्यरत रहे। कर्मनिष्ठा और कर्तव्यदक्षता का सुंदर संगम उनके व्यक्तित्व में पाया जाता है। जिसके कारण अपने कार्य के प्रति लगनता पाई जाती है। ये गुण उनके सरकारी उच्च पदस्थ अधिकारी की गरिमा को आलोकित करते हैं।

2. **स्वकर्तृत्त्वान तथा स्वाभिमान का अनोखा मिलाफ–**

स्वकर्तृत्त्वता और स्वाभिमान के कारण उनका व्यक्तित्त्व निखर आया है। एक बार रिर्जव बैंक में उन्हें साक्षात्कार के समय उनके एक रिश्तेदार के बारे में सवाल पूछने पर उन्होंने अपने रिश्तेदार के बारे असलियत बताने से इंकार किया। उन्होंने स्वाभिमानी होने के कारण ही अपनी योग्यता को महत्त्व दिया।

3. **अन्याय, अत्याचार के प्रति आक्रोश–**

सोनकर के व्यक्तित्त्व में अन्याय, अत्याचार के प्रति आक्रोश दिखाई देता है। जिसका उन्होंने निडरता से सामना किया है। सोनकर के गॉव के शिवभजन अवस्थी दकियानूसी परंपरा के व्यक्ति है। सोनकर और अवस्थी की मानों जातिय दुश्मनी ही हो। एक मामले अवस्थी गॉव के सब लोगों के सामने सोनकर को माफी मांगने की जिद करते हैं, लेकिन कोई विशेष गलती न होने के कारण माफी मांगने से इनकार कर देते हैं।

किसी व्यक्ति पर अन्याय होते हुए सोनकर को देखा नहीं जाता था। उनके गॉव के हरिशंकर अवस्थी ने भदइया चमार के साथ मार पीट की थी। इस बात पता जब सोनकर को चल जाता है, तब वे अपनी जाति के युवकों का संघटन बनाकर अवस्थी के विरोध में खडा हो जाता है।

किसी व्यक्ति के प्रति आस्था, संवेदनशीलता उनके व्यक्तित्त्व की असाधारण विशेषता कही जाती है।

4. बे–बाकी के साथ विचारों की चिंतनीय अभिव्यक्ति–

बेबाकी के साथ अपने विचारों को चिंतन के स्तर पर अभिव्यक्ति देने वाले विचारकों में सोनकर असाधारण व्यक्ति रहे हैं। उन्होंने सवर्णों के दकियानूसी विचारों का समर्थन करने वाले विचारों पर अपना मत देते हुए ''नागफणी'' आत्मकथा में लिखा – ''जहाँ–जहाँ इस तरह के अखंड पाठ होते है, वहाँसे धार्मिक प्रदूषण वायुमंडल में फैल जाता है। यह प्रदूषण इतना विषैला और कसैला होता है कि, इसकी एक, एक बूँद दलितों की एक–एक पीढी को अपमानित करने के लिए काफी होती है। लेकिन दलितों में भी ऐसे दलित शंकर होते है, जो इस विष पीकर जिन्दा रहते हैं। इस विष को दूसरे दलितों में नहीं फैलने देते हैं। गाँवों में होने वाले इस तरह के अखंड पाठ वास्तव में ब्राह्मण लडकों को धार्मिक बनाने की एक पाठशाला है। समाज में छुआछूत, उँच–नीच कायम रखने की एक ऐसी कोशिश हे जो अनवरत समाज में चलती रहे।'' इस प्रकार उन्होंने अपने विचारों को अभिव्यक्ति किया है।

5. प्रगतिशील दृष्टिकोण–

सोनकर का व्यक्तित्व प्रगतिशीलता का परिचायक है। उन्होंने जो सृजनात्मक लेखन किया है, उसमें प्रस्तुत पक्ष के दर्शन होते है। व समाज में व्याप्त बुराइयों के प्रति हमेशा सजग तथा सचेत दिखाई देते हैं। प्रस्तुत पक्ष का चित्रण उनके द्वारा लिखित ''नागफणी'' आत्मकथा में दिखाई देता है। उन्होंने लिखा है कि,– ''मैं समझता हूॅ कि, त्यौहारों में बुराई को जलाना चाहिए। असमानता, भेदभाव, छुआछूत, जातिवाद को जलती होली में झोंक देना चाहिए।यदि हम ऐसा करते तो मानवता, भाईचारा, प्यार, मोहब्बत, सांप्रदायिक सद्भावना की लपटें आसमान तक उठ सकती और संसार के सामाजिक अंधकार को दूर कर देती। लेकिन त्यौहारों में सामाजिक अंधकार दूर करने की बातें नहीं होती हैं, बल्कि सामाजिक अंधकार फैलान की बात होती हैं।'' इसप्रकार उन्होंने अपना प्रगतिशीलता परिचय दिया है। जो उनके द्वारा लिखित नाटक, कविता, उपन्यास, कहानी साहित्य के साथ अन्य रचनाओं में भी मिलता है।

6. सडी गली मान्यताओं का विरोध–

सोनकर उच्चशिक्षित रहे हैं।वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाने वाले श्रेष्ठ दलित चिंतक हैं। तथागत बुध्द, जोतिबा फुले, छत्रपति शाहु महाराज, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, के विचारों पर चलनेवाले सोनकर भारतीय समाज में सदियों से चलती आई सडी गली मान्यताओं का विरोध करते हुए दिखाई देते है। उनके गाँव में होली के अवसर पर सवर्ण और दलित स्त्रियों को गालियॉ दी जाती थी। उन्होंने इस बात विरोध किया और ग्रामवासियों समझा–बुझाकर सवर्ण दलित स्त्रियों को दी जाने वाली गालियों की प्रथा बंद करने का कार्य किया है।

7. प्रेरणास्त्रोत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर–

सोनकर का जन्म एक सामान्य दलित परिवार में हुआ था।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के चरित्र, संघर्ष तथा उनके कार्यों के द्वारा उन्होंने संघर्ष करने की प्रेरणा प्राप्त की थी। इसके बारे में उन्होंने अपनी आत्मकथा ''नागफणी'' में लिखा है– ''डॉ.आंबेडकर अकेले थे। उन्होंने अकेले ही सारे देश से गैर बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया। उनके तेज के सामने गांधी, जवाहर, की चमक धीमी पउ गई थी। इन लोगों ने भी मानवता के प्रति किए गए डॉ. आंबेडकर के कार्यों को सही माना था। पीडित बहुसंख्यक मानवता के प्रति हमदर्दी रखने वाले विश्व के एकमात्र जननायक आंबेडकर ही थे। यदि वे संघर्ष से डर जाते तो दलित जिस स्थिति में आज है वे कभी न होते।''

सोनकर अपने जीवन में डॉ.आंबेडकर को सर्वोपरि महत्त्व देते थे।

8. अस्पृश्यता, छुआछूत की वेदना का शिकार–

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति और वर्ण व्यवस्था की अपनी अलग मिसाल है। सोनकर का जन्म दलित समाज में हुआ। उन्होंने अपने जीवन में छुआछूत, अस्पृश्यता की वेदना को करीब से भोगा है। मानवनिर्मित वर्ण, जाति व्यवस्था के बर्बर समाज में उन्होंने अपनी वेदना को भोगा है। उनके गॉव में रामायण पाठ पढते समय केवल वे अस्पृश्य जाति के है, इसलिए सवर्ण समाज के लोग उन्हें पाठ पठन करते समय वहाँ से निष्कासित कर देते हैं। इस प्रसंग का उल्लेख उनकी आत्मकथा में चित्रित है। इस प्रसंग को वे जीवन भर नहीं भूल सके।

सोनकर अपने स्कूल से दोपहर का समय, गर्मी के दिन अपने भाई के साथ प्यास लगने पर सवर्ण व्यक्ति के कुअे पर पानी पीने का प्रसंग केवल दलित जाति के है, इसलिए सवर्ण समाज के लोग उनके जान के दुश्मन बन गए थे ा

वर्षा का मौसम, रात्रि का समय, सोनकर अपने भाई के साथ स्कूल से अपने घर वापस आते समय एक सवर्ण व्यक्ति के घर में पनाह मांगने हेतु प्रवेश, सवर्ण व्यक्ति को सोनकर और उनके भाई की जाति का पता नहीं, सोनकर और उनके भाई का भोजन का प्रबंध, परिधान करने के लिए सवर्ण व्यक्ति के कपडे दिए जाते है, लेकिन बातचीत में उनकी हीन, दलित जाति का पता चल जाता है, तब दोनों के साथ मारपीट और घर छोडने के लिए मजबूर कर दिया जाता है।

इस प्रकार सोनकर ने अपने जीवन में केवल दलित जाति में जन्म होने के कारण ही छूआछूत और अस्पृश्यता के दर्दनाक जीवन को भोगा है।

9. तर्कनिष्ठ भाषा का प्रयोग–

सोनकर तर्कनिष्ठ भाषा का प्रयोग करने में सिध्दहस्त माने जाते हैं। इस पक्ष उल्लेख ''नागफणी'' आत्मकथा में प्राप्त हुआ है। उन्हें पी.सी.एस. अलाइड के साक्षात्कार के लिए बुलाया गया था। तब उनसे सवाल पूछा गया कि, ''बनिया शराब पीता है कि नहीं''? तब उन्होंने जो उत्तर दिया थ वह इस प्रकार है– ''बनिया शराब पीता है। शराब बहुत महंगी होती है, बनिया अधिकतर व्यवसाय करते हैं। उनके पास पैसा

होता है। इसलिए महंगी शराब वही खरीद सकते हैं। इसलिए मेरे विचार में बनिया शराब पीता है।'' उन्होंने एल.एल.बी की भी परीक्षा उत्तीर्ण की थी। अतएव उन्हें तर्कपूर्ण भाषा का प्रयोग आना सहज संभव है।

10. **ग्रामीण जीवन में व्याप्त गरीबी संबंधी चिंतन–**

सोनकर का जन्म ग्रामीण भाग में हुआ। ग्रामीण जीवन के साथ उनका अटूट रिश्ता–नाता रहा है। उन्होंने अपनी आत्मकथा ''नागफणी'' में अपने ग्रामीण जीवन से संबंधी गरीबी के बारे में लिखा है– ''देहातों में भयंकर गरीबी है। जिनके पास खेत नहीं है वे दूसरों के खेतों पर मजदूरी करके अपना व अपने परिवार का भरण–पोषण करते हैं। बडी मुश्किल से दो वक्त की रोटी जुटा सकते है।'' (पृ.क्र.70)

इन व्यक्तित्त्व की विशेषताओं के साथ–साथ उनके व्यक्तितत्वों के पहलुओं में मानवतावादी विचार, कुशल संघटक, शिक्षा प्रेमी, राजनीति में रुचि, देशप्रेमी, ग्रामीण जीवन के प्रति लगाव, पौराणिक कथाओं का अगाध ज्ञान, दलित साहित्य के प्रति आस्था, अंग्रेजी भाषा के ज्ञाता, पाश्चात्य साहित्य के प्रति स्नेहपूर्ण अभिनिवेश, कवि के रुप में, मंचीय कवि के रुप में अनुवादक के रुप में, अभिनेता के रुप में अदि ऐसे अनेक आयाम है, जो सोनकर के व्यक्तित्त्व को नए आलोक में खडा कर देते हैं।

1.3.3 कृतित्त्व–

उपन्यास साहित्य–

1. ''डंक''– वर्ष, 2009.
2. ''सूअरदान'' वर्ष, 2010.

कहानी साहित्य–

1. ''जहरीली जडें''– वर्ष, 2005.
2. ''कफन''– वर्ष, 2008
3. ''सद्‌गति''– वर्ष, 2009.
4. ''होली का बल्ला तरे–तरे'' वर्ष, 2006.

नाटक साहित्य–

1. ''एक दलित डिप्टी कलेक्टर''– वर्ष, 2002.
2. ''छायावती''– वर्ष, 2003.
3. ''महानायक''– वर्ष, 2003.
4. ''रहस्य''– वर्ष, 2000.

5. ''समाजद्रोही''- वर्ष,2007.

3. **आत्मकथा–**

1. ''नागफणी'' - वर्ष, 2007.

4. **काव्य संग्रह–**

1. ''खूबसूरत परियों का गलबहियॉ डान्स''- वर्ष, 1997.

2. ''यदि गीदड नेता होता'' - वर्ष, 1997.

मान–सम्मान तथा पुरस्कार–

रुपनारायण सोनकर को किसी भी प्रकार के मान, सम्मान, और उपाधियों की आकांक्षा नहीं थी। असलियत तो यह थी कि, उपाधियॉ, पद–सम्मान, तथा पुरस्कार उनको दिए जाने पर अपने भाग्य की सराहना मानते थे। अब तक उन्हें प्राप्त निम्नलिखित उपाधियॉ, पद, सम्मान और पुरस्कार इस प्रकार प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

1. ''गौरव भारती'' उत्तराखंड सरकार, वर्ष, 1997.
2. ''हिंदी गौरव'' उत्तर प्रदेश सरकार, वर्ष, 1999.
3. डॉ.आंबेडकर विशिष्ट सम्मान–दिल्ली सरकार, वर्ष, 1999.
4. साहित्य महोपाध्याय (डी.लिट्) उत्तराखंड सरकार, वर्ष, 2001.
5. नाट्यरत्न- उत्तराखंड सरकार, वर्ष, 2004.
5. डॉ.बाबासाहेब विशिष्ट उत्तराखंड सम्मान वर्ष, 2005.

इस प्रकार रुपनारायण सोनकर का व्यक्तित्व तथा कृतित्व का परिचय दिया गया है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

अ. निम्नलिखित वाक्यों में दिए गए पर्यायों मे से उचित पर्याय चुनकर वाक्य फिरसे लिखिए।

1. दलित साहित्य की जन्मभूमि........... रही है।

   अ. महाराष्ट्र ब. कर्नाटक क. केरल ड. दिल्ली

2. दलित साहित्य का जन्म.............भाषा में हुआ है।

   अ. हिंदी ब. अंग्रेजी क. जापनी ड. मराठी.

3. रुपनारायण सोनकर का जन्म,............. हुआ है।

   अ. 4 अप्रैल सन् 1962 ई. ब. 4 मई 1963

   क. 10 मई 1966 ड. 7 मई 1962.

4. सोनकर के जन्म ग्राम का नाम......... है।

अ. नयनग्राम   ब नसेनियाँ   क. नयनलहर   ड. नयना नगर

5. सोनकर का घरेलु नाम....... था ।

अ. राम   ब. हीरा   क. सोनु   ड.चिंतामणी

उचित मिलान कीजिए।

1. राजाराम	अ) आयकर अधिकारी
2. अजय	ब) सहायक चीनी आयुक्त.
3. रुपनारायण सोनकर	क) ट्रॅक्टर ड्राइव्हर.
4. हफीज मिया	ड) अलाइड अफसर.

उत्तर–

1.–ब,   2.–अ,   3.–ड   4.–क

3. निम्नलिखित वाक्य अवधारणाओं की सही गलत पहचान करें।

   1. रुपनारायण सोनकर का जन्म एक सामान्य दलित परिवार में हुआ, केवल शिक्षा के माध्यम से ही उन्होंने अपने जीवन यश प्राप्ति की थी।
   2. सोनकर को बचपन में क्रिकेट खेलने का शौक था, आगे चलकर वे कुश्ती में प्रवीण बन गए।
   3. सोनकर ने समाज में धर्म और त्यौहारों के नाम पर होने वाले शोषण का विरोध किया, स्त्रियों के नाम पर होने वाले अत्याचार का विरोध सामूहिक रुप से उन्होंने किया था।

उत्तर–

1. एक सही दूसरा भी सही।
2. एक गलत दूसरा सही।
3. एक सही और दूसरा भी सही।

1.5 पारिभाषिक शब्दार्थ–

1. खटिक- दलित जाति जो बकरे, भेडी को काटने का कार्य उदरनिर्वाह हेतु करते हैं।
2. हिटलर- जर्मन देश का राजनेता.
3. अभिमन्यु- महाभारत कालीन पात्र.
4. तुलसीदास- भक्तिकालीन रामकवि.
5. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर-स्वतंत्र भारत के संविधान निर्माता.

6. संत रविदास- मध्यकालीन दलित संत.
7. संत कबीर- मध्यकालीन निर्गुण संत कवि.
8. व्याघ ऋषि- खटिक जाति के महापुरुष.
9. द्रोणाचार्य- महाभारत कालीन पात्र.
10. श्रीकृष्ण- महाभारत कालीन प्रमुख पात्र.
11. रैदास- मध्यकालीन दलित संत.
12. पीपा- मध्यकालीन दलित संत.
13. श्रीराम-रामायण कालीन प्रमुख पात्र.
14. बालि- रामायण कालीन वंचित पात्र.
15. सुग्रीव -रामायण कालीन पात्र.
16. रावण- रामायण कालीन प्रमुख पात्र.
17. एकलव्य- महाभारत कालीन उपेक्षित पात्र.
18. विलियम वर्डस्ववर्थ- अंग्रेजी साहित्यकार.
19. सोहनलाल द्विवेदी- हिंदी साहित्यकार.
20. विश्वनाथ प्रताप सिंग- पूर्व प्रधान मंत्री भारत सरकार.
21. डॉन क्विकजौट- अंग्रेजी साहित्यकार
22. टिडडीयों का झुंड-फसल को हानि पहुंचाने वाली कीटक जाति.
23. ब्लैक लिटरेचर- निग्रो साहित्य.
24. झउआ-बडे टोकरे (मोठया बुट्ट्या)
25. दंगल - कुश्ती का मैदान जहॉ पर उसकी प्रतियोगिता होती है।

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. महाराष्ट्र   2. मराठी   3. 4, अप्रैल सन् 1962 ई.

4. नसेनियाँ   5. हीरा.

1.7 सारांश-

1. रुपनारायण सोनकर हिंदी दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर रहे हैं।
2. नसेनियॉ में उनका जन्म एक सामान्य दलित खटिक जाति में हुआ।
3. उनका व्यक्तित्व बहुमुखी रहा है।

4. छात्र जीवन से परिश्रम, लगन और संघर्ष करने की प्रेरणा उनके जीवन का आधार रही है।
5. संवेदनशीलता, और सतत रुपसे कार्य करने की प्रेरणा ने काव्य, एकांकी, नाटक, आत्मकथा इन विधाओं में हिंदी दलित साहित्य में अपना अलग स्थान रहा है।

1.8 स्वाध्याय

1. रुपनारायण सोनकर के व्यक्तित्व को स्पष्ट कीजिए।
2. रुपनारायण सोनकर के कृतितत्व का संक्षेप में परिचय दीजिए।
3. रुपनारायण सोनकर का जीवन परिचय संक्षेप में लिखिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य–

1. दलित साहित्य के प्रेरणास्त्रोत डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन संबंधी जानकारी प्राप्त करने हेतु निबंध लिखिए।
2. अपने परिसर में दलित बस्तियों में जाकर दलित जीवन के प्रसंगों का शब्दबद्ध करने की कोशिश कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. ओमप्रकाश वाल्मीकि - जूठन भाग 1 व 2.
2. दया पवार - बलुतं.
3. मोहनदास नैमिशराय - अपने अपने पिंजरे भाग 1 व 2
4. डॉ. कौसल्या बैसंत्री - दोहरा अभिशाप

❑❑❑

इकाई –2
''नागफणी'' वस्तुवर्णन एवं शीर्षक की सार्थकता

अनुक्रम –

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवेचन

2.3.1 ''नागफणी'' : वस्तु वर्णन

2.3.2 शीर्षक की सार्थकता

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.6 स्वाध्याय

2.7 क्षेत्रीय कार्य

2.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. रुपनारायण सोनकर लिखित ''नागफणी'' आत्मकथा की वस्तुवर्णन से परिचित हो जाऐंगे।
2. सोनकर लिखित ''नागफणी'' आत्मकथा की शीर्षक की सार्थकता से परिचित हो जाऐंगे।

2.2 प्रस्तावना :

''नागफणी'' रुपनारायण सोनकर लिखित बहुचर्चित दलित आत्मकथा है। जिसका प्रकाशन सन् 2007 ई. में शिल्पायन, नई दिल्ली से हुआ है। प्रस्तुत आत्मकथा के कुछ भाग ''हंस'' पत्रिका में प्रकाशित हो चुके थे। तब उसे काफी लोकप्रियता प्राप्त हो चुकी थी। पाठकों और हंस के संपादक महोदय के अनुरोध पर सोनकर ने प्रस्तुत आत्मकथा को प्रकाशित करने का निर्णय लिया था। प्रस्तुत आत्मकथा 56 उपशीर्षकों और १४२ पृष्ठों में विभाजित है। प्रस्तुत आत्मकथा की ''भूमिका'' में कालीचरण स्नेही ने प्रस्तुत आत्मकथा की प्रशंसा की है। अपनी बात में सोनकर ने हिंदी दलित आत्मकथा साहित्य का आधारस्तंभ मराठी दलित आत्मकथा को सहर्ष स्वीकार किया है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि, हिंदी दलित आत्मकथाओं का भाव और शिल्प पक्ष का आस्वाद स्वतंत्र है। उन्होंने हिंदी की प्रमुख दलित आत्मकथाओं की लेखक की विशेषताएँ तथा कथ्य का विवरण ऐतिहासिकता के परिप्रेक्ष्य में उजागर किया है। प्रस्तुत आत्मकथा की

भूमिका में प्रो. कालीचरण स्नेही ने विवेच्य आत्मकथा ने कुरुप धार्मिक व्यवस्था को तहस-नहस कर दिया है। यह बात प्रतिपादित की है। नागफणी कुप-मंडूक परंपराओं बाहर निकालने का रास्ता है। सोनकर को प्रो.डॉ. अजय नावरिया ने नागफणी लेखन के लिए प्रोत्साहित किया था। हंस के संपादक डॉ. राजेंद्र यादव ने उनका हौसला बढाया था। उन्होंने भी नागफणी की प्रसंशा की है। उन्होंने नागफणी को ''सायलेंट रेव्युलेशन'' की श्रेणी में रखा है। उनका मानना है कि, नागफणी दलितों में क्रांति पैदा करती है।

2.3 विषय विवेचन

रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित नागफणी आत्मकथा समस्त भारतीय दलित जीवन का प्रतिनिधित्त्व करनेवाली बहुचर्चित आत्मकथा है। हाशिए पर रहनेवाले समाज मन की व्यथाओं को बेबाकी के साथ प्रस्तुत किया है। लेखक ने प्रस्तुत आत्मकथा के कथावस्तु के माध्यम से समस्त भारतीय दलित और सवर्ण समाज की मानसिकता को यथार्थ धरातल पर रखने की कोशिश की है। जिसके माध्यम से लेखक ने भारतीय दलितों की दबी, कुछली मानसिकता को चित्रित किया है। सवर्ण समाज की मानसिकता को जिस ढंग से प्रस्तुत किया है, जिसके माध्यम से अंदाजा लगाया जा सकता है कि, सदियों सवर्ण मानसिकता वाले समाज ने दलितों पर अन्याय, अत्याचार किए है। जिसे सहते हुए दलित समाज की कई पीढियॉ चल बसी। लेकिन उन्होंने आपने आप में संगठित होकर सवर्ण मानसिकता के विरोध में लडने की कोशिश नहीं की। इस पक्ष पर विचार करते समय निम्मलिखित आयामों के आधार पर प्रस्तुत किया जा सकता है।

1. सामाजिक पक्ष-

प्रस्तुत आत्मकथा का सामाजिक पक्ष बडी प्रबलता के साथ प्रस्तुत किया है। भारत को संविधान 26 दिसंबर, 1949 ई.का कार्यान्वयन हुआ है। यथार्थ में भारतीय संविधान ने भारतीय दलित समाज को एक नई दिशा प्रदान की है। इस पक्ष का दर्शन विवेच्य आत्मकथा में दिखाई देता है। रुपनारायण सोनकर का जन्म डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के महापरिनिर्वाण के पाँच साल के बाद हुआ है। फलस्वरुप डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा चलाए गए आंदोलन का एक गवाह लेखक के माध्यम से प्रस्तुत आत्मकथा में देखने को मिलता है। डॉ.आंबेडकर द्वारा चलाए गए शिक्षित बनो, संघठित बनो और संघर्ष करो का जो नारा दिया था। उसमें अपनी ओर से योग देने का सुअवसर लेखक को प्राप्त हुआ है। इस पक्ष का चित्रण प्रस्तुत आत्मकथा में मिलता है। लेखक के परिवार में शिक्षा का अनुपात प्राय: न के बराबर है। बावजूद इसके लेखक के पिता प्रगतिशील विचारों के संवाहक है, जिन्होंने अपने परिवार की ओर विशेष ध्यान देकर अपने परिवार का विकास करने का मानों सौंगध ली हो ।लेखक के पिता अपने सभी बच्चों को स्कूल में दाखिल करते हैं और वे शिक्षा क्षेत्र में कैसे अग्रेसर हो इस दृष्टि से प्रयासशील रहते है। मूलत: लेखक के पिता डॉ.बाबासाहेब के विचारों के संवाहक है। इसी कारण उन्होंने शिक्षा का प्रचार-प्रसार करने हेतु अपने परिवार को चुना इस आंबेडकरी आंदोलन का ही परिपाक कहा जा सकता है। जिसका का आगे चलकर रुपनारायण सोनकर ने भी दलित बस्तियों में जाकर शिक्षा के चक्र को गति देने का प्रयास किया है, जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई ऐसा कहना उचित होगा।

दलित समाज में अशिक्षा के कारण पनपने वाली समस्याओं के प्रति लेखक काफी सजग दिखाई देते हैं। दलित समाज की अंधविश्वासी मानसिकता पर कोडे बरसाने का कार्य प्रस्तुत आत्मकथा में दिखाई देता है। विवेच्य आत्मकथा में कुडहा माई के मंदिर में परंपरागत रुप से धर्म का आधार लेकर दलितों को अपनी धार्मिक रीतिरिवाजों में जानबुझकर सामिल नहीं होने दिया जाता। फिर भी एक आनंद पर्व में भाग लेने के बहाने

सवर्ण समाज के दबंग प्रवृत्ति के लोग दलित समाज की स्त्रियों की अपनी भोगने की वस्तु मानते हैं। इस पक्ष का भी चित्रण विवेच्य आत्मकथा में दिखाई देता है। सवर्ण समाज के पुरुषों की दासी के रुप में स्त्रियों को भोगने की मानसिकता पर प्रहार करने का कार्य विवेच्य आत्मकथा में पाया जाता है।

प्रस्तुत आत्मकथा में दलित बनाम सवर्ण समाज व्यवस्था की दीवार मजबूत दिखाई देती है। सवर्ण समाज व्यवस्था के पास जमीन–जायदाद की कोई कमी नहीं है। इसी कारण इस वर्ग का आर्थिक स्तर उन्नत दिखाई देता है। जिसके फलस्वरुप इस वर्ग के पास सभी प्रकार की भौतिक सुविधाएँ दिखाई देती है। जबकि इसके विपरीत दलित समाज के पास किसी भी प्रकार की जमीन–जायदाद के नाम पर कोई भी सुविधाएँ नहीं है। इसी कारण समस्त दलित वर्ग को सवर्ण समाज व्यवस्था के टुकडों पर पलना तिं है। भारतीय समाज व्यवस्था ने जानबुझकर दलित समाज को हाशिए पर रखा है। सार्वजनिक वितरण व्यवस्था के अंतर्गत किसी भी प्रकार की जायदाद उन्हें नहीं दी गई है।इस पक्ष का भी चित्रण विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत दिखाई देता है। विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत आने वाले सवर्ण समाज के पास हजारों बीघे जमीन के स्वामित्त्व का उल्लेख मिलता है। उनके खेत–खलिहानों पर दलितों को मेहनत, मजदूरी की बात तो दूर उन्हें जीवनभर सवर्णो के खेतों पर बेगारी करनी पडती है। गॉव के सवर्ण समाज के लोग जानबुझकर दलित लोगों की नाकाबंदी करने हेतु उन्हें अपने खेतों पर जाने के लिए प्रतिबंधित कर देते हैं। ऐसी स्थिति स्वाभिमानी दलित लोगों के समाने दोहरा संकट खडा हो जाता है। उनके पास अच्छी खासी जमीन नहीं है। जिस पर वे अपना उदरनिर्वाह कर सकेंगे। दलित समाज ने अपना उदरनिर्वाह चलाने हेतु गाय, भैस आदि जानवरों का भी संगोपन किया है। सवर्ण समाज व्यवस्था ने दलित समाज को अपने खेतों पर प्रवेशित प्रतिबंधित किया ा तब वे स्वयं अपने बच्चों के साथ भूखे प्यासे रहने लगो तो दूसरी ओर उनके गाय, भैसों की स्थिति भी दयनीय हो गयी थी।

दलित समाज के साथ सदियों से सवर्ण समाज हमेशा कडा रुख अपनाता नजर आता है। यहाँ तक उन्हें जबरदस्ती से बंदी बनाकर उन्हें दास्यत्त्व का शिकार बनना तिं है। विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत आनेवाल पात्र भदइया चमार पात्र के माध्यम के से लेखक ने प्रस्तुत प्रसंग पर प्रकाश डाला है। प्रस्तुत आत्मकथा में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर के द्वारा दिए गए संघठित बनकर संघर्ष करने विचार को दलित समाज ने अपने जीवन का आधार कैसे बनाया है इस पक्ष का चित्रण समस्त दलित समाज संघठित होकर संघर्ष करने के लिए लेखक के नेतृत्त्व में एक होकर आंदोलन चलाते है, इसमें उन्हें सफलता मिल जाती है। इस पक्ष के माध्यम से लेखक ने दलित समाज के समाने सवर्ण व्यवस्था के विरोध में दलित समाज संघठित होकर लडना चाहता है, तो उन्हे इसमें सफलता मिल जाती है। इस पक्ष रेखांकित किया गया है। आगे

चलकर इस बात का भी उल्लेख विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत भी मिलता है कि, दलित समाज की बहु-बेटियों के साथ सवर्ण समाज के लोग उनका लैंगिक शोषण करने पर भी उतरते है। विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत इस पक्ष का भी उल्लेख मिलता है।

विवेच्य आत्मकथा में सवर्ण समाज द्वारा दलितों की बहु-बेटियों पर दिन-दहाडे अन्याय अत्याचार की परंपरा का उल्लेख मिलता है। इसी बहाने लेखक ने समस्त भारतवर्ष के अंतर्गत पाईजाने वाली सवर्ण समाज बनाम दलित शोषण के तीव्र चक्र को प्रस्तुत किया है। यहाँ पर लेखक का गाँव केवल प्रातिनिधिक रुप में हमारे सामने आता है, संपूर्ण भारत के अंतर्गत यही माहौल पाया जाता है। आज भारत विश्वगुरु बनने का स्वप्न देख रहा है, क्या सही मायने में अपने देशवासियों पर दिन-दहाडे अत्याचार करने के बाद उन पर अमानवीय अत्याचार करना कहाँ तक उचित है।

इसी बहाने लेखक ने अत्याचार, अन्याय मुक्त समाज की स्थापना की मांग की है। जो आज वैश्विक युग में अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है।

भारतीय समाज व्यवस्था में व्यक्ति की योग्यता नहीं केवल जाति देखी जाती है। इसपर अच्छी तरह से प्रकार डालने वाले कई प्रसंगों की निर्मिति हुई है। बचपन सें लेखक को पहलवानी का शौक था। उनके गाँव के आस-पास कुश्ती के दंगल लगते थे, तब लेखक इस दंगल में भाग लेता था। इस खेल में वे सवर्ण पहलवान के साथ भीड जाने पर उनकी इसमें जीत होने पर गाँव से सवर्ण जाति के लोग लेखक के जाति के लोगों को लेखक इस दॉव में उसकी जीत हो गई इस आनंद उत्सव मनाने से रोक देते थे।

विवेच्य आत्मकथा के कई प्रसंग भारतीय समाज व्यवस्था की दाहक दकियानूसी जाति व्यवस्था के दर्शन करवाते हैं। लेखक और उसका भाई स्कूल छात्रावास से अपने घर छूटटी मनाने हेतु अपने गाँव वर्षा मौसम में आ रहे थे। तब एक सवर्ण व्यक्ति घर पर पनाह माँगने हेतु चले जाते है, तब उस सवर्ण व्यक्ति को लेखक और उसके भाई की जाति का पता नहीं था। जब बातचीत में उस सवर्ण व्यक्ति को लेखक की दलित जाति का पता चल जाता है, तब उस सवर्ण व्यक्ति उनके पहनने के लिए दिए हुए कपडे वापस लेकर उनकी बुरी तरह से पिटाई करता है।

दलितों को सवर्ण व्यक्ति के कुएँ पर पानी पीना भी प्रतिबंधित होता है, लेखक अपने जन्मग्राम बिंदकी से नसेनियां जा रहे थे। तब लेखक को प्यास लगती है, तब लेखक सवर्ण व्यक्ति के कुए पर जाकर बाल्टी से पानी पीकर अपनी प्यास बुझाने का प्रयास करता है, लेकिन इस बात का पता जब कुएँ के सवर्ण मालिक को लग जाता है, तब लेखक की बुरी तरह से पीटाई हो जाती है। कैसी यह भारतीय समाज व्यवस्था है, जो गाय, भैस बकरी जैसे जानवर नदी, कुएँ पर जाकर पानी पी सकते है, लेकिन सदियों से हाशिए पर रहनेवाले दलित समाज के लोग पानी नहीं पी सकते। इसे धार्मिकता का जामा पहनाकर धर्म भ्रष्टता का डर दिखाकर तमाम सवर्ण समाज को अपने कब्जे में रखने का काम सनातनी धर्म व्यवस्था ने बडी चालाकी के साथ किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में सवर्ण जाति के सामने दलित जाति के लोगों का जीना हराम का जीना रहा है।दलित लोग अपने ऑगन में अपनी चारपाई पर नहीं बैठ सकते इसका कारण केवल चारपाई पर बैठने का अधिकार केवल सवर्ण लोगों को बपौती के रुप में उन्हें प्राप्त हुआ हो। विवेच्य आत्मकथा का पात्र शिवभजन अवस्थी को लेखक अपने रिश्तेदारों के साथ अपने ऑगन में अपनी चारपाई पर बैठे है, यह बात अवस्थी को रास नहीं आती। इसका कारण केवल लेखक दलित जाति का है।

शिवभजन अवस्थी और लेखक की मानों जातिय दुश्मनी ही हो। एक प्रसंग के बहाने अवस्थी लेखक पर जानलेवा हमला करता है। वह केवल लेखक दलित होने के कारण अपनी माफी मांगे इस बात को लेकर अडिग रहता है।

विवेच्य आत्मकथा में कई ऐसे पक्षों का चित्रण हुआ है, जो दलित लागों की आपसी एकता के नारे को बुलंद करवाती है। गाँव के सवर्ण लोग दलितों को अपने खेतों पर जाने के लिए प्रतिबंधित करवाते तब गॉव समस्त दलित समाज डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दिए गए स्वाभिमान बनो इस विचार से प्रेरणा लेकर संघठित होकर सवर्ण समाज के साथ लोहा लेने का कार्य करते हैं।

प्रस्तुत आत्मकथा दलित साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण रचना है, लेकिन लेखक ने प्रस्तुत आत्मकथा में सवर्ण समाज की स्त्रियों के शोषण पर भी गंभीर चिंता प्रकट की है। विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत आनेवाला प्रतिनायक हरिशंकर अवस्थी अपनी पत्नी पर अमानवीय अत्याचार करता है, जिसे पढने के बाद पाठक अपनी प्रतिक्रियॉ जबरदस्त रुप से प्रकट करते है। यहाँ तक हरिशंकर अवस्थी अपनी सगी बहनों पर भी निर्ममता से अत्याचार करता हुआ दिखाई देता है।

विवेच्य आत्मकथा में चित्रित ब्राह्मण जाति की लडकियों का रातों-रात घर से गायब होने का जिक्र स्त्रियों के बारे में लेखक का मानवीय दृष्टिकोन स्पष्ट करता है।

इंद्रजित सिंह के माध्यम से लेखक ने भारतीय समाज व्यवस्था से जरामय पेशा लोगों की बढती हुई संख्या के प्रति चिंता प्रकट की है।

लखनसिंह जैसे चरित्र के माध्यम से लेखक ने बलात्कारी व्यक्ति को कानून हाथ में लेकर उसकी हत्या करवाते है। इसी बहाने समाज उस पर होनेवाले अन्याय, अत्याचार के विरोध में संघठित होकर कानून हाथ में लेकर लोग समाज व्यवस्था को ठीक करने का मानों बीडा उठाते हुए दिखाई देने लगे है।

विवेच्य आत्मकथा में जातिवाद की जडें काफी गइराई तक पहुंची हुई दिखाई देती है। लेखक के दो सगे भाई पढे लिखे, उच्चशिक्षित है। लेकिन लेखक के गाँव में उनकी पहचान उनकी हीन जाति से है, बल्कि उनकी उच्च शिक्षा और उन्हे प्राप्त सरकारी नौकरी पद से नहीं है।

2. **धार्मिक पक्ष-**

विवेच्य आत्मकथा के मूल में सनातनी हिंदू धर्म का बीज दिखाई देता है। प्रस्तुत आत्मकथा में चित्रित गाँव समस्त भारत के गॉवों का प्रातिनिधिक रुप में विवेच्य आत्मकथा में दिखाई देता है। ब्राह्मण जाति के

साथ-साथ अन्य जातियों के साथ दलित जातियों के लोग भी इस गॉव में निवास कर रहे हैं। लेकिन परंपरागत रुपसे धार्मिक व्यवस्था को मजबूत करने का कार्य गॉव के उपरी जाति के लोग यहाँ पर करते हुए दिखाई देते हैं। ब्राह्मण वर्ग के हाथों में धार्मिकता की मदार दिखाई देती है। जिसके कारण वे लोग अपने हाथों से किसी भी प्रकार की श्रेष्ठ धार्मिकता की कगार पर हमला नहीं होने देते। ऐसी स्थिति में वे लोग धर्म को अपनी बपौती मानते हुए दिखाई देते है। प्रस्तुत आत्मकथा के प्रारंभ कुडहा माई के मंदिर में ज्वारों का मेला लगता है, तब केवल सवर्ण जाति की महिलाएॅ इसमें अपना सहयोग देती है। आपस में बंधुता और भाईचारा के परिप्रेक्ष्य में गाँव की दलित महिलाएॅ इस धार्मिक मेले में धार्मिक अधिकार बहाने अपना सहयोग देती है, भाग लेती है, तब तथाकथित धर्म के ठेकेदार दलित महिलाओं को इसमें भाग लेने से प्रतिबंधित करती है। उन्हें हीन मान कर प्रताडित करके अपमानित करती है। ऐसी स्थिति में गॉव की दलित महिलाएॅ अपनी हीन जाति को भूलकर धार्मिक उत्सव में भाग लेकर आनंद लेने का कार्य करती है, लेकिन उन्हें प्रतिबंधित किया जाता है। प्रस्तुत आत्मकथा के अंतर्गत कही ऐसे प्रसंगों की अवतारणा दिखाई देती है कि, जिसमें दलित लोग केवल हिंदू धर्म के संरक्षक हो, लेकिन उन्हे किसी भी प्रकार से हिंदू धर्म के रीति-रिवाज, विधि संस्कारों में सहभाग लेने के लिए प्रतिबंधित रखा गया हो। लेखक के गाँव में एक मंदिर है, जिस मंदिर की मरम्मत करने का कार्य जारी है, ऐसी स्थिति में मंदिर की पुताई करने के लिए रस्सी के सहारे लेखक को मंदिर के कलश पर चढाया जाता है, कैसी यह विडंबना है कि, मंदिर में दलित होने के कारण प्रवेश प्रतिबंधित मात्र मंदिर की साफ-सफाई, मरम्मत करने के लिए सबसे आगे दलित।

एक बार लेखक के नसेनियॉ गाँव में अखंड रामायण का पाठ आयोजित किया गया था ।तब लेखक अनजाने में इस पाठ पठन अभियान में श्शामिल हो जाता है। लेकिन लेखक का पारंपरिक दुश्मन शिवभजन अवस्थी को जब इस बात का पता लगता है कि, दलित सोनकर पाठ पठन अभियान में योग दे रहा है, तब उसे लगता है कि, सोनकर ने अपना धर्म भ्रष्ट किया है। तब लेखक के साथ गाली गलौज होती है, उनके साथ मार-पीठ हो जाती है।

विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत धर्म के नाम पर दलित स्त्रियों के होने वाले श्शोषण के प्रति लेखक का आक्रोश दिखाई देता है। लेखक के गाँव में विविध धार्मिक कार्यक्रमें का आयोजन किया जाता है। इसी समय सभी जाति के लोग धार्मिकता की दीवार को भूलकर धार्मिक आस्था, विश्वास का आनंद लेते है। लेकिन सवर्ण जाति के लोग परंपरागत रुप से दलित स्त्रियों को भददी-भददी गालियॉ देते हैं। यह बात बलशाली भारत के माथे का कलंक माना जाता है।

प्रस्तुत आत्मकथ में रामायण और महाभारत कालीन पात्रों के संदर्भ आए है। जिसके माध्यम से लेखक का ऐतिहासिक, पौराणिक ज्ञान के भांडार का पता चलता है। एकलव्य जैसे उपेक्षित, अलक्षित पात्रों का जिक्र प्रस्तुत आत्मकथा में मिलता है।

3. **आर्थिक पक्ष–**

अर्थ जीवन की महत्त्वपूर्ण इकाई है। धर्म का आधार लेकर जमीन–जायदाद के बंटवारे में सवर्ण समाज व्यवस्थ बलशाली बन गई है। दलित समाज को अन्य सभी वर्ग के लोगों की केवल सेवा करनी है, यह विचार उनके सामने रखकर उन्हें आर्थिक दृष्टि से विकलांग रखा गया है। विवेच्य आत्मकथा में चित्रित हरिशंकर अवस्थी, शिवभजन अवस्थी, शिवदत्त मिश्रा और उरेरी मिश्रा दलितों का आर्थिक शोषण करने पर तुले हुए है। वे कोई न कोई बहाना बनाकर दलितों का आर्थिक शोषण करते हैं। लेखक के दादा ने शिवदत्त मिश्रा से डेढ पसेरी धान उधार लिया था। तब सही समय पर धान वापस न करने पर दुगने–तिगुने दाम से धान वसुल करते हैं। यह बात आर्थिक श्शोषण के दायरे के अंतर्गत आता है। डेढ पसेरी धान के बदले में पंद्रह मन धान वसूल करने का गुंडाई फर्मान निकाल जाता है, वे वसूल करवाते हैं। भारत के ग्रामीण भागों में इस प्रकार का कुचक्र आज भी जारी रहा हैं।

लेखक ने प्रस्तुत आत्मकथा में हफीज मियाँ के प्रसंग के माध्यम से आर्थिक कंजूसी के पक्ष पर प्रकाश डाला है। पैसा उसके पास है, उसने एक नया ट्रैक्टर खरीदा है, उसे नगर से घर लाते समय केवल ड्राइवर को पैसे देने पडेंगे इसी विचार स्वयं ट्रैक्टर चलाने का ज्ञान न होते हुए वह नगर से घर लाते समय रास्ते में गिर जाता है।

दलित लोग आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनने पर नई संस्थाओं का निर्माण करवाते इस बात पर प्रकाश डाला है।

4. **शैक्षिक पक्ष–**

भारतीय समाज व्यवस्था में शैक्षिक व्यवस्था का अपना अलग महत्त्व रहा है। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने शिक्षा को सर्वोपरि महत्त्व दिया था। उनका मानना था कि, शिक्षा व्यक्ति तथा समाज, राष्ट्र को विकासशील तथा उन्नत बनाती है। भारतीय समाज में संविधान के कार्यान्वयन से दलित समाज में आमूलाग्र परिवर्तन हुआ है।

लेखक का परिवार दलित होते हुए उनके भाई उच्चशिक्षित और उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी के रुप में कार्यरत दिखाई देते हैं। लेकिन उनका ज्ञान नहीं देखा जाता केवल उनकी हीन जाति देखी जाती है। यह भारत के समस्त देहातों में भी पाया जाता है।

सोनकर अपने आप को आंबेडकरी आंदोलन का कार्यकर्ता के रुप में घोषित करते हैं। इसी आंदोलन में योग देने हेतु सोनकर दलित बस्तियों में जाकर बच्चों मे विनावेतन पढाई हेतु बच्चों को शिक्षा दिलाने का प्रयास करते हैं।

लेखक ने प्रस्तुत प्रसंग के माध्यम से शिक्षा दलित समाज के लिए उपयोगी और महत्त्वपूर्ण है इस बात पर प्रकाश डाला है।

5. **राजनीतिक पक्ष**

राजनीति यह ऐसा एक घटक है, जिससे समाज का प्रत्येक घटक प्रभावित रह जाता है। भला ऐसी स्थिति में दलित साहित्य इससे कैसे दूर रह सकता है?

विवेच्य आत्मकथा के प्रारंभ राजनीति पक्ष का प्राय: न के बराबर हुआ है। स्वाधीनता पूर्व कालखंड में दलितों का राजनीति का क्षेत्र प्रतिबंधित रहा था। लेकिन भारतीय संविधान ने दलितों को आरक्षण के माध्यम से राजनीति क्षेत्र में प्रवेश दिया।

विवेच्य आत्मकथा के उत्तरार्ध में लेखक ने अपनी साहित्यिक रचनाओं के विमोचन और अन्य प्रसंग के बहाने वी.पी.सिंग जैसी भारतीय राजनेताओं का चित्रण प्रस्तुत किया है।

अन्य पक्षों की तुलना में विवेच्य आत्मकथा में राजनीतिक पक्ष का चित्रण अल्पमात्रा में हुआ है।

निष्कर्ष के रुप में कहा जा सकता है कि, विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक, और आर्थिक पक्ष और राजनीतिक पक्ष को प्रभावी रुप में चित्रित किया है।

2.3.1 वस्तुवर्णन

लेखक के गाँव में कुडहा माई का मंदिर है। इस गाँव में ज्वारों का मेला लगता है। इस गॉव में ठाकुर, ब्राह्मण, यादव, दलित आदि जाति के लोग रहते हैं। सवर्ण महिलाओं के त्यौहार का वर्णन है। दलित जाति के लोग अनपढ, अज्ञानी होने के कारण अंधविश्वासी अधिक नजर आते हैं। दलित जाति के लोग अपने गालों के आर-पार कील भोंक देते हैं। सुक्खी बाबा मंत्र पढते हैं। ग्रामवासियों में विश्वास है कि, दलित लोग अपने गालों पर कील भोंकने पर उनकी मनोकामना पूरी होती है। भारतीय ग्रामीण भागों में देवी-देवताओं के नाम पर अंधविश्वास का जन्म किस प्रकार होता है, इस बात अच्छा उदाहरण प्रस्तुत प्रसंग को लिया जा सकता है। इस बात समर्थन गॉव सभी सवर्णजन करते हैं। इसी मेले में सवर्ण महिला वर्ग जौं के पौधे का कलश अपने-अपने सिरपर लेकर जा रही है। ऐसी स्थिति में दलित जाति की महिलाओं के लिए अपने सिर पर सवर्ण महिलाओं की भांति जौं के पौधे का कलश नहीं ले सकती। इसी समय लेखक की भाभी अपने सिर पर जौं के पौधे का कलश लेकर सवर्ण महिलाओं में शामिल हो जाती है। तब सवर्ण महिला संग्ठित होकर लेखक की भाभी का सिर पर उठाया गया जौ का पौध सिर से उतारने के लिए मजबूर कर देती हैं। वहॉ पर सवर्ण-दलित ऐसा संघर्ष खडा हो जाता है। गाँव के समस्त दलित लोगों को लगता है कि, हम स्वतंत्र भारत के नागरिक है। हमें समता का अधिकार प्राप्त हुआ हैं। उसके समर्थन में खुशी का परिवेश निर्माण हो जाता है। गाँव में होली के अवसर पर त्यौहार मनाया जा रहा है। कुडहा माई के मंदिर में गाय-सुअर के अद्भूत युध्द का वर्णन आया है। इस युध्द में गाय पराजित हो जाती है। गाय सवर्ण वर्ग का प्रतीक है, जो ब्राह्मण वर्ग का पक्षधर है। तो सुअर दलित वंचित वर्ग प्रतीक रहा तो सुअर दलित वंचित वर्ग प्रतीक रहा है। इस प्रसंग में दलित-सवर्ण वर्ग में संघर्ष खडा हो जाता है।

सोनकर बचपन में कुश्ती का शौक रखते थे। उनके गाँव के आसपास कुश्ती के दंगल हुआ करते थे। सोनकर इन दंगलों में प्रति पक्ष के पहलवान से हमेशा जीत प्राप्त किया करते थे। दंगल में जीत प्राप्त करने पर गॉव के समस्त दलित लोग ढोल बजाकर उनका स्वागत करते थे। सवर्ण जाति के पराजित ब्राह्मण पहलवान जाति के लोग सोनकर स्वागत पर रोक लगाने की कोशिश करते हैं। इस बात से यह स्पष्ट होता है कि, भारतीय वर्णवादी, जाति वादी व्यवस्था में व्यक्ति की योग्यता नहीं देखी जाती। केवल जाति देखी जाती है।

सोनकर ने अपने बचपन में केवल अपनी जाति हीन है, मेरा जन्म एक सामान्य दलित जाति में हुआ है, इस बात को लेकर क्रोध का दिखाई देता है। उन्हें अस्पृश्यता के अपमान का सामना करना पडा था। सन् 1970 ई. में नसेनियॉ जन्मगॉव से बिंदकी हाईस्कूल में पढाई के लिए जाते थे। वर्षा के मौसम में अपने घर वापस आते समय एक रात के समय एक पंडित के घर में एक रात्रि के पनाह लेने के लिए चले जाते हैं। उस पंडित के पर भोजन-निवास का प्रबंध किया गया था। लेकिन पंडित जो सवर्ण ब्राह्मण है, जिनके साथ चर्चा करते समय उन्हें पता चलता है कि, सोनकर और उनका भाई दलित जाति का है। तब उन दोनों के साथ मारपीठ की जाती है। वर्षा में भीगने पर उन्हे पंडित ने अपने कपडे दिए थे, वह भी वापस लिए जाते हैं।

सोनकर बारहवीं कक्षा में पढ रहे थे उस समय का प्रसंग है, बिंदकी से नसेनियां जाते समय गर्मी के दिन थे। सोनकर को प्यास लगती है, तब वे एक सवर्ण व्यक्ति के कुअे पर जाकर बाल्टी से से पानी निकालकर अपनी प्यास बुझाने के लिए एक लोटा पानी पिया था।सोनकर की हीन, दलित जाति का पता लगने पर उन्हें बेरहमी के साथ पिटा जाता है।

सोनकर घर पर उन्हें मिलने के लिए उनके रिश्तेदार उनके घर पर आ जाते हैं। सवर्ण व्यक्ति शिवभजन अवस्थी के सामने सोनकर के रिश्तेदार सोनकर के घर के सामने अपनी चारपाई पर नहीं बैठ सकते थे। इस बात को लेकर सोनकर और अवस्थी के बीच झगडा हो जाता है। ब्राह्मण लोग सोनकर मारने के लिए दौडते हैं, सोनकर के परिवारजन उन्हें अपने घर के कमरे में बंद कर देते हैं। शिवभजन अवस्थी के लोग सोनकर को माफी मांगने की बात करते हैं, सोनकर माफी मांगने से इंकार कर देते हैं। सोनकर अपने गाँव के दलित युवकों को संगठित कर देते हैं, सवर्णां के विरोध के लिए तैयार कर देते हैं। बलदेवसिंह यादव ब्राह्मणों को समझाते है कि, दलितों पर अन्याय, अत्याचार करना संविधान के विरोधी है।

शिवभजन अवस्थी और सोनकर का मानो परंपरागत जातिय दुश्मनी है। अवस्थी किसी न किसी झमले में सोनकर को फंसाने की कोशिश करते रहते हैं। सोनकर के गाँव में एक पुराना शिव मंदिर था। उसकी गुबंद की पुताई के लिए उंचे मंदिर पर रस्सी के सहारे उपर चढाई के सोनकर को प्रेरित किया जाता है। अवस्थी के मन में यह कटु विचार था कि, मंदिर की गुबंद की पुताई के लिए चढा सोनकर का हाथ रस्सी से फिसल जाए और गिरकर नीचे पडे। ऐसी स्थिति में एक ओर सोनकर की माँ खडी है। जो अपना बेटा सही सलामत नीचे उतर आए इस के लिए प्रार्थना कर रही है। जब सोनकर नीचे उतरकर आते हैं तब वह सोनकर को गले लगाकर रोती है।

सोनकर के गाँव में अखंड रामायण के पाठ का आयोजन किया जाता था। इस आयोजन में दलित वर्ग को प्रतिबंधित किया जाता था। इसके लिए सोनकर कैसे अपवाद रह सकते है। एक सवर्ण मित्र के अनुरोध पर सोनकर ने अखंड रामायण के आयोजन में भाग लिया था। जब इस बात का पता शिवभजन अवस्थी को चल जाता है। तब अवस्थी सोनकर को आकर गालियॉ देने लगते हैं, तब सोनकर अवस्थी के मुख पर रामायण की प्रति फेंक कर चले जाते हैं।

सोनकर ने प्रगतिशील विचारों से प्रभावित होकर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर, बुध्द, संत रविदास, कबीर के जीवनदर्शन से प्रेरणा लेकर समस्त दलित, वंचित समाज को अंधविश्वास के चंगुल से मुक्त करने का मानो बीडा उठाया हो। सोनकर मानवतावादी, बंधुतावादी, वैज्ञानिक वैचारिक सोच के पक्षधर रहे हैं। गाँव में सवर्णो द्वारा दलित स्त्रियों के शोषण की समस्या के प्रति सोनकर गंभीर चिंता व्यक्त करते हैं।

दलितों को गाँव के ब्राह्मणों द्वारा खेतों में प्रवेश प्रतिबंधित किए जाने पर दलितों को संगठित करके ब्राह्मणों के अत्याचार के विरोध में लडाई करने का विचार सोनकर ने अपने समाज बांधवों के सामने रखा सोनकर के गाँव में सवर्ण जाति के लोग सूदखोर हैं, जो वंचित, दलित लोगों को उन्हें आवश्यकता पडने पर अनाज, पैसे उधार देते हैं। उचित समय पर वापस न करने पर उन्हें मानसिक तथा शारिरीक यातनाओं से त्रस्त किया जाता है। शिवदत्त मिश्रा ने सोनकर के परिवार को धन उधार दिया था। उनके खेतों में धान की फसल तैयार हो गई, तब शिवदत्त मिश्रा सब धान उठाकर जबरदस्ती से ले जाता है। वह उनकी भैंस भी उठाकर ले जाता है। हरिशंकर अवस्थी पुलिस में नौकरी करते थे। उन्हें पुलिस की नौकरी से बरखास्त किया था।क्रूरता उनके रोम-रोम में बसी थी। हरिशंकर अवस्थी ने भदइया चमार को बंधक बनाकर रखता है, सोनकर अपने बस्ती के दलित युवकों को संघठित करके हरिशंकर अवस्थी के चंगुल से भदइया चमार को मुक्त करवाते हैं।

सोनकर के परिवार के अधिकतर सदस्य उच्चशिक्षित रहे हैं। यह बात हरिशंकर अवस्थी को बिलकुल अच्छी नहीं लगी थी। सोनकर के भाई अजय आई.ए.एस. की परीक्षा देकर आए हैं। तब अवस्थी अजय को कंठे ढुलवाने का कार्य करवाता है। अजय अवस्थी की बात न मानने पर अवस्थी अजय पर जोर जबरदस्ती करके कंठे ढुलवाने का कार्य करवाता हैं। आगे चलकर हरिशंकर अवस्थी को लकवा मार जाता है।

सोनकर के गाँव में सामाजिक कुरीतियों का अधिक बोलबाला है। शोषित, वंचित दबे, कुचले वर्ग का सवर्ण समाज मानो हमेशा उनका अपमान, अवहेलना करने पर तुला है। उनके गाँव में होली के अवसर पर चमार जाति के स्त्रियों को गालियॉ दी जाती है। प्रस्तुत त्यौहार में हीनता, विषमता, भेदभाव जातिवाद के दर्शन होते हैं। सोनकर का विचार यह रहा है कि, छुआछूत का दहन होना चाहिए। खटिक, पसनी भंगिनी आदि दलित जाति की स्त्रियों को गालियॉ दी जाती है। जिससे इन जातियों का अवमान, प्रताडना हो जाती है। सोनकर इस गालियों के प्रताडना तुलना नागासाकी हिरोशिमा पर गिराए गए बम के साथ की है। जननायक डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के संघर्ष से प्रेरणा लेकर सामाजिक विसंगतियों को मिटाने के लिए लडने का मानों बीडा उठाया हो।

नसेनियाॅ गाँव में दलित ब्राह्मणों में होली के अवसर पर परस्पर जाति के स्त्रियों को गालियाँ दी जाती है। इस विषय को लेकर संघर्ष हो जाता है। सोनकर के गाँव में जादूगारों का कमाल देखने के लिए भारी संख्या में दलित लोग आ जाते हैं। हरिशंकर अवस्थी सहित सवर्ण लोगों के सामने जादूगारों के करतब दिखानेवालों को पैसे नहीं देते।

गाँव में सवर्ण जाति के लोग अपनी बेटियों को उनकी अपनी इच्छा के अनुसार विवाह नहीं करने देते। वे अपनी पसंद के अनुसार ही अपनी-अपनी बेटियों के विवाह तय कर देते हैं। कोई लडकी अपनी इच्छा के अनुसार किसी लडको को पसंद करती है, इस बात का पता जब उनके घर वालों को चल जाता है, तब उनका वे खून करवा देते हैं। गाँव के लोगों में यह खबर फैला दी जाती है, कि, उनकी बेटी को जमुना मैया ने स्नान के लिए बुलाया है।

सोनकर ने अपनी जाति के युवकों को संघठित करके डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों पर चलने के लिए प्रेरित किया। सवर्ण जाति के लोग जानबुझकर गाँव के दलित, वंचित पीडित लोगों के प्रति अन्याय, अत्याचार करने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। इस विवेचन से साम्य रखने वाला उदाहरण है, इंद्रजित सिंह। जो गाँव का गुंडा है। वह ब्राह्मणों के अनुरोध पर दलित स्त्रियों के साथ लैंगिक अत्याचार करवाता है। सोनकर के साथ गाँव के तमात दलित युवकों ने संगठित होकर दलित स्त्रियों के लैंगिक अत्याचार के मामले में सामूहिक रुप से मारपीठ की, जिस हादसे में लखनसिंह की मौत हो जाती है।

हफीज मियाँ का प्रसंग प्रस्तुत आत्मकथा में गौण कथा के रुप में आया है। उनके छोटे भाई का कत्ल का प्रसंग भी गौण कथा के रुप में आया है। कथा में रोचकता, औत्सुक्य में विकास करने हेतु इन प्रसंगों की अवधारणा की गई है। गाँवे बेइमान भुर्जी के प्रसंग के माध्यम से सोनकर ने नारी शोषण पर प्रकाश डाला है। सोनकर प्रस्तुत आत्मकथा में दो प्रसंगों का उल्लेख किया है, जिसमें उनकी जान बच गई थी ।

सोनकर ने किसी भी प्रकार की फीस न लेते हुए दलित बस्तियों में जाकर दलित बच्चों पढाने का कार्य किया। सोनकर ने केवल शिक्षा के माध्यम से ही दलित जाति के लोग उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी कैसे बन सकते हैं, इसकी गौरवमय गाथा का अंकन प्रस्तुत किया है।

भारतीय समाज व्यवस्था में केवल उच्च जाति ही महत्त्वपूर्ण होती है। कोई उच्चशिक्षित उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी दलित अपनी कार अथवा गाडी में बैठकर सवर्णों की बस्ती से नहीं गुजर सकता। इस पक्ष का विवेचन करने वाला उदाहरण आर.डी.सोनकर है, जो रुपनारायण सोनकर के नजदीकी रिश्तेदार रहे हैं। रामदास सोनकर को जालसाजी में फंसाकर सवर्ण ब्राह्मण वर्ग के लोग उनका खून करवाना चाहते थे।लेकिन वे इस बात में सफल नहीं हो सके।

सोनकर ने अपने विविध पदों पर कार्यरत प्रशासनिक अनुभवों को प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत विवरण-विवेचन में उनका डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के प्रति असाधारण प्रेम दिखाई देता है। सोनकर ने अपने प्रशासनिक सेवा के अनुभवों का लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। पी.सी.एस. साक्षात्कार में पूछे गए प्रश्नों के उत्तर सोनकर ने अत्यंत चालाखी और सावधानीपूर्वक तथा मनोवैज्ञानिक धरातल पर प्रस्तुत किया है।

दलित पात्र बांकेलाल के माध्यम से सोनकर ने दलित जीवन स्वाभिमान प्रस्तुत किया है। सोनकर ने सवर्ण समाज व्यवस्था द्वारा राष्ट्रीय जायदाद (जमीन, घर आदि) बटंवारे में दोहरी नीति (अधिक उपजाउ सफल जमीन, जायदाद सवर्णों को तथा बंजर, कंगाल जमीन, हाशिए का क्षेत्र दलितों के लिए) इस विषय पर उन्होंने गंभीर चिंतन प्रस्तुत किया है। जो सामाजिक विकास में अत्यंत महत्त्वपूर्ण माना जाता है। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक तथा शैक्षिक आदि क्षेत्रों में जानबूझकर दलितों के साथ अमानवीय बर्बरतापूर्वक व्यवहार किया जाता है। जिसके कारण दलित जाति के लोग देश मुख्य धारा सके वंचित रहे हैं।

सोनकर ने अपने शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति चिंतन प्रस्तुत किया है। उनका ऐसा मानना है कि, भारतीय समाज व्यवस्था में व्यक्ति की योग्यता, शैक्षिक अर्हता नहीं देखी जाती केवल जाति देखी जाती है। सोनकर के एक सवर्ण वरीष्ठ अधिकारी ने उन्हें जानबुझकर आकस्मिक छुटटी प्रदान नहीं की ।जिसके माध्यम से सोनकर भारतीय प्रशासनिक सेवा में परीक्षा देने हेतु जाना चाहते थे।

''मंचीय कवि'' शीर्षक के परिच्छेद में सोनकर ने हिंदी साहित्यकार, कवियों की राजनीतिक खेमेबाजी का सुंदर वर्णन प्रस्तुत किया है। साहित्यकार भी अपने-अपने गुट कैसे बनाते है, और प्रतिपक्ष के लोगों को कैसे नामोहरम किया जाता है, इस पक्ष पर अच्छा विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने स्वयं को केंद्र में रखकर लोकप्रिय, बहुचर्चित होनेवाले साहित्यकार, कवि भी उन्हें कैसे अनदेखा करते थे। इस पक्ष पर प्रकाश डाला है। उन्होंने ऐसे कई उदाहरण दिए है, जिसमें उनकी मंचीय कवि के रुप प्राप्त हो रही लोकप्रियता को देखकर उनके हितैषी मित्रों ने उन्हें कवि मंच पर अवमानित किया था।

सोनकर ने प्रस्तुत आत्मकथा समापन के पूर्व अपनी साहित्य विश्व की गतिविधियों की चर्चा प्रस्तुत की है। पूर्व प्रधानमंत्री वी.पी.सिंह के करकमलों से सोनकर के नाट्यसंग्रह ''रहस्य'' का लोकार्पण दिल्ली में हुआ था।विविध जगहों पर विविध साहित्य संगोष्ठियों के मचों पर सोनकर की बढती हुई लोकप्रियता को देखकर उनके मित्र भी उनके जान के दुश्मन बन गए थे। दलित साहित्यिक सोहनपाल सुमनाक्षर के साथ हुए मनमुटाव का चित्रण उन्होंने प्रस्तुत किया है। जिससे उन्होंने अपना एक स्वतंत्र ''दलित साहित्य व सांस्कृतिक अकादमी, भारत'' मंच की नींव डाली थी। जिसका प्रारंभ वर्ष 2003 में हुआ। सोनकर इसके राष्ट्रीय अध्यक्ष बने। इस संस्था के माध्यम से आयोजित विविध उपक्रमों का ब्यौरा दिया गया है।

दलित साहित्य के बारे में सोनकर ने अपना मुक्त चिंतन प्रस्तुत किया है। उनके द्वारा संस्थापित संस्था के माध्यम से नए उदीयमान दलित कवि, साहित्यकारों, चिंतकों को एक नया मंच प्राप्त हुआ है।

रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित बहुचर्चित नागफणी आत्मकथा करीब 56 परिच्छेदों में विभाजित है। आशय, विषय की दृष्टि से खटिक समाज की व्यथा वेदनाओं को न्याय देने की कोशिश सोनकर ने की है। सवर्ण समाज व्यवस्था की चक्की में पीसता दलित समाज सदियों से सवर्णों की मनुवादी मानसिकता का शिकार बना हुआ है। डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के अथक प्रयासों से दलित समाज की आनेवाली पीढियों में ''शिक्षित बनो, संघठित बनो और संघर्ष करो'' का नारा दिया था। भारतीय संविधान की बदौलत भारतीय

दलित लोगों के जीवन में सामाजिक क्रांति हुई है। लेकिन देहातों में बसे भारतवर्ष में सवर्ण भारतीय लोगों के मन से जाति का नामशेष होना कठिन है।

2.3.2 ''नागफणी'' की शीर्षक सार्थकता

विवेच्य आत्मकथा का ''नागफणी'' शीर्षक लघु, चुस्त आशयपूर्ण और अर्थगंभीरता की दृष्टिसे अपने आप में पूर्ण है। जिसका गुण इस प्रकार है। हिंदी विश्वकोश खंड 6 (जिसका प्रकाशन नागरी प्रचारिणी सभा काशी) में ''नागफणी'' के बारे में जो जानकारी प्राप्त होती है, वह इस प्रकार है।

इकाइनी कैक्टस (Echino cactus) नागफणी वास्तविक रुप में एक वनस्पती का नाम है, जो एक शाखा रहित एक थूहर की जाति का पौधा जिसका शास्त्रीय नाम इस प्रकार रहा है। इसे शल्य की (Hedgehog) नागफणी भी कहते हैं। यह सिरिओइडी (Cereoideae) उपकुल का पौधा है ये साधारणतया रेगिस्तान में ही उगते हैं। इसकी नौं जातियॉ पाई जाती है। ये गोलाकार, बेलानाकार धारीवाली होती है। इसके फूल बडे-बडे, देखने में सुंदर तथा पीले और गुलाबी रंग के होते है। एक पौधे में पचास हजार से अधिक काटे पाए जाते है। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि, जहाँ वर्षा का अनुपात कम होता है। वहॉ पर नागफणी की फसल अधिक होती है।

लेकिन आज नागरीकरणता के परिप्रेक्ष्य में अमीर लोगों के महलों में नागफणी के पौधे शो पीस के रुप में लगाए जा रहे हैं।

विवेच्य आत्मकथा में लेखक ने पृष्ठ क्रमांक 111 पर प्रस्तुत आत्मकथा की शीर्षक सार्थकता के बारे में लिखा है। जातिवाद रुपी नागफणी के कॉंटे मौजूद है, जो आज भी स्वतंत्र भारत में विद्यमान है, वहाँ पर केवल जाति देखी जाति है, व्यक्ति की योग्यता नहीं देखी जाती।

लेखक ने विवेच्य आत्मकथा (पृ.113) पर लिखा है, -''नागफणी'' से जुडा जातिवाद का कांटा मेरे करियर में चुभ गया था। वह कांटा आज भी मेरे आई.ए.एस. न बन पाने का दर्द देता रहता है। नागफणी से जुडे बहुत से असमानता, भेदभाव, छुआछूत, अत्याचार, शोषण के कांटे पढे-लिखे दलितों के शरीर, मन मस्तिष्क को छेदते रहते हैं। ग्रामीण भारत में नागफणी अपने आप खेतों में पैदा होती है। शहरी भारत में बगीचों और घरों में नागफणी गैर-दलितों द्वारा पनपाई जाती है। लेकिन कांटे दोनों के नुकीले होते है। दोनों दलितों के बदनों पर घाव करते है।'' इसप्रकार सोनकर ने विवेच्य आत्मकथा की शीर्षक सार्थकता को लघु, अर्थबोधपूर्ण गंभीर और चुस्त बनाया है।

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न-

अ. बहुविकल्पीय प्रश्न-

1. नागफणी आत्मकथा के लेखक.......... है।

   अ. रुपनारायण सोनकर　　ब. मोहनदास नैमिशराय

   क. कौसल्या बैसंत्री　　ड. दया पवार

2. नागफणी आत्मकथा सन्...........ई.में प्रकााशित हुई ा

अ. 2006 ब. 2008 क. 2009 ड. 2010

3. नागफणी आत्मकथा का वस्तु विवेचन......... जाति से संबंधित है।

अ. चमार ब. खटिक क. पासी ड. सवर्ण

4. सोनकर की माँ का नाम.......... था।

अ. अनुसया ब. अनुराधा क.जगनंदनी ड. रामप्यारी

5. .... के अवसर पर दलित-सवर्ण स्त्रियों की गालियॉ दी जाती थी।

अ. रक्षाबंधन ब. रामनवमी क. होली ड. हनुमान जयंती

2. **उचित मिलान कीजिए।**

1. प्रो.नामवर सिंह-	अ. समाजद्रोही
2. राजेंद्र यादव-	ब. रहस्य नाटय संग्रह विमोचन
3. वी.पी. सिंह-	क. हंस
4. रुपनारायण सोनकर-	ड. जहरीलीं जडें विमोचन

3. **निम्नलिखित में से सही गलत की पहचान करें।**

1. शिवदत्त मिश्र महाजन थे, जो समाजसेवक के रुप में कार्यरत रहें।
2. हरिशंकर अवस्थी खूंखार व्यक्ति था, जिसने अपने गॉव में स्कूल खोला था।
3. जननायक डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर ने संघर्ष किया, जिससे प्रेरणा लेकर रुपनारायण सोनकर ने अपना जीवन पथ को चुना था।
4. सोनकर के बडे भाई राजाराम इलाहाबाद विश्वविद्यालय में पढ रहे थे, उन्हें पढाई के लिए दो-तीन महीने के बाद अपने घर से मनीऑर्डर भेजी जाती थी।
5. सोनकर को अखंड पाठ में रामचरितमानस अशुद्ध हो जाएगा, इसलिए अखंड पाठ पठन की से जबरदस्ती से बाहर निकाला था।

उत्तर-

1. पहला सही, दूसरा गलत.
2. पहला सही, दूसरा गलत.
3. पहला सही, और दूसरा भी सही.
4. पहला सही, और दूसरा भी सही.
5. पहला सही, और दूसरा भी सही.

2.5 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1-ड, 2-क, 3-ब 4-अ.

2.6 स्वाध्याय

1. नागफणी आत्मकथा की समीक्षा कीजिए
2. रुपनारायण सोनकर लिखित ''नागफणी'' की शीर्षक सार्थकता पर प्रकाश डालिए।
3. 'नागफणी' में चित्रित प्रसंगों को लिखिए।
4. ससंदर्भ स्पष्टीकरण कीजिए।

1. ससुरी खटिकिन तेरी यह हिम्मत, देवी के कलश को अपने सिर पर रखकर भ्रष्ट कर दिया है।
2. पंडित अपने किए पर पश्चाताप करें और दलित महिलाओं को भी पीतल का कलश सिर पर रखकर चलने दें।
3. मेरा दाहिना हाथ बाल्टी से बंधी रस्सी पर आ गया। मैं जोर से उठ खडा हुआ। मैंने जोर से रस्सी पकड ली।
4. पहिया उस समय सुदर्शन चक्र बनकर अधर्मी योध्दाओं का संहार कर रहा था। हर युग में सुदर्शन चक्र उन वीरों का साथ देता है जो न्याय, समता, भ्रातृत्त्व और सामाजिक कुरीतियों के विरुध्द शंखनाद करते हैं।
5. पानी पीकर मेरी प्यास बुझ गई थी। पनी मेरे शरीर में पेट्रोल का काम कर रहा था। मेरे शरीर रुपी वाहन को मेरा हृदय रुपी ड्राईवर तेजी से भगा रहा था। पैर रुपी पहिए तेजी से कच्ची सडक पर दौर रहे थे।
6. नाइंसाफियों के खिलाफ लडने के लिए अंधेरा भी उजाले का काम करता है। हालांकि अंधेरे में निर्माण का कार्य होता है। यह अंधेरा मेरे लिए वरदान बन गया था।
7. साले, दरवाजा खाले दे। हम तेरी जान बक्श देंगे। बाहर निकालकर हम लोगों के पैर छूकर माफी माँग कि भविष्य में ऐसी गलती नहीं करेगा।
8. ''दरवाज मत तोडो- हीरा बबुओं को मत मारो।''
9. ''गॉव का कोई भी दलित कहीं भी हमारे सामने चारपाई पर नहीं बैठ सकता है। हम इस गाँव के जमींदार रहे हैं। हमने इस गाँव पर श्शासन किया है। प्रजातंत्र आ गया है तो इसका मतलब यह नहीं है कि, हमारी मान-मर्यादा-इज्जत कम हो गई है।
10. एक तरफ पंडित था कि चाहे जो कुछ हो मंदिर के गुबंदों की सफाई करने के बाद ही नीचे उतारने के लिए दृढ संकल्पित था। दूसरी तरफ मेंरी माँ मेरी जान बचाने के लिए मंदिर के गुबंदों की पुताई करना जरुरी नहीं समझती थी।

11. साले, हम लोगों के बीच में बैठकर कैसे रामायण की चौपाई पढ रहा है। इस साले अछूत को कितने चौपाई पढने के लिए कहां?

12. धार्मिक प्रदूषण वायुमंडल में फैल जाता है। यह प्रदूषण इतना विषैला और कसैला होता है कि, इसकी एक-एक बूँद दलितो की एक-एक पीढी को अपमानित करने के लिए काफी होती है।

13. त्यौहारों में बुराई को जलाना चाहिए। असमानता, भेदभाव, छुआछूत, जातिवाद, को जलती होली में झोंक देना चाहिए। यदि हम ऐसा करतेतो मानवता, भाईचारा, प्यार, मोहब्बत, सांप्रदायिक, सद्भावना की लपटें आसमान तक उठती और संसार के सामाजिक अंधकार को दूर कर देती ।

14. डॉ.आंबेडकर अकेले थे। उन्होंने अकेले ही सारे देश से गैर-बराबरी के खिलाफ संघर्ष किया था। उनके तेज के सामने गाँधी, जवाहर की चमक धीमी पड गई थी।

15. देहात की महिलाएँ प्राकृतिक रुप से सुंदर होती है। यदि उनको ब्युटी पॉर्लर का सहारा मिल जाए ता अति सुंदर हो जाएँगी। शहर की औरतें ब्युटी पॉर्लर का सहारा लकर सुंदर बनती है। प्राकृतिक रुप से अति सुंदर नहीं होती है।

16. दलितों को संघर्ष करने की जरुरत होती है। चाहे दलित मजदूर हो या कलेक्टर।

17. मैं एक खिलाडी की भांति अपने कैप्टन की बात मान गया। जैसे भारत के कप्तान राहुल द्रविड ने आस्ट्रेलियॉ के खिलाफ उस समय पारी घोषित कर दी थी जिस समय सचिन तेदुंलकर को अपनी डबल सेंचुरी पुरा करने के लिए मात्र छ: रनों की जरुरत थी।

2.7 क्षेत्रीय कार्य-

1. नागफणी और मराठी की कोई भी समकालीन बहुचर्चित दलित आत्मकथा की तुलना कीजिए।
2. रुपनारायण सोनकर लिखित दिग्दर्शित नाटकों का मंचन युट्युब पर देखिए।

2.8 अतिरिक्त अध्ययन के लिए-

1. बलुतं -दया पवार
2. आम्ही आणि आमचा बाप-डॉ.नरेंद्र जाधव.

❑❑❑

इकाई –3
पात्र तथा चरित्र चित्रण, देश काल और वातावरण

अनुक्रम –

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवेचन

3.3.1 पात्र तथा चरित्र चित्रण

3.3.2 देश काल और वातावरण

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 सारांश

3.7 स्वाध्याय

3.8 क्षेत्रीय कार्य

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य :

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप –

1. ''नागफणी'' के पात्र तथा चरित्र चित्रण से परिचित हो जाऐंगे।
2. ''नागफणी'' के देश काल और वातावरण से परिचित हो जाऐंगे।

3.2 प्रस्तावना :

साहित्य की सभी विधाओं में लोकप्रियता की दृष्टि से ''आत्मकथा'' यह विधा विश्व साहित्य में प्रथम स्थान पर विराजमान है। एक ओर यह विधा डायरी के साथ लेखकीय जीवन के विविध आयामों के साथ-साथ उनके समाज जीवन के विविधांगों का प्रभावी चित्रण प्रस्तुत करती है। इसी कारण बहुचर्चित आत्मकथाओं को अनुवाद की दृष्टि से देशकाल, भाषाओं का बंधन नहीं रहता। बहुचर्चित आत्मकथा सर्वसाधारण हो या दलित भारतीय भाषाओं के साथ-साथ प्राय: सभी विदेशी भाषाओं में उसके अनुवाद हो चुके हैं।

3.3 विषय विवेचन :

3.3.1 पात्र पथा चरित्र–चित्रण

''नागफणी'' : प्रमुख पात्र का चरित्र चित्रण

''नागफणी'' रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित बहुचर्चित आत्मकथा है। प्रस्तुत आत्मकथा उनके जीवन का बहुमोल दस्तावेज कहा जाता है। प्रस्तुत आत्मकथा उनके जीवन और जातिगत व्यवस्था का चित्रण है। दलित आत्मकथाओं में जो लेखक है, वह उसका नायक होता है, उसके साथ–साथ उसका परिवार, समाज, धर्म, शिक्षा, संस्कृति, राजनीति आदि आयाम अपने आप में आ जाते हैं। दलित आत्मकथा साहित्य की अपनी एक विशेषता कही जाती है कि, दलित आत्मकथा का नायक जिस जाति से आता है, वह अपनी जाति की समस्त विशेषताएँ साथ लेकर आता है। नि:संदेह रुप से विवेच्य आत्मकथा का नायक रुपनारायण सोनकर ही है। प्राय:आत्मकथाओं का लेखक ही उसका नायक हुआ करता है। आत्मकथा के प्रारंभ से लेकर अतं तक नायक अर्थात् लेखक की प्रतिमा के विविध आयाम पाठकों के सामने रखे जाते है। रुपनारायण सोनकर का परिवार प्रस्तुत आत्मकथा के केंद्र में रहा है। उनकी मॉ, उनके पिताजी, उनके छोटे, बडे भाई गौण पात्रों के रुप में विवेच्य आत्मकथा में चित्रित हुए है। इन पात्रों के साथ–साथ गाँव के अन्य पात्र गौण पात्रों के रुप में विवेच्य आत्मकथा में चित्रित हुए है। इन पात्रों के साथ–साथ हरिशंकर अवस्थी, शिवदत्त मिश्र आदि पात्र प्रतिनायक के रुप में विवेच्य आत्मकथा में चित्रित है। इन पात्रों के माध्यम से लेखक संघर्ष, औत्सुक्य, जिज्ञास आदि गुणों की अवतारणा की है। इसमें सोनकर को सफलता प्राप्त हुई है। प्रस्तुत आत्मकथा में उनके जीवन के निम्नलिखित आयाम चित्रित हुए है। जो उनका साकार रुप पाठकों के सामने खडा करने का कार्य करते हैं।

1. **नायक–**

विवेच्य आत्मकथा के नायक रुपनारायण सोनकर है। उन्होंने अपने आप को केंद्र में रखकर ही विवेच्य आत्मकथा का सृजन किया है। विवेच्य आत्मकथा के प्रारंभ से लेकर अंत तक नायक के रुप में वे अद्यांत दिखाई देते हैं। विवेच्य आत्मकथा के प्रमुख घटना प्रसंग उनके जीवन की प्रमुख तथा साधारण घटनाओं से प्रभावित रहे है। नायक की कसौटी के आधार पर सोनकर विवेच्य आत्मकथा के नायक रहे हैं। विवेच्य आत्मकथा का अति गौण पात्र भी सोनकर के जीवन के साथ कोई न कोई निश्चित संबंध जरुर रखता है।

2. **बुध्दिमानी, शिक्षाप्रेमी–**

सोनकर विवेच्य आत्मकथा के बुध्दिमानी और शिक्षाप्रेमी नायक रहे हैं। वे बुध्दिमानी होने के कारण ही विपरीत परिस्थिति में शिक्षा प्राप्त करके सरकारी नौकरी में उच्च पदस्थ आधिकारी के रुप में कार्यरत रहे । बचपन से ही शिक्षा प्रेमी होने के कारण ही पडोस के गाँवों में पैदल तो कभी साईकिल से जाकर शिक्षा प्राप्त करते हैं। शिक्षा के प्रति उनका दृष्टिकोण डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों से प्रभावित रहा है। ''शिक्षित

बनो, संघठित बनो, और संघर्ष करो''। जिसके कारण ही उन्होंने दलित बस्तियों में जाकर गरीब लोगों के बच्चों को शिक्षित बनाने का मानो बिठा उठाया था। जिससे उनकी बुध्दिमानी और शिक्षा प्रेमी गुणों के दर्शन होते हैं।

3. खेल प्रियता–पहलवान

हिंदी साहित्य में 'पहलवान और पहलवानों में हिंदी साहित्यकार'' की श्रृंखला में जयशंकर प्रसाद के बाद रुपनारायण सोनकर नाम विशेष उल्लेखनीय माना जाता है बचपन से ही सोनकर को अपना मनपसंद खेल पहलवानी अर्थात् कुश्ती के प्रति विशेष लगाव रहा। वास्तविक रुप में सोनकर का पारिवारिक आर्थिक स्तर उतना अच्छा नहीं था। क्योंकि फिटनेस के लिए आथिक सुब्बातता महत्त्वपूर्ण होती है। फिर भी केवल लगन कुश्ती के प्रति उनकी आस्था के कारण ही उन्होंने कुश्ती में भी अपना नाम कमाया था। सोनकर के गॉव के आसपार जहॉ पर भी कुश्ती के दंगल लगते थे, तब सोनकर उन दंगलों में जाकर कुश्ती में अपनी जीत प्राप्त किया करते थे। लेकिन सवर्ण व्यवस्था प्रधान समाज के लोगों को यह बात अच्छी नहीं लगती। उनका मानना यह है कि, सोनकर दलित है, कुश्ती में उसकी जीत नहीं हार ही होनी चाहिए।

4. अन्याय, अत्याचार के प्रति विरोध –

अन्याय, अत्याचार के प्रति विरोधी भाव सोनकर के व्यक्तित्त्व की महत्त्वपूर्ण विशेषता कही जाती है। अपनी बस्ती, समाज में जहाँ वर किसी के भी अन्याय और अत्याचार हो जाता था, सोनकर अपनी आँखें मूंदकर बैठनेवालों में से नहीं थे। अन्याय, अत्याचार करने वाला कितना भी प्रबल और हिंसक प्रवृत्ति का क्यों न हो। उनके साथ दो हाथ करने का कार्य सोनकर ने अपने बस्ती के युवाओं को संघठित होकर उनका विरोध किया है। सोनकर कभी–कभी अकेले तो कभी अपने बस्ती के युवाओं को संघठित करते हुए अन्याय, अत्याचार करने वाले के विरोध में संघर्ष करते हुए दिखाई देते थे। सोनकर के गाँव के हरिशंकर अवस्थी ओर इंद्रजित सिंह जब भी अपने विरोधियों पर अन्याय, अत्याचार करते थे। तब सोनकर उन पर कोडे बरसाने का काम करते थे।

5. परिवार प्रेमी–

सोनकर में परिवार प्रेमी में गुण के दर्शन होते हैं। वे अपने मॉ–बाप, बडे भाई के प्रति अपार प्रेम करते हुए दिखाई देते हैं। अपने मॉ–बाप के प्रति आदर, सम्मान के भाव उनके व्यक्तित्त्व में पाए जाते है। अपने आभिभावकों के द्वारा प्रतिपादित आदर्श मार्ग पर चलना वे अपना कर्तव्य समझते है। शिक्षा, जिज्ञासा के कारण ही सोनकर का व्यक्तित्त्व निखर आया है। वे अपनी भाभी को अपनी माता के समान मानते थे। उनकी भाभी भी उनपर अपने देवर जैसा प्रेम करती थी। जिसके कारण दोनों में स्नेह–बंधन का रिश्ता नाता दिखाई देता है।

एक बार सोनकर के गॉव में उनका परंपरागत दुश्मन शिवभजन अवस्थी उन्हे एक रस्सी के सहारे उॅचे मंदिर के गुबंदों पर पुताई करने हेतु चढाता है। इसमें अवस्थी की चालबाजी थी कि, कहीं पुताई करते समय

सोनकर उपर से नीचे गिर पडे। सोनकर पुताई करने हेतु उपर चढते है, इतने में उनकी माँ मंदिर के पास वहाँ पर आ जाती है। उंचाई पर चढा अपना बेटा सही सलामत नीचे उतरकर आ जाए इसलिए वह भगवान से प्रार्थना करती है। सोनकर नीचे उतरकर आ जाते है, तब वह अपने लाडले बेटे को गले से लगाकर रोती है।

6. भाभी के प्रति अपार प्रेम–

सोनकर के बडे भाई साहब की पत्नी के प्रति अपार प्रेम दिखाई देता है। आत्मकथा के प्रारंभ में उनके लेखक की भाभी का एक प्रसंग चित्रित हुआ है। धार्मिक उत्सव के अवसर पर भाभी के सिर पर पीतल का कलश रखा जाता है, जो सवर्ण व्यवस्था के आधीन लोग जबरदस्ती से भाभी के सिर पर रखा पीतल का कलश उतारने के लिए मजबूर कर देते है।तब सोनकर गाँव के दलित लोगों को संघठित करके आंदोलन चलाते हैं, इससे इस बात का पता चलता है कि, सोनकर का अपने भाभी के प्रति अपार प्रेम रहा है।

7. डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के प्रगतिशील विचारों का समर्थन–

सोनकर डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के विचारों के प्रगतिशील विचारों के प्रबल समर्थक रहे है। सोनकर का अपने पिताजी द्वारा डॉ.आंबेडकर विचारों संस्कार प्राप्त हुआ था।इसी कारण ही वे शिक्षित बनकर संघठित होकर संघर्ष करने लगे थे। एक सामान्य दलित परिवार में जन्म लेकर उच्चशिक्षा प्राप्त करके एक सरकारी अधिकारी पद वे कार्यरत रहे। अपने समाज में किसी व्यक्ति पर अन्याय, अत्याचार हो जाता है, तब वे अपने ही जाति के युवाओं को संघठित करके इंद्रजित सिंह जैसी व्यक्ति को सबक सिखाने का कार्य करते हैं।

8. साहित्य चिंतक–

सोनकर को परिवारिक विरासत में साहित्य चिंतक की परंपरा बपौती के रुप में प्राप्त नहीं हुई। हाशिए पर रहने वाले समाज में सोनकर का जन्म हुआ। उन्होंने अपनी मेधावी शक्ति के बल पर आत्मकथा, नाटक, एकांकी संग्रह, कविता आदि विधाओं पर प्रचुर मात्रा में लेखन कार्य किया है। उनके द्वारा लिखित कई रचनाओं को देश–विदेश के कई विश्वविद्यालयों में पाठ्यपुस्तक रुप में निर्धारित किया गया है।उनके साहित्य पर कई विश्वविद्यालयों में पीएच.डी. आदि उपाधियों हेतु विविधायामों पर निरंतर शोधकार्य जारी है।

सोनकर द्वारा लिखित कई कविताओं के माध्यम से वे दर्शकों, पाठकों के गले का हार बन गए है। वे स्वंय कसदार अभिनेता भी रहे हैं, उन्होंने स्वयं, खुदके नाटक, एकांकियों में अभिनय भी किया है। मंचन के क्षेत्र में उनका सानी रखने वाला कोई भी साहित्यकार हिंदी में आज नहीं है।

9. सवर्ण व्यवस्था का शिकार–

सोनकर का बचपन गाँव में व्यतीत हुआ हैं। भारतीय ग्राम व्यवस्था में छुआछूत और जाति व्यवस्था का नियम कठोर हुआ करते हैं। सोनकर ने अपने जीवन में कई बार दलित जीवन का यह दुख भोगा है।

वर्षा के मौसम में स्कूल से अपने गॉव जाते समय एक रात एक पंडित के घर पर अपने भाई के साथ रात के पनाह लेनी पडती है। तब रात के समय सोनकर और उनके भाई का भोजन प्रबंध पंडित के घर पर होता है। लेकिन बातचीत में सोनकर की दलित जाति का पता जब पंडित को चल जाता है, तब पंडित उनके साथ बेरहमी के साथ मारपीठ करते हुए बारिश में ही अपने घर से बाहर निकाल देता है।

स्कूल से घर वापस आते समय सोनकर और उनके भाई को प्यास लग जाती है, तब वे कुए से बाल्टी भरकर पीने के लिए पानी निकालते है, तब सवर्ण लोगों का सोनकर की दलित जाति का पता चल जाता है, तब मार खानी पडती है। इस प्रकार केवल दलित जाति के कारण लेखक को अपमानित होना तिं है।

10. कुशल संघटक–

साहित्यकारों की राजनीति से त्रस्त होकर सोनकर ने स्वयं एक कुशल संघटक का कार्य किया है। उन्होंने दलित साहित्य व सांस्कृतिक अकादमी भारत का निर्माण किया है। इसकी स्थापना सन् 2003 ई. में की गई है। वे स्वयं इसके राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष रहे हैं। समस्त भारतवर्ष इसका कार्यक्षेत्र है। डॉ.आंबेडकर, फूले, लोहिया, पेरियार, व्याघ्र मुनि के नाम पर करीब चार दर्जन से अधिक राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार प्रदान किए जाऐंगें जो दलित साहित्य, संस्कृति आदि क्षेत्र से संबंधित होंगे।

नागफणी दलित आत्मकथा का नायक के परिप्रेक्ष्य में अनुशीलन करने पर प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है, एक सफल लेखक, नायक, बुध्दिमानी, शिक्षा प्रेमी, खेल प्रियता-पहलवान, अन्याय, अत्याचार के प्रति विरोध, परिवार प्रेमी, भाभी के प्रति प्रेम, डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के प्रगतिशील विचारों से प्रेरणा, साहित्य चिंतक, सवर्ण व्यवस्था का शिकार, कुशल संघटक आदि रुपों पर प्रकाश डाला गया है।

3.2.2 ''नागफणी'' का देशकाल और वातावरण

आत्मकथा विधा में देशकाल और वातावरण अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वास्तविक रुप में देश, काल और वातावरण इन तीन अवस्थाओं से प्रस्तुत घटक की निर्मिति हुई है। जिसके कारण आत्मकथा का कोई भी अंश अथवा खंड का अध्ययन करने पर वह अपने आप में परिपूर्ण लगता है।

रुपनारायण सोनकर का जन्म सन् 1962 ई. में हुआ है। यह काल साहित्य इतिहास के परिप्रेक्ष्य में वह समकालीनता के दायरे में आता है। विवेच्य दलित आत्मकथा रही है। जिसके कारण दलित साहित्य के जन्मदाता डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर की विचारधारा, उनका दर्शन विवेच्य आत्मकथा में प्रतिबिंबित हुआ है। प्रस्तुत आत्मकथा में देशकाल और वातावरण का निर्वाह इस प्रकार हुआ है। आत्मकथा साहित्य की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है कि, आत्मकथा साहित्य के केंद्र में लेखक का परिवार प्रमुख होता है। वह अपने समाज की सभी विशेषताऍं साथ लेकर आता है। उसक परिवार की विशेषताऍं, मान्यताऍं, रीति-रिवाज, रुढी, परंपराऍं, साथ लेकर आता है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि, विवेच्य रचना के अंतर्गत चित्रित सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षिक आदि परिवेश का सुंदर प्रतिबिंब दिखाई देता है। उनका छोटासा परिवार है।

भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश में फतेहपुर जिले में बिंदकी तहसील में नसेनियां गाँव है। जहॉ पर सन् 1962 ई. को रुपनारायण सोनकर का जन्म एक सामान्य खटिक दलित परिवार में हुआ है। आत्मकथा साहित्य की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता होती है कि, आत्मकथा साहित्य के केंद्र में लेखक का परिवार प्रमुख होता। उनका छोटासा परिवार है। आर्थिक विपन्नता उनके परिवार की कमजोरी है। उनके माता-पिता द्वारा किए गए संस्कार और डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर द्वारा दिए गए ''शिक्षित बनो, संघठित बनो और संघर्ष करो'' इस विचार से प्रेरणा लेकर सोनकर का परिवार शिक्षित बना। केवल शिक्षित ही नहीं उच्चशिक्षित बना और भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों में उच्चपदस्थ अधिकारी के रुप में कार्यरत रहा हैं।

विवेच्य आत्मकथा में देशकाल और वातावरण का सुंदर निर्वाह हुआ है। विवेच्य आत्मकथा में अभिमन्यू, एकलव्य, द्रोणाचार्य, श्रीराम, बालि, सुग्रीव आदि पौराणिक पात्रों का संदर्भ आया है।

संत रविदास, व्याघ महर्षि, कबीर, नानू, पीपा, इन संतों का नामोल्लेख विवेच्य आत्मकथा में आया है।

डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के अथक प्रयासों के कारण दि. 26 जनवरी सन् 1949 ई. को भारतीय संविधान का स्वीकार किया गया। जिसके कारण समस्त भारतीय दलित समाज को ''समता, बंधुता, न्याय'' का अभिवादन प्राप्त हुआ। जिसके कारण भारतीय दलितों के जीवन में एक नई किरण प्राप्त हुई। यथार्थ में यह एक मात्र ऐसा सुअवसर है कि, रक्तविहिन सामाजिक क्रांति रही है। जहाँ पर भारतीय सदियों से हाशिए पर रहने वाले दलित समाज को देश की बागडौर संभालने का हकदार बनने का मौका मिला।

भारतीय समाज व्यवस्था में भारत में संविधान कार्यान्वयन होने से पूर्व चातुर्वर्ण्य समाज व्यवस्था का प्रचलन था। जाति-पाति के बंधन कठोर थे। मनुवादी समाज व्यवस्था ने जानबुझकर दलितों के सर्वाधिकारों का हनन किया था। उनके मानवाधिकार छीन लिए थे। सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, शैक्षिक अधिकारों के प्रति दलित काफी दूर थे। जिस कुअे तथा सार्वजनिक नल पर कुत्ता, बिल्ली, भैंस, गाय पानी पी सकते थे। वहॉ इंन्सान जैसा इंसान होकर केवल उसकी जाति दलित है। इसलिए उसे सार्वजनिक स्थलों पर विहार तथा पानी पीने की इजाजत नहीं थी। समाज के विशिष्ट वर्ग ने अपने सर्वाधिकारों को सुरक्षित रखने हेतु अपनी दृष्टि से धार्मिकता का रंग देकर कायदे-कानून अपने पक्ष में बनाए थे। जिसे उडा देने का कार्य भारतीय संविधान ने किया है। भारत अधिकतर देहातों में रहता है। देहातों में जाति व्यवस्था के बंधन कठोर हुआ करते थे। जिसे अस्वीकार करने पर कडे से कडा दंड देने का प्रावधान धार्मिकता के परिप्रेक्ष्य में किया गया था। इन नियमों का अनुपालन कठोरता से न करने पर समाज से प्रताडित करने का भी प्रावधान रखा गया था। जब ''नागफणी'' का प्रकाशन करीब स्वाधीनता के बाद पचास वर्षों के बाद हुआ है। यथार्थ रुप से देखा जाए तो सन् 1949 ई. को हुआ तब से कानून रुप से भारतीय समाज व्यवस्था के अंतर्गत जाति,

वर्ण व्यवस्था को नामशेष हो गई है। लेकिन यह बात केवल कागज पर ही रही है। भारतीय जनमानस के मन में आज जाति, वर्ण व्यवस्था की मीनार कायम रही है। जो आज भी कायम बनी हुई है। जिसके कारण ही आज भारतीय समाज व्यवस्था में उच्चता-हीनता का बात कायम बनी हुई है। धार्मिकता और वेद जैसे ग्रंथों का आधार लेकर लोगों के मन में बात अमीठता के साथ बोने का कार्य किया है कि, जाति तथा वर्ण व्यवस्था ईश्वरीय देन है। यदि इस बात को हम एक क्षण के लिए स्वीकार कर लेते है, तो जाति और वर्ण छुआछूत यह बातें केवल भारत को छोडकर अन्य किसी भी देश में नहीं पाई जाती। भारत को छोडकर विश्व के किसी भी देश में जाति तथा वर्ण व्यवस्था के दर्शन नहीं होते।

विवेच्य आत्मकथा के अंतर्गत कुडहा माई के प्रागंण में एक धार्मिक उत्सव का आयोजन किया गया है। इस उत्सव में सवर्ण, दलित स्त्री, पुरुष एकत्रित हुए है। लेकिन वहाँ पर केवल सवर्ण महिलाओं को अपने सिर पर कलश परिधान करने का धार्मिक अधिकार है। ऐसी स्थिति में सोनकर की चाची ने अपने सिर पर कलश अपने सिर पर परिधान किया है, इस बात पता जब सवर्ण महिलाओं को चल जाता है। तब वह सब महिलाओं के साथ पुरुष इकठ्ठा होकर लेखक की चाची के साथ मार-पीठ करते हैं। यहाँ उस धार्मिक तीज, त्यौहारों में दलितों को अपना सहयोग देने का भी अधिकार है। लेकिन उनकी चाची केवल दलित जाति की है, इसलिए उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है। इस बात को लेकर गाँव के सवर्ण बनाम दलितों संघर्ष दिखाई देता है। यह केवल सोनकर के गॉव का प्रातिनिधिक उदाहरण मात्र कहा जा सकता है।

''सूअर-गाय के अद्भूत युध्द के प्रसंग'' में सूअर दलित, मूलनिवासियों का प्रतीक है, तो गाय सवर्ण जाति व्यवस्था का प्रतीक कहा जा सकता है। इस में छलकपट के साथ सूअर की मृत्यु दिखाई गई है। जो कपटनीति का सहारा लेकर सवर्ण व्यवस्था के लोग उसे मार देते हैं।

सोनकर को बचपन से कुश्ती खेल में विशेष दिलचस्पी थी। वह अपने गाँव के आस-पास के इलाखे में जहाँ पर कुश्ती के दंगल लगते थे। वहॉ जाकर अपनी कुश्ती के खेल में योग्यता दिखाते थे। किसी सवर्ण पहलवान के साथ उनका मुकाबला होता था तो सवर्ण दर्शकों की दृष्टि से उस दंगल में हीरा अर्थात् हार होना निश्चित ही था। लेकिन सोनकर मंजे हुए खिलाडी थे। वह अपने प्रतिद्वंदी पर अपनी जीत पक्की कर देते थे। इस बात सवर्ण दर्शकों के साथ-साथ उनके गॉववालों को अच्छी नहीं लगती थी।

वर्षा का मौसम था। लेखक अपने भाई के साथ स्कूल से अपने गॉव आ रहे थे। तब एक रात के समय एक पंडित के घर पर पनाह मांगते है। पंडित को प्रारंभ में सोनकर और उनके भाई की जाति का पता नहीं था। उनके भोजन और निवास का प्रबंध पंडित के घर पर किया जाता है। लेकिन बातचीत में सोनकर की दलित जाति का पता चल जाता है। तब पंडित रात के समय दोनों भाईयो को अपने घर से जबरदस्ती से निकाल देता है। यहॉ पर जाति देखकर ही उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया है।

लेखक और उनका भाई दोनों बिंदकी से नसेनियॉ अपने गॉव पैदल जा रहे थे। जून का महीना था।दोनों को प्यास लगी थी। ऐसी स्थिति में एक सवर्ण व्यक्ति के कुअे पर जाकर दोनों भाई बाल्टी लेकर अपनी प्यास बुझाने का प्रयास करते हैं। जब इस बात का पता सवर्ण कुअे मालिक को चल जाता है। तब दोनों के

साथ जबरदस्त मार-पीठ हो जाती हैं। केवल उनकी जाति दलित है, इसलिए उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में जाति के आधारपर ही श्रेष्ठता सिध्द की गई है। भारतीय संविधान यह मानकर चलता है कि, हम सब एक होकर समता के साथ एकदूसरे के साथ व्यवहार करते हैं। सोनकर के घर पर उनके कोई रिश्तेदार आ गए है। सोनकर के आँगन रात्रि के समय चारपाई पर सब लोग बैठकर चर्चा में शामिल है। उसी समय शिवभजन अवस्थी वहाँ पर आ जाते है। उनका कहना यह है कि, शिवभजन अवस्थी सवर्ण है, तो उनके सामने दलित व्यक्ति ने चारपाई पर बैठना नहीं चाहिए। यह उनका अपमान है। इस बात को लेकर सोनकर और अवस्थी के बीच संघर्ष हो जाता है।

शिवभजन अवस्थी अपने गॉव में मंदिर के गुबंद की पुताई कर रहे है। यहॉ एक बात विशेष उल्लेखनीय रही है कि, दलितों को दलित होने के कारण मंदिर प्रवेश प्रतिबंधित होता है। लेकिन मंदिर की गुबंद की पुताई के लिए सोनकर को उपर चढाया जाता है। कैसी यह इंन्सानियत पाठ अभियान में सहयोग देता है, लेकिन सोनकर पाठ प्रक्रिया में योग देने से रोका जाता है, सब लोगों के सामने उनका अपमान किया जाता है।

नसेनियॉ गॉव में प्रतिवर्ष अखंड रामायण का पाठ चलता है। गॉव के सब सवर्ण लोग उसमें सहयोग देते हैं। एक मित्र के अनुरोध दलित सोनकर इस शामिल हो चुका है इस बात का पता जब सोनकर के पारंपरिक प्रतिद्वंदी शिवभजन अवस्थी को चल जाता है। तब वो आगबगुला हो जाता है।

सोनकर के गॉव में दलित-सवर्ण समाज के बीच संघर्ष होता है। ऐसा संघर्ष भारत के प्राय: सभी गाँवों में छीड गया है। गॉव के सवर्ण लोग मुनादी करक अपने खेतों में दलितों को रोजगार के लिए प्रतिबंधित कर देते हैं। दलित लोगों का आर्थिक स्तर अच्छा न होने के कारण उनकी हालत गंभीर हो जाती है। दलितों की आर्थिक नाकाबंदी होने के अभियान में सवर्ण सफल हो जाते हैं।

विवेच्य आत्मकथा में शिवदत्त मिश्र नामक पात्र है, जो मानो सोनकर का पारंपरिक प्रतिद्ंवदी कहा जा सकता है। वह गॉव का महाजन है, जो भारत वर्ष के ग्रामीण व्यवस्था का प्रतिनिधित्त्व कर रहा है।जो गाँव के दीन, दलित, शोषित पीडित लोगों की दबी आर्थिक नस पहचानकर उन्हें आवश्यकता पडने पर ब्याज पर पैसे तथा अनाज देता है, और बाद में दुगने-तिगने दाम से वसूल करने का कार्य करता है। शिवदत्त मिश्र शिवमोहन चाचा के घर पर जाकर ब्याज के वसूलने हेतु पहले पैसे चुकाने के बाद भी उनकी भैस खोलकर ले आता है। इसी आयाम के बहाने आर्थिकता के परिप्रेक्ष्य में देशकाल और वातावरण का चित्रण हुआ है।

शिवभजन अवस्थी गॉव का एक प्रतिनायक श्रेणी का पात्र है। इस पात्र के बहाने लेखक सोनकर ने भदइया चमार को बंधक बनाने के प्रसंग पर प्रकाश डाला है। अवस्थी के चंगुल से भदइया को छुडाने के अभियान में सोनकर के साथ उनका दलित युवा आंदोलन कार्यरत है। इसी बहाने सोनकर ने दलित युवाओं को संघठित होकर सवर्ण व्यवस्था के विरोध जंग छेडने की आवश्यकता है। इस पक्ष प्रकाश डाला है।

आज स्वतंत्र भारत में दलित कितना भी पढा-लिखा क्यों न हो उसकी उपाधियॉ, शिक्षा सवर्ण व्यक्ति के सामने कुछ भी नहीं है। इस कथन का सुंदर प्रसंग लेखक का भाई अजय इलाहाबाद विश्वविद्यालय की एम.ए. की उपाधि प्राप्त करके अपने गॉव आ गया है। हरिशंकर अवस्थी उनके घर जाकर अजय को अपने घर पर कंडा ढुलवाने के लिए जबरदस्ती उठा के ले जाता है। प्रारंभ अजय और उसका परिवार अवस्थी का विरोध करता है।

विवेच्य आत्मकथा में होली के अवसर पर जो सामाजिक कुरीतियॉ चल रही इस बात पर प्रकाश डाला गया है। इस अवसर पर सवर्ण समाज के लोग दलित स्त्रियों को भद्दी गालियॉ देकर उनके प्रति अपना भोग्या, हंसी मजाक का दृष्टिकोण अपनाते हैं। जिसकी सोनकर भर्त्सक शब्दों में आलोचना की है। यह प्रसंग सवर्ण भारतीय समाज की दलित स्त्रियों के प्रति दृष्टिकोण पर प्रकाश डालता है।

सोनकर इस बात को स्वीकार किया है कि, मुझे संघर्ष करने की प्रेरणा सिर्फ डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर के जीवन कार्य से ही प्राप्त हुई है। यह प्रसंग भी देशकाल और वातावरण के अभिनिवेश को अभिव्यक्ति देता है।

विवेच्य आत्मकथा में चित्रित लोकगीतों के माध्यम से भी देशकाल और वातावरण को भी सुंदर अभिव्यक्ति प्राप्त हुई है।जिसके माध्यम से लेखक ने एक सामाजिक प्रतिबध्दता को अभिव्यक्त किया है।

गॉव में लगने वाले 'जादुगारों के कमाल' इस परिच्छेद में सोनकर ने देशकाल और वातावरण से संबंधित सांस्कृतिक अभिनिवेश आयाम दिया है।

राष्ट्रभक्त तिवारी व खटिक परिवार इस परिच्छेद के बहाने '15 अगस्त' और '26 जनवरी' के कार्यक्रमों का उल्लेख मिलता है, जो विवेच्य आत्मकथा का देशकाल और वातावरण को बलशाली बनाता है।

इंद्रजित सिंह के बहाने गाँव के स्तर पर चलने वाली गुंडागर्दी की ओर लेखक ने पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया है। जो स्वाधीन भारत में प्रचलित गुंडों की गंभीर समस्या के प्रति लेखक चिंतित दिखाई देते हैं। स्वतंत्र भारत में राजनीति का जो अपराधीकरण हो रहा है। जो काफी चिंतित दिखाई देता है। यह प्रसंग भी भारत के देशकाल और वातावरण को अभिव्यक्त करता है। इस पक्ष का अच्छा उदाहरण हफीज मियॉ के छोटे भाई का कत्ल का प्रसंग उल्लेखनीय रहा है।

सोनकर जब कोरिया इंटर कॉलेज में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, तब बांग्लादेश आझाद मनाने का जश्न मनाया गया था। इस पक्ष का उल्लेख विवेच्य आत्मकथा में मिलता है। जो देशकाल और वातावरण की अभिव्क्ति देता है।

दलित उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारियों को सवर्ण मानसिकतावाले लोग अपनी श्रेष्ठ जाति के सामने हीन मानते हैं। आर.डी.सोनकर के खिलाफ षडयंत्र भी सवर्ण मानसिकता का पर्दाफाश कर देता है।

भारत में जब से संविधान का कार्यान्वयन हुआ है, तब से सदियों से हाशिए पर रहा दलित समाज देश की मुख्य धारा में शामिल हुआ है। सोनकर ने अपनी जाति के कई उदाहरण दिए है। जिसमें उनके करीबी रिश्तेदार उच्चशिक्षा ग्रहण करके उच्च पदस्थ सरकारी अधिकारी बन गए है। यह विवरण भी देशकाल और वातावरण सुंदर अभिव्यक्ति करता है।

विवेच्य आत्मकथा के समापन के पूर्व लेखक सोनकर ने लेखक लोगों की राजनीति अर्थात् मंचीय कवि की तिकडमबाजी पर प्रकाश डाला है। जो उनकी बेबाकी के साथ लेखकों की राजनीति पर कोडे बरसाने का कार्य करती है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. **बहुविकल्पीय प्रश्न–**

    1. सन् 1972 ई. में कानपुर के देहातों में..........देश आजाद का जश्न मनाया गया।

        अ. श्रीलंका ब. भारत क. जापान ड. बांग्ला

    2. रुपनारायण सोनकर ने .... संघर्ष की प्रेरणा प्राप्त की है।

        अ. डा.बाबासाहेब आंबेडकर ब. म.गांधी

        क. पं. नेहरु ड. मधु दंडवते

    3. इंद्रजित सिंह.... था।

        अ. विदेशी ब. खिलाडी क. समाजसेवक ड. गुंडा

    4. हरिशंकर अवस्थी अपनी........... के साथ मारपीट करता था।

        अ. मॉ ब. बहनों क. पत्नी ड. भाईयो

    5. शिवदत्त मिश्र का व्यवसाय......... था।

        अ. सूदखोरी ब. खेती क. व्यापारी ड. शिक्षक

2. **उचित मिलान करे।**

1. लखनासिंह	अ. साहसी
2. हफीज मियॉ.	ब. खटिक परिवार
3. दलित बांकेलाल	क. जामिया इस्लामिया विश्वविदयालय
4. बिंदकी	ड. परिश्रमी किसान
5. अजय नावरिया	इ. गुंडा

उचित मिलान उत्तर–

1–इ, 2–ड, 3–अ, 4–ब, 5–क

3. उचित मिलान करें

1. देहातों में दलितों को दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाता है, अतएव उन्हें नगर की ओर जाना चाहिए।

उत्तर – पहला सही और दूसरा भी सही है।

2. सोनकर का सोहनपाल सुमनाक्षर का वैचारिक संघर्ष हुआ था। जिसके कारण दलित साहित्य व सांस्कृतिक अकादमी भारत का जन्म हुआ।

उत्तर – पहला सही और दूसरा भी सही है।

3. ओमप्रकाश वाल्मीकि को नाटयरत्न उपााधि प्राप्त हुई जो महामहिम राज्यपाल श्री सुदर्शन अग्रवाल के हाथों प्राप्त हुई थी।

उत्तर – पहला गलत और दूसरा सही है।

4. सोनकर के भाई का विजय था, जिसे इंद्रजित सिंह ने कंडे उठाने के लिए मजबूर किया था।

उत्तर –पहला गलत और दूसरा भी गलत है।

2. सोनकर कहते है कि, जो गलती डॉन क्विक जोट ने की थी, वह मैं नहीं दोहराना चाहता था।

3. उत्तर –पहला सही और दूसरा भी सही है।

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1. जंग – शत्रू के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष करना।
2. दांतोंतले – उंगली दबाना (मुहावरा) – आश्चर्य चकित होना।
3. बल्लम – प्लंड, बल्ला, सोटा। डंडा
4. ताज्जुब – आश्चर्य
5. कौम – वंश परंपरा के विचार से किया हुआ मानव समाज का विभाग
6. मातम – शोक प्रकट करना
7. बरगद – वटवृक्ष
8. टपका – पका हुआ आम

9. फरेबी – छल, कपट, धोखेबाजी

10. कौरव – महाभारत कालीन प्रमुख

11. माकुल – खोई हुई चीज

12. थाह – अंथ

13. खजुराहो की मुर्ति – प्राचीन शिल्प, मूर्ति कला का अद्‌भूत संगम

14. मुनादी – किसी बात को वह घोषणा जो कोई मनुष्य डुग्गा या ढाल अदि पीटता हुआ सारे शहर, ग्राम में फिरता है। (मराठी में ''दवंडी देणे''.)

15. छठी का दूध याद करना – बहुत बडी मुसीबत या कष्ट आ पडना

16. पसेरी – पांच सेर (परंपरागत भारतीय परिमाण)

3.6 सारांश

1. रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित 'नागफणी' आत्मकथा बहुचर्चित आत्मकथा रही है।

2. सोनकर नि:संदेह उसके नायक है। वह एक सामान्य दलित परिवार से आए है।

3. पारिवारिक संस्कारों के कारण ही वे उच्चशिक्षित होकर भारत सरकार के उच्च पदस्थ अधिकारी रहे हैं।

4. उन्होंने अपने जीवन में करीब से देखा था, उसे उन्होंने भोगा है, उसे ही अपने साहित्य में लिपिबध्द करने का कार्य किया है।

5. नागफणी समकालीन संदर्भ में लिखी गयी दलित आत्मकथा है।

6. विवेच्य दलित आत्मकथा में स्थल, काल और समय अर्थात् देशकाल और वातावरण का सुंदर निर्वाह हुआ है।

7. विवेच्य आत्मकथा की यह एक विशेषता रही है कि, उस आत्मकथा का कोई खंड या अंश का आस्वाद लेते समय वह अपने आप में परिपूर्ण लगता।

3.7 स्वाध्याय

दीर्घोतरी प्रश्न

1. रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित ''नागफणी'' आत्मकथा के आधार पर नायक का चरित्र चित्रण कीजिए।

2. ''नागफणी'' में चित्रित देशकाल और वातावरण का निर्वाह किस प्रकार हुआ है, विवेचन कीजिए।

3.8 क्षेत्रीय कार्य–

1. अपने जिले में कार्यरत दलित साहित्यकारों के साथ साक्षात्कार कीजिए।
2. मराठी दलित आत्मकथा की विकास यात्रा में प्रमुख आयामों का विवेचन कीजिए।

3.9 अतिरिक्त अध्ययन के लिए–

1. आयदान – उर्मिला पवार
2. छप्पर – जयप्रकाश कर्दम

❑❑❑

इकाई –4
‘नागफनी’ – भाषा–शैली, उद्‌देश्य एवं समस्याएँ

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 ‘नागफनी’ और रुपनारायण सोनकर

4.3.2 ‘नागफनी’ की भाषा शैली

4.3.3 ‘नागफणी’ आत्मकथा में चित्रित समस्या

4.3.4 ‘नागफणी’ का उद्‌देश्य

4.4 स्वंयम अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द शब्दार्थ

4.6 स्वंयम अध्ययन के प्रश्न

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

4.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप–

- दलित आत्मकथा की भाषा शैली से परिचित होंगे।
- ‘नागफनी’ आत्मकथा लेखन का प्रयोजन समझेंगे।
- ‘नागफनी’ में चित्रित समस्याओं से अवगत होंगे।
- ‘नागफनी’ आत्मकथा का उद्देश्य को समझेंगे।

4.2 प्रस्तावना

रुपनारायण को हिंदी दलित साहित्य में विशेष लेखक के रुप में माना जाता है। दलित साहित्य के विभिन्न विचारों को विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुत करने में ‘नागफनी’ आत्मकथा को विशेष माना गया है। धर्म जातिगत, भेदभाव, वर्ण व्यवस्था के विभिन्न विचारों के माध्यम से जनता के समक्ष रखने में सक्षम रहे

हैं। रुपनारायण सोनकर ने उपन्यास, नाटक कहानी और आत्मकथा के माध्यम से दलित जीवन को यर्थाथरुप में प्रस्तुत किया है। उनकी रचनाएँ केवल दलित वेदना को प्रस्तुत कर समाज में तेढ निर्माण नहीं करती बल्कि उसे समस्याओं से बाहर निकालने का रास्ता और उपाय बताती है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 नागफनी और रुपनारायण सोनकर

रुपनारायण सोनकर द्वारा रचित बहुचर्चित आत्मकथा है। आत्मकथा में वर्ण, जाति, आदि के आधार पर प्रसंग की चर्चा चित्रण है। आत्मकथा में सवर्णों दलितों के बिच संघर्ष, चुनौतियाँ आत्मकथा के माध्यम से सामने आती है। समकालीन आत्मकथाकारों ने समाज के विभिन्न पहलुओं द्वारा ब्राह्मणवादी नीतियों एवं स्थितियों पर अवश्य विचार किया है। समाज के बडे हिस्से को सुख सुविधाओं से वंचित रखने का कृत्य हुआ रहा है। बजरंग बिहारी तिवारी लिखते हैं कि बेराक दलित आत्मकथाओं ने अपना प्रयोजन सिध्द किया है। ये अपनी समाज का प्रामाणिक आईना बना। ''.... स्मृतियाँ की धरोधर बचाये रखने, अतीत को समझने, इतिहास के प्रति मुक्त होने आत्मकथा लेखन की सार्थक भूमिका हो सकती है।''

यह आत्मकथा एक प्रकार से आत्मावलोचन न होकर एक नाटकीय रुपांतरण है। वैसे भी रुपनारायण सोनकर मूलत: नाटककार ही थे। तथा उनकी आत्मकथा की शुरुआत भी एक नाट्य प्रसंग से कराते हैं। लोहे की छडे, गरम करके दोनों गालों को चिरकर आरपार निकाल जाता है। न खून बहता और न जख्म। इसे सांग निकलना कहते हैं। बचपन से लेखक इसप्रकार का काम करते हैं। दलित महिला सांग के अवसर पर सवर्ण स्त्रियॉ अपने सिर पर पानी से भरा कलश लेकर मंदिर की ओर निकलती है। एक सवर्ण स्त्री थकने पर दलित स्त्री उसका कलश अपने सिर पर लेती है। तब ब्राह्मण उसकी पिटाई करते हैं। विद्रोही सोनकर सवर्णों के सम्मुख चुनौतियाँ खडी कर देते हैं। लेखक किशोरवस्था से बहुत अच्छे कुस्ती खेलते थे। एक बार स्पर्धा में वे एक सवर्ण को कुस्ती में हरा देते हैं। परिणाम उनकी पिटाई होती है।

एक दिन लेखक को खेत पर काम करते समय अधिक प्यास लगती है। इस कारण सवर्ण के कुएँ से पानी निकालते है। एक लोटे पानी के लिए सवर्ण उनका दो खून बहाता है।

एक बार सोनकर अपने मेहमानों को अपने घर में चारपाई पर बिठाते हैं। वहाँ से गाँव का सनातन ब्राह्मण जा रहा था। वह देखकर आग बबुल होता है और सोनकर की पीटाई करता है। सोनकर आक्रमक कृति से गाँव के ब्राह्मण उनके उपर क्रोधित होते हैं। सभी दलितों का बदला लेना चाहते हैं। फैसला करते हैं दलित ब्राह्मणों के खेतों पर से जा नहीं सकते हैं। रास्ता तो एक ही था जो खाटिक, ब्राह्मण, एक रास्ते से जाते थे। परंतु ब्राह्मण अपना फैसला वापस लेते हैं। गाँव का सुदखोर ब्राह्मण देवदत्त मिश्र पसेरी धान उधार देता है। बदले में 12 मन धान उठाता है।

सोनकर जी के भाई एम. ए. होते हैं। मगर ब्राह्मण को इस बात से आता है। पडोस का ब्राह्मण इसे कण्डों को शकरी में भरकर बर के बरादे में जमा कर देने का आदेश देता है। जबरदस्ती काम करवा लेता है।

होली के अवसर पर गाँव के सवर्ण विशेषत: को लेकर अश्लील फब्तियाँ कसते है। परिणाम लडाई झगडा होता है। एक संदर्भ में परिश्रमी और कंजूस हफीज मियाँ का प्रसंग चित्रित है। अनेक प्रसंगों के अलावा लेखक की अंधविश्वासी भाग्यवादी प्रवृत्ति पर प्रकाश डाला है।

4.3.2 'नागफनी' की भाषाशैली

आत्मकथा व्यक्तिगत जीवन के यर्थाथवादी अनुभव को बताती हैं। लेखक ने बचपन से अधिकारी बनने तक के अनुभव को शब्दों में चित्रित कर दिया। अनुभव बताने के तरीके से उत्कठता एवं जिज्ञासा बढती है। फिर भी इस आत्मकथा में अनेक प्रकार की शैलियों को चित्रण हुआ है। जैसे भावात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग मिलता है।

4.3.2.1 सहज और सुलभ भाषा –

उन्होंने रुप नारायण सोनकर एक प्रसिध्द साहित्यकार है। उनकी आत्मकथा की शैली सहज और सुलभ है। उन्होंने बढ़े सरल शब्दों का प्रयोग किया है इसलिए आत्मकथा की कहानी सहज ध्यान में आती है। अत्यंत सरल शब्दों के साथ प्रसंग को बुना है। उदा– ''तुमसे ज्यादा सुदंर कौन होगी? विश्व की कोई भी सुदंरी मेरी ग्रामीण सुदंरी से मुकाबला नहीं कर सकती है।''

इस प्रकार की भाषा से प्रसंग और कथानक का मायना समझ में आता है। लेखक की आत्मकथा के संवाद और भाषा सरल है। यह बात भी माननी पडेगी। वाक्य के उच्चारण से ही घटना, स्थल और अर्थ समझ में आता है।

4.3.2.2 गालियाँ युक्त शब्दों का प्रयोग –

मूलतः यह आत्मकथा सवर्ण दलितो के संघर्ष की कहानी है, इसलिए आत्मकथा में बहुत सारे प्रसंग की शुरुआत युध्द, झगडे एवं गालियाँ से होती है। हरिशंकर लेखक की गोरी काया को देखते हैं और गालियाँ देता हैं 1) 'साला'! हीरा अकड कर चलता है।

2) ''साले! ऐसा तर्क दे रहा है। तेरी जबान काट डालूगा।''

3) ''साली ! हमें तू इसलिए मना कर रही है तू अपने पति के साथ जो रासलीला करती है कहीं दिखाई पड न जाए।''

4) होली जलने पर सवर्ण दलित औरतों को गालियाँ देते हैं – होली का बल्ला तरे तरे चमारिन चो... परे परे।''

5) होली का बल्ला तरे – तरे

खटिकिनिया चो.... परे परे''।

हरिशंकर अवस्थी दूसरी गाली देता है –

''होली का बल्ला तरे-तरे''

त्ब शिव भजन उछलकर गालियाँ गीतों में देता है।

''होली का बल्ला तरे-तरे

भंगनिया चो परे- परे'' और आगे चिलाता है।

''बुरा न मानो होली है।

बामन का ल....घसेरा है।

दलित औरतों की मारी है।'' इस प्रकार की गालियाँ देते हुए एक दूसरे पर ईंट पत्थर फेंकते हैं। इस तरह के त्योहार में भी एक दूसरे के प्रति कितनी घृणा है यह बात सामने आती है।

एक और प्रसंग मे गाँव का बकेलाल दलित किसान रामचंद्र द्विवेदी के खेत से गन्ना तोडकर तीन टुकडें बहन और चाची को खाने को देता है। तब

1) ''साले अपने बाप का खेत समझकर गन्ना तोडकर चूस रहे हो''

2) ''साले! अच्छुतो ने हाई स्कूल इंटर क्या पढ लिया अपने आप को गवर्नर समझने लगे।''

3) ''तेरी बहिन और चाची को भी गन्ना चूसने में मजा आ रहा है और कुछ चूस दिया करे तो और भी मजा आ जाएगा।''

4) और कुछ चूसना है तो तूम दोनों औरते गन्ने के खेत के अंदर चलो.........

5) शाबास श्रावण! पटक दे साले हिरवा को'' जगदंबा पर बलात्कार करने के बाद लखनसिंह को फौजी गालियाँ देते कहता ''- अब साले तू नहीं बचेगा।''

6) ससूरी खटिकिन तेरी यह हिम्मत देवी के कलश को अपने सिर रखकर भ्रष्ट किया

4.3.2.3 कहावतों का प्रयोग :-

प्रस्तुत आत्मकथा में लेखक उनकी खाटिक भाषा की कहावते और अन्य भाषा के कहावतों का बार-बार प्रयोग करते हैं। उदा-

1) जिस आदमी के सर के बगल से साँप निकल जाता है यह आदमी बहुत भाग्यशाली होता है।''

2) मेहनत कोई करे मौज दूसरे करें।

3) दाँतों तले उंगली दबाए

4) कंडा ढूलवाना - ''चाचाजी मैं एम.ए हूँ कंडा ढूलवाते अच्छा लगेगा।''

5) ''गु से सना बेर''

4.3.2.4 अंलकारिक भाषा का प्रयोग –

1) पानी पी कर मेरी प्यास बुझ गई थी। पानी मेरे शरीर में पेट्रोल का काम कर रहा था। मेरे शरीर रुपी बहन को मेरी हद्या ड्राईवर तेजी से भगा रहा था। पैर रुपी पाहिए तेजी से कच्ची सडक पर दौड रहे थे। मैं उबड – खबड सडक को पार करते हुए तेजी से गाँव पहुँचा। इस प्रकार रुपक भाषा का प्रयोग करके नागफनी आत्महत्या में सत्य बात बताते हुए लेखक इसप्रकार की अलंकारिक भाषा का प्रयोग कर सकता है यह भी सामने आता है।

2) ''मेरे सामने चन्द्रमा की रोशनी में कोकरी के बाहर मेरी मृत्यु खडी थी। में माँ से घुसा एक तेंदुआ था जिसको मारने के लिए खुंखार शिकारी घात लगाए थे।'' लेखक गंभीर प्रसंग को भी अलंकारिक भाषा में सुंदर विवेचन करते हैं।

3) ''जब जब इस धरती पर इस तरह के अत्याचार हुए है। तब–तब यह प्रकृति कोई अदृश्या शक्ति उनके घमंड, गुरुर उनको तथाकथित साम्राज्य को दीमक की तरह खांखला करती हैं।

4) ''काली रात बीत चूकी थी। चिडियाँ चहचहाने लगी थी।'' आसमान में लालिमा छाई थी। सुरज उग रहा था।

5) ''शायद वर्डसवर्थ की कविता को पढाते वक्त उत्तेजक बना रही थी। लगता था कोई मदमस्त यौवन गुलाब के फुलों का गुच्छा अपने सर के बालों पर लगाकर कमरे में घुस आई हो।''

अपना दर्द बताते और नागफणी का अर्थ बयान करते लेखक लिखते हैं – नागफणी से जुडा जातिवाद का कांटा मेरे कैरिअर में चुभ गया था। वह कांटा आज भी मेरे नागफनी अपने आप खेतों में पैदा होती है। शहरी भारत में बगीचा और घरों में नागफनी गैर–दलितों द्वारा पनमाई जाती है। लेकिन कांटे दोनों के नुकीले होते हैं। दोनों दलितों के बदनों पर बाब करते हैं जख्मी करते हैं। दलितों का लहू बहाते हैं।''

4.3.2.5 तिरस्कृत भाषा शैली का प्रयोग –

इस आत्मकथा का नायक पात्र हीरा पैलवान दलित समाज का है। वह कुस्ती के खेल में तेज–तराह था। आज तक वह कभी हा नहीं था। सवर्ण लोग इस बात को लेकर हैरान थे। इसलिए हर साल कुश्ती दलित–दलित के साथ, सवर्ण–सवर्ण के साथ लडने का प्रावधान रखा था। इस पैलवान की कुश्ती हर साल किसी चमार जाति के पैलवान से होती थी। हिरा हर साल जीत जाता था। उसके मन में खुब इच्छा पैदा होती थी कि उसकी कुश्ती गैर दलित के साथ हो जाए। उस समय ब्राह्मण सोचते थे। किसी भी तरह दलित हीरा को हराना चाहिए। इसलिए उसकी कुश्ती तगडे ब्राह्मण के साथ लडवा दी जाती है। सभी ब्राह्मण एक महायुध्द की दृष्टि से इस प्रसंग को देखते अत्यंत तिरस्कृत भाषा में लिखते हैं – शाबास! शाबास! पटक साले हिरवा को।'' मार दे साले को इस तरह बडे ही तिरस्कृत से बोलते नजर आते हैं। लेकिन अंत में ही सवर्ण युवक को पटक कर कुश्ती जीत जाता है।

2) शिवभजन अवस्थी गुस्से से बोला'' ये साली बहुत पटर-पटर कर रही है इसके बाल पकड कर घसीटो और इसको नंगा कर दो......अवस्थी ब्राह्मण है और वह औरत दलित है इसलिए उसके बारे में तिरस्कृत भाषा का प्रयोग करता है।

3) सारे ब्राह्मण चिल्लाने लगे ''गाँव का कोई भी दलित कही भी हमारे सामने चारपाई पर बैठ नहीं सकता

4) एक ब्राह्मण बोला - ''यह तो पैर हमारे पहले भी छुते थे। अब कलेक्टर बनने के हमारे पैर छू रहे हैं तो इसमें कौनसे नई बात है।

5) ''साले! खडा खडा क्या ताक रहा है - रख रामायण ''साले! हम लोग के बीच बैठकर कैसे रामायण की चौपाई पढ रहा है। इस साले अछूत को किसने चौपाई पढने के लिए कहा?

4.3.2.6 व्यंग्यात्मक भाषा शैली का प्रयोग –

प्रस्तुत आत्मकथा में सवर्ण -दलित संघर्ष रहा है। इसलिए व्यंग्य से ताना बाना मारना स्वाभाविक है। कुछ व्यंग्यात्मक वाक्य उदा. सहित

''साले! अच्छूतों ने हाई स्कूल इण्टर क्या पढ लिया अपने आपको गवर्नर समझने लगे।''

''आप यह बात शिवभजन अवस्थी को जरुर बताना कि ब्राह्मण काले क्यों होते हैं?''

''साले ऐसा तर्क दे रहा है। तेरी जबान काट डालूंगा।''

''सुहागरात में पाप कहाँ होता है? सुहागरात में पुण्य ही पुण्य होता है।''

''आप उनकी विशेषताएँ बताइए।''

''उनकी कोई खास बात बताइए।'' क्या आप उन्हीं की तरह ईमानदारी से कार्य करेंगे?''

''बनिया शराब पीता है। शराब बहुत मंहगी होती है व्यवसाय करते हैं.... इसलिए बनिया शराब पीता है। पंडित शराब नहीं पीता तब भी गरीब होता है।''

''सास रुपी बुलडोजर जब घर में चलता है। घर जमाई, सभी ड्राईवर, घर की शनिप्रिय दीवारों को। नीव सहित न्हाता है।''

''साली चुलबुल बनकर, कोयल सी गती है। वानर सी फुदक फुदक कर जीजा को तंग करती है। साली सबको भाती है। अपनी मुस्कुराहट से लडकों को तरसाती है।

4.3.2.7 लोक भाषा और लोक गीतों का प्रयोग

जलती होली के सामने दलित, वाल्मीकि, ठाकुर, यादव, कुर्मी, ढोलक आदि ढोलक मजीरा बजाकर 'फाग' लोक गीत गाते हैं।

त्यौहार है वही

लेकिन बदल गए हैं
मनाने के ढंग
मानव और दानव में
छीड गई है जंग
दानवी पुतले
सजीव हो गए हैं
इसीलिए त्यौहारों में
नेक इंसान जब रहे हैं।''

लोकगीतों द्वारा दलित लोग होली मनाते हैं। आत्मकथाकार के नाट्य संग्रह का विमोचन व्ही पी सिंग जी ने किया उस समय लिखी गई कविता थी।

नहीं चाहता एटम बम बनकर
दूनिया को दहलाऊँ
नहीं चाहता ब्रह्म बनकर
सृष्टि का खेत रचाऊँ
मैं चाहता हूँ रोटी बनकर
भूखों की भूख मिटाऊँ
उनकी अगली कविता व्ही.पी सिंग जी पर इस प्रकार थी।
राजा साहब जैसे पी. एम
कभी-कभी होते हैं
जो आते हैं एक बार धरती पर
अपनी कार्यों पर के बल पर
रहते हैं दुनिया में सदैव अमर

4.3.3 'नागफनी' आत्मकथा में चित्रित समस्याएँ

प्रस्तावना:- भारतीय समाज वर्ण- व्यवस्था आधारित है। इसका विकसित रुप जाति व्यवस्था है। व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है। वह उसकी जाति कहलाती है। वेद, पुराण आदि में इसका उल्लेख मिलता है। ब्राह्मण का उच्च कोटि में होने से उच्च माना जाता है। जाति प्रथा में जन्म ही सबसे महत्वपूर्ण है। पुरोहित

का कहना है कि ''जाति का प्रमुख सिध्दांत है कि जन्म के आधार पर व्यक्ति बडा या छोटा होता है। इसलिए ब्राह्मण श्रेष्ठ है। शेष सभी उससे नीचे हैं। ये जातियाँ पिरामिड की शक्ल है।

जन्म आधारित असमानता, कार्य की श्रेणी और अपने समुह से बाहर विवाह पर प्रतिबंध आदि का नियम जाति के आधार है। इस जाति व्यवस्था का सबसे अधिक शिकार दलित हुए हैं। यह मनुष्यों के बीच भेदभाव, ऊच-नीच घृणा आदि का भाव पैदा करता है। समाज में विषमता फैलने का कार्य करता है।

1. जातीय भेदभाव समस्या-

आत्मकथाकार ने जातिवाद की समस्या को उजागर किया है। जैसे यह काम सडी लाश पर गंगा का जल छिडक कर उसे उभारने का काम किया है। आत्मकथा कार भाई के साथ रात के समय 'बिंदकी गाँव से नसेनियॉ जा रहे थे। रास्ते में बारिश होने लगी हैं। दोनों भीग जाते है। मिश्र जी दोनों को अपने घर में आश्रय देते हैं। पंडित मिश्रजी की बेटी उन्हें गरम पानी देती है। मिश्रजी अपने पायजमा और कुर्ता देते हैं। वे दोनों भाईयों के खाने का प्रबंध करते हैं। जब पंडितजी की माँ दोनों को जाति पूछती है, ''आप लोग कौन जात के हो'' तब लेखक अपनी जात खाटिक जात बतातें हैं। इतना सूनते ही उनका थाल उठाकर तुरंत रसोई घर में उठाकर ले जाती है और अंदर जोर से कहती है - तुम लोगों ने क्यों नहीं बताया तुम खाटिक हो। तुम लोग अभी जाओ, तुम लोगों ने यह जो कुर्ता-पायजमा पहन रखा है। अब हम इसको नहीं लेंगे। इसकी तुमको कीमत देनी होगी। इस तरह से बर्ताव करके दोनों भाईयों को रात के समय घर के बाहर निकाला जाता है।

दूसरे एक प्रसंग में ब्राह्मण जाति के लोग निम्न जातिवालों के लोगों को अपने खेती से पास से गुजारना बंद करवा देते हैं। मिश्रा गाँव में मुनादी करते कहता है ''दलितों को ब्राह्मण के खेतो से जाने के लिए प्रतिबंध लगाया जाता है। जो भी खाटिक, चमार, कोरी पासी उनके खेतो से होकर गुजरेगा उसकी हड्डी-पसली तोड दी जाएगी। ऐसा भेदभाव करके निम्न जाति के लोगों को परेशान किया जाता है।

2. कट्टरधार्मिकता की समस्या -

भारतीय समाज में दलित का स्पर्श वर्जित था। इस जाति के लोगों को धार्मिक अनुष्ठान करने का अधिकार नहीं था। अगर को दलित ऐसी गुस्ताखी करता तो सवर्ण समाज उसे तोहीन (अपमान, बेइज्जत) समझता था। इस आत्मकथा में हीरा के बचपन का प्रसंग इस बात की पुष्टी करता है। हीरा मंदिर के पास कुए से पानी भरने जाता है। उस समय कई सचान के लडके उन्हे जबरदस्त रामचरितमानस का पाठ करने के लिए ले जाते हैं। करीब आधा घंटे के बाद शिवभजन अवस्थी हीरा को पाठ करते हुए देखकर क्रोधित होते हैं। उसे देखते हुए कहते हैं, - ''साले! खडा खडा क्या ताक रहा है - रख रामायण।''

''साले! हम हम लोग के बीच बैठकर कैसे रामायण की चौपाई पढ रहा है।''

''इस साले अछूत को किसने चापाई पढने के लिए कहा?'' इस प्रकार की भाषा से सामाजिक कट्टरता और भी बढती है।

3. गरीबी की समस्या:–

प्रस्तुत आत्मकथा में गरीब दलित कलाकार की बात आती है। जब यह कलाकार – जादूगर अपनी कला दिखाते हैं। तब गाँववाले गरीब कलाकार की कला देखकर उसे बिना पैसे दिये। उसे आश्वासन और रोब दिखाए जानेवाले का लेखक वर्णन करते हैं। तमाशा खत्म होने के बाद ब्राह्मणों ने जादूगरों को अनाज और पैसा नहीं दिया। पैसा माँगने पर मिश्र और हरिशंकर अवस्थी आँखें लाल करके उसे दबाते कहते है। ''साला तुम्हे गर्व होना चाहिए कि तुम लोग जमीनदारों को तमाशा दिखा रहे हो। जब तक हम लोगों का आशीर्वाद तुम लोगों को नहीं मिलेगा, तुम्हारी कला अधुरी रहेगी। दलित जादूगर जोखिम भरे करतब दिखाने के बाद मन मसोसकर रह गया। करतब दिखाते समय यदि वह जखमी हो जाता है तो उसे अफसोस नहीं होता लेकिन ब्राह्मण के बेइमानी के करतब भरे खेलने उसे बहुत आहत कर दिया था।''

4. अस्पृश्यता की समस्या :–

अस्पृश्यता वह है, जो वस्तू या व्यक्ति धार्मिक ग्रंथों का आधार लेकर ब्राह्मण श्रत्रिय, वैश्य तथा शूद्र इन वर्णों का निर्माण किया है। भारत को छोडकर विश्व के किसी भी देश में चातुर्वर्ण्य जाति नहीं पाई जाती है। शुद्र वर्ण के साथ अमानवीय, असंवेदनशील, शारीरिक, मानसिक, अत्याचार किए जाते हैं। सवर्णो के घर तथा सार्वजनिक स्थलों पर दलितों का प्रवेश प्रतिबंधित रहे थे। जिस कुएँ का पानी भैस, बकरी, आदि जानवर पी सकते हैं। उसी कुएँ पर कोई दलित व्यक्ति जाकर अपनी प्यास नहीं बुझा सकता। आत्मकथाकार सोनकर स्कूल से अपने घर वापस आते समय उन्हें प्यास लगती है। प्यास बुझाने हेतु एक सवर्ण के कुएँ पर जाकर बाल्टी से पानी निकालकर पीने का प्रयास करने लगते हैं। उसी समय सवर्ण लोग आकर उन्हें छुआछूत की बाते करते उन्हें बेरहमी से पिटते हैं। अछूते को किसने चौपाई पढने के लिए कहा? शिवभजन अवस्थी के मतानुसार अछूत समाज को रामायण की चौपाई पढने का कोई अधिकार नहीं है। यहां पर अस्पृश्यता के भेदभाव परिलक्षित होते हैं। उसका मन तब शांत होता है। उसे कचोटते हुए गालियाँ देते कहता है ''यह अखंड पाठ खंडित हो जाएगा। इस अछूते को रामायण का पाठ पढने का कोई अधिकार नहीं है। इस तरह धार्मिक कट्टरता का सहारा लेकर दलित समाज का शोषण लिया जाता है। यही हरिशंकर अवस्थी अपने मोहल्लें के दो ब्राह्मणों को भेजकर भदइ्या चमार को जबरन पकडकर पिटाई करवाता है। लकडी के बडे डंडे से उसे निर्दयता से पीटता है ''गलती हो गई लम्बरी, गलती हो गई लम्बरी।'' दुबारा यह गलती नहीं करुंगा मुझे छोड दो'' इस तरह दया की भीख माँगता है। उसे मारते मारते डंडा टूट जाता है। तब उसे लाथों से मारता है। इसप्रकार सवर्ण समाज द्वारा असहाय–निर्धन, गरीब दलित समाज के लोगों का निर्ममता से शोषण करते हैं। आगे वह उसे चेतावनी देते हुए कहता है – साले अगर बकवास किया तो तुझे अपने घर के सामने रहने नहीं देगें। तुझे जमीन में गाड देगें

इस आत्मकथा द्वारा एक बात सामने आती है कि ब्राह्मण जोखिम भरा कार्य दलितों से करवा लेते हैं। आत्मकथाकार को मंदिर की पुताई करवाते हैं। जिसमें अधिक धोखा रहता है। लेखक उत्तरप्रदेश सरकारी कार्यक्रम में उच्च पदपर कार्यरत होते हैं। वर्ष में एकाध बार अपने गांव चले जाते हैं। उनका घर एक कोने में

हैं। एक दिन वे सरकारी गाडी में बैठकर अपने घर जाते हैं। उसी गली के ब्राह्मणों ने इकट्ठा होकर उनकी गाडी को रोक देते हैं और गाडी से नीचे उतारकर उनके घर पैदल जाने के लिए विवश करते हैं। गाडी चलाते ड्रायव्हर उनके पीछे पीछे आता है। मगर आत्मकथाकार पैदल चलते देखकर ब्राह्मणों को संतोष मिलता है। इस घटना से दलित समाज के प्रति अस्पृश्यता की घृणा स्पष्ट होती है।

5. दलित स्त्रियों की शोषण समस्या:–

भारतीय समाज में दलित समाज के प्रति घृणा है। इस सवर्ण समाज की यही धारणा है कि समस्त दलित जाति की स्त्रियाँ उनकी भोगवस्तु है। इसी कारण इस वर्ग का पुरुष वर्ग कोई न कोई बहाना बनाकर दलित स्त्रियों का मानसिक, शारीरिक, आर्थिक स्तरपर शोषण करता है। प्रस्तुत आत्मकथा का पात्र शिवभजन अवस्थी और उनका भाई अत्याचार और यौन शोषण करते हैं। कभी कभी यह मामला समाज के बीच न आए इसलिए उनपर दबाव डालकर उनका मुँह बंद किया जाता है।

6. सुदखोरी की समस्या :–

प्रस्तुत समस्या का चित्रण आत्मकथा के कई प्रसंग में आ गया है। प्राचीन समय से भारतीय दलित समाज आर्थिक स्तर पर कमजोर रहा है। ऐसी अवस्था में धन दौलत ज्यादा सवर्ण समाज दलितों को उनकी कमजोरी का फायदा उठाकर रुपये, धान आदि वस्तूएँ देकर उनको बदले में दुगना, तिगना, ब्याज वसूल करने का मानो अधिकार ही उन्हें प्राप्त हुआ है, ऐसा मानकर चलने लगे हैं। दलितों ने सवर्णो से रुपया पैसे आदि सही समय पर वापस न करने पर उनके पूरे परिवार को आर्थिक, मानसिक, शारीरिक यातनाओं का शिकार होना पडता है। आज स्वंतत्र भारत में संविधान के माध्यम से सुदखोरी पर संवैधानिक रुप में रोक लगाने की सफल कोशिश की गई है।

आत्मकथा में सोनकर के परिवारजनों ने गाव के सवर्ण शिवदत्त मिश्रा से पैसे उधार लिए थे। परंतु कुछ कारण वश सही समय पर पैसे न वापस करने पर शिवदत्त मिश्रा सोनकर की भैस जबरदस्ती से उठाकर ले जाने का प्रयत्न करते, गालियाँ देकर यहाँ तक मारने की कोशिश करते हैं। व्याज के बदले भैस ले जाने का नया ट्रेंड पनपता नजर आ रहा है।

7. जबरदस्ती से बंदी बनाने की समस्या:–

हरिशंकर अवस्थी नागफनी आत्मकथा का खलनायक है। एक गौण कथा प्रसंग में बंधक बनाने की समस्या चित्रित हुई है। हरिशंकर अवस्थी अपनी क्रुरता के लिए प्रसिध्द है। वह पहले पुलिस में नौकरी करता था। उसकी गलत हरकतों से उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। वह अमीर था उसने भदझ्याा चमार नामक दलित व्यक्ति को जबरदस्ती बंधक बनाकर अपने कब्ज में रखा है। जब यह बात उनके मिश्र को समझती है। तब वे लोग दलित युवकों का संघटन की सहायता लेकर – हरिशंकर अवस्थी के चंगुल से छुडाने का प्रयास करते और सफल होते हैं।

8. खेतों में प्रवेश प्रतिबंध समस्या :–

भारत में भारतीय समाज में राष्ट्रीय जायदाद, जमीन, पानी का जाति के आधार पर बंटवारा किया है। श्रेष्ठ जातिवालों ने अपनी सुविधा के नुसार जमीन पानी का बंटवारा किया है। बंजर जमीन शूद्रों के गले मार दी है। अमीरों की फरियाद सुनेवाले बहुत होते हैं मगर गरीबों फरियाद सुननेवाला कोई न था। सवर्णो के नाम पर हजारों एकड जमीन पहले से थी। परंतु दलितों के पास बापजादों के एक छटा भी जमीन न थी। ऐसी स्थिति में उन लोगों को रोजी रोटी के लिए सवर्ण लोगों के टुकडों पर ही पलना पडता है। किसी बात से गाँव में सवर्ण–दलित संघर्ष हो जाने पर दलितों को अपनी खेती में प्रवेश नही दिया जाता इस आत्मकथा में ऐसे कई प्रसंगों का वर्णन चित्रित हुआ है।

9. त्यौहार के अवसर पर दलितों को गालियाँ देने की समस्या :–

सोनकर जी उनके गाँव में होली के त्यौहार पर दलित स्त्रियों को भददी गालियाँ देकर आसुरी आंनद उठाने की प्रथा है। लेखक के गाँव के लोग दलित स्त्रियों को अश्लील, गंदी गालियाँ देकर अपनी असुरी आनंद को पूरे करते हैं। इस समस्या के कारण दलित नारियाँ त्यौहार के दिन बैचेन अशांत रहती है। इस समस्या ने भारतीय नारी की गरिमा को धक्का पहुँचा है। उन्हें अवमानित किया है।

10. राष्ट्रीय संपत्ति में विषम बँटवारे की समस्या :–

भारतीय समाज व्यवस्था चातुर्वर्ण्य पर आधारित है। जहाँ पर जाति के आधार पर राष्ट्रीय संपत्ति जायदाद का बँटवारा किया जाता है। यह बँटवारा विषमता को केंद्र में रखकर ही किया जाता है। सवर्ण व्यक्ति को हजारों बांधे जमीन दी जाती है। वही नियम दलित व्यक्ति को नहीं है। केवल हाशिए पर चरितार्थ चलाने हेतु आधा बांधे की जमीन जायदाद दी जाती है। इसका नतीजा यह निकलता है कि समाज व्यवस्था में दलित गरीब हो रह जाता है और सवर्ण ही दिन–ब–दिन अमीर बनता है। राष्ट्रीय संपत्ति का समानता के आधारपर, बँटवारा होना जरुरी है। जिससे देश बलवान बन सकता है।

11. दलित अत्याचार समस्या :–

सवर्ण लोगों ने संविधान अस्तित्त्व आने से पूर्व ही अपने सुविधा नुसार भारतीय समाज में मनुवादी कायदा–कानून बनाया था। संविधान लागू करने पश्चात् सवर्णो के मानसिकता में बदल नहीं आया वे दलितों पर अत्याचार करते रहे हैं।

स्वंतत्रता के बाद भी इन सवर्णो की मानसिकता में कोई बदला नहीं आ गया। प्रस्तुत आत्मकथा में एक प्रसंग के वर्णन में सोनकर बताते हैं कि वे अपने घर में चारपाई पर बैठे थे। इतने में उनका दुश्मन शिवभजन अवस्थी वहाँ आता है। सोनकर के गाँव में अलिखित सवर्णो द्वारा कई नियम बनाए गये। कोई भी व्यक्ति अपने घर में सवर्ण को सामने चारपाई पर नहीं बैठ सकता था। इस बात को लेकर अवस्थी सोनकर को उनके घर में मारने लगता है। दोनों का विषय यही था कि अवस्थी के सामने चारपाई पर बैठ नहीं सकता है।

दलित जाति के हीन लोग सवर्णो लोगों प्रति सम्मान का व्यवहार करते नहीं। इसलिए अवस्थी लेखक के घर पहुंचकर उन्हें मारने लगता है।

12. अंधविश्वास की समस्या :–

प्रस्तुत आत्मकथा में अंधविश्वास की समस्या से पीडीत समाज सामने आता है। जब सवर्ण किसी अच्छे काम के लिए निकल रहे हैं तब अगर कोई दलित सामने जाता है। तब अपना आज काम न होगा यह मानकर सवर्ण उस दलित को गालियाँ देता है। यहाँ तक उसे मार भी देता है। इस प्रकार के कई प्रसंग आत्मकथाकार सोनकर के जीवन में आते इसका चित्रण वे करते हुए इस समस्या पर उपाय भी बताते है।

13. चुनाव की समस्या :–

भारत लोकतंत्र प्रणाली का देश है। जहाँपर लोगों द्वारा लोगों के लिए प्रातिनिधिक रुप में सरकार बनायी जाती है। यह संसदीय कार्यप्रणाली है। गांव, नगर, तहसील, राज्य, दिल्ली तक यह लोकतंत्र प्रणाली कार्यान्वित रहती है। पांच साल में एक बार नोट देकर वोट खरीदकर लोकतंत्र का गला घोटने का काम किया जाता है।

14. बलात्कार की समस्या –

गाँव का इंद्रजीत सिंह दलित वर्ग की बहु–बेटी को उठाकर रात भर उनका लैंगिक शोषण करता था। ट्यूब में रात भर रखता था महिने हर पंद्रह दिन वह आकर जबरदस्ती युवा लडकियों को उठाकर ले जाता था। वह गाँव का ब्राह्मण था। बहुत खेती बाडी थी।

गाँव का लखनसिंह औरत और लडकियों को उठाकर ले जाता है। लखनसिंह जदम्बा नामक नव युवती पर जबरदस्ती बलात्कार करता है। जिसका विवाह हुआ था लेकिन सुहागरात लखनसिंह उसके साथ मना लेता है।

4.3.4 'नागफनी' आत्मकथा का उद्देश्य –

लेखक रुपनारायण सोनकर द्वारा लिखित 'नागफनी' में भोगे हुए यथार्थ का वर्णन किया है। सामान्य दलित समाज को प्रेरणा देकर अंबेडकरवादी विचारधारा को प्रेरित करने का उद्देश्य है। साहित्यकार अपनी भाषा की विशेषताओं पर जोर देते हुए परंपरागत साहित्यिक भाषा से अवगत करते हैं। आज भी देश में राज्यघटना का महत्त्व प्रतिपाद्य करते हैं। आत्मकथा में वर्णित विषय समाज में व्याप्त कुप्रथा, धार्मिक पाखंड, जातीय व्यवस्था, दलित नारी संघर्ष, अस्पृश्यता की समस्या, जाति भेद, शोषण की समस्या का गंभीर और विस्तार से चित्रण कर उससे संघर्ष करके मुक्ति पाने का संदेश भी दिया है।

लेखक रूपनारायण सोनकर जी ने नागफनी लिखते समय भोगे हुए यथार्थ का बयान में से अनेक उद्देश्य सामने आए हैं। जिसका महत्व आज भी है और कल भी रहेगा।

1) दलित समाज को अंबेडकर विचारों से प्रेरित करने का उद्देश्य:

सोनकर और उनके दलित समाज पर अनेक अत्याचार गांव में हुए। इससे आगे बढ़ने का साहस अंबेडकर विचारों से मिला था। समाज में धर्म जात, अमीरी गरीबी, से विपन्नता बडी तभी दलितों को आंबेडकर विचारो का सहारा मिला और प्रेरणा का स्त्रोत मिलेने कारण वे आगे बढ़ने के लिए काबिल हुए। इसलिए वे अपने अनुभव और बाबासाहेब अम्बेडकर के विचारों को प्रसारित करने के उद्देश से नागफनी लिखते हैं।

2) सामाजिक सामंजस्य महत्व बताने का उद्देश्य:

यह आत्मकथा केवल सवर्ण समाज के अत्याचार घृणात्मक व्यवहार का वर्णन बयान नहीं करती। बल्कि सामाजिक जिमेदारिया और महत्व बताने का उद्देश्य रखती है। सोनकर जी गांव से घृणात्मक व्यवहार मिलकर भी गांव की मिट्टी को भूलते नहीं है। उनके दृष्टि से सामाजिक महत्व सामंजस्य स्थापित करना महत्व पूर्ण है।

3) भोगे हुए यथार्थ अनुभव बताने का उद्देश्य:

लेखक को गांव के सवर्ण समाज से मिले अत्याचार प्रताडीतता, दुःखद, प्रसंग का सही वर्णन और भोगे हुए दुःख का यथार्थ वर्णन करने का आत्मकथा का उद्देश्य हैं ।

4) खाटिक समाज की भाषा परंपरा को बचाने का उद्देश्य:

नागफनी आत्मकथा मे समाज का चित्रण है। उसमे में भाईचारा की परंपराएं, संस्कृति, है। खाटीक समाज जिस पर भाषा का व्यक्तिगत व्यवहार में प्रयोग करता है। आज वही भाषा का प्रयोग कम हो रहा है। समाज से कई शब्द आज व्यवहार में न होने के कारण खाटीक समाज की भाषा का अस्तित्व का प्रश्न निर्माण हुआ है। लेखक समाज की भाषा के आस्तित्व को बचाना चाहते है। यही उनके जीवन मृत्यु का प्रश्न हैं। यह बताने का उद्देश्य आत्मकथा का है।

5) समाज की मानसिकता बदलने का उद्देश्य:

प्रस्तुत आत्मकथा द्वारा यही बताने का प्रयास है कि जब तक आप दलितों के प्रति धर्म जात और उसी की मान्यता की मानसिकता में बदल नहीं करेंगे। तब तक सामाजिक एकता प्रस्तापित नहीं होगी ।यही बताने का उद्देश्य आत्मकथा का है।

6) शिक्षा का महत्व बताने का उद्देश्य:

भूमि उत्पादन साधनों से वंचित रहकर भी व्यक्ति शिक्षा लेकर किस प्रकार प्रगति कर सकता है। यह केवल शिक्षा का ही परिणाम है। इसलिए लेखक प्रस्तुत आत्मकथा द्वारा शिक्षा का महत्व बताते हैं। तमाम भारतीय दलित को अपने प्रगति का मार्ग सक्षम करने के लिए शिक्षा एक साधन है। यही यह आत्मकथा द्वारा बताने का उद्देश्य।

7) राष्ट्रीय संपत्ति का समान बटवारा होना जरूरी है:

लेखक का मानना है। सवर्ण दलित समाज में संपत्ति का कम ज्यादा होने से सामाजिक दूरियां बन रही है। इसलिए संपत्ति का बटवारा समान रूप से होना चाहिए यही बताने का उद्देश्य प्रस्तुत आत्मकथा का है।

8) सड़ी हुई परंपरा को बंद करने का उद्देश्य:

आज भी भारतीय समाज के अनेक गांवों में त्योहार के अवसर पर किसी विशिष्ट जाती धर्म के लोगों को टारगेट करके गालियां दी जाती है। ऐसे राज्यों की परंपरा भारतीय समाज में टेड निर्माण कर रही है।जाति–जाति में भेदभाव निर्माण हो रहा है। यह बंद करने का उद्देश्य आत्मकथा रखती है।

9) दलित समाज की आवाज :

आत्मकथाकार ने अपने समाज का जो सरोकार को वाणी देने का प्रयास किया है। लेखक को अपने जीवन में बचपन एवं यौवन में था न जाने कितने अनुभव से गुजरना पड़ा है। उसी का यथार्थ दस्तावेज आत्मकथा है। आत्मकथा केवल सोनकर जी की आवाज नहीं है, बल्कि भारतीय दलित समाज की आवाज है। उसी को आप तक पहुंचाने का उद्देश्य यह आत्मकथा रखती है।

10) संविधान का महत्व प्रतिपादित करने का उद्देश्य:

भारतीय जनतंत्र में संविधान अर्थात राज्य घटना का महत्व अन्यन साधारण है। इसलिए देश में कोई भी प्रश्न राज्य में निर्माण हो जाए। उसका सही उत्तर संविधान दायरे में रखकर लिया जाता है। इसलिए उसका महत्व बताने का उद्देश्य प्रस्तुत आत्मकथा करती है।

4.4 स्वयंम अध्ययन के प्रश्न

1. बहुविकल्पी प्रश्न

1) रुपनारायण सोनकर का जन्म......गाँव में हुआ।

अ) उत्तर प्रदेश ब) बिन्दकी क) नसेलियाँ ड) फत्तेपुर

2) रुपनारायण सोनकर जन्म तिथि.........है।

अ) 4 अप्रैल 1962 ब) 1 जून 1967 क) 10 जनवरी 1961 ड) 12 मई 1960

3) रुपनारायण सोनकर के नाटक का नाम......है।

अ) एक और द्रोणाचार्य ब) आधे अधूरे क) महानायक ड) खाटिक का घर

4) 'डंक' उपन्यास का प्रकाशन.........में हुआ था।

अ) 2004 ब) 2010 क) 2009 ड) 2006

5) रुपनारायण सोनकर जी का तीसरा उपन्यास ....है।

अ) गटर का आदमी ब) सुअरदान क) डंक ड) एक दिष्टी कलेक्टर

6) 'विषधर' नाट्यसंग्रह का लोकार्पण मुख्यमंत्री.....ने किया।

अ) सुषमा स्वराज ब) शीला दीक्षित क) शील कौर ड) सोनिया गांधी

7) 'नागफनी' आत्मकथा का प्रकाशन......में हआ।

अ) 2000 में ब) 2007 में क) 2008 में ड) 2009 में

8) 'रहस्य नाट्य'संग्रह का प्रकाशन प्रधानमंत्री ....ने किया।

अ) पी. व्ही नरसिंहरावं ब) राजीव गांधी

क) लालबहादूर शास्त्री ड) व्ही. पी. सिंह

9) रुपनारायण सोनकर के.........कहानी संग्रह प्रकाशित है।

अ) चार ब) तीन क) आठ ड) दो

10) सोनकर के पत्नी का नाम.......है।

अ) कमला ब) रमा क) सुधा ड) रजिया

11) हीरा.......का नाम था।

अ) रुपनारायण सोनकर ब) शिवभजन क) गणपत ड) दयाराम

12) सोनकर को........ ग्रंथ पढने से मना किया था?

अ) महाभारत ब) रामायण क) रामचरितमानस ड) मनुस्मृति

13) सोनकर जी ....बँक में काम करते थे।

अ) बँक ऑफ इंडिया ब) स्टेट बँक ऑफ इंडिया

क) पंजाब नॅशनल बँक ड) ओरियंटल बँक

14) सोनकर को 2001 में ....उपाधि मिली।

अ) पीएच.डी. ब) एम.फिल. क) डी.लिट ड) एम.डी.

15) सोनकर के मित्र .... ने उन्हे रामायण पढाने को दिया था।

अ) शिवदत्त ब) शिवभजन क) हरिशंकर ड) एम.डी.

16) हरिशंकर अवस्थी ने......को बंधक बनाया था।

अ) राजू चमार ब) भदइ्याा चमार क) दत्तु चमार ड) आदेश चमार

17) लेखक के छोटे भाई का नाम.......है।

अ) सुजय ब) अजय क) आनंद ड) सुनील

18) तिवारी के बेटे का नाम ....था।

अ) मोहम्मद ब) सुन्ना क) आनंद ड) राम

19) बलवीर सिंह यादव ने........काम किया था।

अ) अपमानित परंपरा को बंद कर दिया ब) परंपरा को चालू रखने का उपदेश दिया।

क) ब्राह्मणों के साथ झगडा किया। ड) दलितों को अपमानित किया

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के एक वाक्य में उत्तर लिखिए।**

1) 'नागफनी' दलित आत्मकथा के लेखक कौन है?

2) रुपनारायण सोनकर का जन्म कहा हुआ है?

3) सोनकर को संघर्ष करने की प्रेरणा किससे प्राप्त हुई है?

4) रुपनारायण सोनकर बचपन में कौन से खेल मे भाग लेते थे?

5) सोनकर ने कौन से विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की?

6) सोनकर ने कौनसी साहित्य- सांस्कृतिक संस्था का निर्माण किया?

7) सोनकर के 'नागफनी' का प्रकाशन कब हुआ?

8) सोनकर के जन्म गाँव का नाम क्या है?

9) सोनकर के 'जहरीली जडें' कहानी संग्रह का लोकापर्ण किसको किया था?

10) सोनकर कें 'रहस्य' नाट्य संग्रह का लोकापर्ण किसके हाथों हुआ था?

उत्तर :-

1. सोनकर 2. 1962 में 3. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर 4. कुस्ती

5. इलाहाबाद विश्वविद्यालय 6. दलित साहित्य व सांस्कृतिक अकादमी 7. सन् २००० में

8. नसेलिया 9. शीला दीक्षित 10. प्रधान मंत्री व्ही.पी.सिंग

4.5 पारिभाषिक शब्द शब्दार्थ

जनजाति - सामाजिक समुदाय है जो राज्य के विकास के पहले अस्तित्त्व में था। जो अब भी राज्य के बाहर है।

बिंदकी - उत्तर प्रदेश प्रांत का तहसील है। यह तहसील पीतल के बर्तन के लिए विश्व में महशूर

नसेलिया - यह बिंदकी तहसील में गाँव है।

करौली - सीधी छुरी

बडे तसले - लोहे के बर्तन, गहरी प्लेट

बल्लम - बरछा भाला

सेला - चादर

फरसा - फावडा

दीमक – सफेद, चींटी

लिहाज – संकोच, अदब, लज्जा

तौहीन – बेइज्जत, अपमान

दबंग – निधडक, किसी से न डरनेवाला

बरछी – नुकीला भारत

तमचा – पिस्तौल

झाडफूक – निकम्मा

ससुरी – गाली है।

पुताई करना – दीवार आदि पर मिट्टी, गोबर चूने आदि पोतने का काम

मुनादी – ढिंढोरा डुग्गी बजाकर दी जानेवाली सूचना

कर्द सयान – उच्चकुलीन जात के लडके

4.6 स्वयंम अध्ययन के उत्तर

1) – क	2) – अ	3) – क	4) – ड	5) – क
6) – ब	7) – अ	8) – ड	9) – ड	10) – अ
11) – अ	12) – क	13) – अ	14) – क	15) – ड
16) – ब	17) – ब	18) – ब	19) – अ	

4.7 सारांश

1) रुपनारायण सोनकर कवि कथाकार अच्छा वक्ता, फिल्मकार, अभिनेता, आत्मकथाकार, नाटककार और साहित्यकार के रुप में प्रसिध्द रहे हैं। वे अंग्रेजी, हिंदी और अन्य भाषा के विद्वान हैं।
2) वे बँक मॅनेजर, असिस्टंट कमिशनर और वर्तमान में हाईकोर्ट में वकालत के पद पर है।
3) रुपनारायण का जन्म उत्तरप्रदेश प्रांत के बिंदकी तहसील के नसेलिया गाँव में 4 अपैल 1962 में हुआ है। उनकी पत्नी कमला सोनकर ने उन्हें दुश्मन के गोली का निशाना होने से बचाया था। उनकी प्राथमिक शिक्षा गाँव में हुई तथा सन 1971-72 में स्नातक स्तर की पढाई पूरी की।
4) सोनकर ने रंगमंच, फिचर फिल्म, टी.वी सिरियल सपने व मंजिले में अभिनेता का किरदार निभाया है। नाटक एक दलित डिप्टी कलेक्टर, समाजद्रोही में मुख्य भूमिका निभाई है। टेलिफिल्म–'रातभर की बात' नेता का सफल अभिनय किया है। सोनकर की कहानी कफन पर टेलिफिल्म बनाई थी।
5) सोनकर साहसी, संवेदनशील व्यक्ति है। डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी का प्रभाव उनके साहित्य पर रहा है।

6. इस प्रकार रुपनारायण सोनकर अपने आत्मकथा में दलित समाज को नई दिशा, मार्गदर्शन और मार्ग दिखाने में कामयाब हो गये हैं।

4.8 स्वाध्याय

1. लघुत्तरी प्रश्न –

   1) 'नागफनी' में चित्रित संघर्ष पर प्रकाश डालिए।

   2) 'नागफनी' में चित्रित पुरुष पात्रों पर प्रकाश डालिए।

   3) रुपनारायण सोनकर का व्यक्तित्त्व एवं कृतित्त्व स्पष्ट करें।

2. दीर्घोत्तरी प्रश्न

   1) 'नागफनी' आत्मकथा के भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

   2) 'नागफनी' में चित्रित समस्याओं को स्पष्ट कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1) खाटिक समाज की समस्याओं पर निबंध लिखिए।

2) खाटिक व्यवसाय करनेवालों का साक्षात्कार लिजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) मेरी आत्मकथा – रवीन्द्रनाथ टैगोर

2) जूठन – ओमप्रकाश वाल्मीकि

3) तिरस्कृत – सूरजपाल चौहान

4) दोहरा अभिशाप – कौसल्या बैसंत्री

❑❑❑